UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182287

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 M67S Accession No. H3237

Author मिश्र, सदल

Title सदल मिश्र ग्रन्थावली 1960

This book should be returned on or before the date last marked below.

सदल मिश्र-ग्रंथावली

(सदल मिश्र की कृतियों का सग्रह)

सम्पादक
श्रीनलिनविलोचन शर्मा

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

C
सर्वस्वत्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम सस्करण

शकाब्द १८८२, विक्रमाब्द २०१७, खृष्टाब्द १९६०

मूल्य सजिल्द पाँच रुपये मात्र

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

वक्तव्य

'सदल मिश्र-ग्रथावली' को पाठको के सम्मुख प्रस्तुत करते हर्ष हो रहा है। परिषद् का लक्ष्य जहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी की समृद्धि और उसके अभाव की पूर्त्ति करना रहा है, वहाँ उसका यह भी लक्ष्य है कि हिन्दी के प्राचीन अलभ्य और दुष्प्राप्य ग्रथो का प्रकाशन कर उन्हे हिन्दी-प्रेमियो के लिए सुलभ किया जाय। इसी लक्ष्य की पूर्त्ति की दिशा मे परिषद् ने निश्चय किया कि हिन्दी के आद्य गद्य-लेखक, बिहार-निवासी सदल मिश्र की रचनाओ को एकत्र करके ग्रथावली के रूप मे प्रकशित किया जाय। उनकी रचनाओ मे 'नासिकेतोपाख्यान' नामक पुस्तक काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित तो हो चुकी थी, किन्तु उसकी प्रति उपलब्ध न थी। उनकी दूसरी पुस्तक, 'रामचरित' की प्रति सम्पूर्ण भारत मे खोज-ढूँढ कराने पर कही भी प्राप्त करना सभव न हो सका। उन्ही दिनो विश्वस्त सूत्र से पता चला कि लदन की इम्पीरियल लाइब्रेरी मे लेखक की दोनो पुस्तको की एक-एक प्रति सुरक्षित है। परिषद् ने उन दोनो की प्रतिलिपि कराने का सकल्प किया और यह भार श्रीवीरेन्द्र नारायण पर सौंपा गया, जो उन दिनो लदन मे नाट्य-कला का अध्ययन कर रहे थे। उन्होने प्रतिलिपि करने का परिषद् का आमत्रण कृपापूर्वक स्वीकार कर उसे बडी श्रद्धा और लगन से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

परिषद् ने उक्त ग्रथावली के सम्पादन का भार पटना-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभागाध्यक्ष आचार्य श्रीनलिनविलोचन शर्मा पर न्यस्त किया। सम्पादन के सम्बन्ध मे शर्माजी अपने विचार सम्पादकीय भूमिका मे व्यक्त कर चुके है। हम परिषद् की ओर से श्रीवीरेन्द्र नारायण तथा आचार्य शर्माजी का हार्दिक आभार स्वीकार करते है। व्यय-सापेक्ष्य दुष्प्राप्य अलभ्य ग्रथ को इस रूप मे सहज-सुलभ करने की दिशा मे परिषद् से जो थोडी-बहुत सेवा हो सकी, विश्वास है, सुधी पाठक-समाज और शोधकर्त्ताओ को, इसे प्राप्त कर, विशेष प्रसन्नता होगी।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
पौष अमावास्या, २०१७ वि०

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
संचालक

भूमिका

[१]

"The earliest prose in Bihar constitutes perhaps the earliest prose in Hindi in general Of the four contemporary prose writers in Hindi, namely Sadal Miśra, Lallūlāl, Inśaallāh Khān and Sadāsukhalāl, the first belonged to Arrah and is regarded by common consent as having laid the foundation of that prose-style which came to stay Both Sadal Miśra and Lallūlāl were teachers and writers of Hindi in the Fort William College in the early nineteenth century The former wrote more chaste and well-knit prose than the latter This was not recognised or appreciated by the East India Company authorities at the time, but posterity has proved that they were wrong

The rejection of the chaste Hindi prose-style evolved by Sadal Miśra betrayed the future attitude of the alien rulers towards the language to be adopted for the courts and other official purposes "[1]

"सामान्य रूप से विचार करने पर सभवत बिहार का प्रारभिक आधुनिक गद्य हिन्दी का भी प्रारभिक आधुनिक गद्य है। हिन्दी के चार समसामयिक गद्य-लेखकों, अर्थात् सदल मिश्र, लल्लूलाल, इशाअल्ला खाँ और सदासुखलाल, मे प्रथम आरा के थे और प्राय सर्वसम्मति से उस गद्य-शैली के प्रतिष्ठापक थे, जो आगे चलकर स्वीकृत हुई। सदल मिश्र तथा लल्लूलाल दोनो ही उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभ मे फोर्ट विलियम कालेज मे हिन्दी के अध्यापक और लेखक थे। द्वितीय की तुलना मे प्रथम ने अधिक परिमार्जित एव सुगठित गद्य लिखा। फोर्ट विलियम कालेज के तत्कालीन अधिकारियो ने इसका महत्त्व नही समझा या स्वीकार किया, किन्तु बाद की पीढियो ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह उनकी गलती थी।

सदल मिश्र द्वारा प्रवर्त्तित परिमार्जित गद्य की उपेक्षा विदेशी शासकों के उस रुख का परिचय देती है, जिसे कचहरियो तथा सरकारी काम-काज मे व्यवहृत होनेवाली भाषा के सबध मे वे भविष्य मे अपनाने जा रहे थे।"

[२]

आचार्य शिवपूजन सहाय ने सदल मिश्र के एक भाई के वशज से उनके सबध मे ऐसे सस्मरण सुने थे, जिनसे उनके व्यक्तित्व की एक झाँकी मिल जाती है। ये सस्मरण स्वय

---

१. Bihar Through the Ages, सपादक, श्री आर० आर० दिवाकर, ओरियट लाग-मैन्स, कलकत्ता, मे हिन्दी साहित्य पर, भूमिका-लेखक द्वारा लिखित, अध्याय, पृ० ४४-४५।

आचार्यजी के सस्मरण के रूप मे श्रीबजरग वर्मा, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, को प्राप्त हुए थे और उन्होने इनका उपयोग अपनी एक वार्त्ता मे किया था, जो आकाशवाणी से प्रसारित हुई थी। मै श्रीवर्मा का कृतज्ञ हूँ कि उन्होने मुझे अपनी वार्त्ता की एक प्रतिलिपि देने की कृपा की थी, जिससे मै उपर्युक्त विषयक पक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

"जो लोग प० रघुनदन मिश्र के निवास-स्थान पर जाते थे, उनके पूछने पर वे अपने दादाजी, अर्थात् प० सदल मिश्र[1] के विषय मे सुनी-सुनाई बाते कहानी की तरह कहा करते थे। जैसे, पडितजी के पहनावे के विषय मे उनका कहना था कि वे सिर पर बडा साफा, बगलबदी और घुटने के ऊपर की धोती पहनते थे—वैसी धोती, जिसे 'कच्छा' कहते है। जनेऊ केवल कुमारी कन्याओ के काते हुए सूत से स्वय बनाकर पहनते थे। गले मे बराबर पूजा की माला लटकती रहती थी। सोने के समय उसे निकालकर जपते थे। प्राय जीवन भर स्वयपाकी रहे। भोजन मे खिचडी और पुए के बडे शौकीन थे। नौकर उन्होने कभी रखा ही नही। जब दूसरो के घर जाते, तो नौकरो के माँजने पर भी बरतनो का व्यवहार उन्हे फिर धोये विना नही करते थे। कम से कम सेर आध सेर मिट्टी से तो हाथ साफ करते थे। एक लोटकी से ढके हुए एक लोटे मे भरा पानी सदा अपने साथ लटकाये फिरते। जब कही बैठते, तो पहले पानी छिडककर लोटा वही रखते और तब बैठते। अपना बिस्तर स्वय लगाते और उस पर किसी को बैठने नही देते। सोने के समय अपना लोटा खाट पर रखकर ही सोते। प्रातःकाल ईशावास्योपनिषद् और अध्यात्मरामायण का पाठ करना वे कभी न भूलते। पूजा के बाद मैदान मे चीटियो को सूजी और शक्कर बाँटना उनका नित्य का नियम था। गाय और कुत्ते उन्हे बहुत प्रिय थे। घर छोटा होने के कारण गाय बँधती, तो दूसरे के यहाँ थी, किन्तु उसकी सेवा के लिए नित्य अवकाश निकाल कर वहाँ जाते थे। गो-सेवा उन्हे इतनी प्रिय थी कि कलकत्ता मे भी उन्होने एक गाय पाल रखी थी। स्वभाव के बडे ही विनम्र थे और बोलते बहुत कम थे। अधिक समय मौन ही रहते। बराबर कुछ न कुछ लिखते रहते। मिट्टी की एक छोटी-सी दावात और कील की कलम उनका साथ कभी नही छोडती थी।

उस समय कलकत्ता मे आरा तक रेल न थी। नोट की जगह तोडे का चलन था। प० रघुनदन मिश्र कहा करते थे कि पडित जी कई वर्ष पर तोडे के साथ गगा के मार्ग से घर आते थे। नाव से सिनहा[2] उतरते। प० रघुनदन मिश्र के पिता (सदल मिश्र के अनुज) बैलगाडी और लठैतो के साथ वहाँ जाते और उन्हे आरा तक लिवा लाते।"

---

१ आचार्यजी के सस्मरण से ऐसा प्रतीत होता है कि रघुनदन मिश्र के अपने पितामह सदल मिश्र थे। भूमिका मे सदल मिश्र का जो वश-वृक्ष तथा दान-पत्र प्रस्तुत किये गये हैं, उनसे स्पष्ट है कि सदल मिश्र या तो निस्सतान थे, या मृत्यु के समय इनके कोई सतान न थी। इसकी पुष्टि उस दान-पत्र से हो जाती है, जो भूमिका के अतर्गत अन्यत्र मूल से प्रतिमुद्रित है।

२. आरा से उत्तर गगा का एक प्रसिद्ध घाट।

सदल मिश्र का यथासाध्य प्रामाणिक वंश-वृक्ष एवं जीवन-वृत्त-तालिका संक्षेप और सुविधा के लिए प्रस्तुत किये जा रहे है—

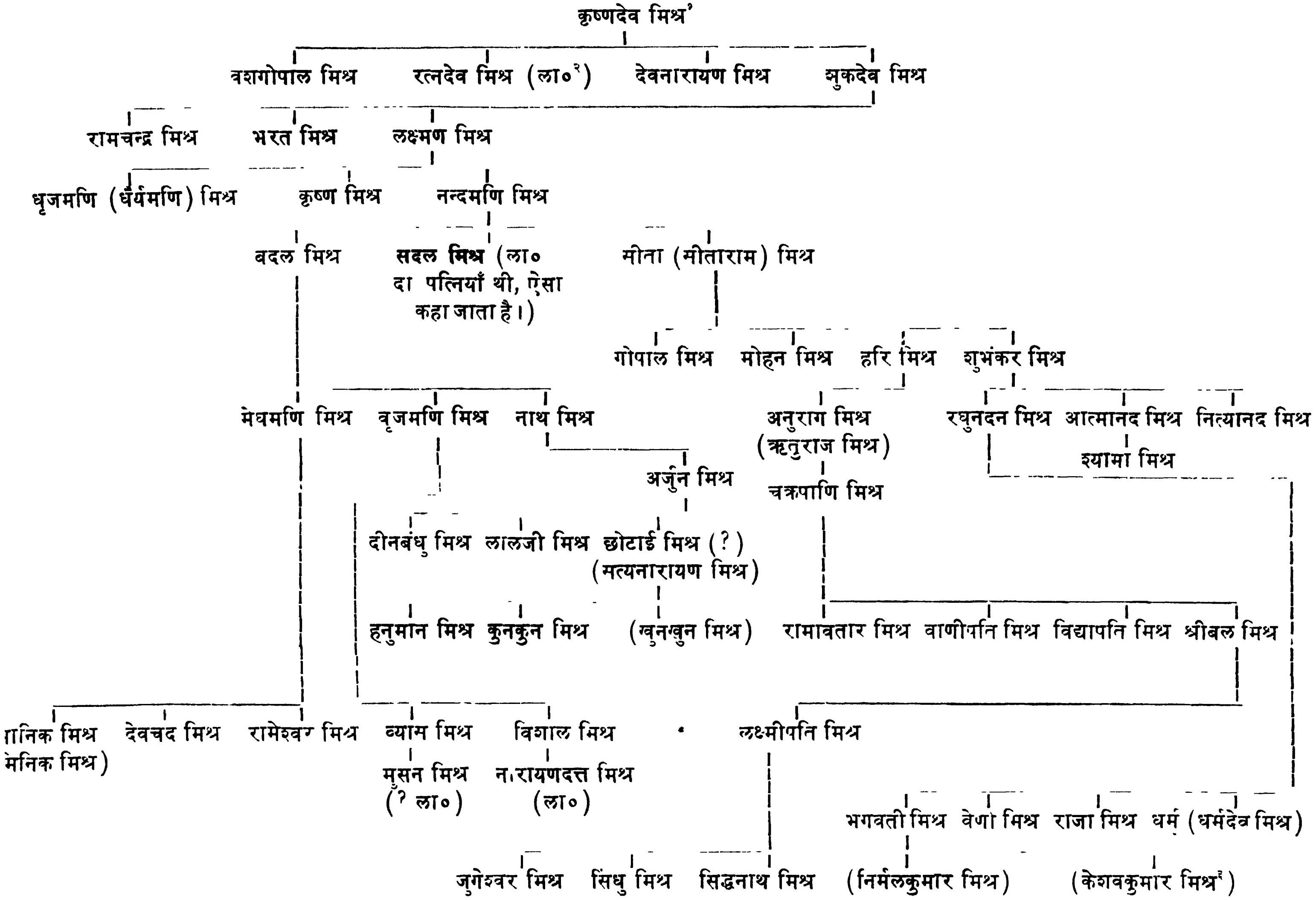

१. (क) सदल मिश्र का जो वंश-वृक्ष श्यामसुन्दर दास ने दिया है, वह अपूर्ण है। Great Men of Shahabad में सदल मिश्र पर एक लेख है, जो बहुत बाद मे लिखा गया था और जिसमें अधिक प्रामाणिक तथ्यों की संभावना की जा सकती थी, किंतु इसमें जो वंश-वृक्ष है, वह तथा अनेक अन्य बाते भ्रामक और निराधार है। प्रस्तुत वंश-वृक्ष श्रीतारिणी मिश्र, उर्फ बच्चा मिश्र, के पुत्र श्रीगंगाधर मिश्र, उर्फ लल्लन, आरा, के सौजन्य से तथा पंडित बटुकदेव मिश्र, पटना, की सहायता से प्राप्त हुआ है। दोनों ही सज्जन सदल मिश्र के वंश-वृक्ष की शाखाओं के पुष्प-फल है। इस वंश-वृक्ष की उन्ही शाखाओं को उद्धृत किया गया है, जिनसे सदल मिश्र का निकट सम्बन्ध है। पूरे वंशवृक्ष की प्रतिलिपि पं० बटुकदेव मिश्र के पास अब भी सुरक्षित है। कुछ नाम स्पष्ट नही है, उनके आगे प्रश्न-चिह्न है। अपूर्ण नाम, दूसरे स्रोतों से, कोष्ठकों मे पूर्ण रूप में दिये गये है।

(ख) शाकद्वीपीय ब्राह्मण; शाहाबाद जिलान्तर्गत ध्रुवडीहा ग्राम-निवासी; बाद मे भदवर चले गये; हसनपुर ग्राम भदवर के जमीदार से प्राप्त, बहुत दिनों तक हसनपुरा मे इनके वंशज रहे; इनके वंशज कुँवरसिह के समय में आरा के मिश्रटोला मुहल्ले मे जा बसे। द्रष्टव्य, चद्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान की भूमिका, श्यामसुन्दर दास।

२ मूल वंश-वृक्ष में ला० =लावल्द अनेक नामों के आगे लिखा हुआ है।

३. इनके पास सुरक्षित, इनके पूर्वज सदल मिश्र का दान-पत्र भूमिका में प्रतिमुद्रित है। यह मुझे श्रीपाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, एडवोकेट, पटना, के सौजन्य से प्रतिमुद्रणार्थ प्राप्त हुआ था।

रघुनदन मिश्र के एक पुत्र, राजा मिश्र, जो १९४६ मे जीवित थे और आरा मे रहते थे, के अनुसार सदल मिश्र सस्कृत के विद्वान् और कुशल अध्यापक के रूप मे प्रसिद्ध थे। धनाभाव के कारण वे पटना गये। वहाँ एक समृद्ध जमीदार के आश्रय मे वे रहने लगे और उन्हे पुराण सुनाया करते। पुराण-वाचन के समय अन्य व्यक्ति भी उपस्थित होने लगे और पटना-निवासी कुछ अँगरेज भी आकृष्ट हुए। इनमे से एक सदल मिश्र के पाडित्य तथा साधु प्रकृति से इतना प्रभावित हुआ कि उसने मिश्रजी को कलकत्ता मे ईस्ट इडिया कपनी की अच्छे वेतनवाली तथा सम्मानपूर्ण नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया और उन्हे कलकत्ता चलने को निमत्रित किया।

इसी अँगरेज सुहृद् के माध्यम से सदल मिश्र गिलक्राइस्ट के सपर्क मे आये और उन्हे फोर्ट विलियम मे नियुक्ति मिली। वहाँ प्राय पच्चीस वर्षो तक कार्य करने के बाद सदल मिश्र कलकत्ता से प्रभूत धनराशि—प्राय डेढ लाख रुपये—लेकर जहाज से सेमरिया घाट (सिनहा घाटवाली बात अधिक प्रमाणिक मानी जा सकती है) आये, जहाँ से आरा तक अँगरेज सैनिको ने उन्हे अपने सरक्षण मे पहुँचाया।[१]

डेढ लाख रुपयो की बात विश्वसनीय नही प्रतीत होती। कम से कम फोर्ट विलियम कालेज से तो वेतन, पारिश्रमिक या पुरस्कार के रूप मे इतनी रकम मिश्रजी ने कदापि अर्जित न की होगी। 'भाखा'-मुशी के रूप मे, जैसा फोर्ट विलियम कालेज के विवरणो से ज्ञात होता है, विद्वानो को प्राय ५०) प्रति मास मिलते थे, हालाँकि विवरणो मे लल्लूलालजी का तो उल्लेख है, मिश्रजी का कही प्रत्यक्ष उल्लेख भी नही है।

सदल मिश्र, यह अविश्वसनीय नही है, पर्याप्त धन लेकर आरा वापस आये होगे, क्योकि उन्होने सिगही, बयगुलफा (इसका उल्लेख राजा मिश्र ने नही किया है, श्यामसुन्दर दास ने किया है, जिन्होने कदाचित् राजा मिश्र के पूर्वजो से यह सूचना प्राप्त की होगी) तथा हसनपुरा का ११०००) मे ठीका लिया था और आरा मे एक अच्छा खासा मकान भी बनवाया था। सन् १९४३ ई० मे इसी मकान मे राजा मिश्र रहते थे (जिनके एक भाई श्यामलानद मिश्र के भी उन दिनो जीवित रहने का उल्लेख Great Men of Shahabad मे है, यद्यपि तथ्य यह है कि राजा मिश्र के भाई का नही, बल्कि एक पितृव्य का नाम श्यामलानद था)।

सदल मिश्र खेती-बारी मे अभिरुचि रखते थे और अधिक समय आरा मे सस्कृत के छात्रो के अध्यापन मे लगाते थे। वे उदाराशय थे और निर्धन छात्रो को, उनके भोजन तथा आवास की व्यवस्था करके, यथासभव सहायता पहुँचाते थे। ऐसा कहा जाता है कि स्वय बाबू कुँवरसिह ने पुन आरा छोडकर बाहर जाने से उन्हे रोका था।

---

१ Great Men of Shahabad, H D Jain College, Arrah, **नामक पुस्तक मे सदल मिश्र विषयक जो लेख है, उसमे लेखक-द्वय ने राजा मिश्र से सुनी-सुनाई बातें लिख दी हैं, जो वश-वृक्ष उन्हे प्राप्त हुआ है, वह भी भ्रामक है, उससे अधिक प्रामाणिक, यद्यपि अपूर्ण, वश-वृक्ष तो श्यामसुन्दर दास ने बहुत पहले अपने द्वारा सपादित नासिकेतोपाख्यान की भूमिका मे प्रस्तुत किया था।**

[३]

१७६७-६८ ई० मे अनुमानत जन्म।

१७८३—जॉन नार्थविक गिलक्राइस्ट का भारत मे आगमन।

१७९१—सदल मिश्र कलकत्ता गये (प्राय २४-२५ वर्ष की अवस्था मे)

१७९८—ओरियटल सेमिनरी की स्थापना और गिलक्राइस्ट की अध्यापक के रूप मे नियुक्ति।

१८००—फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना, हिन्दुस्तानी विभाग के प्रधानाध्यापक के रूप मे गिलक्राइस्ट की नियुक्ति।

१८०३—सदल मिश्र द्वारा चद्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान का सस्कृत से खडी बोली मे अनुवाद।

१८०४—१८०९—सदल मिश्र कालेज मे विद्यमान।

१८०६—गिलक्राइस्ट के स्थान पर मोअट की प्रधानाध्यापक के रूप मे नियुक्ति, सदल मिश्र को अध्यात्मरामायण का खडी बोली मे अनुवाद करने के लिए पुरस्कार।

१८०९—हिन्दी और फारसी शब्द-सूची तैयार करने पर सदल मिश्र को पुरस्कार।

१८१०—"तुलसीदास के रामचरितमानस का एक सस्करण सशोधित करके छपवाया था। इस सस्करण की एक प्रति काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय मे है।"[1]

१८३१—"१८८८ मे इन्होने ११०००) पर सिगही गॉव, बयगुलफा और हसनपुरा का ठीका लिया था।"[2]

१८३६—फोर्ट विलियम कालेज टूट गया, इसके पूर्व घर लौट गये, ऐसा अनुमान।

१८४७-४८—८० वर्ष की उम्र मे मृत्यु। "बाबू शिवनन्दन सहाय लिखते है—'सवत् १९०४ का इनके नाम का बयनामा हमारे देखने मे आया है, जो इस समय उनके पौत्र प० रघुनन्दन मिश्रजी के पास है। इसके पहले के कागजो मे भी इनका नाम है। १९०५ सवत् के एक कागज मे इनका नाम न होकर केवल इनके वशधरो का नाम देखा जाता है।' इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि सवत् १९०४ और १९०५ के बीच मे पडित सदल मिश्र की मृत्यु हुई। इनके वशधरो का कहना है कि पडित सदल मिश्र ने ८० वर्ष की आयु पाई थी। इस हिसाब से इनका जन्म सवत् १८२४–२५ के लगभग होना चाहिए।"[3]

---

१. श्यामसुन्दर दास, भूमिका, पृ० ३।

२. उपरिवत्, पृ० ३।

३. उपरिवत्, पृ० ३।

इस दान-पत्र मे सदल मिश्र के हस्ताक्षर तथा उनके निस्सन्तान होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते है (मूल पृथक् पृष्ठ पर)। पुरानी बिहारी भाषा का उदाहरण भी द्रष्टव्य है—

श्री 8

रोचतेयमर्थोतिय
मधर शर्मणे सम्यक्

दशषत सदल
मिश्र

गो० जवकर्ण मि
स्त्र सा कसबे
आरा

लि सदल मिश्र आगे हवेली वाग जमीन वगैर मे वदल मिश्र के लरिकन्ह के ओ सीताराम के लरिकन्ह के हम भाग लगा देल जे आरे मे गिरिवर मिश्र ओ जीरा बहू वगैरह के खरीदगी हवेली ओ हसन पूरा मे सोग्ह कठवा मे हमार लगाबल वाग से वाग ओ फागू के वाग इ सभ मेघमणि तीनो भाई लेथु एह मे मोहन तीनो भाइ के कुछ इलाका ना ही ओ आरे मे नैजू मिश्र के खरीदगी हवेली समेत साविक हवेली ओ हसनपूरा मे मोहन के लगावल सावा बिगहा मे के वाग से इ सभ मोहन तीनो भाई लेथु एहमे मेघमणि वगैरह तीनो भाइ के कुछ इलाका ना ही ओ साविक वाग मे पुराणा दुइ फेड आम ओ वदल मिश्र के लगावल एक पेड महुआ एक फेड गुलर मे ओ जहा जहा हमरा पिता के जगह जमीन वा तेह सभ मे आधा मोहन तीनो भाइ लेथु ओ आधा मेघमणि तीनो भाइ लेथु एह शिवाय हमरा दुनो वेगति का राछा जे कुछ हम र माल मताय ठहरे ओ देना पावना हमार ठहरे तेह सभ मे आधा मेघमणि तीनो भाइ ओ आधा मोहन तीनो भाई वरावर वाट लेहि कवनो वात के झगरा तकरार न करे एह अर्थे तोपवन्दी दस्ता वेज लिख देल जे वष्त पर काम आवे स० १८८८ पौष वदि प्रतिपत् मगलवारद—

गो० राजवल्लभ मि
श्र
गो० शिव प्रसाद मिश्र
सा० आरे

गो० हरप मिश्र
मा० आरे मि
श्र टोला वकल
म सदल मिश्र

शहि मेघमणि मीश्र वो वृज
मणि मिश्र वोनाथ मिश्र
सदल मिश्र बषरा लगवल शेही

१९२५ मे श्यामसुन्दर दास ने लिखा था, "ये स्वय यह भी लिखते है कि उन्होने 'दो एक सस्कृत ग्रन्थो से भाषा और भाषा सस्कृत किये।' पर वे सब ग्रन्थ अब कही मिलते नही।" वार्ष्णेय को भी, जिन्होने फोर्ट विलियम कालेज तथा आरभिक आधुनिक हिन्दी साहित्य पर प्रामाणिक शोध कार्य किये है, 'अध्यात्मरामायण' का अनुवाद सुलभ नही हुआ और उन्होने लिखा हे, 'सदल मिश्र की यह रचना दुर्भाग्यवश अभी तक अप्राप्य है।' प्रस्तुत सदल-मिश्र-ग्रन्थावली मे सदल मिश्र ने सस्कृत से जो दो भाषानुवाद किये, अर्थात् 'नासिकेतोपाख्यान' और अध्यात्मरामायण का अनुवाद 'रामचरित्र' वे एकत्र प्रकाशित हो रहे है—पहला तो श्यामसुन्दर दास के द्वारा सम्पादित और प्रकाशित था ही। सदल मिश्र द्वारा सपादित रामचरितमानस का उल्लेख श्यामसुन्दर दास ने किया है और वार्ष्णेय द्वारा सगृहीत विवरणो मे नक्लियात-इ-लुकमानी के अनुवाद मे सदल मिश्र ने भी योग दिया था, इसका उल्लेख है, जैसा इस भूमिका मे दिये गये तालिका-विशेष से स्पष्ट है। किन्तु, आज भी सदल मिश्र ने भाषा से सस्कृतानुवाद की जो बात कही है, उसका कोई प्रमाण उपलब्ध नही है।

सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान की रचना के विषय मे स्वय लिखा हे "चित्र-विचित्र, सुदर-सुदर, बडी-बडी अटारिन से इद्रपुरी समान शोभायमान, नगर कलिकत्ता महा प्रतापी बीर नृपति कपनी महाराज के सदा फूला फला रहे, कि जहाँ उत्तम लोग बसते है औ देश देश से एक से एक गुणीजन आय आय अपने अपने गुण का सुफल करि बहुत आनद मे मगन होते है।

नाम सुन सदल मिश्र पडित जी वहाँ आन पहुँचा वो बडी बडाई सुनि सर्वविद्या-निधान ज्ञानवान महा-प्रधान श्री महाराज जान गिलक्रस्त साहब स मिला कि जो पाठशाला के आचाय है। तिनकी आज्ञा पाय दो एक ग्रथ सस्कृत से भाषा वो भाषा मे सस्कृत किए।

अब सवत् १८६० मे नासिकेतोपाख्यान को कि, जिसमे चद्रावती की कथा कही हे, देव-वाणी से कोई-कोई समझ नही सकता, इसलिए खडी बोली मे किया।"[1]

इस पुस्तक की प्राप्ति के सबध मे श्यामसुन्दरदास का यह वक्तव्य हे "सन् १९०१ मे कलकत्ते की एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय मे रक्षित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तको की जाच करते हुए मुझे पडित सदल मिश्र द्वारा अनुवादित चद्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान की एक प्रति प्राप्त हुई थी। उस प्रति के आधार पर उसे सपादित कर मैने नागरी-प्रचारिणी ग्रन्थमाला से प्रकाशित करवाया था।"[2]

सदल मिश्र की कृतियाँ कब लिखी गई और प्रकाशित हुई, फोर्ट विलियम कालेज से उनका क्या सबध था और इस सबध मे कालेज के अधिकारियो की हिन्दी विषयक नीति कहाँ तक प्रति-

---

१ श्यामसुन्दर दास द्वारा सपादित सभवत प्रथम सस्करण की प्रतिलिपि, ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन मे श्रीवीरेन्द्र नारायण द्वारा कृत और परिषद् को प्रेषित।

२ श्यामसुन्दर दास, षष्ठ सस्करण, सवत् २००७ वि० की भूमिका, पृ० १।

विदित है, इन तथा अन्य प्रसग-प्राप्त बातो पर यहाँ कुछ विस्तार से विचार कर लेना असमीचीन न होगा।

१९ अगस्त, १८०३ को गिलक्राइस्ट ने फोर्ट-विलियम कालेज की कौसिल के विचारार्थ एक पत्र लिखा था—इसके पूर्व उन्होने इस सबध मे और भी पत्र लिख थे—जिसमे उन्होने "लोकप्रिय हिन्दुस्तानी भाषा का अध्ययन सरल बनाने और भारतवर्ष मे प्रचार तथा प्राचीन हिन्दुस्तानी रचनाओ के आधार पर निश्चित सिद्वात स्थिर करने की दृष्टि से हिन्दुस्तानी विभाग मे तैयार या तैयार हो रही चवालीस पुस्तको की सूची"[1] प्रेषित की थी और उन्हे पुरस्कार देने की सिफारिश की थी। यह सिफारिश कौसिल को मान्य नही हुई, क्योकि वेतनभोगी विद्वानो को अथवा अपूर्ण रचनाओ के लिए पुरस्कार देने के पक्ष मे कौसिल नही थी। इस सूची मे अन्य पुस्तको के साथ नक्लियात-इ-लुकमानी और चन्द्रावती भी सम्मिलित है, जिनमे से पहले को अन्य विद्वानो के साथ, और दूसरे को स्वय ही सदल मिश्र ने अनूदित किया था। सूची के वे अश यहाँ उद्धृत है, जिनका सबध सदल मिश्र से है—

हिन्दुस्तानी रचनाएँ नाम	छप जाने के बाद के अनुमान				ग्रथकर्त्ता	विशेष
	बडे चौ-पेजी पृ०	छोटे चौ-पेजी पृ०	अठपेजी पृष्ठ	पुरस्कार		
(जो छप चुकी है)						
"						
"						
"						
नक्लियात-इ-लुकमानी	—	—	३००	६००	तारिणीचरण मित्र, मौलवी अमानत उल्लाह, सदल मिश्र पडित, मीर बहादुर अली, मीर शेर अली अफसोस, श्री लाल कवि और गुलाम अशरफ	इन अनुवादको मे से केवल पहले तीन पारिश्रमिक पाने के विशेष रूप से अधिकारी है, क्योकि बगाली अरबी और सस्कृत का भार इन्ही के ऊपर पडा। और, वह भी तारिणीचरण के ऊपर सबसे अधिक।
"						
"						
"						
"						
"						
"						
"						
"						
"						
"						
"						
चद्रावती	—	—	१५०	६०	सदल मिश्र	

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००—१८५४ ई०), डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय युनिवर्सिटी, इलाहाबाद, स० २००४ वि०, पृ० ५८।

२. उपरिवत्, पृ० १८५, १८८।

गिलक्राइस्ट ने २३ फरवरी, १८०४ को कालेज-कौसिल के मत्री के नाम अपना त्याग-पत्र भेजा और वह २६ फरवरी, १८०४ की बैठक मे स्वीकृत हुआ। गिलक्राइस्ट के बाद प्रथम सहायक कैप्टन मोअट स्थानापन्न प्रोफेसर की हैसियत से काम करने लगे थे। "९ मई, १८०४ को जेम्स मोअट ने कालेज-कौसिल के मत्री, चार्ल्स राथमैन, के नाम लिखे गये पत्र मे हिन्दुस्तानी विभाग के लिए, 'भाखा'-मुशी लल्लूलाल और सदल मिश्र पडित की उपस्थिति अनावश्यक समझी। उनका यह पत्र कौसिल की ११ जून, १८०४ की बैठक मे पेश हुआ और १ जुलाई, १८०४ मे उन्हे वेतन मिलना बन्द हो गया। दूसरे शब्दों मे, वे कालेज से अलग कर दिये गये। किन्तु 'भाखा'-ज्ञान की आवश्यकता कालेज मे बराबर हुआ करती थी। इसीलिए कालेज कौसिल ने १७ अक्टूबर, १८०४ की बैठक मे, जिसमे ब्यूकैनैन, हारिगटन और कोलब्रुक उपस्थित थे, लल्लूलाल (श्री लाल कवि) और सदल मिश्र को फिर कालेज मे ले लिया, और पिछली जुलाई के बाद का वेतन भी उन्हे दे दिया, क्योंकि वे जुलाई से ही रक्खे समझे गये। "[1]

"'रामायण' की प्रतिलिपि करने के सम्बन्ध मे कौसिल ने १८ नवम्बर, १८०५ की बैठक मे सदल मिश्र पडित को छब्बीस रुपये आठ आने दिये। और १७ मई, १८०६ की बैठक मे कौसिल ने सस्कृत की 'अध्यात्मरामायण' का खडी बोली मे अनुवाद करने पर उन्हे तीन सौ रुपये देने का प्रस्ताव स्वीकार किया। सदल मिश्र की यह रचना दुर्भाग्यवश अभी तक अप्राप्य है।[2]

२७ मई, १८०९ की बैठक मे कौसिल ने 'हिन्दी' और फारसी शब्द-सूची का अनुवाद करने पर सदल मिश्र को पचास रुपये दिये।"[3]

सभवत १८११ मे विलियम हटर, मत्री, कालेज-कौसिल, ने कौसिल को एक पत्र भेजा था, जिसमे उन ग्रन्थों की सूची थी, "जिनमे वे 'हिन्दुस्तानी डिक्शनरी' तथा उसके परिशिष्ट भाग की रचना करने मे सहायता ले रहे थे।"[4] इस सूची[5] मे कुल ४३ पुस्तको के नाम है। ३०वी पुस्तक का इस प्रकार उल्लेख है—"सदल मिश्र पडित 'रामचरित्र' (पूर्वी सस्कृत से)।"

'रामचरित्र' 'अध्यात्मरामायण' का अनुवाद है। 'पूर्वी सस्कृत' से क्या तात्पर्य है, स्पष्ट नही है।

फोर्ट विलियम कालेज के तत्त्वावधान मे गिलक्राइस्ट (१८००-१८०४), अथवा उनके स्थान पर हिन्दुस्तानी प्रधानाध्यापक के रूप मे नियुक्त होनेवाले मोअट (१८०६-१८०८), टेलर (१८०८-१८२३), प्राइस (१८२३-१८३०) आदि अन्य विदेशियो के द्वारा हिन्दी-गद्य

---

१ फोर्ट विलियम कालेज (१८००-१८५४ ई०), पृ० ६५।

२. उपरिवत्, पृ० ७५।

३. उपरिवत्, पृ० ९९।

४ उपरिवत्, पृ० १०३।

५ उपरिवत्, पृ० १९७ (पूरी) सूची के लिए।

का कोई 'हित-साधन' नही हुआ। "वास्तव मे हिन्दी गद्य तो फोर्ट विलियम कालेज से बाहर नव-युगीन परिस्थितियो के प्रभावातर्गत स्वतत्र रूप से विकसित हो रहा था।"[1]

"लल्लूलाल तथा अन्य 'भाखा'-मुशियो के प्रतिकूल सदल मिश्र ऐसी भाषा प्रवर्तित कर रहे थे, जो प्रकृत्या उर्दू से भिन्न होने के कारण स्वतत्र अस्तित्व की अधिकारिणी थी और वह हिन्दुस्तानी के नाम पर खप नही सकती थी। इसी का परिणाम था कि कलकत्ते से बाहर भी यदि हिन्दी ग्रन्थो की आवश्यकता होती थी, तो लल्लूलाल के ग्रन्थ ही भेज दिये जाते थे। सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' का, सिवाय एक सूची के, और कही उल्लेख नही मिलता। न तो कालेज के पाठ्य-क्रम मे उसका जिक्र है और न कही बाहर भेजी जानेवाली पुस्तको मे। जून १८२५ मे आगरा और दिल्ली की सरकारी पाठशालाओ को भेजी जानेवाली पुस्तको मे 'प्रेमसागर', 'बैताल-पच्चीसी', 'सिहासनबत्तीसी', 'माधोनल' आदि पुस्तको के नाम तो है, किन्तु 'नासिकेतोपाख्यान', का कही नाम नही है। बाद को ओर भी कई बार पुस्तके बबई और मद्रास की सस्थाओ को भेजी गई। 'नासिकेतोपाख्यान' को यह सौभाग्य कभी प्राप्त न हुआ। कालेज तोड देने के बाद बोर्ड आव एग्जामिनर्स ने जो पाठ्य-क्रम प्रस्तुत किया, उसमे भी 'नासिकेतोपाख्यान' को स्थान न मिला। हॉ, फोर्ट विलियम कालेज और उसकी स्थापना से पहले ईस्ट इडिया कपनी के विज्ञापन-विभाग ने नागरी टाइपो का निर्माण किया, विराम-चिह्नो का प्रयोग किया और कोष तथा अनेक पुस्तके छापेखाने मे छापकर प्रस्तुत की, और इस प्रकार, अप्रत्यक्ष रूप से, प्रेस जैसे वैज्ञानिक साधन का गद्य के साथ सबध स्थापित कर, उन्होने उसके विकास का एक प्रमुख कारण ला उप-स्थित किया और हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण निर्मित किया, वह भी अँगरेजी व्याकरण के अनुकरण पर। इस सबके लिए हिन्दी-भाषा-भाषी उनके आभारी रहेगे। तुलसीदास जी के ग्रथ भी सभवत सबसे पहले फोर्ट विलियम कालेज के सरक्षण मे ही मुद्रित हुए थे।"[2]

अतिम दिनो मे भी (१८३८–१८५४) कालेज के "पुराने क्रमानुसार ग्रथ-रचना भी होती रही। किन्तु नवीन ग्रथो का निर्माण बहुत कम हुआ। हिन्दी गद्य-ग्रथ की रचना तो लल्लू-लाल और सदल मिश्र के बाद फिर हुई ही नही। केवल प्राचीन ग्रथ ही बार-बार छपते रहे। "[3]

"कालेज के पठन-पाठन और उसकी भाषा-नीति की दृष्टि से जान नार्थविक गिलक्राइस्ट के ग्रथ ही विचारणीय है, क्योकि मोअट, टेलर और प्राइस मे से टेलर और प्राइस के कोषो के अतिरिक्त उनकी किसी ऐसी कृति का उल्लेख नही मिलता जो हमारे विषय से सबध रखती हो। वास्तव मे ग्रथ-रचना की दृष्टि से गिलक्राइस्ट के अतिरिक्त अन्य किसी प्रधानाध्यापक का नाम उल्लेखनीय भी नही है। "[4]

---

१. फोर्ट विलियम कालेज (१८००–१८५४ ई०) पृ० १४२।

२ उपरिवत्, पृ० १४२।

३ उपरिवत्, पृ० १५१।

४. उपरिवत्, पृ० १६६।

“लल्लूलाल और सदल मिश्र की रचनाओ के नाते हिन्दी-साहित्य के इतिहास मे फोर्ट विलियम कालेज का उल्लेख होना तो आवश्यक है, कितु हिन्दी भाषा और गद्य-साहित्य के विकास या उन्हे एक कदम और आगे बढाने की दृष्टि मे उसका कोई महत्त्व नही है । कालेज से ‘हिन्दुस्तानी’ या उर्दू गद्य को प्रोत्साहन मिला, न कि हिन्दी गद्य को । जो कार्य कैरे ने बँगला के लिए किया, वह कार्य किसी ने हिन्दी के लिए न किया । हाँ, कोष, व्याकरण, टाइप, विराम-चिह्न आदि आधुनिक विषयो के सूत्रपात की दृष्टि से कालेज आधुनिक भारतीय भाषाओ के इतिहास मे चिरस्मरणीय रहेगा ।”[1]

[४]

नासिकेतोपाख्यान प्रचलित पौराणिक आख्यान है । उसका शाब्दिक हिन्दी अनुवाद सहित सस्करण सुलभ है ।[2] सदल मिश्र ने ऐसे अनुवाद या भाषा-टीका से भिन्न मूलानुसारी, कितु स्वतत्रप्राय, हिन्दी रूप प्रस्तुत किया है, यह कहना उचित होगा । सदल मिश्र ने अपनी पुस्तक का एक शीर्षक ‘नासिकेतोपाख्यान’ भी रखा है, कितु उसका मुख्य शीर्षक रखा है ‘चद्रावती’ । यह शीर्षक कदाचित् उस नवीनता का परिचायक है, जिसके फलस्वरूप तुरत बाद के युग मे हिंदी के अनेक उपाख्यानो—उपन्यासो—के नाम उनकी नायिकाओ के नामो पर रखे जाने लगे । शीर्षक से आभासित यह नवीनता रूपान्तरण की शैली मे भी सहज निर्देश्य है । आगे उदाहरण-स्वरूप एक अश मूल तथा रूपान्तर मे, इसे ही ध्यान मे रखते हुए, उद्धृत है ।

नासिकेतोपाख्यान (३–९)—

“जनमेजय उवाच—

पृच्छामि ते महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।।
कथयस्व कथा दिव्या सर्वपापप्रणाशिनीम् ।।
या श्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र सशय ।।३।।

वैशम्पायन उवाच—

श्रूयता राजशार्दूल कथा पौराणिकी शुभाम् ।
शृण्वन्तु ऋषय सर्वे ये चान्ये तपसि स्थिता ।।४।।
कश्चिदासीत्पुरा राजन्नृषि परमधार्मिक ।
उद्दालक इति ख्यातो ब्रह्मपुत्रस्तु तापस ।।५।।

---

१ फोर्ट विलियम कालेज (१८००–१८५४ ई०), पृ० १७२ ।

२ मेरे सामने भार्गव पुस्तकालय, वाराणसी, से प्रकाशित जो सस्करण है, उसकी भाषा-टीका माधवप्रसाद व्यास की है ।—स०

वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ स्मृतिसिद्धान्तपारग ॥६॥
तस्याश्रमपद रम्यमृषिभिर्मुनिभि श्रितम् ।
नानाद्रुमलताकीर्ण नानापुष्पोपशोभितम् ॥७॥
हसै कारण्डवैश्चैव चक्रवाकैश्च शोभितम् ।
सेव्यमान खगानीकैर्महिषैर्गवयैर्मृगै ॥८॥
आगतश्चाश्रमे तस्य पिप्पलादो महामुनि ।
तमागत तथा दृष्ट्वा आतिथेय चकार स ॥९॥"

प्रचलित मूल पौराणिक कथा के उद्धृत अश का तुलनीय अनुवाद इस प्रकार है—

"एक दिन एक समय राजा जनमेजय गगा के तीर पर बारह बरस यज्ञ करने को रहे। एक दिन स्नान-पूजा करि ... बहुत सा दान दे देवता-पितरो को तृप्त करके ऋषि और पडितो को साथ लिए वैशम्पायन मुनि पास जा दडवत् कर खडे हो हाथ जोड कहने लगे कि महाराज आप वेद पुराण सब शास्त्र के सार जाननिहार तिस पर व्यास मुनि के शिष्य सब योगियो मे इद्र समान हो। ऐसी कथा कि जिसके सुनने मे पाप कटे और कोई रोग न होय नर जन्म ससार मे अच्छा भोग अत मे मुक्ति मिले हमसे कहिए।

प्रसन्न होकर वह बोले कि हे राजा तुम बडे ज्ञानी हो। अच्छा सब पाप दूर करनेवाली पुराण की कथा कि जिसके सुनने से निस्सदेह मुक्ति होती है मै कहता हूँ। तुम ऋषि के सेवको के समेत सावधान होकर सुनो।

किसी समय मे ब्रह्मा के पुत्र ऐसे उद्दालक मुनि भए कि जिनके दर्शन से लोग पवित्र होते थे। वेद पुराण श्रुति स्मृति मे बहुत निपुण और दाता दयालु कहिए तो वैसे ही बडे सगय सब मुनियो मे श्रेष्ठ कि जिनका तपस्या ही धन था उनके सुहावने आश्रम पर कि जिनको बडे-बडे मुनि लोग नित्य आय सेवे और जहाँ नाना प्रकार के वृक्षो पर लता सब छा रही थी पिप्पलाद मुनि आन पहुँचे। देखते ही उद्दालक ऋषि उठ खडे भए। सिर नवा प्रणाम को जैसा कुछ चाहिए वैसा आदरभाव कर आसन दे बैठाया।"

'रामचरित या अध्यात्मरामायण' की रूपातरण-शैली के सबध मे भी प्राय वही बात कही जा सकती है, जो 'चद्रावती या नासिकेतोपाख्यान' के विषय मे निर्दिष्ट की जा चुकी है। यह पुस्तक अद्यावधि अप्राप्त थी और इस ग्रथावली मे सकलित होकर पहली बार प्रकाश मे आ रही है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के आद्य सचालक आचार्य शिवपूजन सहाय की योजना के अनुसार, परिषद् के अधिकारियो की आज्ञा से, श्रीवीरेन्द्र नारायण ने अपने लदन के प्रवास-काल मे इण्डिया आफिस मे सुरक्षित पाण्डुलिपि से इसकी प्रतिलिपि की थी। श्रीवीरेन्द्र नारायण ने बिदु-विसर्ग का परिवर्तन किये विना प्रतिलिपि करके प्राय चित्र-प्रतिलिपि जैसी प्रामाणिक सामग्री सुलभ बनाई थी। उन्होने बडे मनोयोग से प्रत्येक पृष्ठ के नीचे सपूर्ण मूल का आधुनिक हिन्दी रूप भी दिया था, जिसका उपयोग अनावश्यक प्रतीत हुआ। मैने अप्रचलित या अस्पष्ट

शब्दो के आधुनिक रूप या अर्थ देकर ही सतोष किया है, जो वस्तुत उपर्युक्त आधुनिक हिन्दी रूपातरण मे भी प्राय नही दिये गये थे।

इस पाण्डुलिपि, जिसकी अविकल प्रतिलिपि अध्ययन के लिए सुलभ है, का अपने आप मे भी अनेक दृष्टियो से महत्त्व है। तद्युगीन वर्त्तनी, वाक्य-रचना, विराम-चिह्नो आदि के प्रयोग के सबध मे इस पाडुलिपि के विश्लेषण से लाभप्रद प्रकाश पडता है। यहाँ कुछ का सकेत मात्र किया जा रहा है। यह भविष्य मे स्वतत्र निबध का विषय वन सकता है।

इस पुस्तक के प्रस्तुत प्रथम मुद्रित सस्करण मे '०' इस चिह्न का तात्पर्य यह है कि मूल पाण्डुलिपि मे पक्ति इसके पूर्व समाप्त हो गई है। कोष्ठको मे जो विराम-चिह्न है, वे सम्पादक के द्वारा सुविधा के लिए दे दिये गये है।

(१) अधिकतर **व**, **ब** नही, पृष्ठ २८१ पर पहली बार ब।

(२) केवल **ष** (**ख** के लिए), **ख** नही, किंतु धनुष, वर्ष, ऋषि, हर्षित, हविष्य आदि मे **ष**।

(३) रूप इत्यादि मे सर्वत्र रू के बदले शब्द के मध्य या अन्त मे प्राय **रू**, **र**, किन्तु अरु, सारा इत्यादि मे भी कही-कही यथा-प्रदर्शित कैथी 'र' का प्रयोग है।

(४) **ड** नही।

(५) **ण** प्रयुक्त, किंतु पाषा**न**, पाषा**ण** नही।

(६) ध्वनि-विशेष के तुरत बाद उसी ध्वनि के रहने पर बहुधा एक का लोप, उदाहरणार्थ, बालक को' के लिए 'वाल को', 'राक्षस सव' के लिए 'राक्षस व', 'अधिक कहा' के लिए 'अधिक हा', 'चैन नही' के लिए 'चैन ही', 'अधिक काम' के लिए 'अधिकाम', 'स्वभाव वश' के लिए 'स्वभाव श', तथा अनेक अन्य उदाहरण।

(७) कही-कही **ज** के बदले **य**, उदाहरणार्थ, 'काम काय'।

(८) कही-कही **य** के बदले **उ**, उदाहरणार्थ, 'आउर्वल'।

(९) (क) पृ० १३४ पर पहली बार पूर्ण विराम का चिह्न '।' प्रयुक्त। इसके पूर्व कोई विराम-चिह्न नही।

(ख) पृ० ४५३ पर पहली बार अर्ध विराम के लिए '०' यह चिह्न।

(१०) छूट के लिए प्रयुक्त चिह्न — "।

[५]

श्यामसुन्दर दास के मतानुसार हिन्दी के प्रारभिक गद्य लेखको मे 'पहला स्थान इशाअल्ला खाँ, दूसरा सदल मिश्र और तीसरा लल्लू जी लाल को मिलना चाहिए।' वास्तविकता यह है कि इशा अल्ला खाँ का गद्य उर्दू गद्य का आदर्श प्रारभिक रूप मात्र माना जा सकता है। इशाअल्ला खाँ की भाषा वैसी भाषा है, जिसका ढाँचा उर्दू का है। उसमे उर्दू-फारसी स्रोत के कुछ शब्द आ जाएँ, तो वह उर्दू बन जायगी। सदल मिश्र खडी बोली मे लिखते है, किंतु तत्सम या तद्भव शब्दो

को हटा कर अरबी-फारसी से प्राप्त शब्दो को रख देने मात्र से वह उर्दू नही हो जायगी, वह तत्सम तद्भव शब्द-राशि का अधिकाधिक भार वहन करने की शक्ति का परिचय देती है और ईषत् परिष्कार से परिमार्जित आधुनिक हिन्दी का रूप ग्रहण कर सकती है। लल्लूलाल का स्थान ठीक ही सबके बाद आता है। ब्रजभाषा और हिन्दुस्तानी के छोरो को छूने वाली उनकी भाषा उस हिन्दी को पूर्वाशित करने मे असमर्थ है, जो रूप-ग्रहण करने की दिशा मे लेखको द्वारा प्रेरित हो रही थी। इसकी झाँकी सदल मिश्र के ही गद्य मे मिलती है।

नलिनविलोचन शर्मा

विषयानुक्रमणी

भूमिका	५— १८
चन्द्रावती अथवा नासिकेतोपाख्यान	३— २९
रामचरित अथवा अध्यात्मरामायण	३१—२०३

मल्लमिश्र-ग्रन्थावली

चन्द्रावती

अथवा

नासिकेतोपाख्यान

सकल सिद्धिदायक वो देवतन मे नायक गणपति को प्रणाम करता हू कि जिनके चरण कमल के स्मरण किए से विघ्न दूर होता है औ दिन दिन हिय मे सुमति उपजती वो ससार मे लोग अच्छा अच्छा भोग बिलास कर सबसे धन्य धन्य कहा अन्त मे परम-पद को पहुचते है कि जहाँ इन्द्र आदि देवता सब भी जाने को ललचाते रहते है।

दोहा

गणपति चरण सरोज द्वौ, सकल सिद्धि की राश।
बन्दन करि सब होत हे, पूरण मन की आश ॥

चित्र विचित्र सुन्दर सुन्दर बडी बडी अटारिन मे इन्द्रपुरी समान शोभायमान, नगर कलिकत्ता महा प्रतापी बीर नृपति कम्पनी महाराज के सदा फला फला रहे, कि जहा उत्तम उत्तम लोग बसते है औ देश देश से एक से एक गुणी जन आय आय अपने अपने गुण का सुफल करि बहुत आनन्द मे मगन होते है।

नाम सुन सदल मिश्र पण्डित भी वहाँ आन पहुँचा वो बडी बडाई सुनि सवविद्या-निधान ज्ञानवान महा-प्रधान श्री महाराज जान गिलक्रिस्त साहब से मिला कि जो पाठ-शाला के आचार्य्य है। तिनकी आज्ञा पाय दो एक ग्रन्थ सस्कृत से भाषा वा भाषा से सस्कृत किए।

अब सवत् १८६० मे नासिकेतोपाख्यान को कि, जिसमे चन्द्रावती की कथा कही है, देववाणी से कोई काई समझ नही सकता, इसलिये खडी बोली मे किया। तहा कथा का आरम्भ इस रीति से हुआ --

एक समय राजा जनमेजय गङ्गा के तीर पर बारह बरस यज्ञ करने को रहे। एक दिन स्नान पूजा करि ब्राह्मणो को बहुत सा दान दे देवता पितरो को तृप्त करके ऋषि और पण्डिता को साथ लिए वैशम्पायन मुनि के पास जा, दण्डवत कर, खडे हो, हाथ जोड, कहने लगे कि "महाराज! आप वेद पुराण सब शास्त्र के सार जाननिहार, तिस पर व्यास मुनि के शिष्य, सब योगियो मे इन्द्र समान हो। ऐसी कथा, कि जिसके सुनने से पाप कटे और कोई रोग न होय, भर जन्म ससार मे अच्छा भोग, अन्त मे मुक्ति मिले, हमसे कहिए।"

प्रसन्न होकर वह बोले कि "हे राजा! तुम बडे ज्ञानी हो। अच्छा, सब पाप दूर करने-वाली पुराण की कथा कि जिसके सुनने से निस्सन्देह मुक्ति होती है, मै कहता हू, तुम ऋषि वो सेवको के समेत सावधान होकर सुनो --

किसी समय मे ब्रह्मा के पुत्र ऐसे उद्दालक मुनि भए कि जिनके दर्शन से लोग पवित्र होते थे। वेद पुराण श्रुति स्मृति मे बहुत निपुण, और दाता दयालु कहिए तो वैसे ही, बडे समर्थ, सब मुनियो मे श्रेष्ठ, कि जिनका तपस्या ही धन था, उनके सुहावने आश्रम पर कि जिसको बडे-बडे मुनि लोग नित्य आप सेवै और जहा नाना प्रकार के वृक्षो पर लता सब छा रही थी -- पिप्पलाद मुनि आन पहुचे।

देखते ही उद्दालक ऋषि उठ खडे भये। सिर नवा, प्रणाम वो जैसा कुछ चाहिए वैसा

आदर भाव कर, आसन दे बैठाया। प्रीति से हाथ पाव धोला, कुशल क्षेम वो उनके वहा आवने का कारण पूछा।

वह बोले कि हम तुम्हारी बडी तपस्या इस बन मे सुनकर आए, तैसे ही तुमको देख बहुत प्रसन्न हुए। पर बिना व्याह यह तपस्या अकारथ होती है, क्योकि स्त्री के साथ तप करके ऋषि सब सिद्धि को पहुचे। और बेद की आज्ञा से सन्तान के लिये पत्नी सो भोग करना उचित है, नही तो विस बिन क्या कधी क्रिया सिद्धि होती है। और पुत्रहीन के, देवता वो पितर इन दोनो मे कोई सन्तुष्ट नही। जग मे विसके देव पितर बहुत आनन्द होते कि जिसको कुल उपजानेवाला पुत्र होता है। वो निपुत्री को घर मे क्या सुख कि जिस बिना वह सदा अन्धकार रहता है।

इसलिए हमारी आज्ञा से और सब ऋषियो के सम्मति मे किसी से कन्या याचकर अपना बश उत्पन्न करो, नही तो यह तपस्या का परिश्रम तुम्हारा सदा ही व्यर्थ है।

उद्दालक ने उत्तर दिया की महाप्रभु तप करते हमको छियालीस सहस्र बरस बीते, स्त्री के कारण अब यो उसको त्याग दे तो महा नरक भोग होए। आप बडे हो जैसी आज्ञा करिए।

हँस के पिप्पलाद ऋषि ने कहा कि तुमको यह कहना उचित नही, क्योकि बिना सन्तान योग तप कबही फलदायक नही होता है और सन्तति के लिये स्त्री के पास जाने को अगले मुनियो ने भी आज्ञा दी है। तिसमे वह ब्रह्मचारी गिना जाता है कि जो मनुष्य ऋतु समय मे उसके पास जाता है। ब्रह्मचर्य्य ते तप भग नही होता, धर्म्मशास्त्र भी कहता है।

ऐसी साची साची बाते कहके मन मे वेद के मन्त्र जपते हुए पिप्पलाद मुनि ने फिर निकट समीप जा उद्दालक से कहा कि सन्तति के हेतु भार्य्या के पास जाने से तनिक भी दोष नही, आप स्वायभुव मुनि ने ऐसा कहा है। यह वृत्तान्त वैशम्पायन राजा जनमेजय से कहते है।

जब इतना कह पिप्पलाद वहा से विदा भए तब उद्दालक चिन्ता करने लगे कि "देखो, हमारी तपस्या मे क्या विघ्न आ पडा। कहा मेरी बुढापे की अवस्था कि एक भी केश काला नही, सो सन्तति के कारण किससे कन्या हम मागे। कौन उसको देने मे प्रसन्न होगा।

ऐसे व्याकुल होकर मन मे ठहराया कि अब तो ब्रह्मा के पास चलिए, वेही हमारी अभिलाष को पुरावेगे।

तब आस पास के ऋपियो मे पूछ ब्रह्मा के निकट गए, दूर ही से दण्डवत कर हाथ जोड लगे स्तुति करने।

उद्दालक के बचन सुन सन्तुष्ट हो वो ध्यान मे जो थे सो आख खोल पितामह बोले "कि हे ऋषीश्वर! कुशल से हो? तुम्हारे आश्रम मे मङ्गल है? और यहा आवने का प्रयोजन सुनावो।"

ब्रह्मा की बात सुन उद्दालक ने कहा कि "हा महाराज, आप के अनुग्रह से सब प्रकार से आनन्द है। मुनियो ने हमको पुत्र के लिये विवाह करने की आज्ञा दी है। इसलिए तुम्हारे शरन मे आए, हमारा मनोरथ पूरण करिए"।

सुनते ही बिधाता ने कहा कि "पहले तुमको महातपस्वी कुल उद्धार करने योग्य पुत्र होगा। पीछे राजा इक्ष्वाकु के कुल की महासुन्दरी कन्या वो पतिव्रता सब गुण भरी सो तुम्हारी

भार्य्या होगी। चित्त मे कुछ चिन्ता मत करो। हमारा कहा कभी झूठ न होगा। अपने आश्रम पर जा शिव पूजन करो"।

प्रजापति की बात सुनि चकित हो उद्दालक ने कहा कि "महाराज! आप बडे होकर ऐसी मिथ्या बात कहते हो कि जो देखने मे आई, न सुनने मे। भला, बिना भार्य्या भी किसीको पुत्र होता है?"

उनका यह बचन सुनते ही ब्रह्मा वहा से गुप्त हो गए। तब उद्दालक ने जी मे जाना कि विधि का कहा अन्यथा नही। इस आस पर वहा से ईश्वर का ध्यान करते हुए अपने आश्रम पर आए कि जहाँ चारो ओर ऋषि लोग अपने अपने जप ध्यान मे लगे थे।

राजा जनमेजय से वैशम्पायन कहते है कि हे राजा! यह बहुत अच्छी कथा है इसे कान दे सुनो।

वहा से उद्दालक स्थान पर आए फिर उसी प्रकार चित्त लगाय तपस्या करने लगे। पर दिन रात स्त्री की चिन्ता मे बहुत मग्न थे इसलिये काम से पीडित भए।

निदान एक दिन इसी ध्यान मे थे कि उनका बीज पतन हुआ। तुरन्त उसे हाथ मे ले कमल मे रख कुश मे बाध गगा मे जा छोड दिया। दैवयोग वह बहा हुआ चला सो राजा रघु की पुरी के सामने आ पहुचा।

वहा चन्द्रावती नाम उस राजा की महा सुन्दरी कन्या, जिसके लक्षणो का वर्णन न तो किया जाता है, न तो कोई वैसी देवतो की कन्या न गन्धर्व्व और नागो की देखने मे आई, न सुनने मे कि जिसके रूप को देखके जग जीतने वाले कामदेव भी मोहित होए और तीनो लोक मे ऐसा कोई नही कि उसकी आँखो के देखने से अचेत हो न गिरे। दश सहस्र राजो की कन्या दिन रात उसकी सेवा टहल मे रहती थी अपने बाप के घर मे नाना भात आनन्द बिहार किया करती। सागर मे लक्ष्मी वो तारन्ह मे चन्द्रमा समान शोभनी, सब रनिवास मे उसके चोथाई भी रूप किसीको नही कि जिसको देखकर आपस मे लोग सब कहते थे कि इसे विधि ने अपने हाथो से बनाया। कोई तो कहता था कि अरे! यह इन्द्र की अप्सरा है किसीके शाप से इहा आ पहुची। औ राजा रघु को जो पूछो तो जिनका इक्ष्वाकु के कुल मे जन्म, वेद शास्त्रो मे एक, बडे धर्मात्मा, सारी पृथ्वी का पति, काम लोभ को जीते हुए प्रजा पालने मे सदा प्रसन्न, ब्राह्मणो का भक्त, कि जिसको सत्य ही व्रत, उसके राज्य मे न तो किसीको कुछ रोग और दुख होए, हृष्ट पुष्ट सब लोग अति पराक्रमी और बडो के आगे छोटो का मरण ओ नित्य घर घर मगलचार होता था।

वैशम्पायन जनमेजय से कहते है कि हे महाराज! उस राजा की चन्द्रावती कन्या तरुण अवस्था मे सहेलियो के साथ सब दिन गगास्नान कर षटरस भोजन वो सोरहो शृगार किया करती थी।

एक दिन सखियो का सिगार कर मोतियो के हार उनके गलो मे डाल, घोडो पर चढाया। किसीके हाथ मे ध्वजा, वो किसीके छत्र, किसीके कर मे चौर। कितनी गाती थी कितनी बजाती, कितनी नाना भाति कुतूहल करती थी।

उसी समय मे ब्राह्मण सब आय आय मङ्गल वेदध्वनि और भाट विखार[1] राजा रघु के बश का बखान करने लगे। घडी भर मे वो गङ्गा के तट पर जा पहुची। वहा बहुत सा बिहार कर उन्हीके साथ जा स्नान करने लगी, कि देखती क्या है कि एक कमल का फूल सोने का सा बनाया, महा सुगन्ध, कुश से लपेटा हुआ सन्मुख बहा चला जाता है । तो बिलग बिलग कहने लगी कि देखो देखो, क्या अच्छा फूल बहा आता है, इसको कोई मुझे शीघ्र ला दो। मै जानती हू कि स्वर्ग पर से किसी देवता का वह गिर पडा है कि जिसकी छवि से गगा के दोनो ओर अब कैसे शोभायमान हो रहे हैं।

सुनते ही एक सखी ने झट ला राजपुत्री के हाथ मे दिया। वह बहुत प्रसन्न हो खोल कर ज्यो लगी सूघने, कि वह बीज जिसे उद्दालक मुनि ने उसमे रक्खा था, नाक के पथ से पेट मे चला गया। पर चन्द्रावती ने कुछ भी न जाना कि मेरे उदर मे क्या गया है और स्नान पूजा कर हर्षित हो अपने मन्दिर मे सबके सङ्ग चली आई।

पहिले मास मे तो उस कन्या को कुछ अधिक सा देह मे रूप उपजा और दूसरे मे गर्भ का लक्षण जानने मे आया। तीसरे मे पियरा मुह हो गया। चौथे मे रोए अलग अलग होने लगे, पाचवे मे कुच व नितम्ब ऐसे भारी हुए कि जिनके भार से अलसा कर किसी से कुछ बात चीत न कर सकती। छठवे महीने मे उसकी माता बडा सा पेट देख व्याकुल हो तुरन्त धरती मे गिर पडी। क्षन एक तो मूर्छित रही, पीछे कुछ एक चेत कर उठ बैठी और लगी सोचने कि क्या मै यह स्वप्न देखती हू, कि मेरी मति मे कुछ भ्रम हुआ है कि जिसका सम्भव नही सो देखने मे आया।

ऐसे विचार, फिर लगी कहने कि देखो रे भाई! दश सहस्र राजकन्या सदा इसकी रक्षा मे रहती है, तिस पर भी यह दशा हुई है! हाय! हाय! कैसा कुल मे कलङ्क हुआ। जो सुनेगा सो क्या कहेगा?

इस भाति पछिता कर उससे पूछने लगी कि अरे बेटी! यह क्या तेरी अवस्था है? सत्य बात हमसे कहो।

तब वह बोली माता! मै कुछ नही जानती हू कि कैसा चरित्र हुआ। मै बडी अभागिनी हू। अब प्राण ही त्यागना बना, क्योकि किसी प्रकार से कहू पर हमारी बात को कोई कदही साच नही मानेगा। कहा सूर्य का बश, कि जिसकी उत्तम कीर्त्ति तीनो लोक मे प्रसिद्ध है, और कहा उस कुल की हम कन्या कि जिस की जग मे अब ऐसी हँसी होगी! अपने पिता को कौन मुह दिखाऊगी। नही जानती हू कि अगले जन्म मे कैसा काम किया कि जिसका महादुखदायक यह फल आन पहुचा है। जैसी शोक सन्ताप मे अब हू वैसी त्रिभुवन मे जो ढूढो तो न कोई देवतो की कन्या, न गन्धर्व और असुरो की, न नागो की, न किसी किन्नर और मनुष्यो की होगी।

अपना पेट फाड मरो तो मर सकती हू पर आत्मघात वो दूसरे एक जीव का बध कि जो मेरे गर्भ मे है, ये दो हत्या होती है, इसलिये सो भी न कर सकती हू। कहो क्या कहती हो?

वह कहते ही पृथ्वी मे गिर पडी जैसी कोई फूली फली लता पेड पर से नीचे गिर पडे।

---

१. भिखारी। (?)

ऐसी उसको देख रानी छाती पीट कर बोली कि बेटी ! क्या जाने किसने तुमको छला कि जिससे ऐसा काम किया। अब क्या करे, कहा जाऊ औ किसको पूछू ?

इस भाति बहुत सा विलाप कर निदान वह भी धरती पर गिरी। तुरन्त सहेलिया उठाकर अनेक प्रकार से समझाने लगी।

यह वृत्तान्त सारे राज मे फैल गया। दिन रात घर घर यही चर्चा हो रही कि देखो रे भाई ! स्त्रीजन का विश्वास न करना, राजा रघु ने चन्द्रावती को लडकई से आज तक सुग्गा सा पढाया। वो वैसा ही मानते रहे है। व्रत नियम पूजा ध्यान मे उसकी लगन देखकर जी मे महाराज बहुत प्रसन्न थे कि यह कोई देवी है कि सुतपस्या से चूक के हमारे यहा आ जन्मी है। इसलिये दश सहस्र अपने जात भाई की कन्या उसकी सेवा मे रखी थी वो बेटो से भी अधिक प्यार करते, वो निपट भोली सी जानते थे, और ऐसा नेम आचार कि सब दिन भली भाति से गङ्गा स्नान वो ठाकुर की पूजा, पुराणो का श्रवण होता है, और विवाह के लिये कितना हठ हुआ पर यह अभागी ने न माना, वो कुकर्म्म किया तो ऐसा कि जिससे राजा रघु के कुल मे कलङ्क लगा।

कोई तो लगा कहने कि हे भगवान ! सब दो पर लडकी नही कि जिससे लोक मे हँसी होय।

वहा रानी उनके कहने मे दो एक दिन तक उस बात का छिपाए रही। जब जाना कि अब लोगो मे यही बात कानाकानी हो रही है, तब भय मे डरती कापती और नैनो से आसू ढलकाती, जैसे सोने की लता पर से मोतिया के फल झरे, कहने लगी कि महाराज, बडा अनर्थ हुआ, इसका कुछ पारावार नही। जीवदान मिले तो यह आपके आगे कहू कि जिसके सुनने से रोएँ खडे होगे।

यह सुनते ही राजा चहुक उठे क्षन एक तो ईश्वर का ध्यान किया, फिर बोले कि महारानी ! शीघ्र कहो। क्या ऐसा अनर्थ हुआ कि जिससे इतना घबरा रही हो ? मैने जीवदान दिया। इसका कारण कहो। हमारे जीते ही तुम्हारी [यह अवस्था होय। रानी बोली महाराज ! बडा अद्भुत वृत्तान्त है। आपकी कन्या को बिना पुरुषसंग के गर्भ भया है, सो यह कुल को दूषन देनेहारा और कीर्ति को नाश करनिहारा है। यह सुनि राजा क्षण भर तो चुप रहे। पीछे क्रुधित हो बोले, अरे पापिनी ! तूने यह क्या किया ? ऐसा कहके उसके वन मे छोड आने की आज्ञा दी।

यह आज्ञा पाय सेवक रथपर चढा उस रोती भई कन्या को वन मे छोड आए। उस बन मे व्याघ्र और सिह के भय से वह अकेली कमल के समान चञ्चलनेत्रवाली व्याकुल हो ऊचे स्वर से रो रो कहने लगी कि अरे विधना ! तैने यह क्या किया ? और बिछुरी हुई हरनी के समान चारो ओर देखने लगी। उसी समय एक ऋषि जो सत्य धर्म मे रत थे] इन्धन के लिये वहा जा निकले दूर ही से उसका रोना सुनके अति व्याकुल हो लगे सोच करने कि यह तो अनाथ स्त्री कोई कादती[1] है, इस महाबन मे कहा से आई ? कौन सी विपत्ति मे पडी है।

---

१. बँगला में काँदना रोने को कहते है।

तब मुनि से रहा नही गया, सो निकट चले आए और देखकर जी मे कहा कि हो न हो यह अहल्या है कि द्रौपदी, कि इन्द्र की अप्सरा तिलोत्तमा कही से भूल पडी। इसके हाथ पाव के आगे क्या कमल का फूल कि जिनके देखने से तनिक भी नही मेरी आँखे तृप्त होती है। और चन्द्रमा समान बदन, केहरि कटि, मृग का सा चञ्चल नयन, बडी बडी छाती कि जैसे सोने का दो ग्ग्ग्ग होग लाल अधर, तोते की सी नाक कि जिसके नीचे एक तिल कुछ और ही शोभा दे रहा है। इस भाति रूप देख चकित हो निदान पूछा कि कहो कहा से आई हो और क्यो इतनी आतुर हो रोती हो ?

कन्या बोली महाप्रभु ! मै राजा रघु की बेटी हू। चन्द्रावती मेरा नाम है। मुझसी अभागी दूसरी कोई नही। दश सहस्र नृपराजाओ की कन्या के बीच मे रहके कि किसी पुरुष का मुह अपने जानने मे न देखा वो नाना प्रकार के भोग बिलास छाड सदा मै ठाकुर की सेवा करती थी। न जानू कि यह गर्भ कहा से हुआ। इस कारण पिता ने देस निकाल दिया। यह सत्य बात आपके आगे कही, पर बिश्वास न कीजिएगा।

ऐसा उसका मधुर बचन सुनके ऋषि दया कर बोले कि आज से तू मेरी धर्म्म की बेटी। आवे हमारे आश्रम पर चलो। और भी मुनि लोग वहा रहते है, उनके समेत अपनी बिपत्ति काटो जब तलक अच्छा सा दिन न आवे।

मुनि की बात सुनि चन्द्रावती बोली कि हे स्वामी ! बहुत अच्छा। इस दासी पर बडी दया की जो आके दर्शन दिया। आपके अनुग्रह से सब पीडा हमारी दूर हो गई। अब तुम्हारी सेवा टहल से ससार-सागर पार हो जाऊगी।

इस प्रकार प्रार्थना कर उठ खडी भई। साथ साथ उस स्थान पर आई कि जहा सैकडो ऋषि लोग अपना अपना याग तप पूजा अर्च्चा कर रहे थे। वो कुण्ड मे क्या अच्छा निर्मल पानी कि जिसमे कमल के फूलो पर भौरे गूज रहे थे, तिस पर हस सारस चक्रवाक आदि पक्षी भी तीर तीर सोहावन शब्द बोलते आस पास के गाछो[१] पर कुहू कुहू कोकिलै कुहुक रहे थे, जैसा बसन्त ऋतु का घर ही होय।

राजपुत्री पवित्र आश्रम देख, वही सन्तुष्ट हो जी मे लगी कहने कि ईश्वर ने बडी ही दया की जो गर्भ मुझको दिया। नही तो राजभोग छाड वो पिता माता की प्रीति की डोरी तोड क्योकर इन महापुरुषो का दर्शन होता। भला ये भी अच्छा ही हुआ जो लोगो मे हमारी हँसी हुई। और अब एक चित्त हो इन मुनियो की सेवा वो योग तप करूगी वो आवागमन से छूटूगी। ऐसा विचार रहने लगी।

जब नवा महीना बीता तब सकुचा सिर झुका उसने ऋषियो से कहा कि महराज अब पूरे दिन चले आते है, इसलिये मै एक दूसरे स्थान मे जाया चाहती हू जो आराम से बालक हो वो यह यज्ञशाला न अशुद्ध हो।

तब तपस्वियो ने तुरन्त किसी बन मे, कि जहा घने-घने पेडो पर लता पसर रही थी, उनके नीचे कोठरी सा बना हुआ एक स्थान बता दिया।

---

१. बँगला मे वृक्ष को गाछ कहते है।

प्रसन्न हो वहा वह गई। एक दिन ज्यो लगी उसे वेदना होने, त्योही कुज के द्वार पर जा सूर्य्य के ओर सन्मुख हाथ जोड खडी हो लगी कहने कि हे त्रिलोकनाथ! तुम सबही के अन्तरयामी हो। और इस बनके देवता और देवियो! तुम सब भी मेरी बात को कान दे सुनो। जो मैने स्वप्न मे भी कदही आज तक किसी पुरुष का मुह न देखा होय तो यह गर्भ जैसा ही हुआ वैसा ही निकल जाय।

इस भाति विनती कर भीतर जा बैठी और आख मूद ध्यान करने लगी। इतने मे गर्भ नाभी मे हृदय मे आया। वहा से कण्ठ मे जा नाक के पथ से महातेजस्वी सूर्य्य समान पुत्र उत्पन्न हुआ।

देखते ही चन्द्रावती बहुत आनन्दित हो तुरन्त उसे गोदी मे ले उस तपस्वी से जो साथ मे वहा लाया था पुकार कर कहा कि हे पिता! नाक मे हमको अति सुन्दर बालक हुआ। क्या नाम रखे? इस समय कैसी लगन है? वह बोले कि नाक से भया इसलिये इसका नासिकेत नाम हुआ, वो लगन से जाना गया कोई बडा ही महापुरुष योगी होगा कि जिसके आगे देवता सब भी हाथ जोडे रहेगे।

इतना कह मुनिया को बुला मङ्गल गान कराया। वैशम्पायन कहते है कि हे राजा! दस दिन के बीतने पर चन्द्रावती नहा दूध पिला लडके का घर मे सुला कर फिर ऋषियो की सेवा करने लगी।

एक दिवस उनकी टहल करते कुछ विलम्ब हुआ सो बालक जाग उठा। मारे भूख के चिल्ला चिल्ला के रोने लगा। तब वह कोप मे आकुल हो उसके निकट जा लगी कहने "अरे दुष्ट! देख, तेरे कारण मा बाप ने घर से मुझे निकाल दिया वो लोगो मे हँसी हुई। तू बेटा नही कोई बैरी आ जनमा। अब हमारी तपस्या वो मुनियो की सेवा मे बाधा करने चाहता है। इससे तेरा दूर ही होना अच्छा है।"

ऐसे कह एक घास के बोझे पर रख के उसे गङ्गा मे बहा, आप जा मुनियो को हर्षित हो फिर सेवने लगी कि जिससे थोडे ही दिन मे ज्ञान विज्ञान को पहुची। और बालक जो बहा हुआ चला, सो कुछ दूर आगे गङ्गा के तीर उद्दालक ऋषि स्नान करते थे, उनके समीप आ लगा।

देखते ही वह चकित हो चारो दिशा चितोने लगे कि किस निर्दई ने घास पर इतना बडा लडका बहा दिया है! कुछ भी उसके जी मे दया न उपजी! इतने मे ब्रह्मा की बात उनके मन मे आई कि जो पहिले पुत्र तिस पीछे तुमको स्त्री मिलेगी।

तब तुरन्त हर्ष से दूने हो वही लडके को गोदी मे उठा लिया और वेदमन्त्र से नहलाय बाहर आए। बार बार बिधि की स्तुति करने लगे कि धन्य हो पितामह, तुम्हारा कहा क्योकर झूठ होए। चलो पुत्र की चिन्ता तो गई। अब भली भाति से तपस्या करूगा जो स्वर्ग से न टलूगा।

ऐसे विचार अपने आश्रम पर पहुच पुत्र को कहा कि सुनो पूत! यह पुण्यस्थान मे नाना प्रकार के आचारो से महर्षियो को प्रसन्न, पिता की सेवा, कन्द मूल आहार करते रहो, जो इसी मे सब विद्या भी तुमको अनायास आ जायगी।

इतनी आज्ञा कर उद्दालक मुनि योग्य पुत्र पा कृतार्थ हो अपनी क्रिया मे अति सावधान भए।

वैशम्पायन राजा जनमेजय से कहते हैं, हे महाराज ! थोडे दिन बीते पर जब रघु की पुत्री का क्रोध सब मिट गया, तब पुत्र का ऐसा मोह हुआ कि जिससे शोकसागर मे डूबी चारो दिशा शून्य वो अधार ही देखने मे आया।

चौपाई

योग और तप कुछ नही भावे। रह रह नयन नीर भर आवे।।
क्योंहू क्षण भर धीर न पावे। आकुल हो हो समय बितावे।।

दिन रात रोने कलपने वो कहने लगी कि धिक्कार है मुझको जो बिन अपराध बालक को नदी मे बहा दिया। क्या मेरी तपस्या यह फलैगी कि जिसने ऐसा अधर्म किया, मनुष्य तो क्या कोई पशु भी न यह काम करेगा कि जो मैंने किया है। हाय पुत्र ! कहा गए ? तनिक भी मेरे मन से न भूलते हो। अब विना तुम्हारे मिले न तो मै कुछ खाऊगी न पीऊगी।

ऐसे विचार पुत्र के लिये आकुल हो वहा से उठ जहा तहा बाडी मो दौडी फिरती और जिस तिस बनबासियो से पूछती कि अरे लोगो ! तुम सबने इधर एक लडका तो कही नही देखा है ?

जब किसी ने कुछ भेद न बताया तब शोक सताप से अचेत हो निदान गङ्गा के तीर तीर उसे ढूढती हुई चली। सो कुछ दूर आगे बढ गई कि जहा बहुत से मुनियो के सुथरे सुथरे आश्रम थे और वोही बालक वहा गङ्गा मे नहान को आया था।

देखते ही हर्ष से सोगुनी भई वो झट उसे गोदी मे उठा वारबार मुह चूमने लगी कि कहो पुत्र किसने इतना बडा पालन के किया ? उस मुनि का कौन सा आश्रम और क्या नाम है ? मैं तुम्हारी माता हू क्यो मुझे नहीं चीन्हते हो ?

बालक बोला कि माता ! मैं उद्दालक ऋषि के स्थान मे रहता हू कि जो एही साम्हने देखती हो और वो ही हमारे पिता माता देवता गुरु है। अबही कन्द मूल लाने बाहर गए हैं।

यह बचन कह अपने आश्रम पर उसे वह ले गया और आसन दे बैठाया। पानी लाकर पाव को धो दिया वो कहा कि माता तुम यहा आराम करो, तब तक इस अग्निशाला को हम लीपते है।

सुनते ही वह बोली कि पुत्र ! तुम रहो, आज मैं ही लीपौगी। ऐसे कह उठके सारे घर को बोहार सोहार गोबरी मिट्टी पानी लाय बाहर भीतर बहुत सुन्दर लीप पोत आप गङ्गा के तीर जा बैठी।

इतने मे उद्दालक ऋषि वन से कन्द मूल ले आन पहुचे। देखते हो आश्चर्य माना कि आज तो बडी भाति से शाला लीपी गई।

निदान हँस के बोले कि पुत्र ! हम तुम्हारे भक्तिभाव से निपट प्रसन्न भए। मागो, हमसे क्या बर चाहते हो। तब नासिकेत ने कहा कि महाराज ! यह काज मैंने नही किया, मा मेरी आई है। उन्हीने आश्रम को ऐसा सोहावन किया है। उद्दालक ने पूछा कि बेटा ! तुम्हारी माता कहा है ? बुला लावो, हम देखेगे।

सुनते ही वह गङ्गातीर दौडा गया और मा से बोला कि पिता हमारे आए है, तुम्हे बोलाते है। चलो, वहा अहार कर रहो।

वो बोली कि पुत्र ! क्या अजगुत कहते हो कि जिससे लोक मे निन्दा और अन्त मे नरक होय। भला सुनो तो, पिता माता भाई गोतिया ये सब कन्यादान कर सकते है, पर पुत्र को कही नही सुना जो अपनी माता को और किसीको देता है।

वो क्योकर मै बडे कुल की कन्या, फिर तिसमे तपस्विनी, अपने से पति करू ? सो हमारे कहे से जाव, यह सब बात चीत सब बाप से कहा, वे जैसा कुछ उचित होगा सो करेगे।

तब वह उठ पिता के पास आया। देखते ही वे बोले अरे पुत्र ! अकेले ही तू चला आया, उसको क्यो नही लाया ?

नासिकेत ने कहा कि महाराज ! मैने तो कहा था, पर आप के निकट आना उनके जी मे न आया और उन्होने कहा कि सुनो पूत, मेरे यह युवा अवस्था मे मत भूलो कि जिस किसे के पास यह जाती हे। मे जवान हू सही, पर सैकडो पतिव्रता मे एक पतिव्रता वो राजा की कन्या हू, बिना व्याह तुम्हारे पिता के निकट नही जा सकती। वे भी वेद पुराण सब शास्त्रो से इसका दोष जानते होगे।

उद्दालक बोले कि अच्छा, पुत्र, जाना, बिना विवाह यहा नही आवेगी। फिर जा पूछो कि तुम कौन से राजा की कन्या हो, वा अल्पवयस मे बनवास हुआ सो क्या कारण। हम जो तुमसे जन्मे सो किस प्रकार से, इसका उत्तर ले आवो।

पिता का सन्देस फिर उसने अपनी माता को जा सुनाया। तब वो बोली कि पुत्र ! तुम्हारे पिता तो सब हमारा बृतान्त आप ही जानते होगे, क्योकि बडे सिद्ध है। तौ भी सुनो मै कहती हू।

आज काल्ह सारे पृथ्वी का पति ऐसे राजा रघु को ईश्वर ने बनाया है कि जिसक उत्तम जश देवता लोग भी स्वर्ग मे गाया करते है औ सत्र धर्म्मात्मो मे आगे वही गिने जाते है। उन्हीकी तो मै बेटी हू। चन्द्रावती मेरा नाम हे। क्या क्या सुन्दर दस सहस्र राजाओ की कन्या दिन रात हमारी सेवा मे हाथ जोडे खडी ही रहती थी। आदर भाव जो पूछो तो बेटो से भी अधिक पिता मुझे मानते थे।

एक दिन विपत की मारी हुई सहेलियो के साथ मै गङ्गा नहाने को गई। वहा एक कमल का फूल कुश से लपेटा हुआ धारा मे बहा चला आता था। बहुत सुन्दर देख एक सखी ने उसे हमारे हाथ मे ला दिया। गाठ खोल लगी जो मै सूघने सो वही उसके भीतर से कुछ दूध सा नाक के पथ से मेरे पेट मे चला गया। वो गर्भ का कारण हुआ। थोडे दिन बीते जहा तहा यह बात कानाकानी होने लगी। निदान पिता के कान मे जा पडी। सुनते ही वह आग हो गए। तुरन्त मारने की आज्ञा दी। पर मत्रियो के कहने से एक महाबन मे छोडवा दिया। दैवयोग से फिरते फिरते एक मुनि वहा जा निकले। रोती हुई मुझको देख बेटी कह अपने आश्रम पर ले जा पालने लगे, वो उन्ही के स्थान मे मेरी नाक से, पुत्र, तुम्हारा जनम हुआ, इसलिये ऋषि ने नासिकेत नाम रखा।

एक दिवस मुनियो के निकट हमको कुछ अधिक अटकाव हो गया, इसमे बार बार तुम घर मे रोने लगे। तब क्रोध की लहर जो उठी सो आकुल हो मै दौडी गई। जाते ही घास के बोझ पर रख गङ्गा मे जा तुमको बहा दिया। कितने एक दिन पीछे मोह से अचेत हो देखने के लिये फिर मै गङ्गा के तीर पर गई, वो सब ठाव ढूढती खोजती अब इहा आन पहुची हू ।

माता की इतनी बात नासिकेत ने अपने पिता को जा सुनाई। बहुत आश्चर्य मानकर वे बोले कि बडो का कहना क्या कबही झूठ होता है ! देखो, ब्रह्मा ने जो कहा सो देखने मे आया। अच्छा पुत्र ! कन्द मूल भोजन करा अपनी माता को साथ ला रखो। राजा रघु के पास कन्या याचने को मै जाता हू।

ऐसे कह वह वहा से चले सो कई एक घडी मे उनके नगर मे जा पहुचे। चारो ओर पुरी की शोभा और लोगो को अति सुखी देखते हुए बहुत प्रसन्न हो नृप के द्वार पर गए।

तुरन्त द्वारपालो ने रघु से जा कहा कि महाराज ! एक कोई ऋषि महातेजस्वी बाहर आय खडे है।

सुनते ही वे मन्त्रियो को साथ ले दौडे हुए आए। आवते ही मुनि के चरणो पर गिर पडे और हाथ पकड भीतर लेजा अपने सिहासन पर बैठाय कुशल क्षेम पूछ गङ्गाजल ले ऋषि के पाव पखार चरणोदक लिए। और जैसा कुछ चाहिए वैसा आदर मान कर हाथ जोड कहने लगे कि महाराज ! बडा अनुग्रह किया जो आके दर्शन दिया। अब हमारी सब क्रिया वो जन्म सुफल हुआ। चाहिए कि आज से मेरे राज मे सब भला दिन हुवा करेगा, क्योकि जहा तुमसे ऋषियो की दया है, वहा सदा ही आनन्द बिहार होता है। अब कहिए किस कारण से यहा आगमन हुआ, सो इस दास को सुनाइए।

ऐसी नृप की मीठी मीठी बातो से हर्षित हो बार बार आसीस कह उद्दालक बोले कि धन्य है तुम्हारी माता वो पिता कि जिनको तुमसा धर्म्मात्मा पुत्र हुआ। और स्वर्गलोक मे देवतो की कन्या दिन रात घर घर तुम्हारा गुण गाती है । तुम्हे बडा दानी जान कन्या याचने को मै आया हू। धर्म्मावतार ! वेद की विधि से हमको उसे दीजिये तो लाख गो दान किए का फल पावोगे ।

यह बात सुनके नरेश ने कहा कि स्वामी ! अन्न वस्त्र हाथी घोडा द्रव्य जितना चाहिए सो हमसे सब लीजिये, पर कन्या तो मेरे घर मे नही जो आपको मै दू।

मुनि बोले कि सत्य, वह पतिव्रता कन्या बिना व्याही हुई तुम्हारे मन्दिर मे नही, पर कही होगी। कुल बढाने के लिये मुझको दीजिए, कोटिन्ह अश्वमेध यज्ञ का पुण्य सहज मे होवेगा।

ऋषि की आश्चर्य बात सुन शोक से आकुल हो सकुचाकर राजा कहने लगे कि महाराज ! प्राण से भी अधिक प्यारी एक पुत्री हमको थी सही, पर कुछ दोष सुनि मारे क्रोध से उसे घर से मैने निकाल दिया। सो आपके योग्य नही। और ईश्वर जाने कि अब जीवती है कि मर गई।

तब उद्दालक मुनि पिछला समाचार भूपति को सुनाने लगे। जिस प्रकार ब्रह्मा से वर मिला और अपना बीज कमल के फूल मे रख गङ्गा मे बहा दिया था विसके सूघने से चन्द्रावती को गर्भ हुआ। सो देख राजा ने बनवास दिया। वहा एक मुनि के आश्रम पर उसको नाक से पुत्र हुआ।

ो आगे नासिकेत, पीछे चन्द्रावती की अपने यहा आवने की बात सो सब मुनि ने बेवरे समेत राजा को सुनाई।

तब वे सुनकर बार बार पछिता पछिता रो रो कहने लगे कि हाय ! हाय ! यह देवचरित्र मैने कुछ नही जाना। हमसा पापी अधर्म्मी दूसरा कोई नही जो बिना अपराध बेटी को बनबास दिया।

ऐसे कहते हुए वहा से तुरन्त हर्षित हो उठे। वो भीतर जा मुनि ने जो आश्चर्य बात कही थी सो पहिले रानी को सब सुनाई। वह भी मोह से व्याकुल हो पुकार पुकार रोने लगी वो गिड-गिडा गिडगिडा कहने कि महाराज ! जो यह सत्य है तो अब ही लोग भेज लडके समेत झट उसको बुला ही लीजिए, क्योकि अब मारे शोक के मेरी छाती फटती है। कब मै सुन्दर बालक सहित चन्द्रावती के मुह, कि जो बन मे रहने से भोर के चन्द्रमा सा मलीन हुआ होगा, देखोगी। देखो यह कर्म्म का खेल, कहा इहा नाना भाति भोग बिलास मे वो फूलन्ह के बिछौने पर सुख से रात दिन जिसके बीतते थे, सो अब जगल मे कन्द मूल खा काँटे कुश पर सो कर स्यारो के चहुदिशि डरावन शब्द सुनि कैसे बिपति को काटती होगी।

राजा बोले कि माता पिता से प्राणी का एक जन्म ही तो होता है। और सुख दुख जो पूछो तो जब जैसा बदा तब तैसा, क्या राजा क्या प्रजा, सब ही छोटे बडे को होता है।

इतने मे जहा से सखी सहेली और जात भाइयो की स्त्री सब दौडी हुई आई, समाचार सुनि बहुत जुडाई, मगन हो हो नाचने गाने बजाने लगी, वो अपने अपने देह से गहना उतार उतार सेवको को देने लगी और अनगणित रुपैया अन्न बस्त्र राजा रानी ने ब्राह्मणो को बोला बोला दान दिया। आनन्द बधावा बाजने लगा। हर्षित हो नरेश ने वहा से सभा मे जा ऋषि से कहा कि महाप्रभु ! आपने मेरा बडा कलङ्क मिटाया है। इस आनन्द का कुछ पारावार नही। अब निश्चिन्त हो इहा विराजिए, कन्या मगा आपको मै दूगा।

ऐसे कह अमृत पदार्थ भोजन करा अति आदर से मुनि को टिकाया, वो तुरन्त सेवको के सहित पालकी भेज नाती समेत बेटी को बन से मगा लिया। गले लगा सब रनिवास भेट किया। बालक गोदी मे ले मतारी लडकी के घर मे बैठा रो रो बन की बात पूछने लगी। भाई गोतिया हित मीत नगर के लोग देखने को आए। भीतर बाहर नृप के मन्दिर मे मारे भीड के उथल पथल हो गया। तब भूप ने पण्डितो को बुला दिन विचार बडी [प्रसन्नता से सब] राजा वो ऋषियो को नेवत बोलाया। लगन के समय सबो को साथ ले मण्डप मे कि जहा मोनन्ह के थम्भ पर मानिक दीप बरते थे, जा पहुँचे। मोतिन्ह से पूरा हुआ चौक मे रतन जडा पीढा रखवा उस पर वर कन्या दोनो को पटम्बर वो गले मे हीरे की माला पहिरा बैठाया और वेदरीति से ब्याह आरम्भ किया। ब्राह्मण सब वेद पढने लगे। भाति भाति के बाजन लगे बाजने, वो कथक गाने, बन ठन वेश्यागण जहा तहा नाचने, हर्षित हो राजा ने कन्यादान कर सहस्र हाथी लाख घोडे वो गौ, असख्य बासन भूषण बस्त्र रुपैया जँवाई को यौतुक दिया। फिर हाथ जोड विनती किया कि सुनिए महाराज ! आपने निपट हमको सनाथ किया। मेरे घर मे ऐसी कोई वस्तु नही कि जिससे तुम्हारी मै पूजा करू। देखिए, सागर को जल से, सूर्य्य को दीप से पूजते है, तिन्हको क्या उन से आनन्द होता है ? नही, महात्मा लोग आदर मान ही से सन्तुष्ट होते है।

इतनी कह ऋषि के चरण पर गिर पडे। अति प्रसन्न हो मुनि उठ पीठ ठोक आशीस दे बोले कि धन्य हो राजा रघु ! क्यो न हो। मुह पर कहा तक बडाई करे। भगवान ने तुमको बडी बुद्धि दी है। ईश्वर करे यो ही सदा फूले फले रहो। और यह हमारे यौतुक को हाथी घोडे द्रव्य तुम्हारे ही घर मे रहे, क्योकि वन के बसनेवाले तपस्वियो को इनसे क्या काज।

ऐसे कह धन छोड सब से मिल नासिकेत समेत भार्य्या ले उद्दालक मुनि वहा से अपने आश्रम पर आए।

तब राजा जन्मेजय ने वैशम्पायन ऋषि से कहा "ऐ महाराज ! सुना है जो स्थान पर आके कुछ दिन के बीते पर पिता के शाप से जीवित ही नासिकेत यम के पास गए और आए सो कृपाकर हमको सुनाइए कि जिससे सन्देह मेरा दूर होए"।

वे बोले हे राजा ! अति आश्चर्य्य कथा है, तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हो मै कहता हू, एक चित्त हो सुनो —

इस प्रकार राजा रघु की बेटी चन्द्रावती को व्याह साथ ले फिर उद्दालक तपस्या करने लगे और नासिकेत को योग की श्रद्धा हुई सो वे लगे योग करने।

एक दिन पिता ने उनको आज्ञा दी कि पुत्र ! आज हमको अग्निहोत्र यज्ञ करना है, तुम कन्द मूल फूल फल जितना मिले सो शीघ्र जा ले आवो।

सुनते ही वे उठ खडे भए और किसी घने बन मे जा पहुचे। वहा हस सारसो से सुशोभित ऐसा कोई सुन्दर सरोवर देखा कि जहा अच्छा निर्मल पानी, तिस मे भाति भाति के कमल फूले थे, और उसके तट के वृक्ष सब अमृत समान फलो से फले थे। तब हर्षित हो उसके तट पर जा विधि से स्नान सन्ध्या कर शिव की पूजा करने लगे और समाधि लगाई, सो बरस दिन उनको वहा बीत गया। पीछे जब ध्यान छूटा तो तुरन्त कन्द मूल फूल फल कुश वो ईधन ले पिता के पास आन पहुँचे। देखते ही वे क्रोध से लाल आख कर बोले —

चौपाई

इतना दिन कहो कहा लगाए। तेरे कारण बहुत दुख पाए॥
अग्निहोत्र वह यज्ञ हमारा। तुम बिन गया अकारथ सारा॥

पुत्र करते है सुख पाने को, नही तो निपुत्र होना अच्छा। अब ही पिता माता को दुख देने लगा, न जाने आगे क्या करेगा। देखो अग्निहोत्र से ब्रह्मा आदि देवता और पितर सब सन्तुष्ट होते है, सो हमसे कुछ हो सका नही।

पिता की बात सुनि नासिकेत बोले कि अग्निहोत्र कर्म्म केवल ससार के बधन के लिये है, मेरे जानने मे तो योग समान कोई दूसरी क्रिया मुक्तिदायक नही, कि जिसको ब्रह्मा आदि देवता सब भी साधते रहते है।

उद्दालक बोले वेद पढि अग्निहोत्र करके करोडन्ह बरस सुरपुर मे नाना भोग बिलास करते है। योग से कहो क्या होता है।

नासिकेत ने कहा वेद पढि अग्निहोत्र करने से बार बार ससार मे आते जाते हैं। योग साधने से इस देह से मुक्ति हो आनन्द विहार करते हैं।

यह समाचार वैशम्पायन मुनि राजा जन्मेजय से कहते हैं कि इस प्रकार पुत्र को बराबर उत्तरदायक जान उद्दालक ऋषि ने शाप दिया कि जाव, अब ही तुम यमलोक सिधारो। अब इहा तुम्हारे रहने से हम प्रसन्न नही। पहिले तो वे डरावने शाप से लगे कापने फिर धीरज कर योग के बल से तुरन्त यम के निकट चल खडे भए।

सुनते ही आस पास के मुनि सब हाय हाय करते दौड आए। सिर मे जटा, अग मे बभूत केले के छिलके का लगोट बाधे, मृग का चर्म्म ओढे छोटा सा लडका जान, मीठी मीठी बात कहते देखकर बहुत पछताने लगे।

पाव पकड मतारी रोने कलपने लगी। तब उद्दालक मुनि मोह से आकुला कर कहने लगे क्यो पुत्र! हमको बिसराए चले जाते हो। हम समान कुटिल कठोर निर्दयी दूसरा कौन जग मे होगा जो तुम को शाप दे। क्योकर, पूत उस पुरी मे जावोगे कि जहा राजा कहिए तो यम है, वो महाभयावनी वैतरनी नदी बहती है, बाट मे कितने एक दूर तक सदा अग्नि ऐसी बरती रहती है कि जहा पापी सब ज. जा जलते है?

नासिकेत ने कहा पिता! कुछ खेद मत करो, आपके प्रताप से यमराज को देख शीघ्र मै चला आऊगा। तुमसे पिता की बात जो सदा सत्य होती आई है, सो मै झुठाने नही सकता हू। देखिए, सत्य ही से चन्द्रमा सूर्य्य नित्य भ्रमते हैं। सत्य ही स्वर्ग मे है, नही तो बिना उसके नरक भोग होता है। इस लिये यम की पुरी को देखूँगा। पिता! मन को आकुल मत करो। इतना कह माता सहित पिता वो ऋषि को प्रणाम कर झट वहा से अन्तर्धान हो शिव का मन्त्र जपते वो ब्रह्मा का ध्यान करते चले, और बडे सिद्ध थे इस कारण पहर भर मे यम की वह सभा मे, कि जहा अत्रि आदि अनेक ऋषि लोग अपनी अपनी पोथी खोल न्याव विचार यमराजा से कहते थे, जा पहुचे।

चौपाई

शिव स्वरूप अति सुन्दर बालक। निपट छोट देखत सुखदायक॥
जटा मुकुट वो भस्म लगाए। जातेहि सकल सभा (मन) भाए॥

तब सिर नवाय प्रणाम कहि हाथ जोर लगे धर्म्मराज की स्तुति करने।

वैशम्पायन मुनि राजा जन्मेजय से कहते हैं, सूर्य्य समान तेजस्वी नासिकेत मुनि को, जिनके जाने से सभा शोभने लगी, देखते ही धर्म्मराज हर्षित हो तुरन्त उठ खडे भए। आदर मान कर निकट अपने आसन पर ऋषि को बैठाया वो प्यार से समाचार पूछने लगे।

चौपाई

बालहिपन मे घडी सिधाई। कहो मुनीश कैसे यह पाई॥
धन्य पिता जिनके तुम भए। तुम्हें देख पातक सब गए॥
कारण कौन यहा तुम आए। बार बार मेरे गुण गाए॥
अमृत बाणी बहुत सुनाई। जो कहत सोहावनि अति सुखदाई॥

इतनी यम की बाते सुन नासिकेत ने कहा दीनदयाल! अपनी भूल कहा तक मै आपको सुनाऊ। जब कुमति आ घेरती है तब कैसहू कोई ज्ञानी होय, ज्ञान ठिकाने मे नही रहता। एक तो पहिले आज्ञा मे चूके ही थे, फिर ज्ञान की चर्चा मे ढिठाई कर पिता को बराबर जा उत्तर दिया। इस अपराध से झट उनके मुख से यह बात निकल गई कि जा, अब ही यमपुरी को देख, तू हमारे साथ रहने योग्य नही। सो महाराज! पिता का बचन सत्य करने के लिये तुम्हारे समीप आया हू। जैसी कुछ आज्ञा होए सो मे करू।

हँस के यम बोले कि महाप्रभु! तुम समान मुनि को, कि जो अब ही ऐसा योग मे मगन हो ससार की माया मोह त्याग जो चाहे सो करे, जहा इच्छा आवे, तहा चला जाय, देखकर अति आनन्द हमको होता है। कहो क्या मन मे है सो बर मुझसे मागो।

नासिकेत बोले! महाराज ऐसी दया करते हो तो चित्रगुप्त समेत अपनी सारी पुरी वो धर्म्मात्मा लोग जहा पुण्य का अच्छा फल वो पापी जन नरक भोगते है, सो सब स्थान दिखावो। यही मेरे मन की लालसा है।

तुरन्त उनने दूतो को बुलाके कहा कि यह ऋषि बडे सत्यवादी मर्त्यलोक से पिता के शाप पाय यहा आए है। जाव, सगरे पुर का दर्शन इन्हे करा लावो, कि जिससे अपना मनोरथ पूरण कर हर्षित हो।

प्रभु की इतनी आज्ञा सुनि दूत सब वोही उनको चित्रगुप्त के पास ले गए और कहा कि धर्म्मावतार! यमराज ने हमको भेजा है। बाप का बचन रखने के लिये ये महापुरुष यहा आए! जो कुछ कहते है सो सावधान होकर सुनिए।

किकरो की यह बात सुनि चित्रगुप्त ने मुनि से पूछा की महाराज! तुम्हारे दर्शन से निपट हम सन्तुष्ट भए, कहो क्या अभिलाष है, सो मै पूरण करू।

नासिकेत बोले, ईश्वर ने अति उत्तम तुमको बनाया है, सब शास्त्र के ज्ञाता, धर्म्म, अधर्म्म के विचार और तेज मे देखते है कि यम के समान ही हो। और प्राणियो के सकल कर्म्म के जाननिहार बार बार मै तुमको प्रणाम करता हू। पुण्य पाप के कारण से सुख दुख के जो जो स्थान इस नगर मे है सो देखने की मेरी इच्छा है। कृपानिधान! दया करके हमारे मनोरथ को पुराओ।

वैशम्पायन कहते है, इस प्रकार से बिनती किए पर चित्रगुप्त की आज्ञा ले दूतो ने नासिकेत को ले जा स्वर्ग नरक, कि जहा पुण्य पाप के फल पावते है, दिखा सुना प्रसन्न कर फिर चित्रगुप्त को कहते हुए धर्म्मराज के पास ले आय खडा कर दिया।

महातेजस्वी व समर्थ जान उनके आवते ही वे उठ खडे भए और आसन दे बैठाय प्रीति कर पूछने लगे कि कहो नासिकेत ऋषि ! चित्रगुप्त समेत सारे पुर वो नाना भाति के लोग जो अपने अपने कर्म्म का फल भोगते है, देख आए ? श्रद्धा पूरी भई ?

वे बोले महाराज ! तुम्हारे प्रसाद से सब स्थान से मै हो आया। अब माता पिता हमारे शोक से कलपते होगे, आज्ञा करो तो उनका जा दर्शन करू।

तब इतना बचन सुनि धर्म्मराज निपट हर्षित भए, वो यह बर दे उनको अपने यहा से विदा किया कि आज से तुम अपने योग के बल से सब दुख से छूट और मृत्यु को जीत युवा स्वरूप हो सदा आनन्द विहार मे मगन रहो। और जो तुम्हारे कुल मे होगा सो हमारा कबही न मुंह देखेगा।

इस प्रकार से यह वर पाय नासिकेत मुनि मन के वेग समान वहा से चले, सो पल भर मे जहा माता पिता मारे मोह से दुबराकर मरने योग्य हो रहे थे, वहा अचानक जा पहुचे, वो जाते ही दोनो की प्रदक्षिणा की, वो चरण छू प्रणाम कर सन्मुख जा बैठे।

[पत्नी] सहित उद्दालक ऋषि पुत्र को कुशल से देख बहुत हर्षित भए। वो तुरन्त गोदी मे बैठा अति आनन्द से रो रो बार-बार मुह चूमने लगे और कहने कि नासिकेत ! आज हमारा जन्म स्वारथ हुआ। हम ममान क्रोधी दुराचारी पापी ससार मे कौन होगा जो बिन अपराध शाप दे तुमको सकट मे डाला। धन्य हो पुत्र, कि इसी देह से यम की पुरी को देख ज्यो के त्यो फिर चले आए। जग मे एक से एक सिद्ध हुए और है, पर मै जानता हू कि तुम्हारे गुण वो तेज को कोई दशाश भी नही पा सकता है। कहो कैसा धर्म्मराज का लोक व नगर है ? कैसा यम का रूप, किस प्रकार की बाट कि जिससे इतना शीघ्र गए वो आए ? क्या खाने पीने को पाया ? किस रीति से बातचीत की ? और जो कुछ अचरज देखा सुना हो सो हमसे कहो कि सन्देह मिटे, वो जो करने की होय सो मै करू।

नासिकेत बोले—"पिता ! आपके पुण्य प्रताप से यम के मन्दिर हम गए। सबके सहार करनिहार दूत सहित यमराज, पुण्य पाप के लिखनेवाले चित्रगुप्त और भाति भाति के देवता अनगणित मैने देखे। बडी स्तुति से रिझाकर यम से यह बर पाया कि इसी देह से जाओ, अब तुम्हारा जन्म मरण न होवेगा और युवा वयस सब दिन सुख मे भरे पुरे रहोगे।

वैशम्पायन कहते है, इतने मे नासिकेत धर्म्मराज के पुर से हो आया, यह सुनि ऋषि लोग बहुत चकित हो अपने अपने आश्रम मे जिस भाति से तप करते थे, उसी प्रकार से यमलोक के समाचार पूछने के लिये चल खडे भए। कितने एक तो नीचे माथ ऊपर पाव किए, और कितने एक ही चरण से खडे, कोई दोनो, कोई एकही हाथ उठाए, किसी को देखो तो मौन ही व्रत किए, कोई सूखे पत्ते ही खा, कोई निराहारी हुए, बहुतेरे ससार सागर पार होने को योग ही मे मगन दिगम्बर बेष बनाए, कठिन से कठिन तपस्या मे मन लगाए, जहा पिता के समीप नासिकेत बैठे थे वहा आन पहुचे।

देखते ही वे हर्षित हो उठ खडे भए वो प्रणाम कर मिल भेट, कुशल क्षेम पूछ, आसन दे एक एक को अलग अलग बैठा, पाव धुला, आचमन करा, अक्षत चन्दन फूल ले सबो को पूजने लगे।

तब समय जान ऋषि लोग बोल उठे कि नासिकेत ! हम तुम से अति प्रसन्न भए। शिष्टाचार तो जैसा कुछ चाहिए वैसा हो चुका वो होता रहेगा, अब यमलोक की बात सुनावो। कैसी वह पुरी है कि जहा सदा आप धर्म्मराज विराजे रहते है ? कैसे यम के दूत है ? क्या वहा की रीति रहन ज्ञान तपस्या वो कैसी वहा बैतरणी नदी है ? और यहाँ जो करते है सो वहा कैसे भोगते है ? किस करम के फेर से यम के कोप मे जा पडते है ? कैसा उनका दण्ड व कैसे चित्रगुप्त है जो प्राणियो धर्म्म अधर्म्म लिख धर्म्मराज को जनाते है ? पास मे उनके कौन कौन मुनि लोग रहते है ? सो सब कृपा कर कहो कि जिससे अति सतुष्ट हो तुम्हारे गुण को गावे।

उनकी इतनी बात सुनि बीच मे बैठ नासिकेत कहने लगे कि जितने तुम साधु सन्त हो सो अब सावधान हो सुनो। ऐसी आश्चर्य यह कथा है कि जिसके श्रवण से रोमाच होते है।

धर्म्मराज के लोक मे भाति भाति के लोग और वृक्षो से शोभित चार सौ कोस लम्बी चौडी चार द्वार की यमराज की पुरी है, कि जिसमे सदा आय वे अनेक गण गन्धर्व्व ऋषि वो योगियो के मध्य मे धर्म्म का विचार किया करते है। तिस पुरी मे जिस द्वार से जो प्राणी जाता है सो मैं तुमसे कहता हू।

देवता पितर गुरु के भक्त, क्रोध लोभ को जीतनिहारे, दान धर्म्म मे सब दिन जिनकी उत्तम मति रहती है, वो जो जेठ बैसाख मे जल दे प्राणियो की प्यास मिटाते, वो जाडे मे बस्त्र दे दुखी जन को पालते है, ऐसे जितने लोग है सो तो वहा पूर्व द्वार से जाते है, वो नाना भोग बिलास करते, और जो हरि हर दुर्गा के भक्त अतिथि देवतो को पूजते, तीर्थो मे नहाते, आहार को जीतते गौ बचाने को युद्ध करते, ज्ञान के लिए साधुन का सग करते, ऐसे जो महात्मा लोग है सो सब उत्तर द्वार से जा परमपद को पहुच मनभावन सुख को पाते है। और धर्म्म मे जिनकी श्रद्धा है, सत्य ही बोलते, सबसे नय चलते, पराए की हिसा निन्दा नही करते, विष्णु के भक्त, परद्रव्य को मिट्टी, पर स्त्री को माता समान जानते है ऐसे जो कोई महापुरुष लोग है सो सब पश्चिम द्वार से वहा पहुच बिमानो पर चढ जहा इच्छा आवे तहा जा, अपनी रुचि से आनन्द विहार किया करते है, और जो निर्द्दयी, पापी, कुटिल, कठोर, क्रूर, बिशील, वेद पुराण शास्त्र व देव पितरो की निन्दा करते है, वो गुरु को न मानते, झूठ ही बोलते रहते है ऐसे जितने अधम लोग है सो तो महा भयावन दक्षिणद्वार से जाते है, और दुख भोगने के लिये धर्म्मराज की आज्ञा से तुरन्त काली काली बडी बडी देह पाय यमदूतो के हाथ पड मुद्गरो के मार से भुरकुस होते, अति अन्धकार महा महा रौरव नाम नरक मे डाले जाते है, कि जिसमे जहा देखो तहा कीडे कलबलाते है, और एक एक बाघ, सिह, हुडार, कुत्ते, बीछू, साप, गिद्ध, कौए से भरे है कि पापियो के देखते ही सैकडन आ झुक पडते है वो झट पकडकर आपस मे ऐसा खैची किया करते रहते है तिनमे दारुण दुखदायक बिच्छू डक मारने लगते है, बार बार विषधर डसने को फुफकार करने, लोहे समान चोचो से गिध कौए तिस पर ऐसे लगते है सताने कि जिस दुख का कुछ पारावार नही है। हाय ! हाय ! मरे रे, दौडो रे सदा पुकारते रहते है। पर बिना धर्म्म के कोई उनको बचाना चाहे तो नही सकता है।

इस प्रकार से यमपुरी का दक्षिणद्वार अति डेरावन है कि जहा से दूतो के बस होकर पापी लोग ऐसे महानरक मे पडते वो नाना भाति के दुख को सहते है।

इससे अधिक कुम्भीपाक आदि सहस्र नरक एक से एक मैने देखे कि जिनमे बडे बडे कीट भरे वो हाहाकार शब्द दूर ही से सुनाता है। और वो महादुखदायक असिपत्र एक एक ऐसा बन है कि जहा खड्ग की धार के समान चोखे गाछो (?) के पत्ते है, नीचे तिसके अति दुर्गन्ध कीडो से आकुल पीप की नदी बहती है, वो अधमो के तलने के लिये बीच मे कही कडाहो मे तेल गरा गराता रहता है। बहुतेरे तो पहाड पर से गिराए वो शूली पर चढाए जाते है।

यह समाचार वैशम्पायन राजा जन्मेजय से कहते है —

इस प्रकार से नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक का वर्णन कर, फिर जौन जौन कर्म्म किए से वह भोग होता है सो सब ऋषियो को सुनाने लगे, कि गौ, ब्राह्मण, माता, पिता, मित्र, बालक, स्त्री, स्वामी, वृद्ध, गुरु, इनका जो बध करते है वो झूठ साक्षी भरते, झूठ ही कर्म्म मे दिन रात लगे रहते है, अपनी भार्य्या को त्याग दूसरे की स्त्री को ब्याहते, ओरो की पीडा देख प्रसन्न होते है और जो अधर्म्म से हीन पाप ही मे गडे रहते, वो माता पिता की हित बात को नही सुनते, सबसे बैर करते है, ऐसे जो पापी जन है सो सब महा डरावन दक्षिणद्वार से जा नरको मे पडते है।

इतनी कथा सुना फिर नासिकेत मुनि कहने लगे, कि यम की आज्ञा से दूत सब एक किसी को इहा से ले गए वो विसे उनके आगे खडा कर दिया, उसका जो पुण्य पाप का बिचार होते मैने देखा है सो अब कहता हू तुम सावधान हो सुनो।

यमराज की सभा मे अपने अपने स्थान पर सुन्दर आसन बिछाए बैठे अत्रि, गौतम, मैत्रेय, बृहस्पति, शुक्र, वेदव्यास, जह्नु, कर्ण, भारद्वाज, दधीचि, गोभिल, दुर्बासा, मरीच, भृगु, गालव, सनत्कुमार, प्रलह, पुलस्त्य, ऋतु, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, मार्त्तण्ड, हरिमित्र व सुमित्र, ये सब ऋषि लोग अच्छा बस्त्र व भूषण पहरे द्वादश आदित्य समान शोभते, नाना शास्त्र बिचार बिचार प्राणियो के धर्म्म अधर्म्म का न्याय किया करते है। तिनके बीच मे कानो मे कुण्डल, शिर मे सुन्दर मुकुट पहिरे तारन्ह मे चन्द्रमा समान महान तेजस्वी धर्म्मराज सदा विराजते रहते है।

तहा अति निर्दयी निपट डेरावन वैसेही हाथ मे दण्ड लिए दूतो ने उससे पूछा कि जिसको यहा से ले जा यम के पास खडा कर दिया था, कि कैसा पाप तुमने किया है जो धर्म्मराज के आगे सत्य बतावो।

इतने बीच सभा मे बैठे हुए प्रकट उचित कहनिहार ऋषि लोग शास्त्र विचार के बोल उठे कि महाराज ! इस पापी ने तो ब्राह्मण का बध किया है, कुम्भीपाक मे कि जहा का दुख सहा नही जाता, अपने कर्म्म का जैसा कुछ फल है सो बहुत दिन तक भोगेगा।

यह सुनते ही वो यम की आज्ञा पाय किङ्करो ने झट उसे पकड लिया वो लाठियो से मारते पीटते घसीटते वहा ले चले और वोही नरक मे जहा कोई किसीको क्षण भर भी पीडा से बचा नही सकता है, डाल दिया वो तुरन्त सहस्रन कीड़े बडे बड़े मोटे मोटे देह मे लिपट गए वो मास काट काट खाने लगे।

नासिकेत ऋषियो से कहते है इसी भाति गोहत्या का भी निर्णय होते मैने देखा है, और जो अपराधी विश्वासघात, गर्भपात करते, काम के बस हो जिस स्त्री के पास जाने को मना है, उसी से जा भोग करते है, मारे लालच के नही खाने को, सो है खाते, ऐसे जितने अधम लोग है सो तो कडाहो मे कि जिनमे तेल गरम हो रहा है, डाले वो शूली पर चढाए जाते है। इस प्रकार बहुतेरन्ह शीकरो (सिक्कडो) से बाँध-बाँध दूत सब यम के निकट पहुचावते है कि जहा तेज मे सूर्य्य समान चित्रगुप्त प्राणियो के पुण्य पाप को लिख ले जा समझाते है, ऋषि लोग शास्त्र बिचार जैसा जिसको उचित है वैसा नयाव बतावते है, ऐसो धर्म्मराज की सभा और वहा का यह वृत्तान्त है और जिस जिस कर्म्म से इन नरको मे पडते है सो भी सुनो मैं कहता हू।

जो नर चोरी आदि नाना भाति के कुकर्म्म मे आप तो दिन रात लगे है, तिसपर भी औरो को देखते है, वो एक अक्षर भी जिससे पढते विसे गुरु के बराबर नही मानते है, सो तब तक महा-नरक को देखते है कि जब तक यह ससार बना रहता है, और जो दुष्ट गुरु को वाद कर हराते व डाटते है, पिता, माता गुरु से व्यर्थ बैर करते है, वे सब विसी नरक मे पडते है कि जहा ब्राह्मण के बध करनेवाले जाते है। इसलिये माता पिता गुरु को कदाही कोप न करावेगे कि जिससे ऐसे ऐसे सकट को भोगेगे। और जो कास पीतल तामा लोहा चुराते है, कन्यादान समय मे भाजी मारते, मुनि ब्रह्मचारियो की तपस्या मे जा बाधा करते है, और जो निर्द्दयी क्या घर मे क्या बन मे, क्या कही आग लगा सहस्रन जीव को जला देते है, सो सब असिपत्र बन मे डाले व लाल लाल अगारो पर घसीटे जाते है, व हाहाकार शब्द किया करते है।

और जो बालक, वृद्ध, स्त्री, साधु, सन्त को छलते है, नही करने को सो करते, और जो मनुष्य अच्छे अच्छे मीठी मीठी वस्तु बना छिप कर अकेला ही आप चट करते है, सो विस कूप मे पडते है कि जो विष्ठा वो कीडो से भरा हुआ है।

जो नर बहुत दिन तक भोग व प्राण से भी अधिक मान किमू अपराध से पतिव्रता स्त्री को त्याग देते है सो सब भी असिपत्र बन नाम नरक मे डाले जाते है वो नाना भाति की पीडा को सहते है।

इससे अधिक और भी नरक मैने देखे कि जहा महाडरावन आग लहर रही है। अपने कर्मो से पापी लोग बार बार जलाए जाते है, बहुतेरे शीकरो से बाधे हुए मुँगरो के मार से नीचे गिर विलाप कर बेडी सहित उठ भागते है, तिस पर निर्द्दयी यम के दूत सब तुरन्त उसे पकड लोहे के घनो पर पटकते है, कितने एक तो गलो मे फासी लगा, किसी को दोनो पाव ही धर घसीटते वो डाट कर कहते है कि हा मूर्खो! बहुत सबसे बैर बिसाहे हो, क्यो अब रोते हो? अपना कमाया हुआ दुख भोगो और जो पर सो कुकर्म्म किया है विनको अष्ट धातु की बडी प्रतिमा को कि जो अग्नि मे लाल की हुई है अँकवार से पकडाते है वो कहते कि जैसे ही तुमने पराए की भार्य्या से विहार किया है वैसे ही इससे भी हर्षित होके करो, विनके कहने पर जो जो तो नही उठते तिनको मारे लाठिन से चूर कर नीचे गिराते है।

ऐसे ही गञ्जन होते कोटिन स्त्रियो को भी देखा कि जो दूसरे पुरुष से अपने धर्म्म को

नाशती है,, कितने तो पहार वो तार के वृक्षो पर से गिराये जाते है, जो पराये का जीव मारने मे अपना जनम गँवाते है।

जो नर किसी को खाने पीने मे बाधा करते है सो सब भी बिसी नरक मे रहते है कि जिसका दारुण दु ख सहा नही जाता है। और जो नारी स्वामी को निन्दती वो नित्य कलह करती है सो वहा डाली जाती है कि जहा बडे बडे सीमर के अगारे ऐसे लहर रहे है। पति के मरे पर औरो से मिलती है, यम के दूत सब विसकी जीभ को काट लेते वो अष्टधातु की प्रतिमा को पकडाते है।

और जो पतिव्रता स्त्री की निन्दा करते है सो सब नरको मे फिर नाना पीडा ऐसे भोगते है कि किसी प्रकार से किसी को उससे बचाव होने का नही।

इस प्रकार बहुतेरे नरको का वर्णन कर नासिकेत मुनि फिर लगे ऋषियो से कहने कि यम के पुर मे और भी एक अद्भुत स्थान देख आया हू, जहा लहराती हुई आग का सरूप उचाई मे चार व घेराव मे बीस कोस महाडरावन वृक्ष है। लाखो पापी जन उसमे टागे हुए हाहाकार शब्द को है करते, तिस पर अति कठोर निर्द्दयी यमदूत सब व्रज्र समान शस्त्रो से बारबार मारते पीटते वो कहते है कि हा अधर्म्मियो ! कदही नही तुमने हर्ष से किसी देवता पितर को तृप्त किये, न कोई तीर्थ मे फिरे, न किसी अतिथि अभ्यागत को कुछ दिया, वो माता पिता ब्राह्मण गुरु ससार मे देवता तुल्य गिने जाते है विन को भी तनिक आदर से न पूजा कि जिस चूक का ऐसा फल पाते हो।

इतना कह धर्म्मराज के दूत सब महादुखदायक नरको मे पातकियो को फिराते है। तिनमे किसी को देखो तो भैसे पर कोई गीध कोई सारसो पर, कितने तो बादरो पर, बहुतेरे श्यारो पर चढे हुए निपट काले महाकुरूप कि जिनका वाघ सिह कुत्ता बिलाई का ऐसा तो मुह, वो लाल लाल आख, खड्ग, त्रिशूल, परसा, बरछी, लाठी, मुशल आदि बडे शस्त्रो को हाथन मे लिए यम की आज्ञा पाय नाना सकट मे प्राणियो को डालते है। यह तो अपनी आखो से पापियो की दुर्गति होते मैने देखी है।

और जहा मन भावते नाना प्रकार के पकवान दही दूध घी मिठाई वो रतन जडाव एक से एक अद्भुत भूषण वो भाति भाति के पटम्बर वस्त्रो की कूट सदा लगी रहती है, वो कानन मे कुण्डल, गले मे मोतिन की माला पहिरे, अति सुन्दर सुन्दर अप्सरा सब बीना आदि बाजा हाथो मे लिए नाचती गावती बजाती रहती है, तिस स्थान मे वो विनके सग मे अच्छे पुण्य के प्रताप से उत्तम उत्तम भोग बिलास करने को वे धर्म्मात्मा लोग जाते है वो विमानो पर चढे फिरते है। और यमराज की दया से बहुत दिन तक महा महा सुख है करते कि जो ससार मे देवता, ब्राह्मण, गुरु इनको मन लगा भक्ति से पूजते है, वो जो भूमि, सोना, गौ, वस्त्र देते है, अतिथि अभ्यागत को आसन दे बैठाय अच्छा सुन्दर मधुर बचन बोल, कन्द मूल से भी सतुष्ट करते है, और जो लोग ऋतु समय अपनी स्त्री के पास जाते वो नित्य धर्म्म पुण्य करते, ऐसे जितने नर है सो सब तो कधी न यम का मुह देखते है।

और जो मनोहर घर बना सोना विधि से ब्राह्मण को देते है सो सब तो ऐसे स्थान पावते है जहा जहां सोनन्ह के मन्दिर अनेक आश्चर्य्य आश्चर्य्य भोग कि जिनका कुछ बखान न किया

जाता है। और जो मनुष्य भूखे लोग को एक ग्रास भी अन्न देते और सब प्राणियो मे दया करते, शरण मे आए को पालते है, सो सुरपुर मे अप्सरो के साथ जा विहार करते है। वो उपजे हुए अन्नो से भरा पुरा खेत अपनी श्रद्धा से जो है सकल्पते सो तो परम स्थान मे विमानो पर कि जो जहा मन होय तहा ले जाता है, चढे फिरते नाना आनन्द किया करते है।

चौपाई

मोती मूगा रतन है देते। सो है मणिमय गृह मे रहते।।
पनही छत्र वो शीतल पानी। हरषि दान करते जो ज्ञानी।।
सो है इन्द्रपुरी को जाते। महा भोग जह वो है पाते।।
हाथी ऊट अन्न के दानी। दया धर्म्म वो शील के खानी।।
स्थान परम को वे है जाते। गण गन्धर्व जहा है गाते।।
बडे तीर्थ में जो है मरते। सो भवसागर को है तरते।।

और नाना भूषण पहिराय वेद की विधि से कुलीन बर को जो कन्या देते है, सो तो सब सहित सारी पृथ्वी दान किए का फल पाय देवतो के निकट महासुन्दर स्त्रियो से विलसते है कि जिनके रूप से कामदेव भी मोहित होते है, वो बिना धर्म्म पुण्य के जिनके दिन है बीतते, सो लोहा की भाथी समान सास तो लेते है पर तनिक भी न जीवन का सुख को पाते है।

नासिकेत ऋषियो से कहते है, कि धर्म्मराज से पालित और जो सुन्दर स्थान मुझको देखने सुनने मे आया है सो भी तुमको सुनाता हू कि जहा यम के निकट साधु दूत सब रहते है वो पूर्वद्वार से धर्म्मात्मा लोगो को अमरावती मे पहुचावते है। और आश्विन कार्त्तिक मे अन्न, जाडे मे वस्त्र वैसाख जेठ मे अच्छा शीतल पानी, बसन्त के समय मे फूल फल जो नर है देते, सो सब बहुत दिन तक सूर्य्यलोक मे बास करते वो नाना सुख को भोगते है। जो तो दुर्भिक्ष मे अन्न वो सुभिक्ष मे सोना है देते, सो तब तक स्वर्ग मे बसते है कि जब तक चन्द्रमा सूर्य्य दोनो विद्यमान है। इसलिये चतुर लोग सब प्रकार से दान धर्म्म मे चित्त दिए रहते है कि जिससे महा आनन्द को पावते है। और जल के दानी, विष्णु के भक्त ब्राह्मणो के है जो पूजक, सो सब हस चक्रवाको से सुशोभित विमानो पर और चित्र विचित्र घोडे हाथी मोर वो सारसो पर चढ यमपुरी के पूर्व द्वार से होते अपने अपने पुण्य के प्रताप से सुरपुर मे जाते है।

वो धर्म्मात्मा लोगो के लिये यमराज से टिकाई हुई नख से शिख लो नाना रतन जडाव आभरण और गजमुक्ता आदि मणि से अलकृत उन महासुन्दरी देवकन्याओ से भोग विलास करते है कि जिनका चन्द्रमा सा बदन, काञ्चन सी देह, तिन मे कितनी तो स्फटिक सी स्वच्छ, कोई सिन्दूर का रग बहुतेरी अति मनोहर स्याम सरूप, सब मिल जुल नाचती गाती बजाती हुई स्वर्गी लोगो को जहा इच्छा आवे तहा सुभग विमानो पर चढाए लिए फिरती है।

देखो यह दान पुण्य का प्रभाव कि जिससे नर सब ऐसी उत्तम गति को है पहुचते और सोना दिए से सूर्य्य के लोक, बस्त्र दिए से चन्द्रलोक मे जाते है। अन्न के दान किए से तो मुक्ति मिलती है इसलिये सदा अन्न दान करना कि जिससे ससार सागर मे के बार बार आवागमन के

दु ख से छूटें, वो परम आनन्द को पावें। नासिकेत मुनि ऋषियो से कहते है—महा महा अद्भुत अद्भुत नरक कि जिनके श्रवन से अङ्ग सिहर आता है, वो वैसे ही बडे बडे बहुतेरे पापियो को देखा और उस पुण्यस्थान का मुझको दर्शन हुआ कि जहा धर्म्मात्मा लोग रहते है। वो निपट सुख देनेवाली पुष्पोदका नाम ऐसी नदी बहती है कि जिसमे सुवर्ण की बालू वो दूध सा स्वच्छ अमृत समान स्वाद जल वो शख पद्म है। और अति सुभग फूलो से शोभित तीर तीर मे घने से कल्पद्रुम लगे है। शीतल सुगन्ध सदा मन्द मन्द समीर डोलता, हस मोर कोकिल कपोत आदि पक्षी सोहावना शब्द करते, मत्त हो हो मधुकर सब गुन्जते है। और जहा देखो तहा देवकन्या सब गाती। गण, गन्धर्व्व, सिद्ध, चारण नित्य आय आय विहार करते है। तिस नदी के तट मे एक से एक लाल पीत नील श्वेत हरित आश्चर्य आश्चर्य सुन्दर सुन्दर दीप्तमान रत्नो की ऐसी खानि मैने देखी कि जिसकी शोभा का कुछ वर्णन न किया जा सकता है।

उस मनोहर स्थान मे वे नर जाते वो सुवर्ण की बालू के बीच मे खेलते वो युवती युवती स्त्रियो के साथ नाना जल विहार है करते कि जो भक्ति भाव से देवता को पूजते वो तीर्थो मे नहाते है।

और उस नदी के तट मे चन्द्र सूर्य समान बहुतेरे मणि वो मोती, मूगे, हीरो से रचित, सोनन्ह के सहस्रन मन्दिर मैने देखे कि जहा पुण्यवान लोगो को अति सुख देने को रतन जडाव भूषण बस्त्र पहिरे सोरह सोरह वर्ष की अप्सरो को यमराज ने टिकाया है कि जिसका कमल सी सुन्दर बडी बडी आख वो चन्द्रमा सा बदन है।

नासिकेत कहते है, कि जो देवता गुरु ब्राह्मण को मानते, धर्म्मशास्त्र को विचारते सकल प्राणियो मे दया करते वो सबकी भलाई मे दिन रात लगे रहते है, तिनके विलास के लिये धर्म्मराज की पुरी मे पुष्पोदका नाम नदी को भगवान ने बनाया है जो तीनो लोक मे प्रसिद्ध है। न तो वहा किसी को कुछ भूख प्यास कदही लगती, न कोई शोक सन्ताप होता है, न भय, न दु ख, न किसी बात की कुछ चिन्ता और नित्य नया नया आनन्द विहार करते है। सब कोई विन से मीठी बात बोलते है।

जो पापी नित उठ सबसे कलह करते वो पराए को दु ख देते, सो तो परलोक मे जा महा महा कष्ट भोगते वो बार बार है पछताते! तहा यमराज के दूत कहते है कि हा! मूर्खो! तुमने मनुष्य की दुर्लभ देह पाय कदही न हरि की चर्चा की, वो सारे जन्म पाप ही मे लगे रहे, कि जिसके करने मे क्षण भर का तो सुख, पर कोटिन्ह बरस का नरक बास होता है। अब रोने कलपने से कहो क्या होगा जब समय गया है बीत, और कहा भी है—

दोहा

आगे दिन पाछे गए, कियो न हरि से नेह।
अब पछताए क्या भए, छूट गया जब देह॥

यह तो दूतो का बतकहा है। और जिस जिसके लाने को धर्म्मराज बिनको बरजते है सो हम तुमसे कहते है—कि जिनके गलो मे तुलसी की माला, सुन्दर तिलक, प्रेम से शालिग्राम

को पूजते, सदा राम नाम है जपते, पर स्त्री को माता सी है समझते, वो एकान्त स्थान मे पडा पराए धन को देख मिट्टी सा त्यागते, वो सत्य ही बोलते, सबसे नय चलते, धर्म्म पुण्य मे चित्त देते, तीर्थों को करते क्रोध लोभ आहार को जीतते, वेद पुराण शास्त्रो को मानते न दु ख से अकुलाते न सम्पत्ति पाय बौराते, ऐसे जितने उत्तम जन सो सब ईश्वर के है भक्त, दूर ही से प्रणाम कर छोड देना।

इस भाति सदा यमराज अपने दूतो को सिखलाते पढाते रहते है। सो भी मै तुमसे कह चुका।

अब नाप मे तीन लाख चौआलिस सहस्र कोस का वह पथ है कि जिससे धर्म्मराज के लोक मे लोग है जाते, और उस मार्ग मे जो जो अद्भुत मुझको देखने मे आया है सो सब वर्णन कर सुनाता हू। पहिले तो विस बाट मे कुछ दूर तक जहा देखो तहा महा दुखदायक आग लग रही और कही तो अति अन्धकार हो रहा है, और कोई ठाव बडे-बडे चोखे चोखे काण्टो से छाए हुए ऐसे पर्व्वत मिलते है कि जिनपर चढने से दारुण पीडा होती है। कही देखो तो लोहो की खूटी व सूई सब गाडी हुई है तिस पर ऊँचे सो अति अन्धकार हो रहा है। थोडी दूर आगे उसके कितने एक कोस तक बालू है धीपता, वो बहुत स्थान मे निपट पाला है परता, कि जिनके हेलने से महा एक आफत आन पहुचती है, तहा कठिन कठोर क्रूर निर्दयी यमदूत सब सीकरो से बाध पापियो को लिये फिराते, वो लोहो की लाठी आदि नाना प्रकार के शस्त्रो से मार मार भुरकुस कर डालते है, वो बार बार करुणा करते सब रोते है, पर बिना धर्म्म कुछ त्राण नही पाते। नासिकेत मुनि ऋषियो से कहते है, उन अधर्म्मियो के लिए बना कि जो ब्राह्मण वो पशु पक्षी को बधते, गुरु स्वामी को निन्दते, बालक वृद्ध, स्त्री, अनाथ, पथिक, इनका धन हरते, वो महा पाप कर छिपाए रहते, विष दे ब्राह्मणो को मारते, वो व्यर्थ सगरे दिन हाहा भूत हो फिरे फिरते है, उस दारुण पथ मे अन्न पानी को तरसते वो नाना गञ्जन भोगते। और भी बहुतेरे पातकियो को मैने देखा कि जिनको क्रुद्ध हो हो दूत सब बार बार डाहते मारते धमकाते वो कहते है कि अवही हुआ क्या जो जो सकट आगे आवेगे सो देखोगे। मनुष्य का उत्तम जन्म पाय तुमने तृण जल भी न किसी को दिया कि जो अति सुलभ वो सहज मे है मिलता। क्या यमलोक के कठिन बात को नही सुना था कि जहा पापियो को मरन योग आ लगता है।

कवित्त

नरक बिनासी सुख के रासी हरि चरित्र नहिं गाए।
क्रोध लोभ को नीच सग कर कहो कौन फल पाए।।
त्यजि आचार महा मद माते हृदय च्येत में ल्याए।
आतुर ह्वै नारिन के पीछे मानुष जनम गंवाए।।

और न तो कदही तीर्थ व्रत किए, न कोई ग्रहण समय मे गौ भूमि, सोना, रूपा आदि दान कुछ दिया। अब बिना पुण्य धर्म्म के निपट भयावन यह नरक समुद्र को क्योकर पार होना चाहते हो। सो वैशम्पायन मुनि राजा जनमेजय से कहते है —

इतनी कथा जब नासिकेत ने सुनाई तब तो ऋषियो ने पूछा कि महाराज ! अति दु ख-दायक यमलोक के पथ मे किस प्रकार से जाना पडता है वो कौन (कर्म्म करके) वहा से है छूटते, सो अब कृपा कर वर्णन करो कि जिससे हमारे मन का सन्देह जाय, वो मगन हो तुम्हारे जस को जा गावें।

वे बोले ससार सागर मे जितने प्राणी है सो सब मृत्यु के बश हो स्त्री आदि कुल परिवार और अन्न धन लक्ष्मी इन समेत देह को त्याग प्रेत रूप हो बिना सग साथी के अकेले ही बिस बाट मे जाते है। तिनमे जो तो पुण्यात्मा लोग है सो अपने धर्म्म के बल से महा दारुण मार्ग को सहज मे पार हो देवता का रूप पाय धर्म्मराज की पुरी मे ऋषियो के साथ उत्तम उत्तम भोग है करते।

और जो तो है पातकी सोई है अटकते वो नाना दु ख को सहते, तिस पन्थ मे एक से एक महाभयावन बहुतेरे स्थान मैने देखे, पर आठ तो निपट डरावन है कि जिनमे पहिले बडे बडे कॉटो के वृक्षो से भरा हुआ चार सौ कोस का एक ऐसा है कि जहा दूर ही से अति हाहाकार शब्द सुनने मे आता है, वो महा महा दु ख से पापीजन वहा से है निकलते। दूसरा आठ सहस्र कोस का तप्त बालुका कि बिना पनही दान के विसको पार होना कोई चाहे तो नही हो सकता है। तीस चालीस सहस्र कोस तक जहा देखो तहा निपट चोखे चोखे आरे सब उतान गडे हुए है। तिस स्थान मे शय्या के दानी सुख से है जाते वो पापियो को मरण योग आन लगता है।

विसमे बहुत दूर तक चारो ओर बडी आग लग रही है। जो तो बावली तलाव कूप है खानते वो देवतो के मन्दिर बनाते सोई विसको सहज मे तर जाते है।

पाचवा एक सहस्र दस कोस का महाअन्धकार बन है कि जिसको कालरात्रि लोग कहते है, दीपदानियो को पार होता है सहज में।

छठवा वैसे ही कई एक कोसो कोस तक अति अन्धकार महानिशा नाम स्थान है कि जहा बडे बडे बाघ सिह, हुण्डार, कुत्ते, बीछू, साप वो ककड पाथर से मरे है, तिस पर काली घटा सदा छाई ही रहती है, तिस स्थान को वे पुण्यात्मा लोग क्षण मे पार हो जाते है कि जो बिधि से प्रेतो को अन्न व बिप्रो को हाथी घोडे गौ, दान देते वो तीर्थों मे देवता पितर को सतुष्ट करते है।

सातवा निपट गभीर जल से भरा हुआ बत्तीस सहस्र कोश का कि जिसको भूमि के दानी सब सुख से तर जाते है।

आठवा बीस सहस्र कोश तक महा भयावन रौद्र हो रहा है कि जहाँ नाना प्रकार के दान से धर्म्मिष्ठ लोग सहज मे निकल जाते वो पापी सब है अटकते।

नासिकेत ऋषियो से कहते है—इस इस भाति से प्राणी सब मर मर के यहा से तीन लाख चौआलिस सहस्र के अन्त मे जब जा पहुचते है तब यमराज के द्वार पर पीप लोहू से भरी, वो साप कीडो से आकुल पापी जन को महाभयावनी चार सौ कोश की बैतरणी नाम नदी आ मिलती है। जो नर काली गौ व अन्न है देते, गगा सागर सगम आदि तीर्थों मे नहाते सज्जनो से सग करते, सदा दान धर्म्म मे लगे रहते है सो तो क्षण मे गौ की पूछ पकड़ इसको पार हो निर्मल शरीर पाय सुन्दर रथ पर चढ परम पद को पहुचते है।

इस भाति से पुण्यात्मा लोग सुख से वो पापी सब नाना गंजन से जाते है। तैसे ही यम के दूत कि जो प्राणी जिस जोग है तिसको बिसी प्रकार से धर्मराज के लोक मे ले जाते है। और जो देखा सुना है सो मै अब कहता हू।

सोना, रुपया, औ पटम्बर बस्त्र, दूध, घी, अन्न, जल जो इहा है देते सो सब वहा पावते है। इसलिये सदा धर्म्म करना कि जिससे ससार मे जस व परलोक मे सुख होय। और विमानो पर चढ धर्म्मिष्ठ लोग वह सुन्दर पथ से यमपथ से यमपुर मे सिधारते है कि जहा अति निर्मल जल से भरे हुए अनेक बावरी, तलाब, वो नाना भाति के फूले फले वृक्ष, खाने पीने को एक से एक बस्तु मिलती है। नासिकेत ऋषियो से कहते है, और जो अद्भुत मैने देखा सो सुनो।

यम की सभा मे कि जहा मुनियो के बीच मे धर्म्मराज तारन मे चन्द्रमा समान शोभते है, हमारे रहते ही महातेजस्वी नारद मुनि आन पहुचे। दूर से देखते ही वे उठ खडे भए वो प्रणाम कर सुन्दर आसन दे बैठाय हाथ पाव धोला कुशलक्षेम पूछ कहने लगे "महाराज! आज हम निपट कृतार्थ हुए। और आप के आगमन से जाना कि ईश्वर मुझसे बहुत सतुष्ट है"।

यम की इतनी बातें सुनि क्षण एक चुप होकर बोले "धर्म्म अधर्म्म विचारने को आप भगवान ने तुमको यहा रक्खा है। वो तीनो लोक मे जितने दैत्य राक्षस मनुष्य देवता है सो सब तुम्हारे बश मे है। देखने को मै आया हू कि किस प्रकार से प्राणियो के पुण्य पाप को विचारते हो सो हमको सुनावो।

नासिकेत कहते है कि इतने ही मे भाति भाति के बाजन समेत, अति मनोहर सहस्रन बिमान, कि जिनके साथ उत्तम उत्तम बस्त्र भूषण पहिरे, वो हाथन मे छत्र चामर बीणा बेनु लिये, नाना प्रकार के गीत गाती हुई एक से एक सुन्दरी अनेक अप्सरो और सबो के आगे ऐरावत पर चढे इन्द्र वहा आन पहुचे।

दूर ही से हाथी घोडे रथ का शब्द बडा सुनि वो उनके दर्शन से जितने पातकी है सो सब नरक से छूट स्वर्ग मे चले जाते है।

यह समाचार पाय ऋषियो के सहित झट यमराज चम्पत हो गए। दूत सब भी मारे डर से जहा तहा उठ भागे। जब विमान आगे बढ गया तब ऋषियो को साथ लिये यम फिर अपनी सभा मे जा बैठे।

बहुत चकित हो नारद मुनि पूछने कि पराक्रम मे तो देखते है विष्णु समान हो और बडे बडे दैत्य दानव यक्ष राक्षस आगे खडे ही है। निपट आश्चर्य मुझको लाग कि कौन सा भय हुआ कि जिससे इतना शीघ्र तुम भागे।"

नारद का बचन सुनि यम ने उत्तर दिया, "महाराज! है तो यह निपट गोप्य पर मै तुमसे कहूगा"।

नारद मुनि वो धर्म्मराज की ऐसी बात चीत होती ही है कि दूत सब सभा मे आन पहुचे के हाथ जोर यम से कहने लगे "धर्म्मावतार! अब कौन काम करने को हमे आज्ञा होती है सो कहिए"।

इतना बचन सुनि उनने उनसे कहा कि "दया धर्म्म त्याग जो अधम जिस जिस पाप में सदा गडे रहते हैं तिनको वैसे ही दुखदे सङ्कट मे जा डालो"।

प्रभु की आज्ञा पाय महाक्रुद्ध हो दूत सब खड्ग बरछा, मुगरे लाठी आदि नाना शस्त्रो से जो पातकी जिस योग थे तिनको वैसे ही मारने पीटने लगे, वो घसीट घसीट अति दुखदायक बाघ सिंह हुडार, कुत्ते कि जिनके निपट डरावन दात है, वो बीछू कीडो से जहा देखो तहा भरी हुई बैतरणी मे लगे डालने कि जहा पीप लोहू के महा भयावन भौरे घूम रहे है।

इस प्रकार जो नर गौ, ब्राह्मण, माता, गुरु का बध वो विश्वासघात करै, वो स्वामी मित्र से विरोध करते, जात पात से निकल अच्छा वेष बना झूठ ही ज्ञान भाषते फिरते वो पतिव्रता स्त्री को त्यागते रुक्ष हो सबसे बोलते है, सो नर बहुत दिन तक बैतरणी मे कि जहा क्षण भर भी कोई किसी की रक्षा करने नही सकता डाले जाते है।

नासिकेत कहते है कि ऐसी आज्ञा कर यमराज जब सुचित भए तब नारद मुनि ने फिर उनसे पूछा कि किस कारण से तुम इहा से भाग गए सो मुझसे कहो।

धर्म्मराज बोले "आगे त्रेता युग मे योग तप मे मगन, सदा अश्वमेध यज्ञ करने वाले क्रोध-लोभ इन्द्रियो को जीते हुए, फुलवारी को माली सा प्रजा के पालनिहार ऐसा प्रतापी राजा जनक था कि जिसको आपसे आप अपना गुण औषधी सब बताती थी, उसके राज्य मे अमृत समान स्वाद फल वृक्ष फलते, बहुत दूध गौ देती, ढेर दिन तक लोग जीते थे, वो कदही किसी को कुछ रोग ब्याधि चिन्ता नही होती, तिसकी महा पतिव्रता व तपस्विनी सब गुण भरी सत्यवती नाम स्त्री कि जिसको इन्द्र आदि देवता सब आगे से ल्याने को आए थे। अप्सरो के साथ विमान पर चढ अमरावती को गई है, उसी को देख कर हम इहा से भागे, क्योकि जो इन्द्रियो को जीतते है, वो गुरु गोविन्द की भक्ति करते, अतिथि अभ्यागत को पूजते, तिनको दण्ड देने के हम बली नही। और भी उनके तेज से डरते है। यही हमारे भागने का कारण है।

वैशम्पायन मुनि राजा जनमेजय से कहते है कि चित्रगुप्त सहित यमलोक का यह समाचार नासिकेत जब कह चुके तब ऋषि लोग सुनके बहुत चकित भए, वो बार बार प्रणाम स्तुति कर उनसे विदा हो अपने अपने आश्रम पर जा परलोक मे स्थान पाने को और भी तप से अधिक जप पूजा ध्यान मे लगे।

इति श्री नासिकेतोपाख्यानम् समाप्तम।

रामचरित

अथवा

अध्यात्मरामायण

श्रीगणेशायनम सिंधु सुता मुख चन्द्र ० चकोर (,) जा लग सिद्धि रहे कर जोर (।) विचित्र ० रूप होए विघन विदारे (,) प्रतिपालक सोहेव ० हमारे (।) १ जगमग जोति जासु तन ल से (,) ० सत जनन के मानस वने (।) आनद रूप गज। (-) ० नन वडे (,) भक्तन काज रहत जो खडे (।) २ नृ (-) ० पति वीर जब ते तु भए (,) होत सिगार जगत ० को नये (।) फूल उठी वसुधा हरषानी (,) धन धा (-) ० न्यन ते अति अकुलानी (।) ३ घर-घर मगल (-) ० चार घनेरे (,) रग औ राग करहि बहुतेरे (।) सुचि (-) ० त होय नर करे कलो ले (,) मणिभूषण पहरे अ (-) ० नमोल्ले (।) ४ रण आगन पगु देत तुम्हारे (,) इद्र (-) ० हु हो पर त्राहि पुकारे (।) थर थर काप उठे दिग ० पाल (,) निज शस्त्रन धरनी महि डाल (।) ५ ०

अब इस पोथी के भाषा करने का कारण यि (-) ० ह[1] है कि मैं जो सदलमिश्र पडित हू (,) मुज को ० पाठशाला मे (,) जो साहब लोगो के लिये कल ० कत्ता मे हूई (,) सस्कृत की पोथिया भाषा करने ० को महा उदार सकल गुण निधान मिस्तर ० जान गिल्क्रस्त साहब ने ठहराया औ एक ० दिन आज्ञा की कि आध्यात्म रामायण को ० ऐसी वोली मे करो जीसमे फारसी आरवी ० न आवे (।) तव मैं इसको खडी वोली मे करने ल (-) ० गा औ सम्वत् १८६२ मे नो आव[2] गवरन (-) ० न[3] वरजली लार्ड मारटग साहबबहादुर ० के राज्य मे इस पोथी को समाप्त किया ओ ० नाम इसका राम चरित्र रष्या[4] पर जहा क (-) ० हीं[5] कठिन वेदान्त था मैंने देषा कि इसकी ० भाषा सब कोई समझ न शकेगा इस कारण ० वुसे छोड दिया अव गुण वानो से यिह भरो (-) सा[6] है कि इस पोथी के वीच जिस जगह ऊच ० नीच देखे तो कृपा कर वुस दोष को छिपावे ० ओ अशुद्ध को शोधे अथ कथारम्भ 8 किसी समय वदरिकाश्रम मे शौनक आदि ० ऋषियो ने सूत से पूछा कृपा निधान अव ० कुछ विशेष हरि का यश आप हमे सुनाइ (-) ० ए तव वे लगे कहने कि एक वेर नारद योगी ० पर उपकार के लिये तिगरे लोक फिरते फी (-) ० रते मत्य लोक मे जा पहुचे तो वहा देषा कि ० मूरति धारण किये चारो दिश वेद खडे है ० अरु प्रात काल के सूर्य का ऐसा वर्ण ओ ० भक्तन को मन भावत फलदायक सकल ० शास्त्र का सार जान निहार जगत का नाथ व्र (-) ० ह्मा सरस्वती को साथ ले वीच सभा मे वैठा है ० ओ मारकण्डे यादि मनि वारवार उसकी वडा (-) ० ई कर रहे है (।) तद दूर से देषते ही नारद ने दण्ड (-) ० वत किया ओ भक्ति से स्तुति कर हाथ जोड ० विस के आगे जा पडे भये कि इतने मे अति ० हर्षित हो मुस्कुरा के व्रह्मा बोल उठा ए योगी ० तू क्या पूछा चाहता है मुह षोल के कह (,) प्रस (-) ० न्न होए सव मैं तुझे वताऊगा। इस भाति वि (-) ० धाता की आज्ञा पाय उन्ने कहा महाराज ० भलावुरा सव मैं तुम से सुन चूका पर एक ही ० रह गया है सो आप दआ[7] कर समझाइए ० कि घोर कलियुग के आते ही नेम धर्म आचा (-) ० रसत्य वचन तज पर द्रव्य पर स्त्री हरने को ओ ० एक को एक झूठ कलक लगाने को दिन रा (-) ० त लोग उपस्थित होगे ओ महा नास्तिक ० कि जिन की पशुन

---

१. यह। २. नवाब। ३ र, गवरनर। ४. रक्खा। ५. कहीं। ६. भरोसा। ७. दया।

की सी बुद्धि (,) माता पिता के ० द्रोही (,) ० काम के दास (,) स्त्रीन[1] को देवता सम माने (-) गे (,) तिनमे ब्राह्मण लोग तो ऐसे लोभी होगे ० कि धन अर्ज्जन के लिये विद्या पढ वेद विक्र (-) य कर दिन काटेगे अनु[2] अपनी जाति का क (-) ० र्म छोड वहुधा ओरो को ठगते फीरेगे (।) क्षत्री ० वैश्य भी निज धर्म त्याग सदा कुमारग चले (-) ० गे अरु जितने शूद्र है सो ब्राह्मण का आचा (-) ० र करेगे (।) नारीन के चरित्र सुनिये तो शास ० शसुर की वैरी हो स्वामी को दुख देगी (।) इन्ह ० नष्ट वुद्वियो को कि स प्रकार परलोक होगा ० इसी चिन्ता से मेरा जी बहुत अकुला रहा है ० तिस्से दीन दयाल ऐसा कोई थोडा ही सा उ (-) ० पाय वताइये कि जिस से ये परमगति पावे ० क्यू कि आप सब ही कुछ जानते हो (।) ऋषि ० के इतने वचन सुन व्रह्मा वोले नारद अछी (-) ० वात तुमने पूछी सावधान हो सुनो (।) मै कहता ० हू कि भक्त वत्सल महादेव से पारवती ने एक ० वेर यो विनती की जो नाथ दयाकर रामचरित्र ० मुज को सुनाओ (।) तद नेह वश होए पुराण का ० कहा हुआ अध्यात्म रामायण आप शिव ने दे (-) ० वी को कह सुनाया त[3] से विसको पाय अति ० प्रेम से पूज नित (-) तन देष अव तलक भी भवानी ० आनन्द मे मगन रहती है (।) सोई जव प्राणीन ० के भाग से ससार मे प्रसिद्व होगा तद विसके ० पढने ही से लोग सद्गति को पहुचेगे (।) तभी त (-) ० क पाप गरजा करेगा (,) निडर हो क्रूर यम के दू (-) त लोक मे जायेगे (,) ईश्वर ठहरावने के लिये आ (-) ० पस मे शास्त्रन को महा झगरा झझट रहे (-) ० गा वरन ज्ञानी लोगो को भी रामरूप का बोध ० न होगा (।) सुनने सुनाये का विसका जो गुण ० है सो सव कहने का मुज मे सामर्थ्य नही पर ० तो भी शिव का कहा हूआ कुछ एक महातम व (-) ० रनन करता हू कि रामायन का आधा श्लोक ० क[4] एक जो कोई भक्ति से पढता है सो तत क्ष (-) ० ण सव पाप से छूटता है ओ यथा शक्ति नि (-) त जो चित दे उसका पाठ करे सो ससार मे जी (-) ० वन मुक्त कहावे अरु जो मनुष्य आलस छो (-) ० ड अध्यात्म रामायन को पूजे (,) निकट जा नम (-) ० स्कार करे राम के भक्तन को लिख दे (,) एकादशी ० अरु रामनवमी के दिन उन के घर जा सुने सु (-) ० नावे (,) तिसे दिन दिन अश्वमेध करने का (,) स (-) ० कल देवता पूजने का (,) सब वेद शास्त्र पढने पढा (-) ० वने का (,) अक्षर अक्षर उत्तम तीर्थो मे सरव ग्रा (-) ० स सूर्य्य ग्रहण समय व्यास आदि श्रेष्ठ व्रा (-) ० ह्मणो को अपने तुल्य धन दान करने का ० सहस[5] मे फल मिलता है (।) इस प्रकार ओर भी ० रामायण का महत्व सदा शिव ने कहा है कि ० दिन रात जो उस को गावता है विसकी आज्ञा ० इन्द्रादि देवता सब चाहते है अरु विसे पढके जो (-) जो पुण्य काज किया जाता है सो (-) सो कोटि गुण ० होता है (,) तिसमे राम हृदय स्तोत्र जो जीव[6] लगा (-) य पढे सो व्राह्मण वध भी किया होए तो भी ती (-) ० न दिन मे पवित्र होवे अरु जो नर हनुमान ० की प्रतिमा के निकट मौन साध मन मे नित ० तीन वेर पाठ करता है उसका सकल मनो (-) ० रथ पूजता है ओ जो पढता हूआ तुलशी पी (-) ० पल की प्रदक्षिणा करता है वह ब्रह्म हत्या से ०

---

१. स्त्रियो को। २. अरु। ३. तब। ४. अथवा। ५. सहज। ६. जी।

छूटता है अरु राम गीता का महातम सब तो ० शकर जानते है ओ आधा पारवती विस(-) ०
का आधा मै जानता हू (,) सो भी थोडा सा मुज ० से सुन लो कि जिस्से तुरन्त ही लोगो के चित्त ०
शुद्ध हो जाए (।) ऐसे कह ब्रह्मा लगे वषानने कि ० हे नारद सिगरे मैं षोजता फीरता हू पर
जै(-) ० सा राम गीता पाप नाशनी है वैसा दूसरे कि(-) ० मी को मैं नही देखता इस कारण वेद
समुद्र से ० मथ निकाल हर्षित हो लक्ष्मण को रामचद्र ० की दी हूई राम गीता जो सज्जन मन
दे सुनता(-) ० सुनवाता है सो कृता हो विराजता है जैसा का(-) ० र्त्तवीर्य को वधने की इछा
कर धनुषविद्या ० शिषने के लिये महेश के निकट वस[1] उस रा(-) ० म गीता को पढ सुन कि जो
पारवती पाठ क(-) ० रती है परशुराम ईश्वर स्वरूप हो गया तिस ० से ब्रह्म हत्यादिक पाप से
जो नर निकाश[2] चा ० हते है वे एक मास उस गीता का पाठ कर आ (-) ० नन्द हो गाजे अरु
निषिद्ध प्रतिग्रह भोजन ० कुवाच्य इनसे जो पातक होता है विसको ० राम गीता ही कीर्त्तने से
नाशती है ओ शा (-) ० लग्राम तुलशी पीपल अरु यती लोगो के ० निकट जो मनुष्य विसे
पढते है तिन्ह को व (-) ० ह फल मीलता है कि जिसका कुछ वषान ही[3] ० कि[4] जाता ओ ब्राह्मण
जेमावते[5] भक्ति से राम गीता का जो उच्चारण करते है तिन्ह के पितर ० विष्णु धाम को जाते
है (,) तिन मे विशेष एकाद (-) ० शी व्रत रह (,) द्वादशी के दिन नेम आचार से पी (-) ०
पर तले जा गीता जो पाठ करते है वे राम रूप हो ० जाते है अरु देवता सव उन्हे पूजते है ओ य(-) ०
हा तक महातम है कि विना ज्ञान ध्यान तीर (-) ० थ स्नान राम गीता पढने से अनन्त फल हो
ता है इस प्रकार वहुत कहा तक महातम वर ० नन करू(।) तत्र मत्र श्रुति स्मृति पुराण ये जि ०
तने है सो अध्यात्म रामायन की सोरहवी क[6] (-) ० ला को भी नही पा शक्ते है (।) शौनक
आदि ० ऋषि से सूत कहता हे कि विसकी महिमा ० जो प्रजापति ने नारद को सुनाया जो मनु ०
ष्य सुने सुनावे सो वैकुण्ठ मे जा देवतान से ० पूज्य होवे ० इति श्री राम चरित्रे वाल काण्डे ०
प्रथमोध्याय १ फिर ब्रह्मा वोले विस आवि (-) ० नाशी चेतन रूप सीता(-)पति को वार वार
मैं प्र (-) ० णाम करता हू कि जो पृथ्वी का भार उतारने के अर्थ देवतान की विनती से निर्मल
रविकु (-) ० ल मे जन्म ले राक्षसन को वध[7] (,) धरती को सुख ० दे सकल पाप हरनहारी
अटल कीरत वढा (-) ० य फिर पानी मे पानी सा ब्रह्म माह जा मिल ग(-) ० ये अरु जो
ससार की उत्पत्ति स्थिति प्रलय ० के हेतु है औ देषने मे सच माया मोह मे पडे है ० पर
विचारिये तो विन से दूर है अरु जो आ (-) ० नन्द मूर्ति जोति स्वरूप है (।) ब्रह्म ज्ञान भरी हू
(-) ० ई इस पोथी को जो मनुष्य एक चित्त हो सु (-) ० ने सुनावे वह सब पाप से छूट विसी
हरि मे मिल जाता है (।) इस्से भवबन्धन ते मुक्ति ओ ० विन की ये कोटिन गौ दान का फल जो
नरचा (-) ० हते है तिन्हे उचित है कि नित नित अध्यात्म ० रामायन को पाठ करे ओ सुने
क्यूकि शिव प(-) ० हाड से निकल राम समुद्र मे मील रामायन रू(-) ० प यह गगा तीनो लोक
पवित्र करती है ओ म(-) ० न वाछित फल देती (।) इस भाति महिमा वरन(-) ० न कर

---

१. रहकर। २. छुटकारा। ३. 'नहीं' होना चाहिए। ४. किया। ५ ब्राह्मण-भोजन कराते हुए। ६. सोरहवीं=सोलहवीं। ७. का वध करके।

पुनि ब्रह्मा एक ओर से महादेव पार्वती ० का सवाद नारद जी से कहने लगे (—) इस रीति से ० कि एक वेर कैलाश के उपर जौ सैकरन सू(-) ० र्य की ज्योति सा उद्योत है (,) अछे सोहावने सु(-) ० वर्ण के मन्दिर मे रतन की चौकी पर ध्यान लगा (-) ० य बैठे हूऐ सदाशिव से (,) जो सकल पापहरन हा (-) ० रे ओ जिन्हे सिद्ध लोग से रहे है (,) वायी जाघ पै ० बैठ भक्ति से शिर झुकाय देवी ने आनन्द ० कन्द यह वचन कहा (—) हे परमेश्वर अन्तर या(-) ० मी दया कर राम का वृत्तान्त मुजे सुनाइऐ (,) ० मै इसलिये आपसे पूछती हू कि उनका चरि(-) ० त्र अरु तुम दोनो सनातन हौ (।) जो के[1] यह भेद दू(-) ० सरे किसी को वतावने योग्य नही पर महानुभा(-) ० व लोग अपने भक्तन से कोई वात नहि छि(-) ० पाते तिस से आप मेरे स्वामी हैं ओ मै तुम्हा(-) ० री सेवक हू इस्से मुझे समझाय के कहिये (।) यो ० तो आपके कहे हूऐ वैराग्य सहित ज्ञान विज्ञा(-) ० न भक्ति स्त्री हो के मै भी बहुतेरे जानती हू प(-) ० र जिस से तुरत ही ससार सागर तरिये सो मैं सुना चाहती हू अरु सच पूछिये तो भव समु ० द्र पार होने के लिये जिस विन[2] दूसरा कोई उ (-) ० पाय है नहि सो दृढ भक्ति तो तुम्हारी सी मुझ ० को भी रामचन्द्र मे प्रसिद्ध है पै मेरे जी मे एक ० शका आ लगी है विसे निर्मल कथा कह आप मिटाइऐ (।) सो यह है कि कितने लो(-) ० ग तो कहते है जो श्री रघुनाथ जी सब के आ ० दि परब्रह्म अरु सकल माया से अलग है ० इसी लिये सिद्ध जन मन लगाय दिन रात वि(-) ० न का भजन करते है कि जिस के प्रताप से परम० पद को जाते है ओ वहुतेरे यो वक्ते[3] है कि यद्य(-) ० पि ब्रह्म हैं पर निज अज्ञान से अन्धे हो वे भी आपसे अपने को नही पहचान शके क्युकि ० ओरो के समझाने से अपने को चेता[4] ओ ० जो जानते तो कहो ब्रह्म कहा कर सीता के लि(-) ० ये वीच वन मे मनुष्य से क्यू रोते कलपते फि(-) ० रे तिस्से विन ज्ञान की सेवा किये कोई नही ग (-) ० ति मुक्ति पाता (।) सव जीव जन्तु के समान एक ० वह भी कोई प्राणी है इस का उत्तर आप ने ० क्या ठहराया है सो शीघ्र कहिए जो मेरे मन ० का सन्देह जाये (।) उमा की इतनी वाते सुन अ(-) ० ति हर्षित हो महादेव बोले (—) हे पारवती धन्य हो (,) वडी भक्त हो कि जो राम का चरित्र जाना ० चाहती हो तिस्से यह भेद जो आगे किसी ने मु(-) ० ज से नही पूछा तुम्हारी भक्ति वश हो राम को ० प्रणाम कर अब मै कहता हू कि श्री रघुनाथ स(-) ० दा माया से निर्लेग है ओ सव के आदि आन(-) ० द कन्द एक पूरण ब्रह्म है (,) निज माया से चर अ(-) ० चर रूप सारा यह ससार रच वाहर भीतर आ(-) ० काश से सव मे व्याप रहे है अरु घट घट वे ही वो(-) ० लते है पै गुप्त हो जगत को माया से भरमा रहे ० है (।) जो मूढ यह भेद नही जानते वे ही अन्धे है ० क्यूकि अपनी सी अज्ञानता माया हीन चेत(-) ० न रूप परमात्मा मे ठहराते है (।) इसी अपराध ० से लडके वालो के मोह मे अनेक काज मे ल(-) ० पिटाय ससार मे फसते है ओ निज हृदय ० स्थित सीता पति को ऐसे भूल जाते है कि जै ० (-) से अपने गले का सोना कोई भूल जावे (।) यो क(-) ० ह फिर महेश कहने लगे (—) हे देवी जैसे जोतिस रूप सूर्य मे अधेरा नही वैसे ही स्फटिक से ० निर्मल ज्ञान रूप परमात्मा रघुनायक मे अ(-) ० ज्ञानता नही है पै

१. यद्यपि। २. जिसके विना। ३. बकते। ४. जान पाये।

जैसे घूमनिहारो के लेखे[1] ० घर द्वार भी घूमता है वैसे देह इन्द्रिय सृजने ० वाले ईश्वर को माया वश होए अपने समा(-) ० न लोग गणते है तिस्से सदा प्रकाश रूप सू(-) ० र्य को जैसा न तो कभी दिन होता न रात तैसे ० ही आनन्द विज्ञान सरूप परमेश्वर जो रा (-) ० मचन्द्र है तिनमे माया मोह का कुछ लेश भी ० नही है (।) ब्रह्मा कहता है नारद मुनि से कि इस ० भाति सम झाकर जव देषा कि अव भी पार(-) ० वती का सन्देह गया नही तव सदा शिव फि(-) ० र वोले (—) हे भवानी इस प्रसग पर सीता राम ० हनुमान इन्ह तीनो का सवाद जो अति दु(-) ० र्लभ है ओ ससार सागर पार उतारन हा(-) ० रा—है सुनौ मै कहता हू कि अगले रामा ० यन मे कथा है कि देवताओ के कटक राव(-) ० ण को अरु पुत्र वाहन सहित विसकी सेना ० को रण मे मार सीता को ले सुग्रीव लक्ष्मण ० के साथ हो हनुमान आदि वीरो को आगे क(-) ० र अवधपुरी मे आय वसिष्ठादिक वडे वडे ० ऋषिन से राज्य का तिलक पाय सिहासन प(-) ० र बैठ रामचन्द्र ने अपने निकट एक वेर देषा ० कि भारी भारी सव काज कर हनुमान जी हा(-) ० थ जोडे षडे है पै ज्ञान विन[2] और कुछ नही ० मुज से चाहते (।) तव सीता से यह वचन कहा ० कि हनुमान को तुम मेरा सव भेद वता दो ० क्यूकि नित उठ हम दोनो की वडी भक्ति क(-) ० रते है इसलिये ज्ञान के योग्य है (।) प्रभु की इ (-) ० तनी आज्ञा पाय अति हर्षित हो सीता ल(-) ० गी कहने (—) हे पवन कुमार श्री रामचन्द्र को व (-) ० ह पूरण व्रह्म समझो कि जिसको कुछ रूप (-) ० रेष नही औ जो आदि अखण्ड एक अवि (-) ० नाशी आनन्द कन्द सकल घट वासी है औ ० सदा जागता रूप अरु जो शान्त निर्मल जो ० ति से आप से आप प्रकाश हो रहे है अरु जि ० न मे ससार की वासना नही (,) सदा चेतन सरू (-) ० प है ओ मुझे जगत की उत्पत्ति पालन प्रल(-) ० य करन हारी आदि माया जानो (।) विस व्रह्म ० के सग होने ही से सारा जगत मै उपजाती ० हू ओ चर अचर नाना रूप हो ससार का सक(-) ० ल काज मै ही करती हू तिस्से अयोध्या नग(-) ० र माह निर्मल रघुकुल मे जनम(,) विश्वामि(-) ० त्र का सहाय हो विस के यज्ञ की रक्षा (,) श्राप ० से अहल्या को मुक्त (,) शिव धनुष का भग(,) मुजे व्याह परशुराम के अहकार का विना(-) ० श (,) वारह वर्ष अवध मे वस तिस पीछे दण्ड ० कारण्य मे जा विराध का वध(,) माया रूपी मा (-) ० रीच नाम राक्षस का क्षय (,) छाया सीता का नि(-) ० र्माण(,) जटायु को मुक्त(,) कवन्धा सुर का विना(-) ० श (।) शवरी से पूजाय सुग्रीव से मिल वाली का ० वध(,) मेरा षोज(,) समुद्र मे सेतु वध(,) लका पुरी ० को घेर रण मे पुत्र सहित रावण का क्षय(,) वि(-) ० भीषण को राज्य दान (,) मुझे ले पुष्पक नाम ० विमान पर चढ अवधपुर मे आगमन ति(-) ० स पीछे राज्य का तिलक (—) ये जितने काज है सो ० सव मैने ही किये है (।) अज्ञानी लोग झुठ मुठ राम को लगाते है क्यूकि ये तो अचल आ(-) ० नन्द मूरति निराकार व्रह्म है कि जो न तो कु(-) ० छ चाहते न तजते न कोई काज करते है ० ओ न किसी के बाप है न बेटा(,) माया से अधे ० हूऐ लोगन को मनुष्य से लगते है ० इति ० श्री रामचरित्रे वाल काण्डे द्वितीयोध्याय (।) ० इस भाति वुझा समझा

---

१. घूमनेवालो के लिए। २. के अतिरिक्त।

जब सीता चुप भयी तव माया ही की करतूत वताने के ० लिये हनुमान से आप[1] रामचन्द्र सव व्यव(-)० रा[2] कहने लगे कि जैसे तीन आकाश दिषा(-)० ते है(—) एक तो वडा आकाश(,) दूसरा घटादिक ० मे (,) तीसरा जल के भीतर परछाही रूप(,) वैसे ही ० माया वश पडे हूऐ मनुष्य को चेतन ब्रह्म ० भी तीन प्रकार जनाता है(—) एक तो निर्गुण जो ० सव मे व्याप रहा है(,) दूसरा जीव(-)सरूप(,) तीस(-) ० रा छाया सरूप जो दर्पनादिक मे देष परता है(।) तिन मे जैसे घटादिक मे का आकाश ० ओ छाया रूप आकाश ये दोनो मिथ्या है ० वैसे ही जीव वो दर्पनादिक मे की छाया ० ये भी झूठ है(,) एक ब्रह्म सच है(।) ऐसे विचार स(-) ० कल ससार एक ब्रह्म ही मय जो जाना जा(-) ० यें तव माया का विनाश होऐ (।) यह भेद पाय ० मेरे भक्तजन मुजी से प्रीति करे नही तो ० मेरी भक्ति विना शास्त्र देषते देषते सैक(-) ० रो वर्ष वीते जाये पर ज्ञान मोक्ष कधी[3] हो ० ने का नही वरन और भी दिन दिन मोह वढ ० ता है (।) यह परम गुप्त ज्ञान जो आप मैने तुम ० से कहा है(,) हे हनुमान देषियो (,) मेरी भक्ति से ० विमुख हूए लोगन को मत वताइयो ओ ० किसी शठो को जिन दीजियो(।) पारवती से ० महादेव कहते है कि हे देवी यही राम हृदय है(,) ० अति गोपनीय इसे जानना(,) यिह वडा प(-) ० वित्र अरु सकल पाप का विनाशन हारा ० हे ओ सव वेदात का सार है(।)जो इस को भा(-) ० व भगति से पढता है सो निश्चय मुक्त हो ० जाता है ओ अनेक जनम के अर्ज्जे हूए ब्रह्म हत्यादिक पातक से ततक्षण छुटता ० है (।) ऐसे कह फिर शिव वोले कि जाति ही (-) ० न[4] चोर सुरायी[5] पर द्रव्य पर स्त्री हरनहार ० ओ माता पिता ब्राह्मण इन का वध करने ० वाला और योगीन को कलक लगावन हा(-) ० र कैसा ही कोई पापी होवे पर मन लगाय प्रे(-) ० म से पूज जो नर राम हृदय पाठ करे सो विस ० पद को जा देवनाओ मे पूज्य होए कि जहा ० योगियो का भी पहुच नही ० (।) इति श्री राम ० चरित्रे वाल काण्डे तृतीयोध्याय ३ (।) शि(-)० व की इतनी वाते सुन अति आनन्द मेग (-) ० न[6] हो पारवती वोली (—) नाथ आप के अनु ग्र(-) ० ह से मै कृतार्थ भयी अरु सव मेरे सन्देह अ(-) ० व गये पर तुम्हारे मुख से अमृत समान ० राम का चरित्र सुन के मेरा जी तृप्त नही हू(-) ० आ तिस्से श्री रघुनाथ की कथा विस्तार क(-) ० र अव सुना चाहती हू (।) उमा की इतनी वाते ० सुन अति हर्षित हो महा देव वोले कि जो ० अध्यात्म रामायन आगे आप राम ने मु(-) ० झ से कहा था सोई मै तुम से कहता हू सा(-) ० वधान हो सुनो कि जिस के श्रवण से अति ० भयावन पाप ते लोग छुटते हे ओ धन सतति ० पाकर बहुत दिन तक जीते है (।) सो कथा यह ० है कि एक समय रावण आदि राक्षसन के भा(-) ० र से अति पीडित हो गौ का रूप धर देवता ० ऋषिन को सग ले ब्रह्म लोक मे जा अपने ० दुख का सब कारण पृथ्वी ने रो रो कर ब्रह्मा ० से कहा(,) तव वे सुन्दर महूरत साध उनको सा(-)० थ लिये क्षीर समुद तीर जा वेदपुराण के०अछे अछे स्तोत्रन से कि जिनमे वडी मीठी ० मीठी बाते है भक्ति से गिडगिडा गिडगिडा ० विस हरि की स्तुति करने लगे कि

---

१. स्वयही। २. ब्योरा। ३. कभी। ४. हीन जाति का, शूद्र। ५. सुरापी, शराबी। ६. में मग्न हो।

जो घट घ(-) ० ट वसता ओ सव का मनोरथ जानता है(।) त(-) ० व पूरव दिश से अन्धेरा दूर करते हुए ओ ० शख चक्र गदा पद्म हाथो मे लिये(,) शिर मे ० किरीट मणि(,) कानो मे कुण्डल(,) करो मे विजा(-) ० पठ[1] वाला[2] पहने ओ सुवर्ण के जनेऊ अरु वैसे ० ही वरन[3] वस्त्र धारण किये (,) गरे मे वनमाला ० औ कौस्तुभ मणि (,) वक्षस्थल मे भृगुपद का ० चिन्ह इन से अति विराजमान(,)सावली(-) ० सी मनोहरमूरति (,) विकसित वदन(,) कमल ० नयन हरि लक्ष्मी सहित गरुड पर चढ झ(-) ० ट वहा आप प्रगट भये कि जिन्ह मे सहस्र (-) ० न[4] सुरय[5] की जोति जगमगा रही थी ओ पा ० र्श्ववर्त्ती सनकादि ऋषि लोग चहु दिश ० षडे[6] हुए जिन का गुण गाय रहे थे (।) शिव क(-) ० हते है हे पार्वती[7] कि वडे से तप किये विना ० किसे इतना सामर्थ्य है जो उनका दर्शन ० पावे(,) इस कारण एक ब्रह्मा के देषने आये ० तो दण्डवत कर हाथ जोड गिड(-)गिडा गिड(-) ० गिडा यह वचन वह कहने लगा(—)दीनदया(-) ० ल(,) मै तुम्हारे विन[8] चरणो को सदा मन से प्र० णाम करता हू कि जिनको भव वन्धन से ० छुटने के लिये ओ अपने(-)अपने काजन[9] ० के हेतु ओ ततक्षण मनवाछित फल पा(-) ० ने के निमित्त वडे(-)वडे मुनि लोग ध्यावते हैं(,) ० मुज[10] आदि देवता सव आगे से सेवते आये ० है(,) ज्ञानी जन हृदय मे सुमरते है(—) हे कृपा सा(-) ० गर(,) माया से जगत की उत्पत्ति (,) पालन (,) वि(-) ० नाश आप ही करते हो पर जल मे कमल ० की भाति ससार से सदा निर्लेप रहते हो इ(-) ० स लिये कि आनन्द विज्ञान स्वरूप हो (,) हे ० महाराज(,) कितने ही पाठ (,) पूजा(,) दान करे पे दु ० ष्टन के मन वैसा नही शुद्ध होता जैसा आ(-) ० प के गुण गावन हार भक्तन का चित्त निर(-) ० मल रहता है(।) यह समझ आपके विन चर (-) ० न को आय गहा हू कि जिन पर पूजा के लि(-) ० ये चढाइ हुई तुलशी से लक्ष्मी यद्यपि हृद(-) ० य मे रही रहती है तो भी सदा वैर करती है (,) इस०कारण कि ऐसा न होए जो यह मेरी सवत[11] हो ० जाय (,) इस्से यह वात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मी से भी ० अधिक प्रीति अपने चरनन के भक्त जन मे ० करते हौ (।) हे परमेश्वर(,)अव मेरी यही श्रद्धा है०कि आपके पाव मे सदा मुजे भक्ति होये कि ० जो सकल दुख का पुरा[12] एक औषध है(।) व्रह्म की इतनी वाते सुन भगवान वोले(—) प्रजा प(-) ० ति तू क्या चाहता है(,) सो तेरा काज मै करू(।) विस(-) ० ने विनती की कि हे महाराज (,) पौलस्त्य का पोता ० रावण नाम जो सकल राक्षसो का वडा राजा ० है मुज से वर पाय अति गर्वित हो लोकपा(-) ० लो सहित तीनो भुवन को महा दुख देता ० है (,) विसकी मृत्यु कोई ऐसे ही मनुष्य विना ० और किसी से होने की नही(—) मैने लिषा है(।) ० तिस्से विस देव (-) शत्रु को मानुष हो आप मा(-) ० रियै (।) ईश्वर ने उत्तर दिया (—)सुनो एक समय त(-) ० पस्या से सतुष्ट कर अदिति सहित कश्यप ० ने मुझ से वर मागा कि तुम मेरा पुत्र हो तदभ (-) ० क्ति[13] वस अछा कह[14] बहुत मैने उनको ० भरोसा दिया(,)सोई अव पृथ्वी

---

१. विजाय। २. बाला। ३. वर्ण के। ४. सहस्त्रो। ५. सूर्यो। ६. खडे। ७. 'से' आनावश्यक; 'कि हे पार्वती'। ८. उन। ९. कार्यो। १०. मुझ, मै तथा अन्य। ११. सौत १२. पूरा, पूर्ण। १३. उसकी भक्ति। १४. 'अच्छा' ऐसा कहकर।

मे जा जनम ० ले दशरथ होवे और मै चार स्वरूप हो कौश (-) ० ल्या आदि विन की स्त्रियो के गर्भ मे अवता(-) र० ले उनका पुत्र कहाऊंगा (।) इसी भाति मेरी ० योग माया भी राजा जनक के घर जन्म लेगी ० ओ उस का नाम सीता पडेगा तद विस की सा(-)० थ हो यह काज मै करूंगा (।) ऐसे आशा (-) भरोशा ० दे विष्णु तो वहा से अन्तरधान हो गये(,) तव अ(-)० ति हर्षित हो व्रह्मा ने देवताओ से कहा तुम्हा(-) ० रे लिये रघुकुल मे आप हरि अवतार लेगे(,)० तुम सव भी अपने(-)अपने अश से वादर(-)भा(-)० लु हो पृथ्वी मे विन की सहायता जा करो(।) इस ० प्रकार देवतान को शिषा(-)पढा ओ धरती को ० वहुत प्रवोध[1] निश्चिन्त हो विधाता अपने आ (-) ० श्रम को गये(।)तव महा हर्षित हो सुर सव[2] तुर(-) ०त वडे(-)वडे पराक्रमी वानर भालु हो(-)हो[3] जहा(-)० तहा पृथ्वी मे पसर गये ओ सहायता के लि(-)० ये हरि की वाट निहारने लगे अरु परवत वृ(-) ० क्षो ही को शस्त्र ठहराय अवसर पर शत्रुन ० से युद्ध करने को चाहने[4](।) इति श्री रामचरि(-) ० त्रे वाल काण्डे चतुर्थोऽध्याय ४(।) शिव कहते ० हैं—हे पारवती (,) हरि की आज्ञा पाते ही कश्यप ० आय दशरथ भये तो अयोध्या के ऐसे प्र (-) ० तापी राजा हुए कि अपनी वीरता से सव लो(-) ० को मे प्रसिद्ध हो गये(,) निदान कितने एक वर्ष ० के बीते पुत्र के लिये निपट दुखित हो वार (-)वा(-) ० र प्रणाम कर हाथ जोड निज गुरु वसिष्ट मु(-) ० नि से एक वेर उन्हने विनती की(—)महाराज ० ऐसा कोई उपाय अव वताइऐ जिस ० से सब लक्षण भरे अति उत्तम पुत्र मुजे हो(-) ० ए क्यूकि एक उन्ही विना यह राज्य कुछ नही ० मुझको सुख देता है[5](।)दशरथ की इतनी बाते ० सुन वसिष्ठ मुनि वोले—हे महाराज(,)तनिक चि(-) ० ता मत करो चार पुत्र तुम्हे ऐसे होगे कि मानो ० दूसरे लोकपाल ही आ अवतरे होए(,) पर ऋ(-)० ष्य शृंग मुनि को मगाय हमे साथ ले पुत्रेष्ट ० यज्ञ जो करो(।)इतने वचन के सुनते ही महा ० हर्षित हो मत्री सो ऋष्य शृंग को झट बुला ० सुन्दर मुहुरत ठहराय स्नान(-)पूजा से सुचि(-) ० त हो वसिष्ट आदि ऋषिन को सग ले वडे० धूमधाम से राजा दशरथ यज्ञ पर जा बैठे(।) ० जव श्रद्धा से होम करने लगे तव अति सतु(-) ० ष्ट हो सुवर्ण की सी देह धारण कर काचन ० की परात मह सुन्दर हविष्य हाथ मे ले प्र (-) गट हो अग्नि देवता बोल उठे(-)हे पृथ्वीपति (,) दे(-) ० वताओ की वनायी हूई यह षीर[6] तुम लो(।)इ(-) ० सी से निसन्देह आप[7] ईश्वर तुम्हारे पुत्र हो(-) ० गे(।) ऐसे कह नृपति को हविष्य दे अगिन तो ० अन्तरधान हो गया तद अपना मनोवा(-) ० छित फल पा अति हर्षित हो वसिष्ट अरु ० ऋष्य शृंग को उठ के राजा दशरथ ने प्रणा(-) ० म किया ओ विन्हो की[8] आज्ञा पाकर कौश(-) ० ल्या ओ केकयी को आधो आध षीर वाट दी ० कि इतने मे सुमित्रा भी तहा आ पहुची तो रा(-) ० जा के हाथ पकर अपना अश मागने ल(-) ० गी(।) निदान अपने अपने भाग मे से आधी ० आधी हविष्य प्रसन्न हो कौशल्या ओ के(-) ० कयी ने सुमित्रा को दी (।) पारबती से महादेव ० कहते है कि इस प्रकार पायस पा साथ हो[9] वि(-) ० धि से भोजन करती

---

१. प्रबोध देकर। २ सभी सुर, देवता। ३. हो होकर। ४. चाहने लगे। ५. मुझे तनिक सुख नहीं देता। ६. खीर। ७. स्वय। ८. उन्हीं की। ९. एक साथ होकर।

ही तीनो रानी गर्भ से र(-) ० ही तो विस दिवस मे राज(-)मदिर मे दिन(-)दिन दे(-) ० वता(-)सी शोभने लगी (।) जव दशवा मास आन ० पहुचा तव चैत सुदि नवमी के पुनर्वसू नक्ष(-)० त्र कर्क लगन मे यद[1] सूर्य (,) चन्द्रमा (,) वृहस्प(-) ० ति(,) शुक्र (,) पाचो ग्रह ऊच स्थान मे थे ओ ऊपर ० से देवता सव फूल वरसाय रहे थे (,) तीनो भुव (-) ० न के नायक सनातन हरि कौशल्या के गर्भ ० से उत्पन्न हूये ओ श्याम(-)मूरति कमलनय(-) ० न चतुर्भुज सरूप वन[2] शख(,) चक्र (,) गदा(,) पद्म ० लिये(,) मोर मुकुट शिर मे धरे पीताम्बर का(-)० छे(,) केशर के तिलक दिये(,) वनमाला अरु म(-) ० णिमय हार आदि नाना भूषण पहने(,) कानो ० मे कुण्डल झलकाते(,) करुणभरी आष[3](-) ० न से देखते ओ सुन्दर कपोलन पर टेढी अ(-)० लक लटकाये जब प्रगट भये तव भगवान ० का अद्भु[4]रुप देखती ही कौशल्या निपट च(-)० कित हूई तो हर्ष से आषो मे आसू भर(-)भर प्र(-) ० णाम कर हाथ जोड स्तुति करने लगी कि हे ० पुरुषोत्तम आदि अनन्त पूरन परमात्मा(,) हे ० देवन के देव(,) शख चक्र गदाधारी अच्युत(,) मै ० आप को वार वार नमस्कार करती हू (।) तुम ही ० वह निर्गुण व्रह्म हो जिसे वेदवादी लोग जग(-) ० त के केवल साक्षी मात्र ज्ञान सरूप अरू ऐसे ० कहते है जो चाहिऐ की वचन से कोई उसे व(-) ० तावे क[5] इन्द्रियो से पहचाने(,) वुद्धि से भी देख ० सके तो क्या सामर्थ्य है(,) ओ जो रज (-) तम(-) सत्व ० तीनो गुण धारण कर माया से ससार को सृ(-) ० जता(,) पालता (,) सहारता है(,) पर आप ज्यो के ० त्यो निर्मल सरूप सदा ही रहता है (,) तिस्से को ० तुम्हारी अपरम पार गति जान शके(,) क्यू कि ० अनेक रूप हो[6] तुम ही नाना काज करते ओ ० चलते(,) सुनते(,) देखते हो(,) पै ध्यान दे विचारिये ० तो कुक्ष[7]भी नही करते(,) इसी लिये तुम्है श्रुति ० कहती है कि विस चेतन परमात्मा को न तो जी(-) ० व है न मन(,) सदा ज्योति सरूप प्रकाश है औ हे ० महाराज(,) सकल प्राणीन मे समान अश से ० रहते हो(,) पर तो भी वुद्धिमानो को तो प्रगट ही हो(,) अज्ञान से अधे हूये लोगन को लखे न ० ही जाते हो इस्से ऐसे परमेश्वर कि जिन के ० उदर मे परमानुसरूप कोटिन व्रह्माण्ड दि(-) ० खाते है मेरे कोष मे जनम ले यही मनु(-) ० ष्यन को असभव है(,) पर भक्तिवस हो(,) इ(-) ० स्से नही कहा जाता(।) हे करुना निधान(,) पति(-) ० पुत्र(-)धन आदि रूप ससार सागर मे माया से ० वहुत मै भ्रम रही हू इस कारन पुन पुन[8] पा(-) ० व पडती हू कि जगत मोहिनी आप की मा(-) ० या मुझे न कभी घेरे औ आप का यह रूप ० सदा मेरे मन मे वसे अरु हे दीनदयाल अ(-) ० पना यह रूप छिपा आनन्द दायक सुन्दर वा(-) ० लक अव हुजिये जिसे प्यार कर कठ लगा खे(-) ० ला भव(-)समुद्र तरूँगी (।) कौशल्या की इतनी ० बाते सुन ईश्वर वोले(—)सुनो माता मुजी को ० पुत्र पावने के निमित्त दशरथ सहित तुमने ० तपस्या से बहुत मेरी आराधना आगे करी त(-)० द निकट जा प्रगट हो मैने भी स्वीकार किया ० ही था(,) तिस विच रावण को मार पृथ्वी का भा(-) ० र दूर करने के लिये व्रह्मा ने भी मुज से वडी ० प्रार्थना की(,) इस कारण मैने मनुष्य

---

१. यदा, जब; तदा के लिए 'तद' का बहुधा प्रयोग। २. बन। ३. आंख। ४. सभवतः 'अद्भुत'। ५. अथवा। ६ होकर। ७. कुछ । ८ पुनः पुनः।

का जन(-) ० म लिया है अब जो जो तुम्हारी मन कामना ० है सो सो सब सुफल होगी ओ भव सागर पा(-) ० र उतारनहार इश मेरे रूप का दूर्ल्लभ दर्श (-) ० न जो तुमे हूआ है सो अपने उस जनम की ० तपस्या का फल समझो (।) ऐसे जननी को बु ० झा(-) समझा फिर आप वालक हो लगे रोने ० पर तो भी ऐसे विशाल नयन महा सुन्दर भये ० जिसे देषत सुर(-) नर(-) मुनि के मन मोहै। शिव कहते है कि इतने ही मे राजा दशरथ ने पुत्र की उत्पत्ति ० सुनी तो महामगन हो सभा से झट उठ गुरु को सा (-) ० थ लिये अगने मे चले आये औ सौर घर के ० द्वार पर जा कमल नयन महा सुभग सुत को म(-) ० गा कर देष बहुत जुडाने अरु वसिष्ट की आज्ञा पा ० य विस समय के जितने कुछ जात(-) कर्म करने योग ० थे सो सब ज्यो कर चूके कि त्यो ही केकयी के एक (,) ० सुमित्रा के जौडही दो बालक हुए (,) तब तो निपट हर्षित हो सहस्रन गाव असल्य रुपैं[1] सोना ओ ० भाति भाति के वस्त्र धेनु आदि अनेक वस्तु राजा ० दशरथ लगे ब्राह्मणो को दान करने (।) जव विन्ह का(-) ० जो से सुचित भये तव वडे वडे पडितो को सग ले ० सुन्दर मुहूरत साध वसिष्ट मुनि लगे लडको ० का नाम धरने(,) तिनमे पहले कौशल्या के पुत्र ० का राम नाम रषा इस लिये कि ज्ञान से ध्यान ० लगाय इन्ही मे मुनि लोग रमते है (।) इसी प्रका(-) ० र केकयी के लडके को सव का भरण पोषण कर (-) ० न हार समझ भरत कर पुकारा ओ अनेक ल(-) ० क्षण देष सुमित्रा के वडे लवाल[2] को लक्ष्मण ० अरु सकल शत्रुन को हनने वाला जान छोटे ० को शत्रुघ्न ऐसे गुरु ने कहा (।) इतनी कथा सुना(-) ० य फिर महादेव वोले(—) हे पारवती जब कुछ दि(-) ० न के वे लडके भये तव उस षीर के गुण से जो कौ(-) ० शल्या के कयी ने निज भागो से निकाल सुमि (-) ० त्रा को दी थी राम के सग लक्ष्मण भरत के साथ ० शत्रुघ्न दो दो इकठे हो खेलने लगे(,) तिनमे ल(-) ० क्ष्मण सहित रामचन्द्र अनेक वाल लीला कर ० तोतली तोतली मीठी मीठी वाते कह माता पि(-) ० ता को परम सुख देने लगे (।) एक दिन रसोइ जेव(-) ० ते हुए राजा दशरथ ने देषा कि भाल मे मुक्ता ख(-) ० चित पीपल का पत्ता सा सुवर्ण का आभरण ० अरु कण्ठ माह मणिन के हार जिन्ह के वीच वी(-) ० च वाघ के नख गाथें हूए थे(,) कानो मे रतन जडि(-) ० त सुन्दर कुण्डल (,) कटि मे किंकिनी(,) हाथो मे विजा(-) ० यठ पहने इन्द्रनील मणि से श्याम सरूप राम(-) ० चन्द्र अगने मे छोटे छोटे वछरून के पीछे पीछे डो(-) ० लते फीरते है(,) तव अति हर्षित हो प्यार कर ल(-) ० गे वुलवाने कि हे रामचन्द्र इहा आओ मेरे सा(-) ० थ हो भोजन करो (।) इस प्रकार कितने हू वुलावें ० पर वे अपने खेल मे जो मगन थे सो काहे को ० आवे और भी भाग चले तद राजा ने कौशल्या ० को कहा कि तुम इन्हे पकड लाओ (।) सुनती ही ० हस कर वे दौडी तो जिसे योगी लोग ध्यान से भी ० नही धर शके सो भगवान कौशल्या सें क्यू कर ० पकडे जाय(,) निदान हाथो मे कादो लगाये ह(-) ० सते हूए आप ही पिता के निकट चले आये अ(-) ० रु ज्यो उन्होंने तनिक कवर मुह मे डाल दिया ० कि त्यो ही फिर भाग खडे भये (।) इस भाति आनन्द ० कन्द रघुनायक माया कर वालक वन राजा रानी ० को दिन दिन अधिक सुख देने लगे ओ उन्ह की ० माता

---

१. रुपये। २. सभवतः बालक, मुद्रण की अशुद्धि।

कौशल्या प्रीति सें ऐसी विन मे लवलीन ० रहें कि मास मास वर्ष वर्ष जब जब राम का जन(-)म दिन आवे तव तव महा महोत्सव ठान लड्डू ० पेडे टीकरी पैरकिये[1] आदि अनेक अनेक प्रका (-) ० र की मिठाई ओ पूआ पुरी आदि भाति भाति ० के पकवान वनाय वनाय सव इष्ट मित्र के घर घर ० वयना[2] भेजे ओ राम की चचलता के कारण गृ ० ह के काजो मे बहुत मन ही[3] लगावे निदान एक ० दिवस राम को वडी भूष लगी तो निकट जामा(-) ० ता से खाने को लगे मागने (।) जव कार्य वश हो वि(-) ० न्हो ने नही सुना तव तो निपट रिसिआ कर घ(-) ०र के भीतर पैठ ले लाठी सव वासन वर्त्तन तोड(-) ० ताड छीके पर से गिराय दही दूध माषन लक्ष्म(-) ० ण भरत शत्रुघ्न के सग हो रामचन्द्र खाने पीने ० लगे कि इतने ही मे किसी ने कौशल्या से जा क(-)० हा तो हस कर वेग ही जो वह आ पहुची कि तो ० ही ये सव भाग चले ओ पीछे पीछे कौशल्या ० भी दौडी तो पग पग गिरती पडती हूई निदा(-) ० न कुछ दूर पर जा राम का हाथ पकड लिया पर ० प्रेम से डाट डपट नही किया (।) जव डर से लडक प(-) ० न कर राम लगे सुसक सुसक रोने तव विहस ० के उन्हे कठ लगाय मुख चूम कौशल्या रानी ल(-) ० गी प्यार करने (।) इस प्रकार नाना वाल लीला क(-) ० र चारो भाई रघुनायक जो माया से मनुष सरू(-) ० प भये थे जव सात आठ वर्ष के हूए तव यज्ञो (-) ० पवीत दे धनुष विद्या सहित सव शास्त्र पढा (-) ० य वसिष्ट गुरु ने उन्हो को पूरण पडित किया (।) ० तिन मे राम की सेवा माह लक्ष्मण ओ भरत(,) ० की टहल मे शत्रुघ्न ऐसे सदा लव लीन भये कि ० जैसे स्वामी की आज्ञा मे सेवक जन रहे ओ श्री ० रघुनाथ जी का यह नित्य नेम था कि वडे तडके ० उठ धनुषवान ले लक्ष्मण सहित घोडे पर च(-)० ढ अहेर के लिये आस पास के जगलो मे पैठ ० वनये[4] दुष्ट मृगो को मार ला पिता को सव देषा[5]० हर्षित कर निज भवन मे जा वस्त्र उतार स्नान० पूजा करे ओ मुनिन को वुलाय नाना धर्म शा(-) ० स्त्र पुराण सुन प्रसन्न हो भाई वन्धु के साथ वैठ ० अमृत समान रसोई जे[6] आचमन कर पान ० खाय वस्त्र भूषण पहन फिर निकट जा राजा ० दशरथ को प्रणाम कर सभा मे वैठ नगर का जो ० कुछ काम होए सो सव हितू सा करे(।) इस प्रकार ० वे परमात्मा कि जिन का कधी[7] जनम मरण न(-) ० ही होता माया फयला[8] नर अवतार ले म(-) ० नुष्य की रीति पर चले पै विचारिये तो कुछ भी न ० ही करते ०(।) इति श्री रामचरित्रे वाल काडे पचमो (-) ० ध्याय ५ (।)

इतनी कथा कह फिर महादेव वोले(—)हे भवानी(,) इस अनन्तर एक वेर तेज मे अग्नि ०समान विश्वामित्र ऋषि निज माया कर उत्प(-) ० न्न हूआ जान पूरण व्रह्म रामचन्द्र जी को देष ० ने के लिये अयोध्या मे दशरथ के यहा आन प(-) हु० चे तव दूर से देषते ही तुरत वे उठ खडे भये ओ ० शिर झुकाय प्रणाम कर सुन्दर आसन पर विठ (-) ० ला वशिष्ठ सहित विधि से ऋषि को पूज हाथ ० जोड नम्र हो विन से यह वचन कहने लगे(—)महा(-) ० राज आपके आगमन से वहुत मै कृतार्थ भया ० क्यूकि तुमसे महानुभाव लोग जिस घर मे प(-) ० गु देते है वहा ही सव

---

१. एक प्रकार का मिष्टान्न, पिडकिया; मैदे या खोए की गुझिया। २ बायन, बयना, बैना; वह मिठाई या पकवानादि जो उत्सवादि के समय इष्ट मित्रों को भेजते हैं। ३. सभवतः 'नहीं'। ४. बनैले। ५. दिखाकर। ६. खाकर। ७. कभी। ८. फैलाकर।

सम्पत आ रहती है (।) ऐसे ० कह पुनि राजा ने पूछा (—) कृपानिधान किस कार (-) ० ण यहा आप आये सो कार्य अति शीघ मैं क (-) ० र लाऊ (।) निपट प्रसन्न हो विश्वामित्र जी बोले (—) ० धर्मावतार जव जव कोई परव आन पहुचता है ० तव तव यज्ञ रच जो मै देवता पितरो की पूजा आ (-) ० रम्भ करता हू तो ही अनेक भृत्य साथ लिये मा (-) ० रीच ओ सुवाहु दोनो दानव नित्य आ के मेरे आ (-) ० श्र मे[1] विघ्न करते है तिस्से विन दुष्टन को वध के ० निमित्त लक्ष्मण सहित जेष्ठ रामचन्द्र जी को ० वशिष्ट से एकमत हो जो रूचे[2] तो मेरे सग कर दी (-) ० जे मैं तुम्हारा वहुत कल्याण मनाऊगा (।) ऋषि ० की इतनी वाते सुनते ही राजा महाचिन्ता मे प (-) ० डे तो एकान्त मे ले जा गुरु से पुछने लगे (—) महारा (-) ० ज अव क्या करू (?) राम को तो कधी तजने को मेरा ० जी नही चाहता क्यूकि सहस्रन वर्ष के पीछे ० वडे कष्ट से देवता समान चारु पुत्र मुजे हूए (।) ० तिनमे राम मेरा अधिक प्यारा है (।) जो वह गया तो मै कभी जीने का नही ओ ये मुनि जो विमु (-) ० ख होवे तो अवश्य श्राप दे भस्म कर डालेंगे ति (—) ० स्से जिसमे मेरा भला होए सो उपाय दया ० कर आप वताइए (।) नृपति की इतनी वाते सुन ० बसिष्ट जी लगे कहने कि यह वात तो अभी प्र (-) ० सिद्ध करनी योग्य है नही (,) यहा तक कि देवता (-) ० ओ मे भी अभी छिपी हूई है (,) पर नेह वश हो मै ० कहता हू कि श्रीरामचन्द्र जी को तुम कभी मा (-) ० नुष मत लेषो (।) ये सनातन परमात्मा आप ० आ अवतरे है धरती का भार दूर करने (।) लिये, ० व्रह्मा ने आगे इन की वडी स्तुति करी थी सोई ० भक्तवत्सल परमेश्वर अव कौशल्या के यहा ० आ जन्मे है (।) तिस का यह कारण है कि कश्यप (-) ना (-) ० म तुम आगे व्रह्मा के पुत्र थे ओ सकल देवता (-) ० ओ की माता अदिति नाम तुम्हारी स्त्री थी (।) सा (-) ० थ हो तुम दोनो ने विस जन्म मे हरि की पूजा ध्यान (-) ० मे सदा चित्त लगा वहुत वर्ष तक महा उग्र ० तप किया (।) जब प्रसन्न हो भक्तवत्सल नाराय (-) ० ण निकट आ प्रगटे तव वडी श्रद्धा से यही वर तु (-) ० म ने मागा (—) कृपानिधान आप हमारे पुत्र हूजि (-) ० ये (,) निदान दया सिधु परमेश्वर सतुष्ट होए अ (-) ० छा कह अन्तरधान हो गये सोइ परमात्मा रा (-) ० म रूप हो तुम्हारे वालक अव हूए हैं ओ सदा रा (-) ० म के आज्ञाकारी श्री लक्ष्मण जी को जो देषते ० हो सो शेषनाग आ अवतरे हैं ओ भगवान के ० शख चक्र ये ही दोनो भरत शत्रुघ्न भये हैं (।) यह ० तो यहाँ का वृत्तान्त है अरु ईश्वर की योग मा (-) ० या ने राजा जनक के ह्या जनम लिया है (।) नाम उ (-) ० स का सीता कर पुकारते है तिसी से राम का व्या (-) ० ह कराने के लिये विश्वामित्र ऋषि आये हैं (।) ० तिस्से हे राजा हर्षित मन सें ऋषि को पूजिये ओ ० लछुमण समेत रामचन्द्र को इन के साथ कर दी ० जिये अरु हे पृथ्वीनाथ श्री रघुनायक का गुप्त ० भेद जो मैंने तुम्हे सुनाया कभी किसी से मत क (-) ० हिओ (।) वशिष्ट की इतनी बातें सुन कर रा (-) ० जा दशरथ बहुत अपने को कृतारथ मान वडे ह (-) ० षित भये तो तुरत राम लछुमण को वुला गो (-) ० द मे विठला वार वार मुह चूम प्यार कर विश्वामि (-) ० त्र के सग कर दिया (।) तव दोनो भाई को पाकर म (-) ० हा प्रतापी ऋषि निपट सन्तुष्ट हो वहुत

---

१. आश्रम में। २. रुचे।

आ(-) ० शीस दे हर्षित कर दशरथ से विदा भये ० ओ० धनुष वाण खड्ग ले दोनो राजकुमार उन्ह के सा (-) ० थ हो लिये (।) जब कुछ दूर सव निकल आये त(-) ० व देवताओ की सिरजी हुई वलीय(-)अतिवल ० नाम दो विद्या कि जिन्ह के ग्रहण करते ही कभी ० भूष प्यास परिश्रम आदि नही होते विश्वा(-) ० मित्र ऋषि रामचन्द्र को शिषला भाति भाति ० की कथा उन्हें सुनाते हूए गगा तीर ताडका ना(-) ० म वन मे आ लगे कहने(—)हे रघुनदन इस जग ० ल मे एक ताडका नाम राक्षसी रहती है सो ना(-) ० ना रूप धर सकल प्राणीन को सदा सतावती है ० किसी प्रकार से इस का वध विना शोचे शीघ्र कि(-) ० या चाहिए(।) ऋषि की इतनी आज्ञा पाते ही अ(-) ० ति हर्षित हो झट धनुष पर गुण चढाय रामच(-) ० द्र ने एक ऐसा टकार शब्द किया कि जिससे सा(-) ० रा वन गरज उठा(,) सो सुन कर घोर रूपिणी ता(-) ० डका से रहा नही गया तो क्रोध से मूर्छित हो ० दशन कट कटाय ऐसे उठ धायी कि जैसें पवन ० से मेघ दौड आवे (।) जद सन्मुख आन पहुची त(-) ० द तका कर ऐसा एक वाण विस की छाती मे रा(-) ० म ने मारा कि वह मुह से बहुत रुधिर उगलती हू(-) ० ई वन मे गिड पडी (।) तव पिशाच की देह जो श्रा ० प से हुई थी श्री रघुवर के प्रताप से तज सव आ(-) ० भरण से भूषित महा सुन्दरी यछ की कन्या वुह ० हो गयी औ रघुनायक को वार वार प्रणाम क (-) ० र परिक्रमा दे विन्ह की आज्ञा पाय वैकुण्ठ धाम ० को गयी(।) यह लीला देष निपट सतुष्ट हो विश्वा(-) ० मित्र ने राम को गरे लगा लिया ओ विन का माथ ० चूम जी मे कुछ शोच समझ शस्त्र विद्या सहित ० गुप्त सव मन्तर वुन को वता दिये(।) इति श्री राम(-) ० चरित्रे बाल काण्डे षष्ठोध्याय ६(।) शिव कहते ० है पारवती से कि इस प्रकार अनेक मुनिन से भ(-) ० रे हुए विस सोहावन वन मे ताडका को मार एक ० रात रह (,) होत सवेरे[1] वे सव चल खडे भये तो सिद्ध(-) ० चारण से सेवित सिद्धाश्रम नाम स्थान पर धीरें ० धीरे जा पहुचे(।) तहा जाते ही विश्वामित्र की आ ० ज्ञा पा जितने वहा के वसने वाले मुनि लोग थे ० सो सव आ आकर राम लछुमण की पूजा करने ० लगे(।) इस उपरान्त कुछ घडी के बीते श्री रघुना(-) ० थ ने विश्वामित्र से कहा(—)महाराज आप अव य(-) ० ज्ञ आरम्भ कीजे अरु विन दोनो अधम राक्ष ० सो को जो तुम्हारी क्रिया मे नित्य आ महा उपद्र(-) ० व करते हैं मुजे देषाइए (।) इतने वचन के सुन(-) ० ते ही अति हुलसित हो वेदशास्त्र के पढन हा (-) ० रे वडे कुलीन एकईश सहस्र मुनिन को सा (-) ० थ ले विश्वामित्र ऋषि यज्ञ पर जा बैठ लगे होम ० करने (।) जब ठीक दोपहर हो चूका तव मारीच ० ओ सुवाहु दोनो राक्षस वहा आन पहुँचे ओ ० जो उपर से हाड रुधिर विन पर वरसावने लगे ० कि तो ही श्रीरामचन्द्र ने धनुष पर दो वाण र(-) ० षा कान तक षेच एक सें मारीच को ऐसा मारा ० कि वह घूमता घूमता चार सौ कोश पर समुद्र ० मे जा गिरा(,) सो लोगन को महा अचरज सा ० लगा(,) अरु दूसरे अग्निमय वाण से सुवाहु ० को ओही जलाकर भस्म कर डाला और जि(-) ० तने विन के सहाय आये थे तिन्हे लछुमण ० जी ने तुरत मार गिराया(।) तव दमामे वजावजा ० दोनो राजकुमारो पर देवता सव लगे फूल

---

१. सबेरा होते ही।

वर[1] ० ओ उर्वसी आदि अप्सरा नाचने सिद्ध चारण ० जश वषानने (।) तव महा आनन्द मे मगन हो ० विश्वामित्र ऋषि तुरत उठ खडे हूए ओ पूज (-) ० ने ही योग राम लक्ष्मण को गरे लगा प्रेम से ० गोद मे विठला अमृत समान कन्द मूल फ (-) ० ल विन को भोजन करा यह वचन कहने लगे (—) ० हे सकल सिद्धि दायक जगन्नाथ (,) हे रघुनाय (-) ० क हम निकटक हो चूके (,) अव किसी वात की ० चिन्ता नही है (,) पर क्या जाने विन का साथी फि (-) ० र कोई दुष्ट राक्षस यहा आ धूम मचावे ति (-) ० स्से कुछ दिन तो और मेरे साथ तुम रहो (।) राम ० ने उत्तर दिया (—) अच्छा महाराज जव तलक आ ० ज्ञा कीजे तव तलक आप के निकट मैं रहू ऐं (-) ० से आपस मे वतराय पुराण की चर्चा ही से ती (-) ० न दिन विता चौथे दिवस ऋषि ने कहा (—) हे रा (-) ० मचन्द्र आज हम सब राजा जनक के यहा म (-) ० से उठे तो चले चले गगा तीर गोतम मुनि के उस स्थान मे छहा यज्ञ देषने को जायेगे (।) विन के नगर मे शिव ० का रष्या हूआ वडा सा एक धनुष पडा है जो कि (-) ० सी से टकसाये नही टकसता (।) तुम्भी चल के देषो (।) ० राजा जनक तुम्हारा वहुत आदर मान करेगा (।) ० ऐंसे कह अनेक मुनिन के सहित दोनो वालक (-) ० न को सग लिये विश्वामित्र जी अपने आश्रमैं ० आन पहुचे कि जहा फूलो फलो के भार से पृ (-) ० थ्वी पर झूके हूऐ सुन्दर सघन वृक्षो के बीच मे पा (-) ० षाण हो अहल्या देवी उग्र तप कर रही थी औ (-) ० र चहु दिश अति सोहावन दूव की मनोहर हरि ० अरी हो रही थी (,) पर मृग पछी आदि कोई जी (-) ० व जन्तु नही रहता था (।) विस आश्रम को देष ० अति अचरज मान श्री रघुनायक ने विश्वा (-) ० मित्र से पूछा (—) महाराज फूले फले हुए पेडन ० से भरा हूआ ओ सदा प्राणिन से हीन किस म (-) ० हा पुरुष का महा सोहावन ओ अति उत्तम ० यह स्थान है जो मेरे मन को परम सुख देता है (?) ० इसका सव भेद समझा कर आप मुझे वता (-) ० इऐ (।) ऋषि बोले (—) हे रामचन्द्र सावधान हो सुनो (।) ० मै कहता हू कि सब लोको मे प्रसिद्ध बडे धर्म्मा (-) ० त्मा गोतम नाम एक मुनि आगे यहा रहते थे ० सो तपस्या से हरि के ध्यान ही मे दिन रात मग (-) ० न रहते थे विन्ह को प्रसन्न होकर सेवा टहल ० के लिये व्रह्मा ने अहल्या नाम अति महा सुद (-) ० री एक कन्या दी (।) तिस के साथ मुनि तो अपने ० तप से सदा लवलीन थे सो कितने दिनो के ० वीते सयोगन किसी समय इन्द्र की दृष्टि विस ० स्त्री पैं पर गयी तो काम से निपट पीडित हो इ (-) ० सी ध्यान मे वह नित रहे कि कद मै समय पा (-) ० ऊगा जो सुचित हो इससे भोग करूगा (।) निदान ० किसी दिन गौतम के वाहर गये पर उन्ही का ० ठीक वेष धर घर मे आ अहल्या से विलस[2] जो ० इन्द्र तुरत निकल चला है कि त्यो ही द्वार पर मुनि ० आन ही पहुचे तो अपना (-) सा रूप देषते ही मा (-) ० रे क्रोध के लाल होकर विस से पूछने लगे (—) क्यू ० रे पापी महा दुष्ट अधम मेरा रूप धर तू कहा ० गया था अरु कौन है (,) सच कह नही तो श्रा (-) ० प दे अभी मै तुझे भस्म कर डालता हू (।) मुनि ० की इतनी वात के सुनते ही डर काप कर वह ० वोला (—) महाराज मै सुरपति हू (,) कामवश होक (-) ० र मै तुम्हारे घर पैठा (।) मुज से वडा अपराध

---

१. बरसाने । २. भोगकर ।

हू(-) ० आ(,)पर हे दीनदयाल आप क्षमा कीजे (।)ऐसें ० कह ऋषि के चरणो पर गिड परा तव जल[1]० कर गोतम ने श्राप दिया कि एक योनि के का(-) ० रण तू आया (।) जा(,) तेरी सारी देह मे सहस्र भग हो जावे (।) ऐसे इन्द्र को सुना भीतर आय देषे ० तो डर से थर थर कापती हुई दोनो कर जोरे ० नीचे शिर किये अहल्या खडी है (।) तद विम को ० भी श्रापने लगे कि आज से इस स्थान मे पा(-) ० षान हो आहार तज दिन रात महा तप तुम ० किया करो अरु जाड धूप वर्षा सह हरि को ध्या(-) ० वती हूई हृदय स्थित राम का नाम मन से नित ० जपो अरु अब से नाना जन्तु विहीन यह ० आश्रम भी हो जायगा (।) ऐसे वकझक फि(-) ० र दयावन्त हो कहने लगे कि सहस्र वर्ष के ० वीते भाई सहित श्री रामचन्द्र जी जद वन उ(-) ० पवन मे फीरते फीरते यहा आवेगे ओ च(-) ० रणो मे तुम्हे छूवेगे तधी निष्पाप हो श्राप से छूट भक्ति से राम को पूज परिक्रमा दे स्तु(-) ० ति दण्डवत कर विन मे विदा हो आगे की ० भाँति सुख से मेरी सेवा जा करोगी(।) इस प्रका(-) ० र कह सुन निपट उदास हो तुरत वहा से उ(-) ० ठ हिमालय पहार पर जा गोतम ऋषि तप(-) ० स्या करने लगे(।) विश्वामित्र मुनि कहता है कि ० विन के वहा जाते ही पाषाण सरूप हो निज ० आश्रम मे अव तक अहल्या देवी महा उग्र त(-) ० प कर रही है(,) सदा सकल पाप विनाशनहारे ० तुम्हारे चरण की धूलि का स्पर्श चाहती है ति(-) ० स्से महाराज निकट चलकर गोतम की भा(-) ० र्या का उद्धार ही किया चाहिऐ क्यू कि एके तो ० व्रह्मा की पुत्री(,) दूसरे महा तपस्विनी है (।) ऐसे ० वुझा समझा हाथ पकड राम को समीप ले ० जा विश्वामित्र ने अहल्या को देषा दिया तो ० जाते ही दया वश हो पाव से जद रघुनायक ० ने वह शीला[2] छू दी तद ओ ही अति सुन्दरी ० स्त्री वन हडवडा कर वह उठ खडी हूई (।) विसे ० देष शिर झुकाय राम ने प्रणाम किया ओ ० कहा कि दशरथ का पुत्र मै ही श्रीरामचन्द्र हू (।) ० तव पीताम्वर पहने कर मे धनुष वाण लिये ० लछुमण समेत मुसकुरा मुसकुरा वोल ० ते हूए ओ नील मणि से श्याम सरूप आ(-) ० नन्द कन्द कमल नयन रघुनायक को कि ० कि[3] जिन की शोभा से दशो दिशा उद्योत हो रही ० थी नीचे उपर निहार गोतम का वचन सुमर ० नारायण पहचान मारे आनन्द के सिगरी ० गात अहल्या को रोमाच हो आया तो अर्घ ० पादार्घ कर विधि से उन्हे पूज हर्ष से आषो ० मे आसू भर वार वार प्रणाम कर गिडगिडा ० गिड गिडा यह वचन कहने लगी(—)अहो कृ (-) ० पा निधान तुम्हारे पाव की धूली के कि जि(-) ० न्हे शिव व्रह्मादिक देवता सव वन्दते है स्प(-)० र्श से मै निपट कृतार्थ भयी(।) को आपकी अ ० परम्पार गति जान शके(।) मनुष्य रूप हो सा(-) ० रा जगत मोहते हो (।) न तो तुम्हे हाथ है न पाव ० पर दिन रात चलते ही रहते हो(।)तुम वे[4] आन(-) ० द कन्द पूरण व्रह्म हौ कि जिन के चरण कमल से ० निकल यह गगा शिव व्रह्मादिक को पवित्र करती ० है(।) सोई परमात्मा मेरे सामने निकट आय खडे ० है(।) कहा तक अपने भाग का वर्णन करू (।) अव ध(-) ० नुषधारी विशाल लोचन मानुस अवतार अति ०सुन्दर देही रामरूप नारायण को कि जिन के पा(-)० व की धूर सदा श्रुति ढूढती है अरु नाभि कमल ० से व्रह्मा उपजा(,)त्याग कर[5] दूसरे को न भजूगी(।)

---

१. 'ले' होना चाहिए। २. शिला। ३. यहाँ 'कि' अनावश्यक है। ४. वह। ५. उसे त्याग कर।

वि(-) ० न्ही को दिन रात सुमरती हू जिन के अवतार का च(-) ० रित्र विरचि लोक मे आनन्द मगन हो नारद ब्रह्मा ० सरस्वती आदि गाया करते हैं अरु जो आदि आ(-) ० नद जोति स्वरूप पुरुष पुरातन परमात्मा माया ० कर मोहनी मूरति हैं ओ उत्पत्ति पालन प्रलय के० आप ही एक कर्त्ता हैं(,) माया मे छिप ब्रह्मा विष्णु म(-) ० हेश कहाते हैं (।) ऐसे कह फिर वोली (—) हे रामचन्द्र तु (-) ० म्हारे विन चरणो को जिन्हे लक्ष्मी हृदय लगाती ० हैं निर अभिमानी मुनि लोग ध्यावते हैं अरु जो ० स्वर्ग मर्त्य पाताल तीन ही डेगकर आये सदा मैं ० नमस्कार करती हू(।) तुम ही जगत के आदि अरु आ(-) ० श्रय हो सकल प्राणीन मे एक आप ही भासते हौ ० पर वचन से चाहिए कि कोई तुम्हे वता शके तो क्या ० सामर्थ्य है(,)अरु हे महाराज कार्य कारण कर्त्ता आ(-) ० दि जगत रूप हूए हो(,)आप की माया से मोहित म(-) ० नुष्य यह भेद नही जानते ओ जो तुम निर्मल ० आकाश सा वाहर भीतर सव मे व्याप्त रहे हो अरु ० अचल असग शुद्ध चैतन एक हौ तिन परमेश्व(-) ० र को मानुष कर मानते हैं(।) मै भी एके तो स्त्री दूसरे ० अपढ हो तुम्हारा भेंव[1] क्यू कर पा शकू(।) हे भक्तन व(-) ० त्सल नारायण तुम्हे अव ध्यान लगाय सैंकरो ० प्रणाम करती हू कि जहा कही मै रहू तहा इन च(-) ० रणो की सदा मुजे उत्तम भक्ति होवे(।) इस भाति ० लछुमण समेत धनुष वाण से अति शोभित ० सकल ससार का भय हरन श्याम शरीर कमल ० लोचन रामचन्द्र की जो रतन जडित कुण्डल अ(-) ० रु काचन वरण वस्त्र पहन कोटिन सूर्य से शोभा(-) ० यमान हो साक्षात आगे जा खडे थे स्तुति प्रदक्षि (-) ० ण प्रणाम कर विन की आज्ञा पाय गोतम की भा(-) ० र्या निदान अपने पति के पास गयी(।) अहल्या का ० किया हूआ यह स्तोत्र जो नर प्रेम से पढे सो सव ० पाप से छूट अन्त समय ब्रह्म मे जा मिले ओ राम ० को हृदय मे सुमर पुत्र के लिये एक वर्ष नित जो इ (-) ० स का पाठ करे तो वन्ध्या को भी अति श्रेष्ठ पुत्र हो(-) ० वे ओ राम कृपा से सकल मनोरथ पूजे वरन भो(-) ० ग निमित्त भाई ब्राह्मण माता को भी जो वधे होऐ ० अरु चोर सुरापी सो भी नर भक्ति से रघुपति का ० ध्यान कर नित्य जो इसे पढे तो मुक्त हो जावे अ(-) ० रु जो अपने आचार पर है तिन्ह की क्या बात है ० (।) इति श्रीरामचरित्रे वाल काण्डे सप्तमोध्याय ७ (।) ० इतनी कथा सुना महादेव वोले(—)हे भवानी जव अ(-) ० हल्या निज स्वामी के ह्या गयी तव विश्वामित्र ने राम लछुमण से कहा(—)लाल अव शीघ्र मि(-) ० थिला चलो (।) वहा राजा का महा यज्ञ देष फिर ० अयोध्या भी जाना है (।) ऍसे कह दोनो राजकु(-) ० मार को सग लिये गगा पार उतर भाति भा(-) ० ति के देश देषते हूए जनकपुर मे उस सभा ० मह वे जा पहुचे कि जहा देश देश के ऐक से ० एक राजवाडे[2] ओ वडे वडे ऋषि लोग पहले ० से आ आ कर ठट रहे थे (।) तव मुनि का आग ० मन सुनते ही राजा जनक वहुत हर्षाने तो तु(-) ० रत पूजा की सामग्री ले आचार्य के साथ हो ० निकट आ दण्डवत कर विधि से विन्हे पूज आ (-) ० सन पर बिठला यह वचन कहने लगे(—)महा(-) ० राज वडा भाग है जो आपका दर्शन भया अ(-) ० व अपने ज्ञान ध्यान तपस्या का कुशल क्षे (-) ० म कहिए (,) किसी वात की कुछ चिन्ता तो मन ०

१. भेद, २. रजवाड़े।

मे नही रहती अरु सकल विद्या पढने का फ(-) ० ल ब्रह्मज्ञान है सो हो चूका (।) धन्य तुम हो कि जि(-) ० स को यहा से परलोक तक आनन्द मगल है ० और हमे जो पूछिये तो इस ससार मे रह कर जब त(-) ० क ज्ञान शमता[1] वैराग्य ब्रह्म का वोध अरु साधु ० ने[2] के सतसग से हरि मे भक्ति नही हूई तव त(-) ० क कहा जी मे चैन ओ कुशल है(।) इतने मे सव ० लक्षण भरे राम लछुमण पर(,) जो ऐसे सुन्दर ० लगते थे कि मानो सब दिशा प्रकाश करते ० हूऐ दूसरे चन्द्रमा सूरय ही आय उगे होऐ(,) दृ(-) ० ष्टि पर गयी तो निपट चकित हो पूछने लगे ० कि देव वालक अरु नर नारायण समान कि(-) ० स के ये लडके है जो मेरे मन को परम सुख दे(-) ० ते है(?) राजा जनक की इतनी वाते सुन हर्षित ० हो विश्वामित्र ऋषि वोले(—)ये दोनो भाई राजा ० दशरथ के पुत्र हैं(,) राम लछुमण इन्ह का नाम ० है मै अपना यज्ञ वचवने[3] के लिये अयोध्या से इ(-) ० न को लाया हू (।)वहा से पथ मे आवते हूए रघुनाथ ० ने सव को भषनेवाली[4] ताडका को मेरी आज्ञा पा(-) ० ए एक ही शर से मार डाला(,) तिस पीछे मेरे स्था(-) ० न पर आ मेरा यज्ञ विध्वसनहार सुवाहु आदि ० राक्षसन को वध[5] मारीच को सागर मे फेक दिया(।) ० निदान यहा आते हूऐ गगा तीर गोतम के अ(-) ० ति पवित्र आश्रम मे अहल्या को देष नमस्का(-) ० र कर चरण मे उसे छू श्राप से छोडाया (।) अव ० तुम्हारे मन्दिर मे सकल राजान से पूजित शिव ० का धनुष देषा चाहते है(,) तिस्मे हे राजा किसी प्र(-) ० कार विसे मगाय राम को देषा ओ(,) विलम्ब मत ० करो(,) क्यू कि बहुत दिन भये अव अयोध्या जा पि(-) ० ता का दर्शन ये करेगे(।) ऐसे कह फिर वोले(—)हे म(-) ० हाराज ये दोनो कुमार पूजने ही योग्य है(,) तुम ० अति आदर भक्ति कर श्रद्धा से इन को पूजो (।) ० इतने वचन के सुनते ही महा आनन्द मे मगन हो ० विधि वे राम लक्ष्मण को अर्च राजा जनक ने अ(-) ० पने पुरोहित से कहा कि तुम शीघ्र जा धनुष उ (-) ० ठवा लाओ (।) ऐसे कह उसे भेज पुनि आप विश्वा (-) ० मित्र से कहने लगे कि हे महाराज(—)जो श्रीरामच(-) ० न्द्र धनुष उठा गुण चढावे तो अपनी पुत्री सीता ० को मै इन्हे व्याह दू(।) विन की यह प्रतिज्ञा सुन राम ० को मुस्कुराते देष ऋषि ने कहा कि अछा अव ० वहुत विलम्ब मत की जे(,)तुरत मगाकर धनुष ० इन्ह को दषाईऐ[6](।)इतने मे वडे वडे पाच सहस्त्र व(-) ० लवानो से विस धनुष को कि जिस मे अनगणि(-) ० त घूघुरू लगी थी अरु भाति भाति के रतन जडे ० थे ओ जो अति सुन्दर वस्त्रन से लपेटा था उठ(-) ० वा लाकर पुरोहित ने राम के आगे जा रष दिया(।) ० तव सव नृपन के देषते ही झट जटा बाध काछ ० मार[7] अति हर्षा सहज ही मे रघुवर ने विस धनुष ० को वाये हाथ से उठा लिया ओ दाहिने कर से तौल ० गुण चढा कुछ एक षैच ऐसा विसे तोडा कि विस ० का शब्द स्वर्ग मर्त्य पाताल अरु दिशा-दिशाओ ० मे जा पहुचा (।) तव अति अचरज मान आकाश मे ० आ आकर देवता सव लगे राम पर फूल वरसा(-) ० वने ओ ढोल दमामे वजा वजा स्तुति करने ओ ० अप्सरागण सव नाचने(।) तव धनुष दो खड ० हूआ देष राजा जनक निपट जुडाने ओ श्री रघु(-) ० नायक को गरे

---

१. इंद्रियो पर विजय। २. यहाँ 'ने' अनावश्यक है। ३ बचाने। ४. भक्षण करने वाली। ५. वध करके। ६. दिखाइए। ७. काछा भिडकर, बद्धपरिकर होकर ।

लगाय मारे आनन्द के लगे रोने ० अरु जितनी विन की रनिवास थी सो सव अति ० विस्मित हो वहुत हर्षित भयी (।) इतने ही मे मु(-) ० क्ता हार गरे अरु कानो मे सुवर्ण की तरकी पा(-) ० वो मह् नेपुर[1] इन आदि नाना आभरण ओ(-) ० वस्त्र पहन लक्ष्मी समान वनठन दहिने हाथ ० मे काचन की माला लिये हसती हूई सीता सभा ० मे गयी (।) वहा राम को जय माल पहना विसी प्र(-) ० कार फिर मन्दिर मे चली आयी (।) तद जितनी ० रानियाँ थी सो सव अटारीन पर चढ झरोषो ० से मोहन मुरति रामचन्द्र को निरषि निरषि व(-) ० डी हर्षित हूई (।) इस उपरान्त सुचित हो राजा ज(-) ० नक ने विश्वामित्र से कहा (—) महाराज अव यह ० सव समाचार चिट्ठी मे लिख तुरन्त अयोध्या ० आप भेजिए जो कुमारो को व्याहने के लिये ० स्त्री पुत्र मत्रीन समेत राजा दशरथ अति ० शीघ्र यहा आवे (।) इन का इतना वचन सुन अ(-) ० छा कह वहुत वेग चल हार[2] दूतन को झट वु(-) ० ला पत्री दे ओ ही ऋषि ने दशरथ भूपाल के ० ह्या भेजा (।) जव वे वहा जा पहुचे ओ श्री रामच(-) ० न्द्र का सकल शुभ वित्तान्त दशरथ को सुना ० चुके तव वे महा हर्षित हो तुरत मिथिला चल (-) ० ने के लिये मत्रीन से कहने लगे कि तुम सव० अपने अपने लोग वाग समेत हाथी घोडो ० ओ पालकीयो पर चढ चढ इसी समय जनक(-) ० पुर चलो अरु मेरा रथ शीघ्र मगा दो (,) अभी मै ० सव साज वाज समेत प्रस्थान करूगा अरु रा(-) ० म की माता के साथ हो निज स्त्री समेत वसि(-) ० ष्ट गुरु सव से पहले चले (।) यिह सुन मत्री तुर(-) ० त रथ लाया (।) तव सव को आगे कर भरत श(-) ० त्रुघ्न को ले महा सुन्दर रथ पर वैठ वडी सेना ० सग लिये अति धूमधाम से राजा दशरथ ० अयोध्या से निकले तो थोड ही दिन मे जन(-) ० कपुर जा पहुचे (।) तद समधी का आवना सु (-) ० न निपट हर्षा कर राजा जनक नाना भेट ले ० सतानन्द पुरोहित के सग हो तुरत जा उन्ह से ० मिले ओ भाति भाति की बाते कह वडा शि(-) ० ष्टाचार करने लगे (।) इतने ही मे राम लछुमण०वहा आये तो चरण छू प्रणाम कर हाथ जो(-) ० ड पिता के आगे हो षडे भये (।) विन्हे देष परम ० सुख पा आशीस कर राजा दशरथ वोले (—) ० हे पुत्रो तुम्हारा विकसित मुख देख वहुत मै ० हुलसित भया (।) विश्वामित्र जी के अनुग्रह ० से सव मेरा मनोरथ पूजा ऐसे कह दोनो पुत्र ० को छाती लगा वार वार विन का मुह चूम रा(-) ० जा दशरथ महा हर्षित हूए ओ सव के साथ ० हो सकल भोग भरे जनकराय के मन्दिर मे ० जा उतरे (।) ज सुन्दर दिन मुहूरत आन पहु(-) ० चा तद समधी की आज्ञा पा ऋषिन समेत ० चारो पुत्रन को लिये राजा दरशथ सव कार[3] ० से शोभित विस मडवे मे जा वैठे कि जहा चहु ० दिश वन्दनेवारो से राजित चदवे के नीचे रत्न (-) ० न के षभन पर मानिक दीप वरते ओ मोति (-) ० नो ही के सुभग फूल फूले थे ओ सोनन्ह के ० आभरण पहने वडे वडे वैदिक व्राह्मण लोग उच्च स्वर से वेद पढते ओ सुवर्ण से भूषित ० सोहागिन स्त्री सव मगलगान गा रही थी ० अरु जहा अति सोहावन वाजो सहित मनो (-) ० हर गीत नाच हो रहा था तव सतानन्द पुरो(-) ० हित ने तुरत उठकर विचित्र चौके पर रतन ० जडित सोने की पीढे पै श्री रामचन्द्र को विठ(-) ० लाया ओ विन की वायी दाहिनी दिश वसि(-) ० ष्ट

---

१. नूपुर। २. सभवतः 'चलनहार'। ३. प्रकार।

विश्वामित्र इन दोनो ऋषिन को आद (-) ० र मान से वैठने को आसन दे विन को पूजा ० ओ मणिमय गहना पहनी हूई सीता को ० वहा मगा विधि से अग्नि स्थापन कर व्याह ० का कर्म आरम्भ किया (।) तब रानी समेत रा (-) ० जा जनक वहा जा वैठे ओ श्री रघुनायक ० का पाव धो चरणोदक (,) जिसे ब्रह्मा अरु मु (-) ० नि लोग सदा वन्दते हैं (,) माथे चढा अक्षत ० जल ले व्याह के विधान से हाथ पकड सीता ० को सकल्प ऐसे मगन भये कि जैसें लक्ष्मी ० को विष्णु से व्याह सागर हरषाने इसी भाति ० उर्मिला नाम दूसरी निज कन्या लक्ष्मण को ० ओ श्रुत कीर्ति माडवी नाम भाई की दो लड (-) ० किया भरत शत्रुघ्न को राजा जनक ने दान क (-) ० र दी (।) तिस समय पत्नी पाय राम आदि चा (-) ० रो नृप कुमार यो शोभने लगे कि मानो दूस (-) ० रे लोकपाल ही आ वैठे है (।) इस प्रकार से जन (-) ० क राय जद कन्या दान कर चुके तद नारद ० मुनि का कहा हूआ निज कन्या का सकल वृ (-) ० त्तान्त मडपे ही मे विश्वामित्र से कहने लगे (—) ० हे महाराज यज्ञ के लिये मैं एक षेत जोताव (-) ० ता था वहा वीच हराई मे अचानक एक वडा ० सा घडा उखड आया तिस मे जा देषा तो म (-) ० हा सुन्दरी एक कन्या जो राम को अव दी है ० चुपचाप वैठी थी (।) तव दयावश हो कलशे से ० निकाल वेटी कह ओही विसे ला रानी को ० मैंने दिया (।) तिस उपरान्त कुछ दिन के बीते ० वीणा वजा वजाय नारायण के उत्तम गुण गा (-) ० ते हूऐ फीरते फीरते कृपा कर नारद मुनि मे[१] ० ह्या आन पहुचे तो प्रणाम कर वढे आदर से ० मैंने आसन पर विन को विठलाया ओ य (-) ० था उचित पूजा (।) तव उन्हो ने मुज से कहा (—) हे रा (-) ० जा मुनो (,) एक वात मैं तुम से कहने को आया ० हू (,) पर जी ही मे रषिओ किसी को मत जनाइ (-) ० ओ (,) सो यह है कि रावण को मार निज भक्तन ० के दुख अरु देवतो के सकट हरने के लिये मा (-) ० या कर आप परमेश्वर राजा दशरथ के यहा ० राम आदि चार सरूप हो अवतरे है (।) विन ही की ० योगमाया जिसे अव सीता कह पुकारते हो ० तुम्हारे घर आ उत्पन्न हूई है तिस्से सो उपाय ० करिओ कि जिस से यह कन्या श्री रामचन्द्र ० ही से व्याही जाये (।) ऐसे बुझा समझा नारद ऋ (-) ० षि जद विदा भये तभी से मेरे जी मे चिन्ता उप (-) ० जी कि किस प्रकार से सीता को श्री रघुनाथ से ० अव मैं व्याहू (।) निदान शोचते शोचते ठहराया ० कि पुर नाम[२] दानव को जला मेरे दादा के घर मे ० शिव का रष्या हुआ एक वडा भारी धनुष पडा ० है (,) जो उसे उठा कर गुण चढावे तिसी से जानकी ० का विवाह मैं करू (।) यह प्रतिज्ञा कर सीता का स्व (-) ० यवर ठाना तो कितने वीर हो हो गये पर तनि (-) ० क भी किसी से वह धनुष नही टकसा (।) सव का मान भग हो गया (।) अव कृपा कर विसे देषा-व (-) ० ने के लिये राम को यहा आप लाये तो मेरा प्रण ० रहा ओ मनोरथ फला (।) सीता सहित एक ० आसन पर वैठ सूर्य समान शोभते हूए रघु (-) ० पति को देष अव मेरा जीवन जन्म सुफल हो ० चूका (।) इस प्रकार विश्वामित्र से कह राजा जन (-) ० क सन्मुख जा रघुनाथ की स्तुति करने लगे कि ० महाराज आपका चरणोदक लेते ही व्रह्मा ० को सृष्टि रचने की शक्ति भयी ओ दानवो का ० राजा वलि हूया अरु तुम्हारे पाव की धूर पड (-) ० ते ही स्वामी के श्राप

---

१. मेरे होना चाहिए। २. पुर नामक।

से छूट अहल्या तुरत ही ० मुक्त हो गयी (।) तुम से अधिक सुखदाय दुखह(-) ० र्त्ता दूसरा कौन है(।) तिस्से हे कृपानिधान जिन(-) ० के चरणो मे प्रीति कर मृत्यु सहित ससार का क(-) ० ष्ट योगी लोग जीत लेते है ओ जिन्ह का ना(-) ० म जपने ही से देवताओ की सकल पीर नशा(-) ० ती है (,) तिन्ही की शरण मे सदा मै रहा करू (।) ० ऐसे कह दश सहस्र हाथी ओ रथ एक लाष ० चढयते(,)[1] करोर लोग(,) तीन सौ दासी(,) भाति भा(-) ० ति के कपडे(,) असख्य रुपै(,) वर्त्तन और मुक्ता ० आदि रतन जडित एक से एक अधिक मोल(-) ० के सोनन्ह के अनेक हार प्रीति से दान दक्षि(-) ० णा दे यथा उचित मिल भेट अति हर्षित कर ० कन्या वर समेत राजा दशरथ को ओ वडी श्र(-) ० द्धा से बहुत पूज सन्मान कर वसिष्ट आदि ऋ(-) ० षिन को जन-कराय ने विदा किया (।) तिस ० समय रोती हुई सीता को गरे लगाय लगाय विलप ० विलप माता सहित सव रानिवास यह वात शि(-) ० षलाने लगी कि हे धिया भलीभाति से शास(-) ० शशुर ओ पति इन सवो की नित सेवा टहल क (-) ० रियो अरु हे वहन स्वामी से दिन दिन उत्तम ० प्रीति कीजो(,) तुम्हे वहुत सुख होगा(।) इसी प्रका(-) ० र उर्मिला आदि तीनो कन्याओ को भी सव ० रानियो ने शिषला पढा दिया (।) जव साजवाज ० वरात चल खडी भयी तव वर्ण वर्ण के वाजे ल(-) ० गे वाजने अरु ब्राह्मण लोग वेदधुनि करने(।) ० तिस वेरिया ऐसी शोभा हूई कि देष देष सुर न(-) ० र मुनि सव चकृत हो गये(।) इति श्री राम चरि(-) ० त्रे वाल काण्डे सप्तमोध्याय ७[2] (।) इस प्रकार दु (-) ० लहा दुल्हिन को लिये जद मिथिला से वारह को(-) ० श राजा दशरथ बढ आये तद वहा कुछ वडा ० सा अस गुण देष निपट घवरा वशिष्ट के पास ० जा नम्र हो पूछने लगे (—) महाराज जहा मै ताक(-) ० ता हू तहा उत्पात ही का योग लष पडता है(,) क्या ० होगा कुछ समझा नही जाता(।) आप इसका ० भेद वुझा कर कहिए जो मेरे मन का सन्देह ० जाये(।) उन्हने उत्तर दिया कि यह तो सव भय ० ही का लक्षण है पर निदान तुम्हारा कल्याण ० है क्यू कि मगल जनावनहारे मृग सव दहि(-) ० ने हो चले जाते हैं(।) यह कहते ही है कि एक ऐं(-) ० सी आधी आई कि जिस मे मारे धूर के सव ० की आखे भर गयी(।) इतने ही मे नील मेघ स(-) ० मान सुभग ओ अति सुन्दर जटा वान्धे मजी(-) ० ठ का रगा हूआ कपडा पहने तूणी[3] काधे ल(-) ० टकाये धनुष परसा हाथो मे लिये कार्त्तवी(-) ० र्य्य आदि दुष्ट क्षत्रियो को मार विध्वस[4] साक्षा(-) ० त यम स्वरूप पवन[5] महाप्रतापी परशुराम दश(-) ० रथ के आगे वाट रोक अचानक आ षडे भये (।) ० विन को देषते ही राजा थरथर लगे कापने तो ० शिष्टाचार की सुधि भूल हाथ जोड त्राहि त्रा(-) ० हि कह दण्डवत कर यह वचन कहने लगे(—) दीन ० दयाल अव तो मेरे पुत्र को प्राणदान कीजे(,) ० इक्कीश वेर इस पृथ्वी को आप निछत्री कर ० चूके(,) तुम्हारा तेज सगरे ससार मे वरता[6] है(।) इस ० प्रकार आरत हो राजा दशरथ वषानते ही र(-) ० है पै परशुराम ने विन की वातो का कुछ आद (-) ० र न किया(,) उलटे ही क्रोध से लाल लाल आ(-) ० षे कर श्री रामचन्द्र को कडी कडी वैन सुनाने०

---

१ चढ़ावा। २. इसे वस्तुतः। 'अष्टमोध्यायः ८' होना चाहिए। ३ तूणीर। ४. ध्वस कर। ५. पावन(?) ६. बलता है, प्रकाशमान् है।

लगे कि रे क्षत्रियो मे अधम तू मेरा नाम ध(-) ० रा वीर वना फीरता है(,) जो निरा छत्री है तो आ ० मेरे साथ हो लडाई कर (।) निपट सरा[1] ओ कित (-) ० ने एक दिन का पुराणा हूआ शिव चाप तो(-) ० ड वृथा शूर कहाता चलता है(,) वह तो आपे घु (-) ० न रहा था(,) विस मे पुरुषारथ क्या है(,) भला विष्णु ० के दिये हूए इस धनुष पर जो तू गुण चढावे तो ० रघुवशी जान तुज से मै लडू(,) नही तो इसी पर(-) ० से[2] सें अभी मै तेरा शिर भुट्टा सा उडा दूगा(।) स(-) ० कल क्षत्रियो को विनाशने के लिये मैं ही उत्प(-) ० न्न हूआ हू(,) तू मुझे नही पहचानता जो इत(-) ० नी ढिठाई किये चला जाता है(।) इस भाति गर्ज ० गर्ज परशुराम ने जव कहा तव पृथ्वी लगी ० कापने अरु दशो दिशा के दिग्पाल थरथ(-) ० राने ओ चहु दिश से ऐसा अधेरा हो आया ० कि सव कोइ को ठीक प्रलय का सकल योग ० आ लगा(,) किसी के मुह से कुछ वात न निकली (,) सव की चौकडी वद हो गयी(,) निदान रा(-) ० मचन्द्र से रहा न गया तो रिसिया के झट विन(-) ० के हाथ से धनुष छीन वल से गुण चढा वाण ० विस पर रष कान तक षेच यह वचन वोल उठे ० कि सुनो व्राह्मण देवता मुज से धनुष उठवा ० ना कुछ ठट्टा नही है(,) यह समझ मेरी आज्ञा ० से शीघ्र मुझे लक्ष्य वताओ(,) परलोक मे जो तु(-) ० म्हे सुख भोगना है विस पर कै इहा तीर्थो मै[3] ० तो तुम्हे जाने का सामर्थ्य है विस पर इस अचू(-) ० क सर को मै छोडू क्यू कि मेरा शस्त्र कधी नि(-) ० स्फल होने का नही(।) श्री रघुनाथ की इतनी ० वात के सुनते ही परशुराम का मुह काला ० ओ चुकिया सा हो गया तो चेत कर आगे का ० वृत्तान्त सुमर निपट लजा अहकार तज य(-) ० ह वचन कहने लगे(—)हे राम महावली पुराण पु(-) ० रुष परमेश्वर आप को अब मैने पहचाना तु(-) ० म्ही ससार की उत्पत्ति पालन प्रलय करन(-) ० हारे हो(,) मेरा अपराध क्षमा करिये(,) ऐसे अने ० क प्रकार विनती कर परचय दिया कि हे महा ० राज एक वेर तपस्या से विष्णु को प्रसन्न करने ० के लिये लडकपन मे हठ चक्र नाम तीरथ ० पर मै गया वहा मन लगा नित तप कर ऐसा ० हरि को सन्तुष्ट किया कि वे शख चक्र गदाधारी ० परमात्मा प्रसन्न हो मेरे पास आये ओ विहस ० विहस यह वचन कहने लगे कि लो उठो व्राह्म(-) ० ण जिस कारण इतना परिश्रम करते हो सो ० तुम्हारा मनोरथ फला(,) जाओ मेरा तेज पाय ० पहले हैहय वशी कार्त्तवीर्य को जिसने तुम्हा(-) ० रे पिता को वधा तुरत जा मारो तिस पीछे इक्की(-) ० शवार निछत्री कर सारी पृथ्वी कश्यप को दे ० निश्चिन्त हो गाजो[4](।) मै त्रेता युग मे दरशथ के ० यहा वडा पराक्रमी उपज राम नाम धराऊगा ० तव मुजे फिर देषोगे अरु तधी अपना दिया ० हूआ तेज तुम से मै ले लूगा तद इसी भाँ[5] ससा(-) ० र मे पुन महा उग्र तप किया करिओ ऐसे वुझा ० समझा निज प्रताप मुजे दे भगवाने के अ(-) ० न्तरधान भये पर सव काज मै कर चूका(,)अव ० मुझे सूर्त्त[6] हूई है कि व्रह्मा की प्रार्थना से वे ही ० परमेश्वर आप राम रूप हो अवतर हो अरु आगे ० का दिया हूआ नि[7] तेज मुज से हर लिये हो हे कृ(-) ० पा निधान विस नारायण का कि जिस का जन(-) ० म मरन हानि वृद्धि आति[8] नही होते अरु जो ० माया से अलग

---

१. सडा। २. फरसे। ३. में। ४. गाजो, आनंद मनाओ। ५. भाँति। ६. स्मृति। ७. निज। ८. आदि।

अचल पूरण ब्रह्म है ओ जि(-) ० स का दर्शन शिव ब्रह्मादि को भी दुर्लभ है पा क(-) ० र मेरा जन्म सुफल हो चूका(,) महाराज जव तक ० तुम्हारे चरणो के भक्तन का ऐसा सुख नही मी(-) ० लता तभी तक ससार का दुख भोगने मे आता ० है अरु जद साधुन के सग से भक्ति या तुम्हे पूजे ० तधी धीरे धीरे माया नाशती है ओ उत्तम ज्ञा(-) ० न वता वन हार सद्‌गुरु कि जिस के प्रताप से तुर(-) ० त ही मुक्ति होती है पाते हैं तिस्से हे कृपा निधा(-) ० न आप के पावो की भक्ति अरु सतो से सग कि ० जिन से माया निकट न आवे सदा ही मुजे होऐ ० ओ हे भक्त वत्सल करुणा वतार रामचन्द्र मै तु(-) ० म को वार वार प्रणाम करता हू इस लिये कि लो(-) ० गन को जीतने के निमित्त जो जो पुण्य मैने कि(-) ० ये है तिन्ही पर इस वाण को आप छोडिये (।) इतने ० वचन के सुनते ही निपट ठढे हो श्री रघुनाथ जी० वोले(—)अछा अव मै तुमसे वहुत सन्तुष्ट भया० जो तुम्हारे जी मे होए सो वर मुझ से मागो(।) पर(-) ० शुराम ने विनती की(—)दीन दयाल इतना अनु ० ग्रह जो करते हो तो आप के चरण सदा मेरे म(-) ० न मे वसे ओ जो मनुष्य इस स्तोत्र को पढे ति(-) ० से ज्ञान अरु मरण समय तुम्हारा स्मरण हो(-) ० वे(।) निदान राम ने जव इस बात को माना तव वि(-) ० न्हे प्रदक्षिण प्रणाम कर विन की आज्ञा पा वि(-) ० दा हो परशुराम महेन्द्र नाम पहाड पर तप कर(-) ० ने को गया(,)विस के वहा से निकलते ही राजा द(-) ० शरथ महा हर्षित भये(,) तव रामचन्द्र को मानो ० यम लोक से फिर आया जान वार वार गरे ल(-) ० गाय ऐसे हर्षित हूए कि आषन मे आशू भर ० लाये(।) जद निचिन्त हो सव को लिये अयोध्या मे आन पहुचे तद देवता समान चारे[1] विन के० पुत्र निज मन्दिर मे अपनी अपनी स्त्री समे(-) ० त आनन्द विहार करने लगे तिन मे माता पि (-) ० ता को हर्षित कर सीता के साथ रघुवर तो यो ल(-) ० गे विलसने जैसे लक्ष्मी को लिये वैकुण्ठ घ(-) ० र मे नारायण होवे(,) इस अनन्तर भरत का निज ० राज्य पर ले जाने के हेतु युवाजित नाम केकयी ० का भाई वहा आया तव वडा आदर मान कर रा(-) ० जा दशरथ ने युवाजित को अपने पास रष्षा(,) ० फिर कुछ दिन के वीते भरत शत्रुघ्न को वुला ० अछी अछी बाते शिषला विस के सग विदा क ० र दिया इस प्रकार तीनो क[2] के नायक अरु सकल० असुरन को विनाशन हारे आनन्द मूरति प(-) ० रमेश्वर कि जिन का जनम मरण नही होता ० अरु जिन की प्रभुता का अन्त नही मीलता ० माया फयलाय राम रूप हो सीता को ले अव(-) ० धपुरी मे रह मानुष की चाल चलते(।) इती श्री ० रामचरित्रे वाल काण्डे अष्टमोध्याय[3] समाप्त (।) ० महादेव कहते हैं कि हे पारवती इस अनतर किसी दिन निज मन्दिर मे रत्न के सिंहासन प(-) ० र सव आभरण पहने नील कमल से श्याम ० शरीर श्री रामचन्द्र जी बैठे थे ओ रतन की डटी ० वाला चौर डोला डोला आपस मे कौतुक व(-) ० ढा पान के वीडे लगा लगा सीता उन्ह को देती ० थी(।) इतने मे शरत काल के चन्द्रमा समान०निरमल मूरति नारद ऋषि अचानक वहा ०आन पहुचे(।) उन्हे दूर से देषते ही जानकी समे(-) ० त रघुनायक तुरत उठ खडे भये और शिर झु(-) ० काय प्रणाम

---

१. चारो। २ मूल पुस्तक के ऊपर छूट के चिन्ह-विशेष के साथ जो 'लो' अंकित है, वह यहाँ होगा। ३ नवमोध्यायः।

कर कुशल क्षेम पूछ आसन पर वि(-) ० ठला प्यार कर यह वचन कहने लगे(—)महाराज दि(-)० न रात विषय मे गडे हूऐ मुज से ससारिकन को तु(-) ० म्हारा दर्शन वहुत दुर्लभ है पर मै अगले जन(-) ० म मे कुछ वडा ही सा पुण्य किया है कि जिस से मु(-) ० झ को आप का सत्सग आज हूआ(,) देषिये साधु(-) ० न के साथ ही से सिद्ध चारण गुह्यक गधर्व दैत्य रा(-) ० क्षस आदि ओ अनेक मुनि लोग सहज मे स(-) ० सार सागर पार उतर गये मै भी तुम्हारे दर्शन से ० अव कृतारथ हूआ(,) ऐसे कह फिर वोले(—)कहिए दी(-) ० न दयाल किस कारण यहा आवना हूआ सो मै ० आप की टहल करूँ(।) रघुनन्दन की इतनी वाते सु(-) ० न नारद जी वोले(—)धर्मावतार लोकाचार की वा(-) ० तो से क्यू मुजको भरमाइये हे ओ मै ससारिक हू ० यह जो तुम ने कहा सो सच है क्यू कि जगत की आ(-) ० दि माया आप की स्त्री है कि जो तुम्हारे निकट ० रह शिव व्रह्मादिक सरूप भाति भाति की प्रजा उपजाया किया करती है ओ तीनो लोक रूप ० महा घरम रमे[1] रहते हो(,) इस्से पक्के गृहस्थ वने ० हो(,) तुम ही व्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र चान्द सूरय ० अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुवेर आदि स(-) ० कल पुरुष हूए हो अरु सरस्वती लक्ष्मी भवाणी ० इन्द्राणी प्रभा स्वाहा सयमनी तामसी भार्गवी गति ० सम्पति नाम आदि जितनी उन्हो की स्त्रीया है ० सोई नाना रूप सीता भयी है(।) तीनो लोक मे तु (-)० म विन दूसरा कोई नही दृष्ट आता है चर अच(-) ० र अनेक रूप जगत तुम ही से उपज निदान तु(-) ० म्हारे ही मे मिल जाता है(।) हे महाराज मै आप ० के भक्तन के भक्तो का दास हू यह विचार मुझ ० को मत भरमाइए क्यू कि जो व्रह्मा मेरे पिता है सो ०तुम्हारे नाभि कमल से उत्पन्न हुए है(,)इस ना(-) ० ते से मै आप का पोता लगता हू(,) दया कर मुज ० को पालिये ऐसे कह बहुत प्रणाम कर मारे आ(-) ० नन्द के सजल नयन हो फिर ऋषि यह वचन ० कहने लगे(—) हे कृपा निधान तुम्हारे निकट व्र(-) ० ह्मा ने मुज को इस लिये भेजा है कि रावण को ० मारने के हेतु रघुकुल मे आप ने जनम लिया० है और अव प्रजा की रक्षा के निमित्त राजा द(-) ० शरथ तुम्हे राज का तिलक देगे पर राज का(-) ० ज मे लिपटा जो रावण को न हनोगे तो पृथ्वी का ० भार मिटाने की तुम्हारी पतिज्ञा झूठ हो जाय(-)० गी तिस्से जिस मे आप का प्रण रहे सो काज ० कीजे(।) नारद की इतनी वाते सुन श्री रामचन्द्र ० वोले(—) सुनो महाराज मै वह वात भूला नही जो ० प्रतिज्ञा की है सो अवश्य करूगा पर अवस(-) ० र पाकर के ओ जव तक उन्हो का भोग न हो चूके(-) ० गा क्रम क्रम सव असुरन को मार पृथ्वी का ० वोझ उतारूगा वरन इस कारण कल्ही मै ० दण्डकारण्य मे जाऊगा अरु मुनि का वेष धर ० चौदह वर्ष वहा रह सीता के छल से कुल परिवा(-) ० र समेत रावण को वधूगा(।) व्रह्मा को जा कहिऐ ० कि आप निश्चिन्त हो विराजिए(।) इस भाति राम ० की वाते सुन नारद मुनि वहुत प्रसन्न भये त(-) ० व तीन वार परिक्रमा दे प्रणाम कर विन की आ(-) ० ज्ञा पाय विदा हो व्रह्म लोक को गये(।) मुनि रघु(-) ० पति का यह सवाद प्रेम से जो नर सुने सुनावे ० सो तुरत मुक्त हो देवताओ को भी अति दुर्ल(-) ० भ वैकुण्ठ मे जा गाजे(।)इति श्री रामचरित्रे अ(-) ० योध्या काडे प्रथमोध्याय (।)

---

१. भरमे।

इतनी कथा कह ० फिर महादेव वोले कि नारद मुनि के जाते ही रा(-) ० जा दशरथ एकान्त मे जा बैठे थे सो अपने कुल ० के आचार्य वशिष्ठ गुरु को वुलाकर कहने ल (-) ० गे(—) महाराज इस नगर के लोगन समेत वडे ० वडे महाजन ओ विशेष मेरे पुराणे मत्री सव ० वार-वार राम की वहुत वडाई करते है तिस्से स(-) ० व गुण भरे कमल नयन श्री रामचन्द्र को क(-) ० ल्ह मै राज्य का तिलक दिया चाहता हू क्यू कि ० निपट वृद्ध मै हूआ फिर क्या जानू आगे कैसा ० होगा(,) इस समय शत्रुघ्न सहित भरत अपने ० नाना को देषने गये है(,) सव प्रकार यह अव स(-) ० र अछा है इस्से हर्षित हो जो जो सामग्री चा(-) ० हिए सो सो तुरत आप मगाइए ओ राम को ० जा जनाइये कि आज नेम आचार से रहे ओ ० चहु दिश वर्ण वर्ण के ध्वजा पताका खडा करा ० मोतिन की लडीन से अति विचित्र वन्दनेवा(-) ० र द्वारो पर टगाइऐ(।)इस भाति आचार्य को वु(-) ० ज्ञा समझा पुन सुमत्र नाम मत्री से कहा कि ० सुनो जो जो आज्ञा वशिष्ट मुनि करे सो सव०सावधान हो तुम करो(।) होत सवेरे रघुनाथ को ० मै राज्य पर विठलाऊगा(।) इतने वचन के सुनते ० ही महा हर्षित हो विस ने मुनि से कहा कि स्वामी०मै तो तुम्हारा दास हू(,) जो जो वस्तु चाहिए सो सो शी(-) ० घ्र आप मुजे सुनाइए(।) वसिष्ट मुनि वोले वडे तड(-) ० के सोने के भूषण पहन सव सिगार पटार कर वि(-) ० चली डेवढी मे आ सोरह कन्या नाना मगलचार ० करे ओ सुवर्ण रत्न से शोभित ऐरावत कुल ० के चौदह चौदह वर्ष के हाथीया ये[१] वहा आवे औ ० सकल तीरथो के जलो से भरे हूए काचन के स(-) ० हस्र कलश वाद्य के तीन ठो चाम मुक्ता मणि वि(-) ० राजित सोने की डटी के छत्र एक से एक अधिक ० मोल के कपडे गहने अरु फूलो की अनेक मा(-) ० ला यह सव सामग्री अभी से मगा मगा रष्षो ० ओ वेद के पढनहारे वडे वडे मुनि लोग हाथन ० मे कुश लिये रहे नाना वाजा वजा वजा गावने ० वालो के साथ हो भली भाति से वन ठन वेश्या सव ० राजा के मन्दिर मे आ महा महोत्सव मचावे ओ हा(-) ० थी घोडो रथो समेत शस्त्र धारी अनेक लोग ये स(-) ० व गढ के द्वार पर जा खडे रहे ओ सगरे नगर मे ० जितने देवताओ के मन्दिर है तिन मे भाति भाति ० की पूजा पाठ होवे ओ नाना भेट लिये राजा लो(-) ० ग शीघ्र यहा आन पहुचे(।) इस प्रकार मत्री को शि(-) ० षा पढा रथ पर आप चढ वसिष्ट मुनि राम के पास ० चले(।) जव तीन डेवढी हेल गये तव गाडी से उतर भू(-) ० ये हो[२] धीरे धीरे भीतर को धसे(।) आचार्य जान कि(-) ० सी ने कुछ रोक टोक विन को न किया तुरत रामच(-) ० न्द्र के निकट चले आये(।) गुरु को आते देष दशरथ ० के लाल झट उठ खडे भये तो शिर झुका विन को ० दडवत कर अति आदर से सिहासन पर विठ(-) ० ला सीता से सोने की झारी मे जल मगा उन के ० पाव धो माथे चढा जानकी सहित यह वचन क(-) ० हने लगे कि आप के चरणोदक शिर चढा अव हम कृ(-) ० तार्थ हूऐ(।) यिह सुन हस के वशिष्ट जी वोले तुम्हा(-) ० रा चरणोदक लेते ही महादेव सनाथ भये अरु मे(-) ० रे पिता जो व्रह्मा कहाते हैं आप के पाव रूप तीरथ ० के जल से वडी पदवी को पहुचे(।) अव जो मुझ से ० ऐसा कहते हो तो लोगन को एक नीति शिषला(-) ० ते हो यद्यपि मै जानता हू तुम मनुष्य नही परमे ०

---

१. हाथियाँ ये। २. पैदल।

ईश्वर हौ देवताओ के कार्य निमित्त भक्तन को भ(-) ० क्ति होने के लिये ओ रावण को मारणे के हेतु ल(-) ० क्ष्मी समेत आ अवतरे हो तो भी यह गुप्त वात०किसी से प्रकाश नही कर शक्ता हू (।) हे महारा(-) ० ज तुम गुरुन के गुरू हो ओ देवता पितरो के पि(-) ० तामह अरु सव के अन्तर यामी परमेश्वर हौ(।) ० अपने मन से सात्विक देह धर माया फयला(-) ० य मनुष्य से लगते हो(।) को तुम्हारी अपरमपा(-) ० र गति जान शके(।) ऐसे कह फिर वोले (—) हे दीनद(-) ० याल यह पुरोहिताई कार्य निपट निषिद्ध है मै कधी ० मानता न था पर व्रह्मा ने मुझसे कहा कि इक्ष्वाकु ० के कुल मे ईश्वर जनम लेगे तुम विन का आचार्यी०वृत्ति स्वीकार करो(,) इसमे तुम्हारा वहुत भला है(,) ० तिस्से यद्यपि जजमानिका कर्म करना वुरा है पै ० तुम्हारा पुरोहित कहावने की आश से मैने मा(-) ० न लिया अव मेरा मनोरथ फला पर देषिओ गु(-) ० रु का उद्धार जो कुछ चाहते हो तो सव को मोहन (-) ० हारी माया जो सदा आपकी वश मे रहती है जिसमे ० मुजे न मोहे सो उपाय तुम करना(।)यह सव प्रसग ० पाकर कहा है आप किसी वात की चिन्ता न की ० जे मै दूसरे को न जनाऊगा यो कह निदान खूले ० कि कल्ह तुम्हे राज्य का तिल[1] होगा(।) यही वात सु(-) ० नावने के लिये राजा दशरथ ने मुझको भेजा है(,) ० सीता सहित आज तुम विधि से उपवास व्रत क(-) ० रो ओ जितेन्द्रिय हो नेम आचार से रह पृथ्वी ही ० पर शोना(।) यही जनावने के लिये मै आया(,) अव ० राजा के पास जाता हू(।) तुम वडे प्रभात ही आइ(-) ० ओ ऐसे वुझा समझा रथपर चढ जव वसिष्ट मु(-) ० नि गये तव श्री रामचन्द्र विहस विहस लछुमण ० से कहने लगे(—)सुनो भैया कल्ह जो मुजको तिलक ० तो कहने का राजा मै हूगा नाना भोग विला(-) ० श समेत सव तो काम काज तुम ही करोगे क्यूकि ० मै तुम्हे प्राण समान मानता हू(।) इस वात मे कधी ० सन्देह मत करो(।) इस भाति भाई को वहुत आसा(-) ० भरोसा दे निपट सन्तुष्ट कर गुरुका यथा भाषि(-) ० त सयम से आप रघुनायक रहे अरु वहा दशर(-) ० थके पास जद वशिष्ट मुनि जा पहुचे ओ आपस ० मे राम को राज्य देने की चर्चा करने लगे तधी नग(-) ० र के किसी मनुष्य ने सुन के ओही कौशल्या अरु ० सुमित्रा के समीप जा रघुवर को राज्य पर विठला(-) ० ने की वात जनाई(,) तव सुत का उदय सुनती ही नि(-) ० पट हर्षा कर दोनो रानियो ने सोने के आभरण वि(-) ० स को निछावर दिये अरु पुत्र कार्य के लिये कौश(-) ० ल्या तो तुरत लक्ष्मी ओ दुर्गा देवी को पूजने लगी(—) ० इस चिन्ता से अकुला करके कि राजा दशरथ ० है तो सत्यवादी(,) जो कहते है सो अवश्य निवाहते ० है(,) पर कामातुर हो सदा कैकेयी के वस रहते है(,) इ(-) ० स्से ऐसा न होए कि वात कहके विचल जाए (।) इत (-) ० ने मे देवताओ ने सरस्वती से कहा कि हे देवी व्रह्मा ० की वात रखने के लिये तुम शीघ्र अयोध्या मे जा ० पहले मन्थरा की मति फेरो तिस पीछे कैकेयी ० को छल राम के तिलक मे विघ्न करा तुरत स्वर्ग प(-) ० र चली आओ(,) इसमे हमारा वडा कल्याण होता ० है (।) यिह सुन पहले तो वह वहुत रिसियानी कि तु(-)० म सवनिपट क्रूर हो(,) पर का भला नही देष शक्ते(।) ० पर वडो का कहा टाल न शकी(,)

---

१. तिलक

ओ ही तुरत उठ२ खडी भयी तो जाते ही केकयी की लौडी मन्थरा की ० जो तीन जगह से टेन्ही ओ महाकुवरी थी ऐसी वु(-) ० द्धि हरली कि वह झट अटारी पर जा देषे तो चहु ० दिश नगर महासोहावन हो रहा है(,) घर घर ध्वाजा ० फहराती है(,) भाति भाति के वन्दनेवारो से द्वारो की ० शोभा अति अद्भुत वनी है(,) सव ठाव गली गली ० कुचो कुचो मे लोग पानी छिडकते है(,) ऐसा उत्स(-) ० व हो रहा है कि जिस का कुछ वषान ही[1] किया जा(-) ० ता(।) तव वहुत चकित हो नीचे उतर धाय से लगी ० पूछने(—)अरे दायी सुन तो आज क्या है कि नगर ० मे वडी धूमधाम हो रही है ओ अति हर्षित हो ० कौशल्या किस लिये व्राह्मणो को कपडे रुपै लु(-) ० टावती है इसका भेव तू मुझे समझा कर कह ० जो मेरे मन का सन्देह जाये(।) वोली कल्ह राम को ० राज्य का तिलक होगा इस कारण सिगरे नगर ० का सिगार होता है(।) ओ मारे आनन्द के लोग उ(-) ० छलते फीरते है(।) सुनती ही मन्थरा वहुत उदा(-) ० स हूई तो कही एकान्त मे केकयी पलग पर लेट(-) ० ती थी तहा जा कहने लगी (—)ए दैमारी क्या निचि(-) ० त हो सो रही हो उठो वडा कुयोग आ लगा तु(-) ० म सदा रूप ही के घमड मे रहती हो कुछ आगा पा(-) ० छा नही शोचती हो(,) राजा की कृपा से कल्ह राम ० को राज्य मिलेगा सव प्रकार अव तुम्हारी हानि ० है(।) इतने वचन के सुनती ही हडवडाकर कैकेयी ० उठ वैठी तो अति प्रसन्न हो रतन जडित अन(-) ० मोल सोने का नेपुर उतार शीघ्र उसको दे डाला ० ओ कहा कि ऐ निगोडी तू इस महाहर्ष मे क्या ० अमगल वोलती है(,) मै तो भरत से भी अधिक ० रामचन्द्र को प्यार करती हू अरु वे भी कौशल्या ० के समान ही मुजको मानते है(,) तुझे राम से क्या ० इतना लाग है जो उनका भला सुन के अकुला ० ती है सो मुझे वता(।) केकयी की इतनी वाते सुन ० अति दुख पा मुह फुलाय मन्थरा लगी कहने सु(-) ० नो रानी मुज को यिह अछा अछा नही लगता है कि रा ० जा दशरथ कामवश हो झूठ मुठ मीठी मीठी ० वाते कह उपर से तो ऐसा तुम्हे प्यार करते है ० कि जिसमे निदान दुख भरा है अरु भीतर से ० जिसमे कौशल्या का भला होए सोई कार्य क(-) ० रते है(।) जो यह वात असत्य है तो तुमही कहो ० शत्रुघ्न सहित भरत को नानीहार भेज करके ० राम को क्यू राज्य पर विठलाते है(।) इसमे कुछ ० मेरा अकाज नही राम राजा होए कै भरत मु(-) ० झे क्या लौडी छोड मै रानी थोडे ही हूगी पर ० तुम्हारा अन्न खाती हू इस कारण मुझसे ० अनीति नही देषी जाती अरु सुमित्रा को ० जो पूछो तो उनको इसमे वडा आनन्द है क्यू(-) ० कि राम की सेवा मे सदा लछुमण रहते है वे ० तो यह चाहती ही है पर तुम्हारे पुत्र को अ(-) ० व राम का दास ही होना होगा नही तो यह जा ० न लो कि इस वस्ती से भरत को राम निकाल दे(-) ० गा कै तुरत मार डालेगा और कौशल्या को आ(-) ० गे लौडी सी नित हाथ जोरे तुम रहोगी तनिक ० न आदर होगा(।) इस भाति सवति[2] की वश मे रह ० ने से वरन[3] मृत्यु अछा है जीना भला नही(,) तिस्से ० यही विचार है कि भरत को राज्य राम को चौदह व(-) ० र्ष वनवास जिसमे होवे सो उपाय शीघ्र तुम करो(।) ० इसमे प्रजा लोग भरत के वश मे हो जायेगे फि(-) ० र चौदह वर्ष वीते जो राम आवेहीगा तो

---

१ सभवत 'नही'। २. सौत। ३. बल्कि।

क्या ० उससे हो शकेगा यिह् मेरा कहा हित समझो तो उ(-) ० ठो इसका यत्न करो(,) अभी अवसर है न[1] पीछे शि(-) ० र दे मारोगी तो भी कुछ होने का नही(।) यो कह फि(-) ० र वोली(—)इसका उपाय आगे से मैने ठहरा रष्षा ० है सो मुज से सुन लो कि आगे देवताओ दानवो ० से जद वडी लडाई लगी तद सहायता के लिये इ(-) ० न्द्र की विनती से धनुष वाण ले तुम समेत रथ प(-) ० र चढ सैन्य लिये तुरत सग्राम पर जा राजा दशरथ ० लगे राक्षसो से युद्ध करने(,) इतने मे रथकी धूरी टू ० ट गयी पर राजा ने नही जाना तव साहस कर प(-) ० ति का प्राण बचाने के हेतु पहिए के छेद मे तुमने ० अपना हाथ डाल ओही उसको पकड रष्षा जव ० सव दैत्यन को मार विध्वस दशरथ सुचित भये ० तव तुम्हारी करतूति देष अति अचरज मान तु(-) ० म्हे गरे लगा यह वचन कहने लगे हे रानी मै तुम ० से वहुत प्रसन्न भया जो चाहती हो सो मुज से मा(-) ० गो इसका पलटा दो गुणा मै दूगा(।) तुमने उत्तर दि(-) ० या महाराज अभी यह दोनो वर थाती से आप ० ही के पास रहे जव मुझको काम होगा तव मै ले ० लूगी(।) निदान हर्षित हो अछा कह पृथ्वीपति ० अपने घर आये (।) यह वृत्तान्त तुम्हारे ही मुह से ० मैने सुना था अभी मुजे सुर्त्त आयी है तिस्से नि ० ज देह के सव आभरण अव तुम फेक दो ओ मै (-) ० ला कपडा पहन अटवाट[2](-)खटवाट ले कोप भ(-) ० वन मे जा भूआ ही[3] चुपचाप सो रहो(।) जव मनाव(-) ० ने को राजा जाये तव भरत को राज्य राम को वन(-) ० वास यही तुम मागियो (।) उनको देते ही वन आवे(-) ० गा[4] क्यूकि दो वर देने को आगे स्वीकार कर चूके ० है(।) इस भाति जव कुवडी ने कहा तव विसकी वा(-) ० त हित मान निपट हर्षा कर केकयी वोल उठी(—)अ(-) ० रे मन्थरा यह कहा से तुजे बुद्धि हूई मै तो तुझे व(-) ० हुत भोली सी समझती थी पर आज जाना कि ० तुज सा वुद्धि सागर हितू दूसरा कोई नही मेरा है(,) ० सुन जो किसी प्रकार भरत को राज्य होगा तो चून ० चून के शौ गाव मैं तुझे दूगी ओ सदा प्राण समा ० न मानूगी यो कह रोसवढा वुस दासी सहित केक(-) ० यी वहा से तुरत कोपभवन मे गयी वहा सव गह(-) ० ने छितराय मैला वस्त्र पहन धरती पर शो रही ० ओ मथरा से कहने लगी(—)सुन प्यारी यह जान ले ० कि जव तक वन मे राम न जायेगे तव तलक पृ(-) ० थ्वी ह[5] पर मै पडी रहूगी नही तो प्राण ही तज दूगी(।) ० मथरा बोली ऐसे ही ठानो इसी मे तुम्हारा कल्याण ० है(।) इस भाति आपस मे वतरा कुवडी तो विदा हो ० अपने घर को गयी रानी भी ओही भूमि पर लेट ० रही(।) महादेव कहते है(—)देषो पारवती कैसा ही को(-) ० ई गुण वान दयालु होए ओ सकल विद्या पढ ० नीति ही पर चले तो भी दुष्टन के सग पाय वे भी वि(-) ० गड जाते है(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकाडे ० द्वितीयोध्याय २(।) इतने मे रामचन्द्र को तिलक ० देने के हेतु मत्री सहित सव अपने लोगन को स(-) ० कल वस्तु इकठे करने की आज्ञा दे अति हुलसि(-) ० त हो राजा दशरथ मन्दिर मे गये वहा केकयी को ० न देष निपट व्याकुल हो सोचने लगे कि जो आ(-) ० गे मुझको देषती ही हसती हूई शीघ्र मेरे निक(-) ० ट आन

---

१. नहीं तो। २ हठ या क्रोध के कारण स्त्रियो का काम-धधा छोड देना; तुलनीय,—खटपाटी लेना। ३ पृथ्वी पर। ४ देना ही पड़ेगा। ५ ही।

पहुचती थी सो प्राण प्यारी आज कहा ० उढ गयी(।) ऐसे वहुत कह निदान दासीन से पूछ(-)० ने लगे कि रानी जी कहा है(।) उन्होने उत्तर दिया ० कि वे तो आज कोपभवन मे है(,) आपही जा उन(-) ० ने पूछिये इसका कारण(,) हम नही जानती(।) इत(-) ० ने वचन के सुनते ही राजा वहुत डर गये(।) निदा(-) ० न धीरे धीरे रानी समीप जा हाथो से विन की ० देह टटोल कहने लगे कि गहने उतार पलग ० तज पृथ्वी पर क्यू पडी हो(।) वोलो क्या चाहती ० हो सो तुम्हारा सव काज मै कर दूगा(।) नारी कै[1] ० पुरुष को[2] तुमसे वैर रषता है(?) मै उसे डाडू[3](,) न क(-) ० हो तो जी से मार डालू(।) जिससे प्रसन्न हो सो अ(-) ० वश्य करू(।) क्या नही जानती हौ जो मै तुम्हारी व(-) ० श मे सदा रहता हू(।) क्यू मुजे सताती हो(?) वृथा य(-) ० ह तुम्हारा परिश्रम है(।) उठो कहो किस दरिद्र ने ० तुम्हारा हित कार्य किया है मै उसे वडा धनवन्त(-) ० कर डालू(।) न कोई भाग्यवान ही तुमसे कुछ ० लाग रषता है तो विसका तुरत धन लूट लू(,) ० ओ यह भी नही तो कहो किस को फासी दू कै ० कोई मारने जोग्य है पर तुम विसको वचाया चा(-) ० हती हो सो भी कर वैठू(।) ऐसे कह पुन राजा वो(-) ० ला कि सुनो क्या मुझे वहुत वकाती हो(,) मै तुम्हे जी ० देने को सदा उपस्थित रहता हू ओ सुनो प्राण ० से भी अधिक राम को मै प्यार करता हू तिसका ० शपथ है जो तुम्हारा हित न चाहता हू(।) इस भाति ० वार वार पुत्र का शपथ खा जद पृथ्वी पति ने व(-) ० हुत समझाया तव धीरे धीरे आष षोलकर ० केकयी लगी कहने कि जो तो तुम सचमुच वडे ० सत्य-वादी हो ओ राम की किरिया खाते हो तो ० जो वर मै मागती हू विसे अतिशीघ्र मुजे दो(,) सो यही है कि आगे देवता अरु दानवो की लडाई ० मे मैने आपकी वडी रक्षा करी तद निपट सतु(-) ० ष्ट हो मुझको तुमने दो वर देन कहे पर विस्सम(-) ० समय[4] तुम्हारे ही पास मैने रष छोडे(।) तिनमे से एक से ० तो मेरे प्राण प्यारे भरत को अव राज्य होए(,) पै जो ० सामग्री राम के लिये आयी है विसी से(,) ओ दूस(-) ० रे वर से होत सवेरे रामचन्द्र दण्डकारण्य मे जा(-) ० ये(,) वहा मुनि का वेष वनाय जटा वल्कल धारण ० कर नित कन्दमूल खा चौदह वर्ष वसें(,) तिस पी०छे जी चाहे तो यहा आवेगे(,) न[5] विसी वन मे कही ० रहें(।) जो तो इस वात मे तनिक विलम्ब करोगे त(-) ० द तुम्हारे आगे ही मै अपना प्राण तज दूगी(।) के(-) ० कयी का यह दारुण वचन कि जिसके श्रवण ० से सगरे गात रोमाच हो आवे सुनते ही राजा दश(-) ० रथ यो धरती पर गिर पडे जैसें वज्र का मारा हू(-) ० आ पेड(।) फिर कुछ एक चेत कर धीरे धीरें दृष्टि ० पसार जी मे कहने लगे(—)क्या मैने दु स्वप्न देषा(,) ० कै मुजे मतिभ्रम हो गया(,) यो शोच घाघनि सी ० आगे खडी हूई पत्नी से कहने लगे(—)अरे चडा(-) ० लिन यह क्या वोलती है(,) तू मेरा जी लेने पर अव ० हूई(,) भला रामचन्द्र ने तुझ से क्या अपराध किया(,) ० पहले तो दिन रात उनका तू गुण ही गाया करती ० थी कि कौशल्या के समान समझ सदा मेरी सेवा ० टहल वे करते हैं(,) अब क्यू ऐसा कहती है(।)अछा पु(-)० त्र के लिये सव राज्य पाट ले ले (,) इससे मै प्रसन्न हू पर ० दया कर राम को घर मे रहने दे(,) उनसे किसी वात ०

---

१. या। २ वह कौन है जो। ३. दंड दूं। ४. उस समय। ५. नहीं तो।

का तुझे भय न हो गा (।) यो कह सजल नयन हो नि(-) ० दान राजा पावो पर गिर परे पै निश्शील केक(-) ० यी शान्त तो क्या होगी और भी आखे लाल ला(-) ० ल कर यह वचन वोल उठी (—) क्या राजा जी तुम्हारी ० मति तो नही फीर गयी जो झुठमुठ यह वकते हो (,) ० सुनो अव जो निज प्रतिज्ञा से टलोगे तो अन्त स(-) ० मय अवश्य नरक भोगोगे ओ यह जान लो कि ० होत सवेरे मृग छाला कै फटा टूटा कपडा ओढ ० करके जो रामचन्द्र वन को न सिधारेगे तो फासी ० लगा कै विष खा कर तुम्हारे आगे ही मै मर जाऊँ(-) ० गी (।) सव सभा मे जा लोगन से व्यर्थ अपने को सत्य(-) ० वादी कहाते फीरते हो (,) तुमसा झूठा तो आज त(-) ० क किसी को मैने नही देषा (।) इस प्रकार प्रिया की वा(-) ० ते सुन राजा दशरथ दुख के सागर मे डूब गये ओ ० मूर्छा से अचेत हो पृथ्वी पर ऐसें षस परे कि जैसे ० कोई मृतक पडा होए (।) तिस समै उनके लेखे ए(-) ० क वरस मान[1] वह कष्ट की रैन वीती (।) यह तो यहा ० का समाचार है और वहा वाल जुवा वृद्ध जितने ० नगर मे लोग थे तिन्हो की आषन मे विस रात त(-) ० निक नीद न आयी (।) इसी आनन्द मे सव मगन ० थे कि कद यह रात निगोडी वीतेगी जो पीताम्बर ० सहित सकल आभरण पहने शिर मे मुकुट दिये ० राज्य का तिलक पा विकशित वदन श्याम शरीर ० रामचन्द जो शौकरो[2] कामदेव से अधिक सुन्दर ० हो रहे हैं लक्ष्मण समेत हाथी पर चढ मन्दिर मे ० से निकलेगे ओ हम सब विन को देषेगे जो अ(-) ० पना जीवन जनम सुफल कर लेखेगे (।) इसी चि(-) ० न्ता मे प्रातकाल होने पर आया तव मगलामु(-) ० खी सव राज भवन मे आन पहुचे अरु उच स्व(-) ० र से महीपति का यश वषान करने लगे पर केक(-) ० यी को जो रोस चढ आया था सो उन्हे काहे को ० अछा लगे (,) सव को वारन[3] कर भेजा (।) इतने मे प्र(-) ० भात हूआ जान ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ऋषि ० कन्या हाथी घोडे छत्र चौर इन आदि और भी ० नगर के लोग अरु श्रेष्ठ श्रेष्ठ वेश्याये सव व(-) ० शिष्ट मुनि की आज्ञा पा विचली डेवढी मे आ(-) ० न पहुचे (।) तिन को देषते ही सुमत्र निपट आकुल ० भया कि अवतलक भी राजा नही उठे (,) सुभ मु(-) ० हूरत वीता चला जाता है (,) अव कव राम को तिल(-) ० क होगा (,) यो कह निदान जहा राजा दशरथ वै(-) ० ठे थे तहा धीरें धीरें चला (,) जब समीप जा पहुचा ० तव शिर झुका राजा को प्रणाम किया ओ विन ० का निपट मलिन मुख देष चक्रित हो केकयी से ० पूछा (—) ऐ रानी यह क्या कारण है कि महा राज अ(-) ० थाह शोक शागर मे पडे है (,) इसका भेद आप मुजे ० वताइए जो मेरे मन का सन्देह जाये (।) वोली (—) रात सो(-) ० ये है नही (,) राम ही की चिन्ता मे रहे है (,) इस्से अपनी ० वश मे आज नही हैं (,) तुम शीघ्र जा रामचन्द्र को य(-) ० हा बुला दो जो इनका जी अव ठढा होए (।) मत्री ने उ(-) ० त्तर दिया कि विना महाराज की आज्ञा मै नही ० जा शक्ता (,) इसमे आप मुज से कधी प्रसन्न न हो(-) ० गे (।) इतना वचन सुन निदान राजा ने भी हुकार क(-) ० र कहा (।) तव सुमत्र दौडे सो विन रोके टोके अटारी ० भीतर जा रामचन्द से वोले (—) धर्मावतार शीघ्र आ(-) ० प चलिये (,) पृथ्वीपति तुमको देषा चाहते

---

१. के समान। २ सैकड़ों। ३. वारण, मना कर दिया।

है (।) सुन(-) ० ते ही लक्ष्मण समेत रथ पर चढ रघुनायक वेग ० चल खडे भये तो वीच डेवढी मे वशिष्ट आदि ऋ(-) ० षिन के समाज ओ नगर के लोगन की वडी भीर ० देषते हूए तुरत समीप जा गाडी से उतरे ओ च(-) ० रण छू पिता को प्रणाम कर हाथ जोर जो ० आगे हो खडे हूए कि तो ही झूक कर दोनो वाह प(-) ० सार दशरथ ने चाहा कि मै इन्हे गोदी मे विठला ० ऊ(,) पर राम राम कहते ही शोक से अचेत हो ओही ० गिर परे(,) तव हाहा कर राम ने शीघ्र उन्हे अक मे उ(-) ० ठा लिया(।) इतने मे राजा को मूर्छित देष जितनी व(-) ० हा स्त्रिया थी सो सव एकबारगी रो उठी(,) तद रोयने ० का शब्द सुन निपट भैचक हो वशिष्ट मुनि भीत(-) ० र चले आये तो दशरथ की दशा देष वहुत दुखि(-) ० त भये(।) इससे आकुल हो राम ने राजा के दुख का ० कारण पूछा तव केकयी लगी कहने कि इनके दु(-) ० ख का कारण तुम हो(,) तिस्से जिसमे इनकी प्रति(-) ० ज्ञा रहै ओ सत्यवादी कहा वे वही काज करना तु(-) ० म्हे चाहि से[1] सो यह है कि सन्तुष्ट हो राजा ने दो व(-) ० र मुजे दिये है सो तुम्हारी वश मे है(।) लाज के मा(-) ० रे पृथ्वीपति आप नही तुमसे कह शक्ते(।)इस्सम(-) ० य पिता की रक्षा करनी ही तुमको उचित है क्यूकि ० पुत्र ऐंसा है कि नरक से वाप का उद्धार लेता है(।) इ(-) ० स प्रकार केकयी की बाते सुन रामचन्द्र ऐंसे दुखि(-) ० त भये जैसे किसी ने शूल से मारा होए(।) निदान ० आकुल हो कहने लगे(—)ऐ रानी तुम यह क्या वोल(-) ० ती हो(,) मै तो पिता के लिये अपना प्राण दूगा अ(-) ० रु राज्य समेत सीता कौशल्या को भी तजूगा(,) सु(-) ० त का यही धर्म है जो सदा वाप की आज्ञा मे रहे(,) ० ओ जो अपने मन से पिता के हित कार्य सवार ० लावे वह उत्तम पुत्र है अरु जो कहे पर करे सो म(-) ० ध्यम है ओ कहे से भी नही कर शके वह अधम ० पुत्रो मे गिणा जाता है(,) तिस्से जो मुजे राजा कहे० सो सव काम कर लाऊ(,) इसमे कधी सदेह मत क(-) ० रो(,) राम झूठ भाषने का नही(।) इस भाति जव रघु(-) ० वर ने प्रतिज्ञा की तव केकयी खुल कर कहने ० लगी कि सुनो रामचद्र जो सामग्री तुम्हारे लि(-) ० ये आयी है विस्से भरत को राज्य होवे अरु दूसरे ० वन से चीर वस्त्र पहन जटाधारी हो पिता की आज्ञा ० से अभी तुम वन को सिधारो(,) वहा मुनि का अ(-) न्न खा के चौदह वर्ष वसो(,) वाप के ये दोनो का(-) ० ज करने ही तुम्हे जोग्य है(।) आप तुमको क(-) ० हते लजाते हैं(।) राम ने उत्तर दिया(—)अछा भर(-) ० ते ही राजा होए(,) मै दण्डकारण्य जाऊगा पर ० राजा नही वोलते इसका कारण क्या है(?) राम(-) ० चन्द की इतनी बाते सुन महादुखित हो दश(-) ० रथ ने कहा(—)पुत्र क्या करू मै स्त्री का वश्य हूआ(,) ० मेरी मति ठिकाने मे नही है कुचालियो के गिण(-) ० ती मे आया मुज को मार कर के यह राज्य तु(-) ०म ले लो(,)तुम्हे कुछ पाप न होगा ओ मै इस" "झू[2] मे[2](-) ०ठा न हूगा(।) यो कह निपट आकुल हो राम को ग(-) ० रे लगा राजा पुकार पुकार रोने लगे कि हा रघु(-)० वर हा मेरे प्राण के आधार तुम मुज को छोड के ० क्यू कर एकेले वन मे जा वसोगे(।) तव दो पट्टे सें पि(-) ० ता का मुह पोछ कर रामचद्र लगे समझावने ० कि महाराज आप किस लिये इतने

---

१. 'चाहिए' होना चाहिए। २. " का सकेत है कि ऊपर अकित 'मे' यहाँ आयगा।

आतुर हो(-) ० ते हैं(,)भरत राज्य करें(,) मै तुम्हारी प्रतिज्ञा निवाह ० के फिर यहा आऊ गा(,) किसी वात की चिन्ता मत ० कीजे(,) राज्य ते कोटिगुण अधिक सुख वन मे मुजे हो(-) ० गा (।) इसमे आपकी वात भी रहती है ओ केकयी प्र(-) ० सन्न होती है(,) मन का ताप इनका मिटता है(।) ऐसे ० कह पुन वोले अव मै मदिर मे जाता हू वहा मा(-) ० ता से विदा हो सीता को हित शिषा फिर यहा ० आकन चरण छू आपको प्रणाम कर लूगा तव ० सुचित हो वन को सिधारू गा(।) इस भाति रा(-) ० जा दशरथ को बुझा समझा श्री रामचन्द जी ० वहा से चले ओ जहा पुत्र को तिलक होने के ० निमित्त हरि की पूजा ओ होम कर व्राह्मणो को ० धन दे मन लगा मौन हो कौशल्या रानी आ(-) ० नन्द कन्द विष्णु का ध्यान कर रही थी तहा वि(-) ० न के समीप आन पहुचे(।) ० इति श्री रामचरित्रे (-) ० अयोध्याकाडे तृतीयोध्याय ३(।) तव राम० को आगे खडे हूए देष सुमित्रा ने कौशल्या ० से कहा कि रघुवर की मा आष षोलो रामचन्द ० आये है(।) सुत का नाम सुनती ही तुरत विन्हो दृ (-) ० ष्टि पसारी तो प्यार कर पुत्र को गोद विठला मा(-) ० थ चूम सव गात छू यह वचन कहने लगी(—)वेटा ० भुष लगी है तो मिठाई भोजन करो(।) श्रीरामच(-) ० न्द्र बोले(—)माता किसे खाने पीने का अवसर है(,) मै ० तो अभी दण्डकारण्य को चला(।) केकयी के क(-) ० हे से सत्यवादी पिता ने भरत को राज्य दिया ० ओ मुझे कहा कि चौदह वर्ष मुनिन के साथ व(-) ० नवास तुम करो तिस्से मै जाता हू आप किसी ० वात की चिन्ता मत कीजे मै शीघ्र आकर तुम्हा(-) ० रा दर्शन फिर करूगा(।) इतने वचन के सुनते ही प(-) ० हले तो कौशल्या निपट मूर्छित भयी पुन कुछ ० एक चेतकर लगी कहने कि वेटा जो तुम सचमु(-) ० च वन जाओगे तो मुझ को भी साथ लिये चलो ० नही तो तुम्हारे विन क्षण भर भी न मै जीऊगी ० क्यूकि वछरू विन गाय की भाति प्राण समान पुत्र ० को कधी न तज शक्ती हू(।) राजा वहुत प्रसन्न ० है तो भरत को राज्य ओ केकयी ही को अपना ० सरवश दे डाले पर भला तुमने विन से क्या अ(-) ० पराध किया कि जिस कारण वन मे खदेडते है(।) ० यो कह फिर बोली(—)सुनो यद्यपि पिता वडा है तो ० भी गर्भ मे रषती ओ पालती है इस हेतु विचा ० रिये तो सव प्रकार माता ही वडी ठहरती है ति(-) ० स्से मै वरजती हू तुम कभी मत घर से वाहर हो ० ओ मेरा वचन टाल करके राजा की आज्ञा ० निवाहने के लिये जो तुम हठ से निकलोगे तो ० यह जान लो कि मै वचने की नही(,) अवश्य यम(-) ० लोक सिधारू गी(।) इस भाति कौशल्या की वाते ० सुन लक्ष्मण ने भी रामचन्द्र से कहा(—)भैया ऐसे ० मतिमन्द्र ओ विक्षिप्त पिता की जो कामवश ० हो सदा केकयी के कहे मे रहते है भली आज्ञा ० आप लीये फीरते है(,) मै तो इन्हको वाध कर स(-) ० व भाई वन्धु ओ मामा समेत भरत को आज ही ० जा मार डालता हू (।) तुम्हारे चरण का शपथ है जो ० इस टेक पर तीनो लोक न जला कर भस्म क(-) ० र डालू(।) मेरा पराक्रम आज देष लीजे(।) आप ० चल कर राज्य का तिलक कराइऐ(,) धनुष वा(-) ० ण हाथ मे ले सवको मै देष लेता हू(।) को ऐसा वी(-) ० र है जो मेरे रहते हूऐ इस कार्य मे वाधा करेगा (।) ० मै विसका जी विनु लिये न छोडता हू (।) इस प्र(-) ० कार लछुमण की वाते सुन प्यार कर विन्हे ग(-) ० रे लगा श्री रघुनायक वोले(—) भाई तुम किस्से कह ० ते हो मै नीके जानता हू कि तुमसा मेरा हितू भाई ० ओ महावीर इस लोक

मे दूसरा कोई नही है जो चा(-) ० हो सो सव कर शक्ते हो पर किसलिये इतनी धूम ० मचावोगे क्यूकि यह देह ओ राज्य आदि जितने ० तुम देषते हो सो जो सत्य होए तो परिश्रम तुम्हा(-) ० रा सफल है(।) ये तो माया के रचे हूए मृग तृष्णा स(-) ० मान है क्षण मे विला जाते हैं ओ इसी प्रकार मेघ ० मे विजली सा भोग भी निपट चचल है(,) ज्ञानी लो(-) ० ग कधी न इसे चाहते(,) कितना दिन ससार मे रह(-) ० ना है(,)आयुर्वल तो तावे पर पानी की वुन्द सा क्ष(-) ० ण का होता जाता है(,) तिस पर भी जैसे साप के मु(-) ० ह मे फसा हुआ मेढक दशो को निगलाने चाहता ० है वैसे ही कालरूप जो सर्प है विससे ग्रस्त हो वि(-) ० स भोग पर लोग चित दौडाते हैं कि जिसकी घडी ० भर भी रहने की आशा नही ओ विस के लिये दि(-) ० न रात कै दुखदायक काम उठाते है तिस्से जो ० यह देह किसी प्रकार अपनी नही तो कहो क्या को(-) ० ई भोग करेगा(।)माता पिता स्त्री सुत कुल परिवार ये ० कैसे है कि जैसे नदी मे वह वह कर तृण इकठे होते ० है फिर जहा के तहा चले जाते है ओ लक्ष्मी तार की ० छाह सा निपट चचल(,) तरुणाई अध्रुव(,) स्त्रीन से वि(-) ० लास स्वप्न समान है (,)तो भी प्राणी को एत्ता अभीमा(-) ० न होता है(।)देषो लक्ष्मण सदा रोगन से आकुल स्व(-) ० प्न रूप ससार मे आकर मूढ लोग वहुत हर्षते हैं ओ ० सूरज के उदय अस्त से दिन दिन आयुष छिजता ० है इस दशा को ओ वुढापा मृत्यु को देषके तनिक न ० जी मे चेतते है(,) देषो वे ही दिन रात है कि जिन मे भोग(-) ० वश हो मनुष्य अकडे चलते है ओ यह नही सम(-) ० झते कि किसी न किसी समय इन्ही मे काल हम ० को पछाडेगा(,) उलटा ही विसकाया को माजे फिर(-) ० ते है जो पानी से भरा हूआ मिट्टी का कच्चा घडा सा ० क्षण से गल जाती है ओ जिसमे भाति भाति के व्या(-) ० धि भर रहे हैं(,) वाघ सा बुढापा आगे हो जिसे नित्य डरा ० ती है(,)मृत्यु अपना अवसर लगा साथ ही फिरती ० है (,) यो समझ हाड चाम मल मूत्र लोहू पीव आदि ० से भरे हूऐ शरीर को जो निदान भस्म हो वेगा (,) कै ० जिसे कीडे ही खाजायेगे (,) कहो कैसे निज कर मान(-) ० ते हो(।) देह को अपनी समझना यही अज्ञानता ० है ओ मेरी देह नही मै चेतन सरूप व्रह्म हू इसी वु (-) ० द्धि को ज्ञान कहते है(।) अज्ञानता ही आवागमन ० का कारण है ओ ज्ञान विसका मिटावनसारा यह ० विचार के जो नर ससार सागर पार उतरा चाहते ० हैं तिन को सव प्रकार से उचित है कि ज्ञान शीष (-) ० ने मे चित्त दे अरू काम क्रोध लोभ मोह ये विसके ० वैरी है इनसे अपने को सदा वचाये रहे(।) यो तो चारो ० एकए[1] से प्रवल है पर मुक्ति होने मे विघ्नकरनहारा ० को पइन्ह मे वडा वली है जिसके वश हो यहा तक ० कि पिता माता भाई मित्र को लोग मार डालते हैं(।) इ (-) ० स हेतु मनमे ताप होने की जड ओ सकल दया ध(-) ० र्म विनाशनहारा एक वही है तिस्से हे लछमण ० मेरा कहा मान क्रोध तज सतोष कर शात हो र(-) ० हो(।) को किसका शत्रु है(।) सुख दुख सव अपना अप(-) ० ना प्रारब्ध का भोग है यह मेरा उपदेश जो सदा ० जी मे रषोगे तो ससार के दुख मे फिर न कभी फ (-) ० सोगे (।) तुम भी माता इस बात पर सावधान रहोगी ० तो मेरे आवने की आश पर बहुत कष्ट न पाओ(-) ० गी(।) देषो पवन वश हो नदी

---

१. एक ही ।

मे नाव की भाति नि(-) ० ज कर्म के फेर मे पर कोई प्राणी सदा इकठा नही ० रहता यह समझ शोक त्याग ईश्वर से मनाओ ० चौदह वर्ष क्षण समान वीत जायेंगे (।) इस डौल से ० जों तुम रहोगी तो मै भी सुख से वन मे वसूगा (।) ऐ(-) ० से वुझा समझा श्री रामचन्द्र कौशल्या के चरणो ० पर गिर परे(।) विन्हे उठा अक मे विठला कौशल्या ने आशीस दी कि हे पुत्र जहा जहा तुम फीरो वसो ० ओ सोओ वहा व्रह्मा विष्णु महेश आदि देवताओ ० गन्धर्व तुम्हारी रक्षा जा करे (।) यो कह वार वार गरे ० लगा माता ने राम को विदा किया तद गिडगिडा क (-) ० र लछुमणजी भाई से यह वचन कहने लगे(—) महा(-) ० राज ज्ञान वता मेरे मन का वडा सन्देह आपने मिटा(-) ० या अव मैने क्रोध तजा तिस्से कृपा कर आज्ञा ० कीजे सेवा टहल के लिये मै भी साथ चलू ओ नही ० तो अपना प्राण मै दूगा(।) इस प्रकार से जब भाई ने ० वहुत हठ किया तव श्री रामचन्द्र ने माना ओ वि(-) ० न को सग लिये सीता से विदा होने को गये (।) जब नि(-) ० कट जा पहुचे तब मुस्कुराकर सोने की झारी मे वे ज(-) ० ल ले आयी ओ स्वामी के पाव धो विन्हे आसन ० पर विठला यह वात लगी पूछने(—)नाथ क्या का(-) ० रण है कि सव लोग-वाग छोडकर एकेले आप ० आये (?) कहिये कहा गये थे(?) स्वेत छत्र क्या हूआ ओ० शिर का मुकुट क्यू उतार रष्षा अरु वाजे वाजते थे ० सो क्यू वारण भया ओ राज्य का तिलक पाकर आ(-) ० दर मान से किस लिये मेरे पास न आये(?) इस भाति ० जव सीता ने पूछा तव मुस्कुरा के रामचन्द्र वोले(—) ० पिता ने मुझे दण्डकारण्य का राज्य दिया विन की ० आज्ञा रषने के लिये अभी मै वन को चला तुम ० निकट जा मेरी माता की सेवा मे नित्य रहिओ इ(-) ० सी मे तुम्हारा कल्याण है (।) यिह सुन निपट डर क(-) ० र फिर सीता ने कहा(—) क्या कारण है जो राजा ने ० आपको जगल का राज्य दिया(?) रामचन्द्र वोले(—) ० किसी समय मे प्रसन्न हो केकयी को दो वर देने क(-) ० हा था इस्से उनका अव हठ देष महादयालु ओ ० सत्यवादी पिता ने भरत को राज्य ओ मुझको ० चौदह वर्ष वनवास दिया इस हेतु तुरत मै जाऊ(-) ० गा इस मे कुछ विघ्न तुम मत करो स्त्री का यही ० धर्म है कि स्वामी की आज्ञा निवाहे(।) यह सुन प्री(-) ० ति से घवराकर जानकी ने विनती की (—)अछा महा(-) ० राज जो ऐसा ही है तो पहले मै, तिस पीछे आप व(-) ० न को सिधारिये(,) मेरे विन तुमको जाना कधी उचि(-) ० त नही है(।) यिह सुन वहुत सन्तुष्ट हो श्रीरघुनाय (-) ० क लगे विन्हे समझावने(—)हे प्राणप्यारी मै तुम्हे क्यू ० कर वन मे ले चलू(,) वहा वडे वडे एक एक ऐसे राक्षस है ० कि मनुष्य ही जिन्ह के आहार है अरु वाघ सिह सा(-) ० पशू अर मृग आदि जहा देषो तहा येही दृष्ट आ ० ते है ओ भोजन के लिये भाति भाति के पकवान पु(-) ० री मिठाई तर्क्कारी वहा चाहो तो कही मिलने की ० नही(,) षट्टे तीते फल मूल है सो भी अव सर पर न पा(-) ० ओ गी अरु काट कुश से भरा हुआ अति विकठ० वाट है कि जिसमे निवहना महा कठिन है अरु उ(-) ० स वन के कुजो भीतर जो सुनो तो झिगुर सव दि(-) ० न रात झझकार शब्द करते है(,) दश(-)मछड तो इत(-) ० ने भर रहे है कि देषते ही प्राणीन पर झुड के झुड ० टूट परते है (।) इस प्रकार दण्डकारण्य सदा नाना दुख ० का घर है(।) जाड घाम सहकर पाव पाव तुम क्यू कर च(-) ० ल शकोगी(।) वन मे राक्षसो को देषती ही प्राण

तजो(-) ० गी तिस्से मेरा कहा मान घर मे तुम रहो फिर मुज(-) ० से भेट होगी(,) किसी वात का सन्देह मत करो(।)इतने ० वचन के सुनती ही सीता निपट दुखित हूई तो कोप ० से ओठ फर फरा स्वामी से लगी कहने कि ऐ धर्मा(-) ० वतार क्या अपराध है जिस कारण मुझ को तजा ० चाहते हो(,) भला तुम्हारे विन दूसरा किसका भरोसा० मै रषती हू जो आप के पीछे मेरी सुधि लेगा अरु ० आदर मान करेगा(,)तुम दीन दयाल हो मुजे ० मत छोड जाओ(,) आपके निकट जो मै रहूगी तो को ० ऐसा दैत्य है जो मेरे सामने हो शकेगा आ[1] मेरे भो(-) ० जन के लिये तो तनिक चिन्ता जिन[2] की जे क्यूकि ० जो जो कन्द फल तुम्हारा जूठा वचेगा विसीसे मै ० अति तृप्त हूगी अरु वही मुजे अमृत समान ल(-) ० गेगा ओ आपके साथ हर्षित हो चलती हूई मुझ ० को जो काट कुश वाट मे मीलेगे से मेरे लेखे फूलो ० की विछोने से भी अधिक सुखदायक होगे(,) मै तु(-) ० म्हे किसी बात का दुख न दूगी वरन जो कुछ काम ० कार्य होगा सो सव करूंगी(।) यो कह फिर बोली कि ० सुनिये लडकपण मे एक जोतिषी ने मुजसे कहा ० था कि कुछ दिन मे तुमको वन वास होगा सो जो ० मै साथ चलूगी तो विस गण[3] की भी वात सत्य हो (-) ० ती है(—)ऐसे वहुत कह फिर जानकी ने पूछा भला क्यू ० महाराज रामायन तो व्राह्मणो से बहुत आपने ० सुने है पर सच कहिये किसी पोथी मे विना सीता ० के रामचन्द्र कभू वन को सिधारे है जो मेरे चलने मे ० अव इतने घवराते हो(,) मुजे मत तजो तो सहायता के ० लिये अवश्य मै चलूगी ओ हठ से जो मुझको त(,) ० जोगे तो तुम्हारे आगे ही मै अपना शरीर त्याग ० दूगी(।) इस भाति जव सिया ने ठाना तव राम ने माना ० ओ कहा कि अछा वसिष्ट की स्त्री को निज आभ(-) ० रण सव उतार दो(,) हम भी व्राह्मणो को धन देक(-) ० र वन को प्रस्थान करेगे(।) ऐसे कह सहस्रन गौ भा(-) ० ति भाति के अनमोल कपडे भूषण ओ रुपै[4] रा(-) ० मचन्द्र ने लछुमण से विप्रन को तुरत बुलवाय ० दान दिये(।) विसी प्रकार नगर के और जो भूषे लो(-) ० ग वहा थे उन समेत अन्दर के रहने वाले अप(-) ० ने ओ कौशल्या के जितने सेवक थे तिन्ह को भी ० वहुत धन दे सन्तुष्ट किया अरु स्वामी की आज्ञा ० पाती ही अति हुलसित हो सीता ने तो पुरोहिता(-) ० इन को तुरत निज गहने दे डाले(।) इस भाति अने(-) ० क धन लुटा पटा सवसे मील भेट जानकी सहि(-) ० त जब श्री रामचन्द्र राजा दशरथ से विदा होने ० को चले तव सुमित्रा को कौशल्या के पास शौ(-) ० प हाथ मे धनुष ले लछुमण जी विन के साथ हो(-) ० ये(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्या काडे चतुर्थोध्याय ४(।) ० विन तीनो को वाट मे आते देष केकयी के चरित्र ० से निपट व्याकुल हो नगर के लोग सव आपस ० मे परस्पर यो वतराने लगे कि हा कामवश हो स्त्री ० के लिये प्राण समान पुत्र को राजा दशरथ वन मे ० खदेडते है(,) को विन को सत्यवादी कहेगा ओ उस ० चाण्डालिन क्रूर केकयी को कि उसकी आषो मे ० तनिक शील नही को अव भला कहेगा जो ऐसे ० वालकन को वन मे भेजती है (।) हे पचो इस वस्ती ० मे अव रहना उचित नही(,) हम लोग भी वहा च(-) ० ले जहा स्त्री भाई समेत रामचन्द जाते है(,) देषो ० तो जिस महा सुन्दरी सीता का रूप वाहर केकि (-) ० सी लोगन

---

१. और। २. वही। ३. गणक, ज्योतिषी। ४. रुपये।

को स्वप्ने हू मे न कधी दृष्ट आया होगा ० सो राजकुमारी अव सव के वीच मे हो मुह षोले ० पावचारे चली जाती है ओ हाथी घोडे रथ आ(-) ० दि सव तज कर कव रामचन्द्र भूए भूए चले हैं(,) ० सव को विनाशनहारी केकयी राक्षसिनी उत्प(-) ० न्न हूई जो इन्हो को महासकट भोगना परा(,) इसमे ० ईश्वरेछा ही प्रवल है(,) मनुष्य का यतन कुछ काम न ० आता (।) इस भाति जव आपस मे सव बहुत पछताने ०लगे तव वामदेव मुनि जो उनके पास खडे थे अकु(-) ० लाकर यह वचन वोल उठे(—)अरे लोगो सीताराम के ० लिये तनिक मत तुम जी मे चिन्ता करो(,) इन्हका भेद ० मै कहता हू(,) सावधान हो सुनो(—)रामचन्द्र मानुष न ० ही हैं(,) आदि नारायण है कि जो रज तम सत्व ती(-) ० नो गुण धारण कर व्रह्मा विष्णु महेश कहा सृष्टि ० की उत्पत्ति पालन सहार किया करते है(,) मत्स्य का ० अवतार हो वेद का उद्धार इन्हीने आगे किया स(-) ० मुद्र मथन के समय जद मन्दराचल पहार अररा ० के नीचे को चला तद तुरन्त कछप की देह धर अप(-) ० ने पीठ पर उसको ले निवाहा(,)महाप्रलय मे रसात(-) ० ल जाती हूई इस पृथ्वी को वाराह स्वरूप हो निज दा(-) ० त पर उठा लिया (,) नृसिह की देह धर प्रह्लाद का दु(-) ० खदुर कर करने लिये तीनो लोक के महा कटक हिर (-) ० ण्यकशिपु का उदर नखो से विदार(,)पुत्र का राज्य(-) ० हरण हुआ देष अदिति की वडी विनती से वामन ० अवतार ले राजा वलि को छल इन्द्र को फिर अप(-) ० ने राज्य पर विठलाया(,) धरती के भार समान दुष्ट ० क्षत्रियो को सहारने के लिये परशुराम स्वरूप भये(,) ० अव रावणादि कोटिन राक्षसो को मारने के लि(-) ० ये राम रूप हो अवतरे है(,) विष्णु को पुत्र करने के नि(-) ० मित्त राजा दशरथ ने आगे वडी तपस्या करी इ(-) ० स्से आप भगवानइन्ह के घर मे आ जनमे है राव(-) ० ण आदि दैत्यन को विनाश के कारण लक्ष्मण स(-) ० मेत अभी वन को जायगे ओ सीता को जो देष(-) ० ते हो सो ससार की उत्पत्ति पालन प्रलय करन हा(-) ० री हरि की माया है(,) लछुमण जी शेषनाग है(,) यह ० समझ राजा रानी का इसमे कुछ दोस न जाना(,) ० यिह तो होनी ही थी तिस पर पृथिवी का वोझ उ(-) ० तारने के लिये कल्ह आके नारद मुनि ने वहुत प्रा(-) ० र्थना राम से की(,) विन्ह को आप ये वचन दे चूके है कि ० अछा[1] (,) होत सवेरे[2] अवश्य मै वन को प्रस्थान करू(-) ० गा(,) इस्से हे मूर्खो इन्हकी चिन्ता तनिक मत तुम क(-) ० रो क्यूकि जो मनुष्य राम राम नित्य जपते है तिन्ह(-) ० का सव दुख दूर हो जाता है ओ राम ही को कष्ट हो ० गा सो किस प्रकार से ये तो राजा दशरथ की श्रद्धा ० पुरावने के लिये ओ कलियुग मे राम नाम ही से ० लोगन को गति मुक्ति देने के हेतु रावण के विघा(-) ० त निमित्त ओ भक्तन को अपने मे प्रीति करा व(-) ० ने के कारण माया कर मानुष की देह धरे हैं(।) ऐसे ० वुझा समझा जव वा देव ऋषि चुप हूए तव नग(-) ० र के लोगन समेत जितने व्राह्मण सव थे सो सु(-) ० नकर रामचन्द्र को ईश्वर पहचान अपने अपने ० मन का सदेह त्याग निपट आनद मे मगन भये ० ओ राम ही का ध्यान सव करने लगे (।) सीता पति का ० यह भेव जो नर चित मे रष्षे विसे श्री रघुना ० यक मे ज्ञान समेत उत्तम भक्ति होवे(।)

---

१ 'अच्छा' ('स्वीकार है') ऐसा कह चुके हैं। २ सबेरा होते ही।

इतने ० ही मे जानकी लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र ० पिता के भवन मे जा पहुचे तो उन्हे सुनाकर ० केकयी से कहने लगे माता वन मे जाने के ० लिये हम तीनो एकमत हो आये है अव म(-) ० हा राज अपने मुह से आज्ञा करे जो हम लो(-) ० ग शीघ वन को सिधारे(।) इतने वचन के सुन (-)० ती ही अति हुलसित हो हठसे झट केकयी ० उठ खडी भयी ओ आप जा तुरन्त चीर वस्त्र(-) ० ला अलग अलग उन्हको पहनने को दिया(,) ० तब राम लछुमण ने तो निज कपडे उतार तु(-) ० रन्त चीरो को पहन लिया ओ सीता विसका ० ढव[1] जानती नही इस्से हाथ मे विसे ले सको(-) ०च से राम का मुह लगी निहारने (,) तव श्री रघुना ० थ जी ने उस चीर को ले जानकी के वस्त्रो ही पर लपेट दिया सो देष जितनी वहा रनिवास थी ० सो सव चारो दिशा से एक वारगी रो उठी(,) तद रो(-) ० वने के शब्द सुन महाक्रुद्ध हो वसिष्ट मुनि डाट ० कर केकयी से कहने लगे अरे निश्शील राक्ष(-) ० सिनी तूने तो राजा से एक राम को वनवास मा(-) ० गा है(,) भला सीता को अब किस लिये ऐसा ल(-) ० त्ता पहनने को देती है(,) इन्ह परतेरा वल कुछ ० काम न आवेगा तिस्से जो यह पतिव्रता जा(-) ० न की सेवा टहल करने को स्वामी के साथ जाती ० हे तो सदा अछा सुन्दर कपडा भूषण पहन ० सग मे रह पति को सुख दे कि जिसमे उनको ० वनवास का कष्ट न होवे(।) इतने मे राजा दश(-) ० रथ ने विलषा[2] कर सुमत्र से कहा कि अव रथ तु (-) ० म मगा दो जो ये तीनो तपसी वन को प्रयाण करे(।) ० यो कह सीता समेत राम लछुमण को देष निपट ० दुखित हो धरती पर गिर परे ओ ऐसे रोने लगे ० कि आशुन से सगरे गात भी गये तव तलक म(-) ० त्री ने रथ ला आगे षडा कर दिया तव देषती ० ही पहले सीता उस पर चढी तिसके पीछे पिता ० को प्रदक्षिणा प्रणाम कर रामचन्द्र ओ धनुष ० तूणी[3] सहित दो खड्ग ले लक्ष्मण जी विस गा(-) ० डी पर जा बैठे ओ सारथी से कह ऐसा घोडो ० को दौडाया कि वायुवेग समान वहा से चले(।) ० तिस समय व्याकुल हो जो जो दशरथ खडे हो[4] ० खडे हो सुमत्र को पुकारे तो तो वढो वढो कर रा(-) ० मचन्द्र की आज्ञा से अतिशीघ्र रथ को वह ले ० उडा तो क्या वालक क्या युवा क्या वृद्ध क्या ब्राह्म(-) ० ण आदि जितने विस नगर के लोग थे सो सव ० रघुवर के पीछे पीछे चल खडे भये यिह कहते हू(-) ० ऐ कि महाराज हमे भी साथ लिये चलो जव रा(-) ० मचन्द्र का रथ कुछ दूर निकल आया तव वि(-) ० न के मोह से निपट व्याकुल हो राजा दशरथ(-) ० रती पर गिर परे (,) निदान वडी वेर तक रो कलप ० सेवको से कहने लगे अव मुझे रामचन्द्र की ० मा के पास पहुचा दो(,) कुछ घडी वहा वचू तो व(-) ० चू फिर विसके उपरान्त विना राम को देषे मै व(-) ० चने का नही(,) ऐसे कह उन्होके[5] साथ हो कौश(-) ० ल्या के घर मे गये तो वहा ऐसे मूर्छित हूए जो ०[6] जो किसी के चेताये भी न चेते और वहा रामचन्द्र ० चले चले तमसा नाम नदी तीर जा उतरे(,) वहा ० आहार तज पानी ही पी सध्या समय ऐक वृक्ष ० तले सीता सहित जा चुपचाप सो रहै (,) तहा धनु(-) ०प वाण ले सुमत्र समेत लछुमण जी लगे चौकी ० देने ओ नगर के लोग सव भी ओही विन के ० निकट ही

---

१. ढग (चीर पहनने का)। २. बिलखकर, रोकर। ३ तूणीर, तरकस। ४. 'खड़े हो, खड़े हो', 'रुको, रुको'। ५ यह 'के' अनावश्यक है। ६ यह 'जो' अनावश्यक है।

आउत रे(,) इसलिये कि दशरथ के ० लाल जो फिरें तो फिरे न हम लोग भी इनके ० सग चल वसे(।) विन्हो की यह प्रतिज्ञा सुनकर० श्री रघुनाथ ने जी मे शोचा कि अव जो घर को० मै नही चलू तो ये सव निपट वहुत दुख पावेगे ० तिस्मे कुछ उपाय किया चाहिये कि जिस्से इ(-) ० न को कष्ट न होवे(।) इतने ही मे प्रभात होने पर ० आयी तव सारथी को राम ने बुलवाकर कहा ० कि सुमत्र अब चलने की वेला भयी(,) तुम शीघ्र ० रथ लादो सो सुन तुरत विसने घोडो को रथ मे ० जोता(,) विस पर रामलछुमण सीता तीनो चढ क(-) ० र पहले तो कुछ दूर अयोध्या के सामने पीछे ० को हट आये फिर वहा से घूमकर पेडो की ओ(-)० ट हो दण्डकारण्य को चले(,) विनके वहा से निक(-) ० लते ही प्रात काल हूआ जान साथी लोग हड(-)० वडा सव के सव उठे ओर रघुनाथ को न देषकर अ(-) ० ति निपट दुखित भये(,) निदान वाट मे पहिये का ० चीन्ह देष आपस मे ठहराया कि रामचन्द्र घर ० को फिर गये यिह निश्चय कर कुछ एक हर्षि(-) ० त हो अवधपुरी को फिर आये तो इस भाति ० उदास भये कि दिन रात सीताराम ही का ध्या(-) ० न लगे जी मे करने अरु वहा सुमत्र ने ऐसा ० रथ दौडाया कि वडे वडे देश देषते हूऐ श्री रा(-) ० मचन्द्र जी तुरत श्रृगवेरपुर के निकट गगा ० तीर जा पहुचे(,) तहा गाडी से उतर गगा को प्रणाम० किया अरु स्नान पूजा से सुचित हो किसी शीसो[1] ० के पेड तले जा डेरा लिया(,) तव राम का आगमन ० लोगो से गुह नाम केवट ने सुना तो सखाजान ० अति हर्षाय भक्तिवश हो मधु समान मीठे मी(-) ० ठे फल ओ अछे सुगन्ध फूल ले स्वामी को देष(-) ० ने के लिये घर से शीघ्र चला(,) जव समीप आन प(-) ० हुचा तव फल फूल आगे रष दण्डवत कर उ(-) ० नके चरणो पर जा गिर परा(,) देषते ही भक्तवत्स(-) ० ल रघुनाथ ने तुरत उठा के वुसको गरे लगा लि(-) या ओ कुशल क्षेम पूछ वडी आवभगति कर ० अपने निकट विठलाया(,) तव अवसर पा हाथ ० जोर गुह उन्हसे यह वचन कहने लगा(—)हे पति(-) ० त पावन कृपानिधान धन्य मेरा भाग्य है जो आ(-) ० प का दर्शन भया(,) तुम्हारे अग के स्पर्श से आ(-) ० ज मुझे वडा आनन्द हूआ(,) मै दास.हू(,) यह मेरा रा(-) ० ज्य आप ही का है तिस्से उचित है कि यहा ही रह ० कर हम लोगो को पा लिये(,) इस भाति बहुत अधी(-) ० नताई कर फिर धीवर वोला(—) महाराज अव चल ० के घर समेत मेरा नगर पवित्र कीजे ओ वडी श्र(-) ० द्धा से यह फूल फल ढूढ लाया हू दयाकर इसे ० लीजे(,) मै आपका किकर हू (,) इस प्रकार गुह की ० मधुर वाते सुन बहुत प्रसन्न हो श्रीरघुवीर क(-) ० हने लगे(—)सुनो मित्र तुम जो कहते हौ सो सव स(-) ० च है इसमे कुछ सन्देह नही(,) पर चौदह वर्ष न ० तो मै किसी के गाव घर मे जाऊगा न किसी का कु(-) ० छ फूल फल अन्न लूगा(,) तुम्हारा यह राज्य मे(-) ० रा ही है(,) तुम मेरे प्राण समान सखा हो(,) यो बुझा ० समझा गुह को सुचित कर विस्से वड का दू(-) ० ध मगा लछुमण सहित रामचन्द ने शिर मे ० जटा वनाके वाधी ओ सीता समेत जल ही ० पीकर कुश अरु पत्तो का विछोना विछाय ० अति सुख मान ऐसे शो रहे कि मानो अटा(-) ० री पर जानकी के सग अछे सुथरे पलग पै पौ ० ढे होए ओ आगे की भाति धनुष वाण लिये ० गुह के साथ लक्ष्मण जी

---

१. सीसम।

चारो ओर दृष्टि पसा(-) ० र लगे विन की रक्षा करने(।) इति श्रीरामच-(-) ०रित्रे अयोध्या काण्डे पचमोध्याय ५(।) इतने मे राम को नीन्द वश देष अति व्याकुल हो पछ(-) ० ता पछता धीवर लगा लछुमण से कहने(—)भैया देषते हो जो रघुनाथ वहुत सुन्दर भ(-) ० वन मे अछे सुथरे सुवर्ण के पलग पर सी(-) ० ता सहित सुख से शोते थे सो राजकुमार ० अव घास पात विछा कर जानकी समेत ० अनाथदीन से लेट रहे हैं(।) हा केकयी को वि ० धाता ने रामचन्दके दुख के कारण उपजाया ० जो विसने ऐसा पाप किया है (।) विन्होने उत्त(-) ० र दिया(——) सुनो मित्र(,) को किसके दुख सुख का निमि(-) ० त्त है(,) इनका हेतु अगले जनम की अपनी अपनी कमाई है(,) इस विन सुख दुख का देने ० वाला कोई दूसरा है यह समझना ही अज्ञा(-) ० नता है क्यूकि निज कर्म रूप डोरे मे आपसे आ(-) ० प प्राणी गुथ रहे है(,) इष्ट मित्र भाई वधु हितू ० वैरी उदासी आदि जितने है सो सव अपने भ(-) ०ले बुरे कर्म ही नाना सरूप हो निज वश मे रष ० प्राणी को भाति भाति के सुख दुख दिया कर ० ते हैं(,) यो समझ जब जैसा आपडे तव तैसा ० भोगिये इससे भोग विलास के होने जाने मे ० मुझे हर्ष शोक कुछ होता नही(,) मेरे लेखे दो(-) ० नो समान हैं (,) इसलिये कि कपाल मे विधाता ० ने जो लिखा सो यहा तक अटल है कि देवता ० ओ असुरो से भी मिटाये नही मिटता(,) मनुष्य ० किस गिणती मे है (।) इन्हको तो दिन रात की भा(-) ० ति सुख के वीते दुख अरु दुख के वीते सुख ल(-) ० गा ही रहता है तिस्से ज्ञानी लोग सम्पत विपत ० के होने मे कधी हर्ष विषाद नही करते वरन मा(-) ० या ही की सव करतूति विचार सदा आनन्द मे ० मगन रहते है (।) ० इस प्रकार से धीवर ओ लछुमण ० जी को आपस मे अनेक ज्ञान चर्चा करते कर(-) ० ते एक बारगी प्रभात हो गयी(।) तव श्री रामचन्द्र ० उठ वैठे ओ जल मगाय मुह हाथ धो आचम(-) ० न कर हरि का नाम ले रथ सहित सुमत्र को व(-) ० हा से अयोध्या को फेर सुचित हो गुह से कह ० ने लगे(—)सखा अव चलने की वेला हो चुकी(,) तुम ० शीघ्र एक अच्छी दृढ नाव हमे मगा दो जो सुख ० से गगा पार हम उतर जाए (,) यिह सुनते ही आ(-) ० प वह दौडा सो विन की ज्योग्य ही नाव ला निकट ० जा वोला(—)महाराज मै आपकी आज्ञा जोगा ला(-) ० या अब मिलकर चढिए तो जाति भाई समे[1] ० मै नाव को खेऊ(।) तव हर्षा कर श्री रघुनाथ ० ने पहले सीता को चढाया तिस पीछे गुह ० का हाथ पकड आप ओ शस्त्र लिये ल(-) ० क्ष्मण जी दोनो विस पर जा वैठे ओ भाइयो ० के साथ गुह लगा डाड खेवने(,) जव वीच मे नाव आ चु(-) ० की तव कर जोर जानकी ने वहुत वहुत प्रार्थना करी कि हे ० गगा देवी मै प्रणाम करती हू जो कुशल क्षेम से मै व(-) ० न से फीरूगी तो नाना सामग्री ले लछुमण ओ स्वा ० मी सहित अति आदरकर मन लगा तुझे पूजूगी(।) ० इतने ही मे नाव इस पार आय लगी ओ धीरे धीरे ० उस पर से सव उतरे तव हाथ जोर गुह ने राम से क(-) ० हा नाथ आज्ञा कीजे मै भी साथ चलू नही तो मै अ(-) ० पना प्राण दूगा रघुवर ने उत्तर दिया कि चौदह वर्ष ० दण्डकारण्य मे रह फिर मै आकर मिलूगा(,) तुम किसी ० वात का सदेह मत करो(,) राम कधी झूठ कहने का नही(,) ० ऐसे वुझा समुझाय मिल भेंट[2] वार वार

---

१. समेत। २ भेंट, मिलकर, आलिंगन कर।

आशा भरो(-) ० सा दे कर गुह को राम ने विदा किया तद रोता कलप(-) ० ता किसी किसी प्रकार से वह घर को चला आया औ ० राम विस दिन तीर ही पर वस गये तो वहा एक पवि(-) ० त्र मृग मार ला उसे पकाकर आधा तो आग मे होम कि(-) ० या अरु आधा सीता लछुमण समेत भोजन कर सु(-) ० चित हो साझ समय किसी वृक्ष तले जा निन्द वश[1] हो ० सुख से विस रात्रि को विताया (,) निदान होत सवेरे फि(-) ० र वहा से उठे (,) सोचले चले भरद्वाज मुनि के आश्रम प(-) ० र आ वाहर ही खडे हो गये(,) तहा एक विद्यार्थी को देष ० समीप वुलाकर कहने लगे कि ऋषि के पास जा हमारा स (-) ० देसा तुम जना दो कि जानकी लछुमण सहित राजा ० दशरथ के पुत्र द्वार पर आये है(,) शुनकर ओ ही वह ० दौडा सो निकट जा जो[2] भरद्वाज मुनि से कहा कि महा(-) ० राज स्त्री ओ भाई को सग लिये रामचन्द्र वाहर खडे ० है कि त्यो ही सव काम काज विसरा हडवडाकर तुर(-) ० त वे उठ खडे हूये ओ पूजा की वहूत सामग्री ले समीप ० विनजा विधि से[3] तीनो को पूज अति हर्षित कर यह वच (-) ० न कहने लगे(—) कृपानिधान वडा अनुग्रह किया आ(-) ० पके दर्शन से हम निपट कृतार्थ भये(,) अव चल के पा(-) ० व की धुर से मेरे आश्रम को पवित्र की जै (,) ऐसे कह स(-) ० व को भीतर ला भक्ति से वडा शिष्टाचार कर आस(-) ० न पर विठला फिर लगे विनती करने कि धर्मावतार आ(-) ० प के आगमन से आज हमारी सव तपस्या पूरण 'हो ० चूकी तुम घट घट वासी सव के ईशवर हो (,) माया फयला ० मानुष वने हो(,) व्रह्मा की आगे की[4] विनती से जिस लिये ० अवतार लिये हो ओ वन मे आ जो जो काज करोगे ० सो विस ज्ञान दृष्टि से सव हम जानते है जो तुम्हा(-) ० रे नाम जपने से हूई है[5] (।) अधिक कहा तक कहे(,) तुम मा(-) ० या से अलग आदि अविनाशी पुरुष हौ(,) आपको दे(-) ० षकर सव प्रकार हम सनाथ भये(।) ऋषि की इतनी ० वाते सुन वहुत नम्र हो रामचन्द्र वोले(—)आप वडे हौ(,) ० क्षत्रियो पर अनुग्रह करते हौ(,) इस भाति आपस ० मे वतरा ज्ञान चर्चा ही से सारी रात विता वडे तडके उ(-) ० ठ विदा हो सीता लक्ष्मण समेत श्री रघुवीर जमुना(-) ० तीर गये(,)तहा मुनि के शिष्यो की रची हुई वेडे पर चढ ० वुस नदी को पार हूए ओ भरद्वाज मुनि की वताई हू(-) ० ई वाट मे हो फिर चले(,) सो कुछ वेर मे चित्रकूट नाम प(-) ० हार पर अनेक ऋषिन से सेवित ओ वारहोमास फू(-) ० लने फलने वाले नाना वृक्षन से शोभित ऐसे वा (-) ० ल्मीक मुनि के अति सोहावन आश्रम पर आन ० पहुचे तहा ऋषि को देष शिर झुका जब राम ने प्रणा(-) ० म किया तव जानकी ओ लक्ष्मण को साथ लिये शिर(-) ० र मे अद्भुत जटा बाधे कन्दर्प्प हूते अधिक सुन्दर राम ० को देषते ही निपट चकित हो तुरन्त वाल्मीकि मुनि ० उठ खडे भये ओ उन्हे गरे लगा मील[6] भेट महाहर्षि(-) ० त हूए ओ आवभगति कर विधि से पूज सुन्दर आ(-) ० सन पर विन तीनो[7] विठलाया ओ मधुर मधुर फल ० ला भोजन कराया अरु ऐसा प्यार किया कि जिस ०

---

१. निद्रावश होकर,। २ ज्योही। ३ यहाँ 'विन' होगा। ४ पहले की गई। ५ हुई है, जो ज्ञान-दृष्टि मैंने प्राप्त की है। ६ मिलकर । ७ तीनो को।

का कुछ वर्णन ही[1] किया जाता (।) तव ऋषि को वहुत ० प्रसन्न देष हाथ जोर विनय कर रामचन्द्र ने कहा (—) म (-) ० हाराज पिता की आज्ञा निवाहने के लिये दडका (-) ० रण्य मे हम आचू के (,) यह जो ज्ञान दृष्टि से आप जान ० ते ही हौ तो अपने आगमन का कारण फिर क्या ० सुनावे (,) अव कृपा कर एक स्थान वता दीजिये तो सी (-) ० ता लछुमण सहित कुछ दिन सुख से वहा हम वसे (।) ० राम की इतनी वाते सुन मुस्कुरा कर वाल्मीकि जी ०ने उत्तर दिया (—) यो तो सकल जीव जन्तु को रहने ० का उत्तम भवन तो तुम ही हो ओ तुम्हा रहेगे केवे सव घर है पर जानकी सहित वसने का विशे (-) ० स जगह जो पूछते हो तो जो मनुष्य शान्त ओ सम (-) ० दर्शी हो (,) सव धर्माधर्म तज जी लगा तुमही को नि (-) ० त्य जपते है अरु अभिमान त्याग शान्त मन करन (-) ० तो किसी से प्रेम चाहते न विगार (,) सदा तुम्हारा नाम ० जप सुवर्ण मिट्टी को समान ही समझ सकल वस्तुन ० की आशा छोड एक तुमही मे मन लगा सव दिन स (-) ० तुष्ट रहते हैं ओ सव माया है यह विचार कधी कुछ ह (-) ० र्ष शोक नही करते वरन घट घट वासी चेतन रूप तुम ० को ज्ञान से देष ससार के चलन से अलग हो तुम्हारे ० नाम के कीर्त्तन ते सव पाप से छूट सुख दुख को तुल्य ० कर मानते है (,) तिस्से हे नाथ सीता सहित विसी स्था (-) ० न मे जा वसिये (।) तुम्हारे नाम की महिमा कहा तक ० कोई जान शके कि जिसके प्रभाव से मै व्रह्मर्षि हू (-) ० आ (।) इस भाति हस हस कहके फिर वाल्मीकि जी अ (-) ० पना पूर्व समाचार राम को लगे सुनावने कि आगे व (-) ० हुत दिवस तलक मै भीलो के सग रहा ओ उनही लो ० गो के साथ वडा भया (,) कहने को मेरा जनम व्राह्मण ० घर था पर सदा शूद्रो ही का आचार मै करता था ओ ० वुन ही के घर मे रहता (,) तहा कामवश हो शूद्र की स्त्री ० से अनेक पुत्र मैने उत्पन्न किये (,) विन के आहार के ० लिये जव और कुछ नही वन पडा तव चोरो वटमारो ० से मिल कर धनुष वाण ले यम समान निर्दयी हो दू (-) ० र दूर जा लगा मै लोगो को मारने (,) निदान एक वेर ते (-) ० ज मे ठीक सूर्य्य तुल्य मरीचि आदि सातो ऋषि अ (-) ० पनीनुचि से किसी सघन जगल मे हो कही को चले ० जाते थे (,) विन्ह की झोरी मात्रा लेने के निमित्त खडे ० हो खडे हो वुन को पुकारता हूआ[2] पीछे से मै दौडा (,) ज (-) ० द निकट जा पहुचा तद वे सव खडे हो गये ओ ० मुझे देखकर यह वात पूछने लगे (—) क्यू रे अधम किस ० कारण तू चला आता है (।) मे वोला कि जो अपना जी ० वचाया चाहते हो तो जो कुछ तुम्हारे पाह है सो इहा ० डाल दो (,) मेरी स्त्री ओ लडके बहुत भूषे है ( ) विन की ० रक्षा के हेतु परवत पर परवत वन वन मै फिरा फिरता ० हू (।) सुन कर ऋषियो ने उत्तर दिया कि अच्छा तू प (-) ० हले अपने घर जा अलग अलग सव वेगतिन[3] से ० पूछ आ कि जो जो पाप नित्य मै करता हू तिसके भा (-) ०गी तुम लोग हौ कै नही (।) तब तक हम सव निश्चय (-) ० हा ही रहेंगे अरु तभी तेरा कहा करेंगे (।)साधुन के मुह ० से इतने वचन के निकलते ही ओ ही मै फिरा तो जो कु (-) ० छ उन्होने कहा था सो गृह मे जा सवसे मैने पूछा पर ० कोई नही वोला कि हा मै तुम्हारे पाप का साथी हू औ (-) ० र भी कानो पर हाथ दे कहा कि तुम्हारा पाप तुमही को ०

---

१ नहीं। २ 'खड़े हो' खड़े हो,' इस तरह पुकारता हुआ। ३. व्यक्तियो से, कुटुम्बियो से।

रहे(,) हम सुख के भागी सदा हैं(,) सो सुन संसार से मै निप(-) ० ट उदास हूआ तव अपने पर वहुत धिक्कार माना मा(-) ० रे लाज के नीचे शीर कर किसी किसी प्रकार पुन विन ० दयालु सप्तषियो के पास मै आन पहुचा तो विन्हो ० के दर्शन से मेरा मन वहुत शुद्ध हो गया (,) तव धनुष ० वाण तज दण्डवत कर मै वुन के आगे जा गिर पडा ० ओ कहा कि महाराजो मेरा अपराध क्षमा करो अ(-) ०रु किसी प्रकार नरक से मुज को वचा लो(,) यो कह विन० के चरणोपर लगा मै लोटने तद उठाकर विन्होने मु(-) ० झे कहा कि जा तुजे सतसग फला अव कुछ ऐसा तु (-) ० झे मत्र वता देते है कि जिस्से सव पाप से छूट तू मुक्त ० हो जायेगा(।)यह सुना हेठ उपर मुझको निहार पहले ० तो चाहा कि यह वडा अधम है इसको दूर ही करना ० भला(,) हित वतावना उचित नही(,) निदान शरणाग(-) ० त जान दयावश हो ठहराया कि अव तो वचन हार चू(-) ० के तिस्से मुक्त होने का उपाय वता इसकी रक्षा ही की(-) ० या चाहिए(,) इस प्रकार वडी वेर तक आपस मे वतरा हे ० रामचन्द्र तुम्हारा उलटा नाम विन्हो मुजे वताया ओ क(-) ० हा इहा ही रहकर मन लगा मरा मरा नित्य तू जप(,)जव ० तक हम सव फिर आवे तव तलक इसी का जप तू कि(-) ० या कर ऐसे शिषा पढा वहुत आशा भरोसा दे ऋषि ० लोग तो जहा जाते थे तहा चले गये ओ मै वहा ही ए(-) ० क पेड तले जा वैठ कर लगा जप करने तो जपते जप(-) ० ते वाहर की सव मेरी सुधि भूल गयी ओ निपट स्था(-) ० वर समान मै हो गया(,) निदान वहुत वर्ष जब बीत चूके ० ओ दियको न[1] मेरे शरीर के उपर घर वनाया तव फि(-) ० रते फिरते सप्तर्षि लोग पुन वहा आन पहुचे ओ जै(-) ० से मुजको पुकारा कि वचा अब वाहर आओ तैसे ही ० महातेजस्वी हो विस टील्हे मे से ऐसा मै निकला कि ० मानो उदया-चल पहाड से सूर्य ही उदय लेवे(,) तव दे(-) ० षते ही वहुत प्रसन्न हो मुनियो ने मुज से कहा कि ० वल्मीकि ते निकल तुमने आज दूसर जनम पाया ० तिस कारण तुम्हारा नाम अव हमने बाल्मीकि मुनि र(-) ० ष्षा यो कह हर्षित हो वे लो[2] स्वर्ग को गये सो हे महाराज ० तुम्हारे नाम के प्रभाव से मै ऐसा भया(,) अव सीता लछु(-) ० मण समेत आपको साक्षात देष निसन्देह मै मुक्त हू(-) ० आ(,) चलिये वसने को एक जगह आपको वनवा दू(।)यो ० कह विन तीनो को आगे कर सब शिष्यो को साथ ले ग(-) ० गा ओ पर्वत के बीच मे जा पूरव पछिम मुख दो घर की ० एक अछी सुथरी शाला वाल्मीकि मुनि ने वनवा दी ० तिस मह एक मे तो लछुमण जी जा उतरे ओ दुसरे मा(-) ० ह जानकी साथ वस करके ऐसे रामचन्द्र हर्षित हूए ० कि जैसे इन्द्राणी सगलिये इन्द्र हर्षाये ओ नित ० नित जा वाल्मीकि ऋषि उन्हो की पूजा लगे करने (।) ० इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकाण्डे षष्टोध्याय ६(।) ० इहा तो यो हो रहा था ओ वहा सुमत्र जी अयोध्या ० मे सध्या समय जा पहुचे तो राम विन सारा नगर ही शू(-) ० न्य देष कपडे से मुह छिपा गढ के द्वार पर जा रोते ही र(-) ० थ से उतरे ओ विसे वहा ही छोड राजा को देषने के लिए(-) ० ये भीतर गये (।) जब समीप जा प्रणाम कर खडे भये तव ० व्याकुल हो राजा दशरथ ने पूछा(—)सुमत्र कहो राम लछु(-) ० मण सीता को तुम कहा छोड आये(,)

---

१. बीमकोने। २. लोग।

मुज पापी निर्दयी ० को विन ने क्या कहा सो सुनाओ (।) यो कह लगे बहुत वि(-) ० लाप करने कि हा राम हा गुण निधान हा सीता तुम दु(-) ० ख के सागर मे मुज को डूबते हुए तनिक भी न देषते हौ (।) ० इस प्रकार वडी वेर तक राजा के रोते कलपते देख क(-) ० र निदान हाथ जोड के मन्त्री वोला (—) महाराज रामलछु (-) ० मन सीता तीनो को रथ पर चढा यहा से शृगवेरपुर ० के निकट गगा तीर तक सग मैं गया (,) तहा गुह नाम के(-) ० वट ने कुछ फल ला आगे रष्षा पर रामचन्द्र ने प्रीति ० से छू दिये (,) लिये नही (,) ओ विस्से वड का दूध मगा शि(-) ० र मे जटा वन्धवा रात भर साथ रष्षा (,) होत सवेरे मुजसे ० कहा कि सुमत्र अव तुम यहा से फिरो (,) राजा से कहि(-) ० ओ मेरे लिये शोक न जी मे करे (,) अयोध्या से भी अ ० धिक सु ववन मे मुजको होगा ओ माता को भी ० निके[1]शिषाइओ कि जिस्से तनिक न मुजको जी ० मे लावे अरु राजा वृद्ध है तिस्से वुझा समझा ऐंसा ० विन को सुचित करे कि जिसमे वे आकुल नही होवे (।) ० इसी भाति निपट दुखित हो राम की ओर निहार आखो ० मे आसू भर नीचे शिर कर सीता भी गिडगिडा के वोली ० शासु शसुर से मेरा वहुत प्रणाम कहिओ (।) ऐंसे कह वि(-) ० लकते ही नाव पर चढ जव तक वे सव गगा पार हो गये ० तव तलक तो मैं वहा ही खडा था तिसके पीछे महा आ(-) ० तुर हो यहा फिर आया (।) इस प्रकार जव सुमत्र ने सुना(-) ० या तव रो रो कौशल्या लगी राजा से कहने कि अपनी ० प्राणप्यारी केकयी ही से जो आप वहुत प्रसन्न है तो ० विन्ही को सव राजपाट दे डालते पर मेरे पुत्र का क्या ० अपराध कि जिस्से देश निकाला दिया (,) सव करतू(-) ० ति आपही कर अव क्यू झूठमूठ रोते हौ (।) कौशल्या ० की इतनी बाते सुन राजा दशरथ ऐंसे दुखित भये ० कि जैसे घाव के ऊपर आग ही किसी ने रख दी होए (,) ० निदान शोक से आकुल हो रानी से कहने लगे कि ए(-) ० क तो आपे मेरा प्राण जाता है दूसरे तुम क्यू मुजे मा(-) ० रा चाहती है (,) इसमे मेरा कुछ दोस नही (,) आगे एक(-) ०ऋषिने मुज को श्राप दिया था तिसी का यह कर्म है सो ०समाचार ऐसा है कि जद मैं युवा था तद अहेर खेल(-) ० ने मे मुजे वडी श्रद्धा थी सो एक वेर आखेट के निमित्त ० धनुष वाण ले रात को जो मे निकला सो चला चला ए(-) ० क महावन मे नदी के तीर कही ओट मे जा छिप र(-) ० हा तहा आधी रात के समय तृषा से निपट पीडित हो ० ओ मारे प्यास के माता पिता को वहुत व्याकुल देष पा(-) ० नी लेने के लिये श्रवण मुनि आन पहुचे (,) जब लगे ज(-) ० ल भरने तव भभक भभक उसका शब्द सुन मैंने जा(-) ० ना कि कोई हाथी पानी पीता है (।) यो विचार धनुष पर ० रष एक ऐंसा वाण विसको मारा कि ओही वह लगा ० लोटने अरु पुकार पुकार कहने कि हा विधाता मैं तो ० किसी का वैरी न था (,) विन अपराध किस निर्दयी ने मु(-) ० झे मारा (,) इस वेरिया प्यास से आकुल हो माता पिता ० मेरी वाट निहारते होगे (।) इस प्रकार मानुष की वोली ० सुनते ही पहले तो मारे डर के मैं सुख गया फिर ढाढ(-) ० स कर धीरे धीरें निकट जा वुससे कहा (—) स्वामी मैं दश(-) ० रथ हू (,) अनजाने यह चूक मुजसे हूई है ऐंसे गिडगि(-) ० डा गिडगिडा कह निदान चरणो पर जा मैं गिर पडा त(-) ०

---

१. नीक ही, अच्छा ही।

द चेत कर ऋषि यह वचन वोल उठे (—)अरे राजा तू डर ० मत व्रह्म हत्या से वचा (,) मै जाति का वैश्य हू (,) लडकपण ० से तपस्या मे मै मगन था (,) मेरे पिता माता भूष प्यास से ० मरते होगे तिन्हो को तुरत जा पानी दे (,) इसी मे तेरा क (-) ० ल्याण है (,) नही तो जो वे ऋुद्ध होगे तो तुझे विन भस्म ० किये न छोडेगे तिस्से शीघ्र जा जल दे (,) अधीनता (-) ० ई कर अपना यह सव कर्म उन्हे जना आओ मे (-) ० री देह से इस वाण को निकाल ले (,) मारे पीडा के अव ० मै प्राण तजता हू (।) इतने कचन[1] के सुनते ही जो मैने ० शर खैच लिया है कि त्यो ही विन का प्राण निकल ग (-) ० या (,) निदान अछता पछता तुरत भर घडा पानी ले ० ओही मैं वहा दौडा कि जहा अन्धा अन्धीविसके ० पिता माता भूष प्यास से व्याकुल हो आपस मे यो व (-) ० तरा रहे थे कि अतलक[2] पुत्र जल नही लाया क्या का (-) ० रण है विस विन किस प्रकार हमारा निवाह होगा (,) जो ० कहिए कि हमे वृद्ध देष छोड भागा तो सो भी नही क (-) ० ह शकने क्यूकि हम विन उसको कधी कल नही प (-) ० डती (,) इसी चिन्ता मे मेरे पाव की धुनि सुन वुस का पि (-) ० ता लगा कहने कि वेटा क्यू वडा विलम्ब किया (,) आओ ० पानी दो (,) तुम्भी सुचित हो पीओ (,) इतने ही मे डरता ० कापता किसी किसी प्रकार समीप मै जा पहुचा ओ विनके चरणो पर विनय कर यह वात मै लगा कहने (—) ० महाराज मै तुम्हारा पुत्र नही अयोध्या का महा पा (-) ० पी राजा दशरथ हू मृगो का अहेर खेलने के लिये आ (-) ० ज रात को घर से जो मै निकला सो एक नदी तीर निरा (-) ० ले मे जा वैठ रहा (,) तहा पानी भभक भभक शव्द ० सुन जो मैने एक वाण चलाया तो ही वहा से यही धु (-) ० नि सुनने मे आयी की हा अव मरे (,) तव भय से घवरा ० निकट जा देषा तो मुनि का वालक अचेत हो लोट (-) ० ता है (,) निदान पाव पड जद मै लगा विनती करने तद ० वे वोले कि डरो मत व्रह्म हत्या तुझे नही होगी पर ० जो अपना जी वचाया चाहते हो तो मेरे पिता माता ० को शीघ्र-जा जल पिलाओ अरु निज अपराध क्ष (-) ० मा कराओ (,) ऐसे कह आपके पुत्र तो वैकुण्ठ धाम ० को पहुचे (,) सो कृपा निधान अव तो यह अपराध० मुज से हो चूका (,) अव शरणा-गत जान जिसमे मे (-) ० री रक्षा हो सो आप कीजे (।) इतने वचन के सुनते ही ० वहुत रो कलप अन्धा अन्धी ने कहा कि रे अधम जहाँ ० हमारा पुत्र पडा है तहा शीघ्र हमे ले चल (।) यह सुन विन ० के सुत के पास जद मैने विन दोनो को पहुचा दिया तद हाथ से ० टटोल वाल[3] को छाती लगाय वहुत विलाप कर मुज ० से कह तुरत चिता रचाय आग लगा मृतक समेत भ (-) ० स्म होवे दोनो स्वर्गलोक को गये (,) तिनमे वुढे ने मर (-) ० ण समय मुजको श्राप दिया कि जाओ पुत्र के शोक ० से इसी प्रकार तुम्भी एक दिन मरोगे (,) सो हे रानी वि (-) ० सी शाप का काल यह आन पहुचा (,) किसी से मिटा (-) ० ये न मिटेगा (।) ऐसे स्त्री को समझा शोक से निपट आ (-) ० कुल हो हा राम हा लछुमण हा सीता केकयी के दि (-) ० ये हूए तुम्हारे वियोग से अव मै मरता हू यो कहते ० ही प्राण त्याग राजा दशरथ अमरपुर को गये (।) तव ० कौशल्या आदि

---

१. 'वचन' होना चाहिए। २. 'अब' होना चाहिए। ३ बालक।

जितनी स्त्रिया थी सो छाती पी (-) ० टपीट सव लगी रोने (।) इतने मे प्रभात हो गयी तद म (-) ० त्रिन समेत वशिष्ट मुनि तहा आन पहुचे तो भ (-) ० ली भाति से रानियो को वुझा समझा राजा को तै (-) ० लद्रोणी मे रष दूतो को वुला कर यह वचन करने ल (-) ० गे कि तुम लोग वेग चलनहार घोडो पर चढ युवाजित ० के नगर जा शत्रुघ्न समेत भरत को वहा से तुरत वुला ला (-) ० ओ (—)यो कह के कि गुरु की आज्ञा से अयोध्या चल राजा ० ओ केकयी का दर्शन आपकी जे (।) इतने वचन सुनते ही "घोडो पर चढ ० ओ ही वे उडे सो चले चले युवाजित के पास जा प्रणाम क (-) ० र भरत शत्रुघ्न से कहा कि महाराज वसिष्ट मुनि ने तु (-) ० म को तुरत बुलाया है तिस्से हमारे साथ अभी आप ० प्रस्थान करिये (,) इसमे विलम्ब करना उचित नही (।) इ (-) ० स भाति घर का सदेशा सुनते ही मारे डर से वहुत ० घवरा भरत लगे शोचने कि हो न हो राजा ओ राम ० चन्द्र पर कुछ भारी सकट है नही तो काहे को इतना ० शीघ्र वुलाते निदान सवसे मिल भेट दूतन सग दो (-) ० नो भाई वहा से विदा भये (।) जव अयोध्या मे आन ० पहुँचे तव नगर को महा उदास अरु उत्सव वि (-) ० हीन देष ओ जो लोग आनन्द मदमात इकठे हो ० नाना विहार आगे करते थे तिन्हो को अति उद्वि (-) ० ग्न लष शोभा रहित राज मन्दिर मे जा देषे तो आ (-) ० सन पर केकयी वैठी है (,) तद चरण छू शिर झूका ० प्रणाम कर विन के पास जा खडे भये (।) देषती ही प्रेम ० वश हो वहुत हर्षा भरत को विन्हने अक मे लगा लि (-) ० या ओ वार वार मुह चूम निकट विठला लगी नैहरे का स (-) ० माचार पूछने कि कहो पुत्र मेरे पिता माता भाई वधु ० सव भले चगे है (,) ओ किस लिये इतने दिन वहा रहे (,) तुम्हा (-) ० रे विन मेरा जी बहुत अकुला रहा था था (,) अव भाग से तु (-) ० मको कुशल देष मुजे वडा आनन्द हूआ (,) तद आ (-) ० तुर हो भरत वोले (—) हा वे लोग सव अछे है (,) तुम कहो ह (-) ० मारे पिता कहा है ओ यहा एकेली तुम क्यू बैठी हो (,) ० तुम्हारे विन तो वे कधी एकान्त मे न र ते[1] थे (,) क्या कार (-) ० ण जो आज विन्हे देषते नही (,) वताओ किस जगह ० मे है (,) उनको देषे विन वहुत दुख ओ भय हमको हो (-) ० ता है (।) केकयी ने उत्तर दिया (—) वेटा अव घवराने से कु (-) ० छ होने का नही (,) तुम्हारे पिता विस वैकुण्ठ धाम को ० गये कि जहा अश्वमेध आदि यज्ञ करनहारे ध (-) ० र्मात्मा लोग जाते है (।) माता की इतनी वाते सुन भर (-) ० त पृथ्वी पर गिर पडे ओ हा हा कर रो रो कहने लने लगे (—) हा ० पिता दुख के सागर मे मुझे डाल ओ विन रामचन्द्र को ० हाथ धराये कहा आप सिधारे अव आपकी भाति ० को मेरी रक्षा करेगा ओ हित अनहित समझावेगा (।) ० इस भाति शिषा छितरा शिर पीट पीट सुत को कलप (-) ० ते देष केकयी ने उठा विठलाया ओ अचले से विसकी आ (-) ० खे पोछ वहुत आशा भरोसा दे यह वात कहने लगी (—) पु (-) ० त्र किस लिये तुम इतना आतुर होते हो (,) मैने तुम्हारा ० सव काज सवार रष्षा है (,) तुम किसी बात की चिन्ता म (-) ० त करो (।) भरत ने पूछा कि मरण समय पिता ने क्या क (-) ० हा सो मुजको सुनाओ (,) निडर होकर वह वोली कि हा ० राम हा सीता हा लछुमण यही वार वार कह वहुत ० विलाप कर

---

१. 'रहते' होना चाहिए।

देह तज स्वर्ग को गये तव भैंचक[1] होकर ० भरत ने फिर पूछा(—)क्या राम लक्ष्मण सीता ये सव घ(-) ० र छोड कही वाहर गये हैं(।) ० केकयी वोली(—) राम को राज्य ० देने के निमित्त तुम्हारे पिता ने वडी ओतावली की ० तद तुमको राज्य होने के लिये विस काय[2] मे मैंने विघ्न डा(-) ० ल दिया(,) तिसका कारण यह है कि पृथ्वी पति ने आगे ० मुज को दो वर देने कहा थे सो अव मैंने मागे कि विन ० मे से एक से तो भरत को राज्य अरु दूसरे से रामचन्द्र को व(-) ० नवास होवे(,) इस्से सत्यवादी राजा ने तुमही को राज्य दे र(-) ० घुनाथ को वन भेजा(,) तिनकी सेवा के हेतु सीता भी ० साथ गयी ओ अपनी प्रीति देषावने के अर्थ लक्ष्म(-) ० ण विन के सग हो लिये (,) जद वन मे सव जा चूके तव वि(-) ० न्हो की चिन्ता से निपट व्याकुल हो हा राम हा राम कह ० राजा स्वर्ग लोक को गये(।) इस प्रकार माता की वाते सु ० न मूर्च्छित हो धरती पर ऐंसे भरत गिर पडे कि मानो व(-) ० ज्र का मारा हूआ पेड(।) तद पुत्र को अचेन देष अति दु(-) ० ख पा फिर कैंकेयी ने कहा(—)वेटा एत्ता वडा राज्य पा के ० शोक क्यू करते हो(,) अव तुम्हे क्या दुख है जो इतना घव(-) ० राते हो(,) तव कुछ एक चेत कर कोप से लाल हो भरत ० वोले(—)रे हत्यारिन स्वामी को वध तू मेरी हितू कहाया ० चाहती है(,) तुझसे तो वातचित करना उचित नही(,) तेरे ० गर्भ से उत्पन्न हो मैं भी आज कलकी हूआ(,) अव ० आग मे जल कै विष खा कर निज प्राण मैं तजू(-) ० गा तू भी इस पाप से अवश्य नरक पडेगी (।) इस प्रकार ० माता को वहुत डाट डपट वहा से उठ कौशल्या के पा(-) ० स जव गये तव भरत को देष गला षोल कर लगी व(-) ० ह पुकार पुकार रोने ओ विन के पाव पड वे भी लगे वि ० लाप करने(।) तव भरत को अग लगा कौशल्या ने क(-) ० हा(—) पुत्र तुम्हारे पीछे जो कुछ करतूति केकयी ने ० की है सो तो विन ही से तुमने सुना होगा मैं अधिक ० क्या कहू (,) मुजे दुख के सागर मे डाल स्त्री भाई समेत ० चीर वस्त्र पहन जटा वान्ध देश निकाला ले रामच(-) ० द्र वनवासी भये(।) ऐंसे कह फिर लगी रोने कि हे राम ० हे रघुनाथ पूरण व्रह्म होकर तुमने मुज मे अवता(-) ० र लिया तो भी दु ख ने मेरा पीछा नही छोडा(,) विधाता ० तुम वडे प्रवल हो(।) इस भाति मोह से अति व्याकुल ० हो वार वार कलपती हूई कौशल्या को देष पाव प(-) ० कड भरत लगे कहने(—)सुनो माता राम को राज्य हो(-) ० ने मे कैंकेयी ने जो कर्म किया है सो कै विस आदि ० और कुछ जो मैं जानता हू अथवा विस को मैं ल(-) ० गा दिया हू[3] तो सैंकरो व्रह्म हत्या का पाप मुझको ० होवे(,) वरन अरुन्धती सहित वशिष्ट मुनि को ख(-) ० ड्ग से मारने का पातक लगे(।) इस प्रकार कठिन श(-) ० पथ खा जव भरत का गला भर आया तव छाती ० मे वुसे लगा कौशल्या ने कहा(—)पुत्र तुम मत घ(-)० वराओ मैं तुम्हे भले जानती हू इसमे तुम्हारा कु(-) ० छ दोस नही(।) इतने मे भरत का अगमन सुन म(-) ० त्रीन सहित वसिष्ट मुनि वहा आन पहुचे ओ भ(-) ० रत को रोते देष आदर साथ लगे वुसे समझाव(-) ० ने कि राजा दशरथ सत्यवादी ओ ज्ञानी थे

---

१ भौंचक। २. 'काज' ('य' को 'ज' पढ़ना चाहिए)। ३. उसे या उस आदि के बारे में अगर मैं जानता हूँ, या उसके संबध में मैंने कुछ किया है।

इस ० लोक का उत्तम उत्तम सव सुख भोग वृद्ध हो अ(-) ० श्वमेध आदि यज्ञ कर वहुत दान दक्षिणा दे पूर(-) ० ण व्रह्म रामचन्द्र को सुत पा अन्त समय स्वर्ग मे ० जा इन्द्र का आधा आसन वुन्होने पाया(,) तुम वृथा ० शोक करते हो (,) वे तो मुक्त हो गये ओ जिस जीव ० के लिये इतना कलपते हो तिसका तो कधी ज(-) ० नम मरन नही होता(,) यह शरीर ही वार वार उप(-) ० ज नष्ट हो जाता है (।) यह समझ वहुत मोह करना ० तुम्हे नहीं चाहिऐ क्यूकि पिता कै पुत्र आदि जो ० कोई मरता है तो छाती पीट पीट मूरख सव वहुत ० रोते है ओ ज्ञानियो का जो पूछो तो ससार मे उ(-) ० दास हो निपट सुख से रहते है(।) यह विचार करके ० कि जैसे इस लोक मे प्राणी जनमता है तैसे ही ० विसके साथ मृत्यु भी हो लेती है तिस्से किसी प्र ० कार मरण से प्राणी का चाव[1] होने का नही(,) यो शोच स(-) ० मझ चित्त को तनिक मत व्याकुल करो(,) देखो को(-) ० टिन व्रह्माण्ड नष्ट हो गये(,) सागर सव शुख जाते ० हैं(,) क्षण समान इस जीवन मे कहो किस का ठहरा(-) ० व है ओ पीपल के पत्ते की फुनगी पर लटका हूआ ० पानी की वुन्द सा टपकनहार इस आउर्वल[2] का ० कैसे विश्वास करते हो(।) ऐसे कह फिर वशिष्ट मुनि ० वोले(——)जैसे पुराण कपडा तज नया वस्त्र पहरते ० है वैसी ही इस शरीर की चाल है(,) यह विचार तुम ० वृथा शोक करते हो क्यूकि चेतन ओ आनन्द स(-) रुप यह आत्मा न तो कभी मरता न जनमता है ० और न वढता न घटता(,) सदा जो का तो ही रहता है(।) कधी इसकी हानि नही होती(,) तिस्से आत्मा ० को अविनाशी जान मोह त्याग तैलद्रोणी से पि(-) ० ता को निकाल मत्रिन को साथ ले जो कुछ उन्ह (-) ० की उचित क्रिया चाहिए सो करो(।) इस प्रकार जब ० गुरु ने वहुत प्रवोधा तव सब मोहतज मत्रिन ओ ० भाईन को सग ले विधि से भरत ने पिता को दाह ० दिया (,) जव इगान्हवा दिन आन पहुचा तव भली ० भाति से काम काय[3] कर वेद के पढन हार सहस्त्र (-) ० न व्राह्मणो को आदर कर जे माया अरु पिता के ० निमित्त वहुत धन(,) अनेक गौ(,) सहस्त्र गाव अन(-) ० गणित रत्न द्विजन को दान दिया(,)जव कि विस का(-) ० यं से सुचित भये तव वशिष्ट भाई अरुमत्रिन के ० साथ हो निज घर मे आ रामचन्द्र विन निपट उदा[4] ० हो भरत सव से यह वचन कहने लगे कि सीता० लक्ष्मण सहित राम के वन गये पर राक्षसिनी स (-) ० मान इस केकयी को देष मेरा सारा आग जल उ(-) ० ठता है ओ यह राज्य पाट तनिक नही मुजको ० भावता है(,) इस्से अभी वन मे जा जानकी सहित ० श्री रघुनाथ की सेवा मै करूगा(,) यहा रहने से मुझे ० कोई नही वषा नेगा(।) इति श्रीरामचरित्रे अयो(-) ० ध्याकाण्डे सप्तमोध्याय ७ (।) इतने वचन के सु(-) ० नते ही जितने नगर के वडे वडे लोग और मुनि म(-) ० त्री सव वहा थे तिन के साथ हो वाह पकड वसिष्ट ० ने तुरत भरत को उठा लिया अरु राजसभा मे ले ० जा आसन पर वैठा विसदेश ओ समय का उचित ० यह वचन कहने लगे(——)हे पुत्र दशरथ की आज्ञा से ० अव मै तुम्हे

---

१ 'बचांव' यहाँ पढ़ें। २ आयुर्बल। ३. काज ('य' को 'ज' की तरह पढ़ना चाहिए)। ४ उदास।

राज्य का तिलक देता हू क्यूकि तुम्हारे ० लिये केकयी ने जद राजा से वर मागा तद प्रतिज्ञा ० कर तुम ही को वे राज्य दे गये है(,) इस्से ऋषिन समेत ० वेद के विधि से मैं तिलक देता हू(।) भरत ने उत्तर दिया(—) ० महाराज मुजको इस्से क्या काम(,) महाराजाधिरा(-) ० ज रामचन्द्र हैं मै तो विन क[1] दास हू(,) होत सवेरे राम ० को लाने के लिये मै वन जाऊगा(,) एक केकयी राक्ष(-) ० सिनी विन सव रानिवास समेत तुम सव भी मेरे सा (-) ० थ चलो(।) क्या करू स्वामी का वध करनहारी केकयी ० को तो अभी मैं जीव से मार डालता परस्त्रीघात क(-) ० रन हार मुजे जान रामचन्द्र मेरा आदर नही करेगे(।) ० यो कह फिर बोले कि तुम लोग चलो तो चलो नही तो ० शत्रुघ्न समेत वडे तडके मै दण्डकारण्य को जाऊगा (,) ० जिस प्रकार से रामचन्द्र वन को गये वैसे ही चीर व(-) ० स्त्र पहन फल मूल आहार कर जटाधारी मै हूगा ओ ० जवतलक रामचन्द्र नही फिरेगे तव तक शत्रुघ्न सहि(-) ० त वहा पृथ्वी ही पर शोऊगा(।) इस भाति प्रतिज्ञा कर ० जव भरत चुप भये तव धन्य धन्य कर हर्षित हो स(-) ० वो ने विनकी वहुत वडाई करी(,) निदान होत प्रभा(-) ० त जव भरत चल खडे भये तव हाथी घोडे सहित ० सव सेना ओ कौशल्या आदि सकल रनिवास व(-) ० शिष्ट आदि व्राह्मण जितने थे सो सव सुमत्र की ० आज्ञा पा भरत को वीच मे कर ऐसे वहा से चले जो ० पृथ्वी को छा लिया(,) जद शृगवेरपुर के निकट ग(-) ० गा तीर जा शत्रुघ्न की आज्ञा पा डेरा डाल दिया तव व(-) ० डी धूमधाम से भरत का गमन[2] सुन गुह के जी मे ० सन्देह हूआ कि इतनी वडी सेना साथ लिये भर(-) ० त आया है तो हो न हो राम को एकेला जान मारने ० को चला है(,) तिस्से पहले तो चल कर इसे देषे जो तो[3] ० जी का सीधा होवेगा तव तो गगा उतरने पावेगा न(-) ० ही तो अपने जात भाईयो को कह देगे कि जितनी ० नावे है तिन्होको षैच ले जा अवघट लगा दो ओ ० सव शस्त्र वाधे चहु दिश निहारते रहो भरता का को(-) ० इ लोग विनके निकट न आने पावे ऐसे शोच सम(-) ० झ सव से एक मत हो वहुत भेट की सामग्री ले ओ ० शस्त्रधारी अनेक जात भाइयो को आगे कर नि(-) ० ज घर से निकला तो धीरे धीरे समीप जा शत्रुघ्न ० ओ मत्रीन समेत वैठे हूए भरत के आगे भेट रष दि(-) ० या अरु जटा मुकुट धरे चीरवस्त्र पहने ओ राम ० ही की चिता मे मगन अरु राम ही को वार वार रट(-) ० ते हूए विनको देष कर बहुत सन्तुष्ट हूआ ओ शि(-) ० र झुका वुन्हे प्रणाम किया ओ कहा(—)महाराज मेरा ० नाम गुह है आपसे मीलने को मै आया(,) इतने व(-) ० चन के सुनते ही भरत तुरत उठ खडे भये ओ वडी ० आव भगति कर गुह को गरे लगा लिया ओ राम ० का सखा जान कुशलक्षेम पूछे यह वचन वुस से कह ० ने लगे(—)ऐ भैया रामचन्द्र के साथ तुम ही यहा रहे थे(,) ० धन्य तुम्हारा भाग है कि जिससे प्रसन्न होकर करु(-) ० णा भरी आषन से निरषकर श्रीरघुनाथ ने वातची(-) ० त की(,) इस भाति वहुत वडाई कर फिर पूछने लगे(—)मि(-) ० त्र जहा सीता लक्ष्मण समेत रामचन्द्र को तुमने दे(-) ० षा ओ जानकी सहित जहाँ वे सोये थे विस जगह ० को चल कर मुजे देषा दो(,) श्री रघुनाथ के तुम सेवक ० ओ वडे मित्र हो (,) तुम्हारे भाग का कहा तक वषान ०

---

१ विनका। २. आगमन। ३. यदि।

करू(।) इस प्रकार राम को सुमर सुमर रो रो कह करके ० गुह के साथ हो भरत चले तो जहा कुश विछा के रा(-) ० मचन्द्र रात को सोए थे ओ जो सीता के गहनो के उ(-) ० खडे हूऐ चिन्हो से अति शोहावन हो रहा था विस ० स्थान को देष के जी मे निपट दुख पा विलषा विल(-)० षा कहने लगे कि देषो जो राजा जनक की वडी सुकु(-) ० मारी लडकी सुथरी सी अटारी मे रत्न के पलग पै अ(-) ० ति कोमल विछोने पर राम समेत सुख से सोती थी ० सो इन कुशो पर पति सहित क्यू कर पौढी होगी(,) ० हा धिक् है मुज को केकयी को कोष मेरा जनम ० हूअ नही तो काहे को वुन्हे इतना दु ख होता अ(-) ० हो लक्ष्मण का जीवन जन्म सुफल हो चूका० क्यूकि हर्षित हो वन मे भी जा सदा राम की सेवा ० टहल करते है इसी प्रकार जोतो राम के दास का दास मै हूगा तो मेरा भी जनम सुफल होगा(।) ० ऐंसे कह फिर वोले(——)भैया जो तुम जानते हो तो मु(-) ० झे वताओ जहा रामचन्द्र है तहा जा हठ से मै वि (-) ० न्हे लाऊगा(।) यह सुन भरत को निपट सीधा जान ० नेह कर गुह लगा कहने(——)धर्मावतार तुम धन्य० हो कि जिसे सीता लछुमण समेत श्रीरघुनायक ० मे ऐंसी प्रीति है(।) मै तो कभी नही वतवता पर देषता हू ० कि तुम्हारे जी मे कुछ छलछिद्रम नही है इस्से ० सुनो(,) प्रसन्न होकर अव वता वता हू कि चित्रकू(-) ० ट के निकट गगातीर मुनिन के आश्रम मे स्त्री० भाई समेत सुख से महा राज विराजते है(,)चलो गगा ० उत्तर मै भी तुम्हारे साथ चलता हू(,) यो कह पाच शौ ० नावे मगा पहले सव सैन्य को गुह ने नदी पार क(-)० राया तिसके पीछे एक पर केकयी आदि रानियो० को ओ दूसरी नाव पर भरत शत्रुघ्न को ओ व (-) ० शिष्ट सहित कौशल्या को चढा आपही नाव ० खेवकर गगा पार हूआ(।) जव कि मिलजुल के व(-) ० हा से सव चले ओ भरद्वाज मुनि के आश्रम के ० समीप जा पहुचे तव सेना दूर ही रष भाई को सा(-) ० थ ले मुनि के पास भरत गये ओ तेज मे अग्नि ० समान उनको देष के साष्टाग दडवत किया त(-) ० व राजा दशरथ के पुत्र जान वहुत प्यार कर ऋ(-)० षि ने उनका वडा आदर किया ओ कुशल क्षे(-) ० म पूछा(।) जब शिर मे जटाओ छिलके का लगो(-) ० ट देषा तव चकित होकर लगे कहने(——, ऐ भरत ० राजकाज मे रहके यह क्या वेष वनाये हो औ मु(-) ० निन से सेवित इस महावन मे किस लिये तुम आ ० ये(।) भरद्वाज की इतनी वाते सुन निपट विलषा ० कर वे वोले(——)महाराज आप सव के मन की वाते ० जानते हो तो भी पूछते हो तो हम लोगो पर दया ० करते हो(।) देषिये आपके चरणो का शपथ खा(-) ० ता हू कि जो राम को राज्य होने मे ओ विन को वन भे(-) ० जने मे जो कर्म केकयी ने किया है सो जो मेरे जा(-) ० नने मे हूआ होऐ(।) राम के रहते हूए मुझे राज्य से ० क्या काम(।) मै तो विनका दास हू(,)इस्से पास जा पा(-) ० व पड सव राज्य का भार उन ही को दूगा ओ वसिष्ट ० आदि नगर के लोगो समेत हट[१] से विनको मै अ(-) ० योध्या फेर लाऊगा अरु दास की भाति आप मै ० विनकी सेवा टहल करूगा(।) इस प्रकार भरत की ० वातें सुन भरद्वाज मुनि वहुत प्रसन्न हूऐ ओ वु(-) ० नका मुह चूम वडाई कर कहने लगे (——)भरत यह तो ० ज्ञानदृष्टि से आगे ही मैने जान लिया (,) तुम क्यू ० घबराते हो(,)

---

१. हठ।

तुम तो लछुमण से भी अधिक राम ० के भक्त हो(।) ऐसे वहुत वुझा समझा ठढा कर पु(-) ० नि वोले कि आज तुमको यहा रष्षा चाहता हू ० सव सैन्य समेत मेरे ह्या भोजन कर लो फिर होत ० सवेरे राम के पास जाइओ(।) जब भरत ने इस बात ० को माना तव भरद्वाज ऋषि अपने होम के घर मे ० जा बैठे ओ आचमन कर मौन साध ज्यो काम धे(-) ० नु गौ का ध्यान किया त्यो ही सव सामग्री वर्षावन(-) ० हारी तुरत ऋषि के आगे वह आ प्रगट भयी ओ ० सेना सहित भरत को इछा भोजन कराने के ० लिये खाने पीने की अनुठी अनुठी जोजो वस्तु ० ऋषि चाहते थे सो सव एक पलक मे इतनी सृज ० दी कि जिससे वे सव नाको नाक भर जावे(।) तव ० तो हर्षा कर घर से वाहर हो विधि से पूज पहले भर(-) ० द्वाज ने वशिष्ट मुनि को अमृत पदारथ भोजन ० कराया तिसके पीछे सेनासमेत भरत को अति ० सतुष्ट किया(।) इस भाति स्वर्ग समान विस आश्र(-) ० म मे भोजन कर एक दिन रह वडे तडके ऋषि को प्रणाम क(-) ० र विनकी आज्ञा पा सव समेत विदा हो राम के पा ० स भरत चले(।) जद त्रि[1] चित्रकूट पहार के निकट आ ० न पहुचे तद सेना दूर ही रष शत्रुघ्न मत्री ओ गुह ० को साथ ले राम के दर्शन करने के लिये धीरें धी(-) ० रे समीप जा तपस्वीन की वडी भीर भार देष के ख(-) ० डे हो गए ओ राम का घर नही पाकर के सव से लगे ० पूछने कि महाराज जो सीता लक्ष्मण समेत श्री ० रघुनाथ जी यहा किस जगह मे रहते है दया कर हमे ० वता दो(।) विन्होने कहा(—) इसी पहाड के उत्तर दिश श्री ० रामचन्द्र का देषो वही स्थान है जहा कटहल कद (-) ० म्व ताल केला चपा कचनार आम ओ अशोक ० के फूले फले सुन्दर सुन्दर अनेक गाछ दृष्ट आते ० है(।) इस भाति जव ऋषियो ने वताया तव देष कर ० भरत वहुत हर्षाने ओ भाई मत्रीन को साथ लि(-) ० ये उस भवन के ओर चले कि जहा ऊची सी डाढ प(-) ० र श्री रामचन्द्र के कपडे सुखाते थे ओ कोकि(-) ० ल कपोत कीर आदि अनेक पछी सव वोल र(-) ० हे थे(।) इति श्री रामचरित्रे अयोध्याकाडे अष्ट(-) ० मोध्याय ८(।) जव घर के पास जा पहुचे तव सी(-) ० ताराम के अतिपत्र[2] ओ सुन्दर चरणो के वज्र ० अकुश ध्वजा के सव ठाव उषडे हूए विन्हो को देष कर[3] लगे वहा की धूर का वन्दना करने ओ नि(-) ० पटहर्षित हो कहने कि अहो जिन्हे शिव व्रह्मा(-) ० दिक सदा ढ़ूढते है तिन धूर को शिर चढा अव ० हम निहाल भए(,) कहा तक अपने भाग का व(-) ० र्णन करे(।) इस भाति अति अद्भुत नेहजी मे उप(-) ० जा मारे आनन्द के रोते हूए धीरे धीरे रामचन्द्र ० के पास भरत जा पहुचे ओ जटामुकुट धरे ची(-) ० र वस्त्र पहने श्याम शरीर प्रसन्न मूरति विन ० को (,) जो हस हस कर सीता जी से वातचीत कर र(-) ० हे थे ओ लछुमण जी जिन के पाव दावते थे(,) देष ० ते ही अति हर्षित हो चररणो[4] पड गिड पडे तव ० भैचक होकर श्रीरामचन्द्र उठ वैठे ओ वाह प(-') ० सार भाई को गरे लगा मोहवस हो ऐसे लगे रो(-) ० ने कि सारी आग भिं[5] गयी(।) इतने मे जैसे प्यासी ० हूई गाये पानी को धावे वैसे ही श्री रघुवर को ० देषने के लिये

---

१. 'त्र' अनावश्यक है। २. पवित्र। ३. राम-सीता के वज्र-अकुश-ध्वज आदि चिह्नों को भूमि पर अकित देखकर। ४. चरणो। ५. भींग।

भि गयी (।) इतने मे जैसे प्यासी ० हूई गाये पानी को धावे वैसे ही श्री रघुवर को ० देषने के लिये आतुर हो कौशल्या आदि सब ० रानिवास आन पहुची तद मा को देषते ही रघु (-) ० नायक तुरत उठ खडे भये ओ चरण छूकर वु (-) ० न्हे प्रणाम किया तव पुत्र को छाती लगा गला ०षोल के वे लगी वहुत रोने (।) इसी प्रकार के कयी आ (-) ० दि जननी को जो राम ने प्रणाम किया तो ही सव समेत ० वसिष्ट मुनि आन पहुचे तो मगन हो दण्डवत ० कर पहले विनको आसन पर राम ने विठलाया (।) ० तिसके पीछे जो जिस जोग्य था विसे वैसा ही ० वैठने को आसन दे सुचित कर पुन वसिष्ट के ० पास जा पूछने लगे (—) महाराज कहिए हमारे पिता ० को कुशल है (,) चलने की वेरिया दुखित हो क्या आ (-) ० पसो वुन्होने मुझे कहा (।) वोले (—) तुम्हारे वियोग से ० अति व्याकुल हो हा राम हा लछुमण हा सीता ० यो वार वार कह देह त्याग स्वर्गधाम को गये (।) इतने ० वचन के सुनते ही हाहा कर लक्ष्मण सहित रामच (-) ० न्द्र लगे पृथ्वी पर लोटने (।) ० तद दोनो भाई को आकुल ० देषकर रानीन समेत जितने लोग थे सो सव रोने ० पीटने लगे ओ सीता समेत लछुमण यह वचन क (-) ० हने (—) हा पिता हमे अनाथ कर आप कहा सि सिधारे (,) ० अव को हमको प्यार करेगा ओ भला बुरा वता (-) ० वेगा (।) यिस भाति आतुर देष ज्ञान की अनेक वातें ० कह निदान वशिष्ट ने सव को शान्त किया ओ मोह ० मिटाया तव मिल युल[1] के मदाकिनी नाम गगा मे ० सवो ने जा स्नान किया ओ राजा दशरथ को ति (-) ० लाजलि दिया अरु जल से वाहर आइगुदी नाम ० वृक्ष के फल मगाय गुद्दे निकाल मधु विने मे दे वे (-) ० द के विधि से राम लछुमण ने पिण्डे पारे अरु फिर ० स्नान कर सवके साथ हो रोते पीटते स्थान पर आ (-) ० ये तिस दिन तो उपासे ही रहे उमके दूसरे दिवस ० पुनि नहा आ जव सुचित हो कर रामचन्द्र वैठे ० तव हाथ जोड के भरत लगे विन से कहने (—) महारा (-) ० ज आप वडे भाई पिता समान है तिस्से उचित ० है वाप की गादी पर बैठकर प्रजा की रक्षा कीजै (,) ० उन्हो को पालना ही क्षत्रियो का धर्म है ओर य (-) ० ज्ञ कर पुत्र उत्पन्न करिए (,) जव वे वडे होगे तद विन ० को राज्य पाट दे निचिन्त हो फिर वन को जाइऐ (-) ० गा (,) अभी वहा जाने का आपका समय नही है (,) ० मुज पर प्रसन्न हूजिये (,) केकयी की करतूति पर ० मत जाइऐ यो कह प्रेम से आषो मे आसू पर ० निदान वुनके चरणो पर गिर पडे तव उठा कर भ (-) ० रत को उन्हने छाती लगा लिया ओ मारे प्रीति के ० रो रो यह वचन कहने लगे भाई जो तुम कहते हो ० सो सव सच्च पर पिता की आज्ञा है कि चौदह व (-) ० वर्ष वन मे रह के पीछे अयोध्या आइओ तव तल (-) ० क यहा का राज्य भरत को मैंने दिया (,) तिस्से अ (-) ० योध्या का तुम्हे ओ दण्डकारण्य का मुझे पिता ० ही राज्य दे गये है यह मझ[2] हम दोनो को उचित ० है कि जिसमे विनकी वात रहे सोई काम करे क्यू (-) ० कि पिता की आज्ञा उमे[3] कर अपनी रुचि जो च (-) ० लता है सो जीवता ही मृतक वन अन्त मे नर (-) ० क भोगता है (,) इस्से मैं दण्डकारण्य जाता हू (,) तुम ० जा राज्य करो (।) भरत वोले (—) सुनिये जो कामवश ० हो सदा स्त्री के कहने मे रहे विस मतिमन्द पिता ० की कभी न वात मानिये क्यूकि उसका कहने ० का भला क्या ठेकाना,

---

१. 'जु'। २. समझ। ३. उमेठ कर, उल्लघित कर।

विसकी तो बुद्धि मारी ग (-) ० यी है (।) राम ने उत्तर दिया (—) न तो वे मूढ थे न कामी ० ओ न सदा स्त्री के कहा करते (,) आगे केकयी से ० वचन हार चूके थे तिस्से सत्यवादी पिता ने तुम ० को राज्य (,) मुजको वनवास दिया (,) वडो का यही स्व (-) ० भाव है कि नरक ते भी अधिक झुठ से डरते है (,) य (-) ० ही समझ कर केकयी सो जो मैंने कहा विसे अ (-) ० वश्य निवाहूगा क्यूकि राम कहा कर अपना वच (-) ० न क्यू कर झूठ करू (,) इसने लोग मुझें क्या कहेंगे (।) भ (-) ० रत वोले (—) जो ऐंसा ही है तो चीर पहन आपकी ० सती[1] चौदह वर्ष मै ही वन मे वसूगा (-) आप जासु (-) ० ख से राज्य कीजे (।) राम ने फिर समझाया कि पि (-) ० ता तुमही को राज्य अरुमुज को वनवास दे गये ० है अव जो मै विसे उलटू तो लोग सव मुझ को नि (-) ० पट झूठा कहेंगे (,) निदान आकुल होकर फिर भ (-) ० रत वोले (—) अछा पर लक्ष्मण की भाति मै भी सा (-) ० थ चलकर आपकी सेवा करूगा जो यह भी न मा (-) ० निएगा तो मै अपना प्राण दिये विना न रहूगा (।) ० इस प्रकार भरत का हठ देष निपट चकित हो राम ० चन्द्र ने गुरु वशिष्ट की ओर आष की सैन की त (-) ० व निराले मे जा पास वोला कर भरत से वे लगे क (-) ० हने (—) सुनो वावा यह रामचन्द्र आपरूप नारायण ० है रावण को मारने के लिये इनके निकट जा आ (-) ० गे व्रह्मा वहुत गिडगिडाने (,) इस कारण दशरथ के ० ह्या ये आ जन्मे है ओ जनक की लड़की सीता ० को जो देषते हो सो योगमाया है अरु राम के स (-) ० दा आज्ञाकारी लछुमणजी शेषनाग है (,) राव (-) ० ण के विनाश के हेतु अवश्य इन्हो को वन मे जा (-) ० ना है (,) केकयी ने जो राजा से वर मागा ओ कडुआ ० वचन कहा सो सव देवतो की करतूति समझो ० नहि तो राम को केकयी कव वनवास देती नि (-) ० स्से श्रीरघुनाथ को फेर ले जान[2] का हठ छोड दो ० रानीन समेत सव सेना साथ लिये तुम अयोध्या ० को जाओ (,) कुल परिवार सहित रावण को मार वि (-) ० ध्वस तुरन्त रामचन्द्र फीरेंगे (,) इसमे कुछ सन्देह मत मानो (।) इस प्रकार गुरु की वाते सुन अति अचर (-) ० य[3] मान मारे हर्ष के भरत फूल उठे तो राम के निकट (-) ० जा कहने लगे (—) महाराज अपने पाव की खराऊ अ (-) ० व मुझे दीजे (,) आपके जगह यही गादी पर रहेंगी (,) ज (-) ० व तलक न आपका आगमन होगा तव तक इन्ही ० की सेवा मै करूगा ओ जो कुछ राज काज करूगा सो ० सव इनको जनाऊगा (,) यो कह सुन्दर खराऊ मगा रा (-) ० म के पावो मे झट पहरा ही दी (,) निदान नेहवश हो ० श्रीरामचन्द्र ने हस दिया ओ अछा कह रत्नजडि (-) ० त दोनो खराऊ भरत को निकाल दी (,) तव तीन वेर प (-) ० रिक्रमा दे वार वार प्रणाम कर निपट गिडगिडा गि (-) ० डगिडा भरत ने राम से कहा (—) चौदह वर्ष के वीते पन्द (-) ० रहवे के पहले दिन मे जो न तुम आवोगे तो आग ० लगा मै जल मरूगा (।) जद इस वात को राम ने माना ० ओ विनकी आज्ञा पा विदा हो वसिष्ट मत्री समे (-) ० त सव सेना आगे कर भरत चलने पर भये तव ऐ (-) ० कान्त मे जा हाथ जोड रो रो केकयी लगी कहने (—) हे रा (-) ० मचन्द्र मायावश हो अज्ञानता से तुम्हारे राज्य हो (-) ० ने मे जो कुछ विघ्न मैंने किया सो सव क्षमा करो (,) तुम ० आपरूप परमेश्वर हो (,)

---

१. के बदले। २. जाने। ३. अचरज।

माया फयला मानुष वन ० सारा जगत मोहते हो(,) तुम्हारी वश हो भला वुरा का(-) ० ज लोग करते हैं(,) अपनी कुछ नही वश है(,) जैसे का(-) ० ठ की पुतलिया नट की इच्छा से नाचती है वैसे ही ० तुम्हारी आज्ञावश हो नाना रूप धर माया नाचती ० है(।) अव जाना गया कि देव काज के लियें तुम्ही ने मे(-) ० री मति हर ली कि जिस्से मेरे जी मे पाप वसा अव ० मैने तुम्हे पहचाना(,) देवता सव भी तुम्हारा भेद नही ० पाशकते(,) है हे परमेश्वर अन्तरयामी अव मैं आप ० को वार वार प्रणाम करती हू इसलिये कि धन सता(-) ० न आदि मे नेह रूप जो एक फासी है विसे ज्ञान के ० शस्त्र से काटिये(।)केकयी की इतनी वाते सुन मुस्(-) ० करा के रामचन्द्र वोले(—)जो कहती हो सो सव सच है ० इसमे कुछ सन्देह नही(,) देवकाज के लियें मेरी हि सं(-) ० न पा सरस्वती ने तुम्हारा ज्ञान हर लिया जिस्से तुम(-) ० ने मुजे वनवास दिया(,) यह सव मेरी ही करतूति है तु(-) ० म्हारा कुछ दोस नही(,) अव घर जाओ(,) सव का मोह ० त्याग भक्तिभाव से दिनरात मुझी को जी मे सुमरो(,) ० ससार से तुरत मुक्त हो जाओगी(,) जो जितना मुझे भ(-) ० जता है विसे ओतना ही मै चाहता हू(,) न तो मेरा को(-) ० ई वैरी है न हितू(,)मेरे लेषे सव समान है(,)माया से मो(-) ० हित नर सुख दुख भोगनहार मुझे मानुष कर मा(-) ० नते है(,)मेरा भेव तनिक भी नही जानते(,)धन्य तुम्हा(-) ० रा भाग है जो सव दुख मेटावनहार मेरा ज्ञान तुम ० को हूआ(,) अव से घर जा मेरा ध्यान नित करती र(-) ० हिओ(,) कर्म के वधन मे फिर न कभू फसोगी(।) इस ० भाति जद राम ने कहा तद निपट आनन्द मे मगन ० हो शौकरो[1] विन्हे प्रणाम कर केकयी अपने घर को ० चली(।) तव मत्रीन समेत गुरु के साथ जा भाई से वि(-) ० दा हो सिगरे वाट विन्ही के गुण गावते हूए भरत भी ० अयोध्या को फिर आयें तो वहा नगर ओ देश के ० सव लोगो को वुला भेजा औ जैसा जिसे चाहिये वि(-) ० से वैसा ही काम दे सुचित हो आप नन्दी नाम गाव ० मे आ वसे(,) तहा राज सिंहासन पर रामचन्द्र को दो(-) ० नो खराऊ रष नेम अचार कर अक्षत चदन फूल ० पान से नित लगे वुन्हे पूजने ओ सव भोग विला(-) ० स तज जटाधारी हो चीर वस्त्र पहन फलाहार ही ० नित्य करने ओ व्रह्मचारी वन शत्रुघ्न समेत कुशा ० सन ही पर शोवे अरु जो कुछ राजकाज करे सो दो(-) ० नो खराऊन को जा सुनावे ओ राम के आवने के दि(-) ० न गणते गणते ओ विन्ही का ध्यान करते करते ० ऐसे हो गये कि जैसे कोई व्रह्मज्ञानी मुनि होए औ(-) ० र वहा श्रीरामचन्द्र जी चित्रकूट पर सीता लछुम(-)० ण समेत कुछ दिन और ह[2] गये(,)जब देषा कि वडी ० श्रद्धा से हमारे दर्शन के लिये अयोध्या के लोग ० सव नित्य आकर यहा भीर मचाते हैं(,) इसमे इनको वहुत दुख होता है तव विस पहाड को त्याग स्त्री भाई ० सहित श्री रघुनाथ जी दडकारण्य को चले तो आ(-) ० ते आते कुछ वेर मे अत्रि मुनि के अति सोहावन ० ओ निपट सुखदायक आश्रम पर आन पहुचे(,) ० तहा जिनके तेज से सगरे जगल प्रकाश हो रहा था (।) ० ऐसे विन महामुनि को दूर से देषते ही वुन्होने दड(-) ० वत किया ओ कहा(—)महाराज मेरा नाम राम है(,) पिता ० की आज्ञा पा दण्डकारण्य को चला हू(,) भाग से आप ० का दर्शन

---

१. सैंकड़ो। २. रह।

हुआ(,) अव मै कृतार्थ भया (,) यह सुन ईश्व(-) ० र पहचान अत्रिमुनि वहुत हर्षाने तो वडी आव(-) ० भगति कर सीता लछुमण समेत राम को विधि से पू(-) ० जा ओ अमृत समान फल मगा भोजन कराया(।) ० जब सुचित होकर सव वैठे तव ऋषि ने कहा कि ० मेरी भार्य्या जो अव निपट वुढ़िया हो रही है ओ ० जिसका अनसूया नाम प्रसिद्ध है वहुत दिनो से ० तप कर रही है(,) सीता को कहिए कि भीतर जा वि(-) ० से देष आवे(।) इतने वचन के सुनते ही विन्हने जान(-) ० की से कहा जाओ प्रणाम कर तुरत चली आओ(,) ० तुम्हारा कुछ वहुत भला होने वाला है(,) इस भाति ० पति की आज्ञा पा ओही वे उठी सो निकट जा ज(-) ० व दडवत किया ओ अपना नाम ठेकाना वताया ० तव देषकर अनसूया अति हर्षित हूई तो ग(-) ० रे लगा वहुत प्यार कर सीता को विठलाया अरु वि(-) ० श्वकर्म्मा के वनाए हुए रत्न के सुन्दर दो कुडल(,) ० अनमोल दो ठो कपडे विनको पहनने को दिये ० ओर वाट चलते चलते जानकी की आग मली(-) ० न देष के मलिये मे थोडा सा अनूठा उवटन उ(-) न को ला दिया और कहा(—)धिया[1] इस के लगाने से ० तुम्हारी देह की शोभा ज्यो की त्यो वनी रहेगी वरन् ० दिन दिन अधिक वढती जायेगी(,) तुम किसी वात का सदेह मत करो(,) तुम्हारे समेत वन से होकर कर के कु(-) ० शलक्षेम से श्रीरामचन्द्र फिर अयोध्या जायेगे(,) इ(-) ० नकी टहल मे कभू मत चूकिओ( ) स्त्री का यही धर्म ० है कि पति की सेवा मे सदा ही मगन रहे(,) यो कह राम ० लछुमण को अपने पास वुला लिया तव विन के स(-) ० हित सीता को कुछ अमृत पदार्थ भोजन कराया(,) ० जव खा पी सव सुचित भये तद हाथ जोडकर अ(-) ० नसूया ने राम से कहा(—)महाराज स्वर्गमर्त्य पाताल ० तीनो भुवन को तुमी ने वनाया है और उनकी रक्षा ० के लिये सुर मनुष्य आदि नाना रूप होते हो पर स(-) ० सार की चलन से सदा न्यारे हो(,) सव को मोहन हा(-) ० री माया एक तुम्ही से डरती है(।) इती श्री रामचरित्रे अयोध्याकाण्डे नवमोध्याय समाप्त ।(।) इस ० भाति रात भर रह करके वडे तडके रामचन्द्र ने अ(-) ० त्रि मुनि से कहा(—)महाराज अव हम दण्डकारण्य ० को जायगे(,) शिष्यो को आज्ञा होए कि कुछ दूर ० साथ चलके हमे वाट देषा देवे(,) इतने वचन सुन ह(-) ० सके ऋषि वोले(—)सव को पथ वतावनहारे तुम हो (,) ० तुम्हे मार्ग देषावने वाला कौन है(,)पर हा लोक की ० यह रीति है इस कारण पूछते हो तो अछा मै आज्ञा ० जोगा लाऊगा(,) ऐसे कह सव शिष्यो को वुला के आगे कर दिया ओ कुछ दूर पहुचा आने लिये ० आप भी साथ साथ चले(,) निदान राम की विनती ० से अत्रिमुनि तो अपने आश्रम पर फिर आये ० ओ सव समेत श्री राम च द्र वहा से चले सो कोश ० भर निकल आये तहा एक वडी भयावन सी न(-) ० दी देष ऋषि के चेलो से लगे कहने(—)महाराज जो इ(-) ० स को पार होने का कोई उपाय है कै नही(,) वोले कु(-) ० छ सन्देह जिन कीजे(,) वहुत सुन्दर एक नाव है(,) ० हम क्षणभर मे आपको पार कर देते है(,) यो कह ० सीता लछुमण समेत राम को नाव पर चढाय ० ऋषि के कुमारो ने तुरत नदी पार उतार दिया ० ओ उनकी आज्ञा पा विदा हो अत्रि मुनि के पा(-) ० स के समीप

---

१. बेटी।

एक किसी पेड तले जा जो लगे वि ० श्राम करने कि देषते क्या हैं कि जिस्से शैकरो ० जीवन का विघात किया था उस शूल को हाथ ० मे लिये हाथी(,) वाघ(,) वनभैसे पकर पकर ० खाता हूआ अति महावली ओ निपट डरावन ० ऐक दानव चला आता है(,) तद रामचन्द्र ने ल(-) ० छुमण जी से कहा(—)भाई यह कोई वडा राक्षस ० आन पहुचा(,) देखो हमारे सामने निशक हो ० जीवन को मारता ओ भय देषाता चला आ(-) ० ता है(,) तुम धनुष पर गुण चढाये रहो ओ हे ० सीता तुम मत डरो मैं इस दुष्ट को विन मारे ० न छोडता हू(,) ऐसे कह वाण हाथ मे ले दशर(-) ० थ के लाल ओही तुरत पहाड से उठ खडे हो ० गये कि इतने मे वह निकट आन पहुचा ओ ० इनको देषते ही पहले तो ऐसा खिलखिला ० स सव चले आये अरु श्री रामचन्द्र जी विस म(-) ० हा भयावन दण्डकारण्य को चले जहा झीगुर ० सव झझकार शब्द करते ओ नाना मृग भरे थे ० अरु जो वाघ सिहन से निपट डरावन हो रहा था ० ओ जहा ऐक ऐक ऐंसे राक्षस रहते थे कि जि(-) ० नके सुमरने से सगरे गात रोमाच हो आवे(।) जव ० कि विस के भीतर जा धसे तव रघुनायक ने ल(-) ० छुमण से कहा(—)भैया यहा से धनुष पर गुण च(-) ० ढा सीता को वीच मे कर वाण हाथो मे लिये च(-) ० हु ओर दृष्टि पसारे सावधान हो मेरे साथ चलो(,) ० यही दण्डकारण्य है जहा वडे वडे राक्षस सव व(-) ० सते है(।) यो कह विसी प्रकार से कोश पाछ ऐक ० और निकल आये तहा वर्ण वर्ण के फूले हूए ० कमलो से अति सोहावन एक तालाव था वि(-) ० स मे निर्मल पानी देष के उसके तीर पर जा उ(-) ० तरे ओ स्नान पूजा कर जल पी सुचित हो उ(-) ० इस वन को छोडकर ऋषि सव भागे भागे फीरते ० है(,) तुम जो अपना जी बचाया चाहते हो तो आयु(-) ० ध हाथ से गिरा दो ओ सीता को त्याग कर शीघ्र] य(-) ० हा से भागो(।) इसीमे कल्यान है नही तो अभी मै तु(-) ० म्हे खा जाता हू(,) यो कह सीता को लेने को दौडा तव ० हसते हसते श्रीरामचन्द्र ने विसके दोनो हाथ सर ० से काट लिये(,) तद तो मारे क्रोध के मूर्छित हो भया(-) ० वन मुह वाकर जो वह रामचन्द्र पर दौडा कि तो ही उ(-) ० न्हने दोनो पाव उसके काट डाले सो लोगन को ० वडा अचरज सा लगा(,) निदान अजगर होकर ० निगलने को लपका तव अर्द्धचन्द्राकार एक ० वाण ऐंसा षैच के उनने मारा कि विस दानव का ० शिर तन से अलग हो गिर पडा ओ लोहू लोहा(-) ० न होकर वह पृथ्वी पर लोट गया(,) तव अति हुल(-) ० सित हो गरे लगा सीता लगी राम को बहुत वषा(-)० नने ओ अधर[१] मे आ आ ढोल दमामे वजा व(-) ० कर हस उठा कि जैसा वादल गरजे(,) निदान डा(-) ० ट कर पूछा कि रे जटा वल्कल धारण किये मु(-) ० निका भेष बनाये धनुष वाण हाथ मे लिये स्त्री ० सग लगाये वडे अभिमानी ओ निपट सुन्दर तु(-) ० म दोनो कौन हो अव आओ(,) कमल की भाति मे(-) ० रे मुख मे पैठो(,) अजगरो से भरे हूए इस महाव(-) ० न मे क्यू जीव देने आये (।) मुसकुराकर श्री राम(-) ० चन्द्र वोले मै तो राम हू ओ लछुमण नाम ये मेरे ० भाई है अरु प्राण प्यारी यह सीता मेरी भार्या ० है(,) पिता की आज्ञा निवाहने के लिये ओ तुम से ० दुष्टन को शिष देने के हेतु हमलोगो यहा

---

१. आकाश।

आये ० हैं(।) इतने वचन के सुनते ही फिर वह हसा ओ रि(-) ० सिया के दोनो हाथ से एक शिसो[1] का वडा सा पे(-) ० ड उखाड लिया अर मुह वाकर लगा कहने (—)क्या ० लाला तुम मुझे नही जानते कि जिस का विरा(-) ० ध नाम लोक मे विख्यात हो रहा है(,) मेरे ही डर से ० फिर वोला हे(—)आनन्द मूरति सीता पति भगवान ० मै तुम्हे नमस्कार करता हू(,) मेरी रक्षा कीजै मै आ(-)० पकी आज्ञा से देव लोक जाऊगा(,) सव को मोह न(-) ० हारी तुम्हारी माया फिर न कभू मुझे आय घेरे(।)० इतना वचन सुन वहुत प्रसन्न हो श्री रामचन्द्र ० वोले (—)अछा विद्याधर जाओ तुम मेरे दर्शन से ० मुक्त भये (,)अव से माया तुम्हारे समीप न कभू ० जा शकेगी क्यूकि मेरी भक्ति होनी दुर्लभ है सो ० जिसे हूई वह ससार मे वार वार के आवागमन ० से वचा(,)इस्से अव परम पद को सिधारो(।) यह वि(-) ० धि नाम के प्रमाद से राक्षस की देह तज श्राप से छूट ० विद्याधर हो निदान(।)विर ध स्वर्ग लोक को गया ० इतिरामचरित्रे अरण्यकाण्डे प्रथमोध्या(-) ० य ॥१॥ जव वह वैकुण्ठ धाम को गया सीता रा(-) ० म लछुमण तीनो वहा से उठे सो चले चले सदा सवकोउ सुखदायक शरभग मुनि के आश्रम ० जा देवता सव लगे उपर से फूल वरसावने अरु ० अप्सरा नाचने गन्धर्व किन्नर सव गाने ओ रत्न ० जडित सुवर्ण के गहने ओ विसी भाति कपडे प(-) ० हने विराध की देह से अति सुन्दर एक विद्या ध(-) ० र निकला सो अधर मे जा विन राम को सारहने ० हो जो सकल दुख मिटावनहारे ओ करुणा की ० मुरति है प्रणाम कर यह वचन कहने लगा(—)हे क(-) ० मलनयन कृपानिधान मै विद्याधर हू(,)दुर्वासा मु(-) ० नि के जो नि कारण कोप की मूरति वने रहते ० है श्राप से मै राक्षस हुआ था आपने मेरा उद्धा(-) ० र किया(,) मै बहुत आनन्द मे मगन भया (,) अब कुछ ० ऐंसी कृपा की जै कि जनन मरन के दुख से वचने ० के लिये आपके चरणो का ध्यान अरु उन्ही की ० पूजा ओ तुम्हारे ही नाम का कीर्त्तन सदा मै कि(-) ० या करू (,) वरन् कान मेरे आपही की कथा सुने ओ ० शिर मेरा तुम्हारे ही पाव को प्रणाम करे(।) ० यो कह ० ल मे है जिसने चित्त लगा दिन रात सुमरने का मेरा प(-) रिश्रम जान आप आ दर्शन दिया(,) अव देवन ० हू के देव के देषते हूए मे अपना शरीर जला क(-) ० र शुद्ध हो व्रह्मलोक को जाऊगा(।) इस भाति अति ० हुलसित हो विन तीनो को जो आगे जा खडे थे ० प्रणाम ध्यान कर आग लगा पाच भौतिक देह ० जला दूसरा सुन्दर शरीर धारन कर निदान श(-) ० रभग योगी परमपद को पहुचा(,) इस अनन्तर द(-) ० ण्डकारण्य के जितन[2] ऋषि लोग थे सो सब वडी श्र(-) ० द्धा से रामचन्द्र को देषने के लिये वहा आन पहु(-) ० चे तद देषके अति हर्षित हो सीता लछुमण समे(-) ० त श्रीरघुनायक ने जो माया कर मानुष हूए थे ० शिर झुका ऋषिन को प्रणाम किया ओ वडी ० आव भगति कर आसन पर विठलाया तद आशी ० सू दे वहुत हर्षित कर तपस्वी लोग यह वचन लगे ० विन से कहने(—)हे कृपानिधान पृथ्वी का वोझ उता(-) ० पर आन पहुचे तद इनको देषते ही अति हुल (-)० सित हो तुरन्त शन उठ खडा भया ओ निकट जा० दोनो भाई को प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ आ(-) ० दर साथ आसन पर विठलाया ओ कन्दमूल भोज (-) ० न करा

१. सीसम। २. जितने।

सुचित कर यह वचन विन से कहने लगा(——) ० महाराज तप के लिये वहुत दिनो से मै यहां वसा ० हू(,) विस तप का यही फल चाहता था कि किसी प्र(-) ० कार आपका दर्शन पाऊ सो मेरा मनोरथ सुफ(-) ० ल हूआ(,) अव मुजे ससार मे रहने का कुछ काज ० नही(,) इस्से अपना सव पुण्य तुमको देकर अभी ० मै मुक्तिधाम को जाऊगा(।) यो कह ओही निज पु(-) ० ० ण्य सकल्प कर हठ से चिता पर जा वैठा ओ घटघ(-) ० टवासी श्यामसुन्दर सीतापति को प्र-णाम ध्यान ० कर इस आनन्द मे मगन हूआ कि सुमरनहारो ० के लेखे मानो कामधेनु ऐसे जो श्री रघुनाथ है वि(-) ० न से अधिक दयालु दूसरा कौन इस जगती त(-) ० जो मेरे मन का सन्देह जाऐ(।) ऋषियो ने उत्तर दि(-) ० या कि अपने समाधि मे माते हूऐ मुनिन को ० राक्षस सव आ आ खा गये(,) विन्ही के ये माथे है(।) ० इतने वचन के सुनते ही श्री रामचन्द्र वहुत दु(-) ० खित हूऐ(,) निदान सकल राक्षसन को मारन की ० प्रतिज्ञा करी(,) तव सव वनवासी मुनिन से पूजि(-) ० त हो सीता लछुमण सहित कुछ वर्ष वहा वे वस ० गये(।) इस क्रम से उस महावन मे जहा तहा रह ० ऋषिन के सगरे आश्रम देषते हूए निदा(-) ० न अगस्त्य मुनि का शिष्य सुतीक्ष्ण नाम वडा ० प्रसिद्ध ऐक ऋषि था जो राम की उपासना मे ० लवलीन था(,) उसके अति सोहावन ओ सदा ० सुखदायक स्थान के निकट वे आन पहुचे(,) तद ० सुन कर वह वहुत आनन्द मे मगन हूआ औ(-) ० र आगे जा अपने घर ला विधि से पूजकर यह ० वचन लगा विनसे कहने(——) हे सकल गुण निधा(-) ०रने के लिये व्रह्मा की प्रार्थना से तुमने मानुस०अवतार लिया है ओ हम सव भले जानते हैं ० जो आप परमेश्वर है औ जानकी लक्ष्मी है ल(-) ० क्ष्मण जी शेषनाग हैं ओ तुम्हारे शखचक्र ये ० ही दोनो भरत शत्रुघ्न भये है(,) अव उचित है ० कि पहले ऋषि के दुख आप मिटाइऐ(,) जो यह ० रुचे तो स्त्री भाई समेत हमारे साथ हो क्रम क्र(-) ० म इस वन को सगरे चल कर देषिये इसमे हम ० लोग पर आपकी वडी दया होती है (।) इस भाति ० गिडगिडा कर जव ऋषियो ने निहोरा किया त(-) ० व दीनदयालु श्री रामचन्द्र ने अगीकार किया ० ओ विन के सग होकर वन देषने को चले(।) जद ० कुछ दूर जा पहुचे तव वाट मे जहा तहा पडे हूऐ ० वहुत से शिर जो शुख कर हाड रह गये थे देष ० कर निपट दयावन्त हो पूछने लगे(——)क्यू महारा(-)० ज ये किन के माथ पडे है तुम समझा कर कहो ० ष्यन को को जो अज्ञानता से अधे हो रहे हैं व्रह्मा वि(-) ० ष्नु महेश आदि नाना नूप होकर कैसा तुम दृष्ट ० आते हो जैसा पानी के भाजनो मे अनेक सूर्य(।) ० यो कह फिर वोला(——)हे दीनदयाल मैने विस जनम ० मे वडीप[1] तपस्या की है जिस्से साक्षात आ(-) ० गे आ खडे हूए(,) आपके चरणकमल का दर्शन ० पाय अव मैं तुम्हे प्रणाम करता हू ओर यही ० चाहता हू कि नील कमल सा श्याम ओ काम(-) ० देव हू से अधिक सुन्दर यह आप का रूप सदा ० मेरे जी मे वसे(।) इस प्रकार सुतीक्ष्ण की विनती ० ओ स्तुति सुन हस कर श्रीरामचन्द्र वोले महा(-) ० राज मै जानता हूं मेरी उपासना से तुम्हारा मन ० वहुत निर्मल हूआ इसलिये मै तुम्हे देषने को ० आया क्यूकि सकल वस्तु की आश त्याग मेरे ० उपासक हो जो नर एक मुजी को निज शरण ० जानता

---

१. 'प' अनावश्यक है।

है विसीको नित जा दर्शन देता हू(,) मेरे ० न सीतापति मै तुम्हारे दासो का दास हू(,) धन्य मेरा ० भाग है कि जो ससार सागर पार उतारने के लिये ० मानो नाव ही है और शिव ब्रह्मा-दिक देवता सव ० जिन्हे सेवते हैं ऐसे आपके चरणो का दर्शन आ(-) ० ज मुझे भया अव मै निहाल हूआ तुम सा दया(-) ० लु कौन होगा क्यूकि स्त्री सुत गृह आदि रूपनि(-) ० पर अधेरे कुऐ मे माया मोह के डाले हूऐ मुज ० को जान कर दयावश हो मेरा उद्धार करने के लिये आ ० पसे आप आन पहुचे है(,) इससे जाना गया कि ० यद्यपि सकल घटवासी हौ पर तो भी जो मनु ० ष्य तुम्हारा मत्र नही जपते विन्हो को माया ० मोह मे फसाते हौ और जो तुम्हारे उपासक ० है तिनको विस्से वचा लेते हो इसलिए कि जो ० जैसा तुम्हे चाहता है विसे वैसा ही फल देते हो(,) ० हे महाराज इस सृष्टि की उत्पत्ति पालन प्रल[1] ० के तुम्ही हेतु हौ तुम्हारी माया से मोहित मनु(-) ० विन दूसरे किसी की आराधना उत्तम नही है(।) जो ० मनुष्य तुम्हारा किया हूआ इस स्तोत्र को जो मु(-) ० जे परम सुखदायक है सुचित होकर पढेगा विसे ० मुजमे प्रीति ओ निर्मल ज्ञान होगा(।) ऐसे कह पु(-) ० न विसे आशीस दी कि तुम मेरी उपासना से स(-) ० व प्रकार मुक्त हो अन्त समय मुझी मे मिल जा(-) ० ओगे इस भाति वुझा समझाकर फिर राम ने ० कहा(—)अव मुझे अगस्त्य मुनि को जो सव ऋषि(-) ० न के नायक ओ तुम्हारे गुरु हैं देषने की इछा ० है ओ कुछ दिन विनके पास वसने को मेरा जी ० चाहता है तिस्से किसीको साथ कर दो तो मै वहा ० जाऊ(।) सुतीक्ष्ण मुनि वोले(—)अछा आज तो कृपा ० कर यहा रहिऐ कल्ह मै ही तुम्हारे सग चलूगा ० क्यूकि वहुत दिनो से विन का दर्शन नही पाया ० है(।) इस भाति जद ऋषि ने वहुत हट[2] कर कहा त(-) ० व श्री रघुनायक रात भर वहा रह गये(।) जव प्रभा(-) ० त हो चूका तव सीता लक्ष्मण समेत सुतीक्ष्ण के ० साथ हो वडी श्रद्धा से अगस्त्य मुनि के पास चले ० तो धीरे धीरे पहले अगस्त्य मुनि के भाई के आ(-) ० श्रम पर आये(।) इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे ० द्वितीयोध्याय २(।)इस प्रकार स्त्री भा(-) ० ई समेत सुतीक्ष्ण को सग लिये श्री रघुनाथ ० जी अगस्त्य मुनि के भाई के स्थान पर दोपह(-) ० र को आन पहुचे ओ विस्से पूजित हो कन्द मू(-) ० ल भोजन कर सुख से रात भर रह के वडे तडके ० विदा होए सव समेत फिर वहा से उठे सो चले च(-) ० ले अगस्त्य मुनि के विस स्थान पर आन पहुचे ० कि जहा वर्ण वर्ण के वृक्ष सव सदा फूले फ(-) ० ले रहते थे ओ नाना मृग सव वसते ओ जो भा(-) ० ति भाति के पक्षीन की सोहावन वोलीन से नद(-) ० नवन सा लगता था ओ वाहर भीतर देवर्षि व्र(-) ० ह्मर्षियो से सेवित हो ऐसा शोभ रहा था मानो ० दूसरा व्रह्मलोक ही आ वसा है(।) तव वाहरे ही ख(-) ० डे होकर सुतीक्ष्ण से राम ने कहा महाराज अव तु(-) ० म शीघ्र जा ऋषि से हमारा आगमन जनाओ(।) इ(-) ० तनी वात के सुनते अति हर्षित हो वडा अनुग्रह मा(-) ० न ओही वह भीतर गया तो वहा देषा कि वडे वडे ऋ(-) ० षिन समेत अगस्त्य मुनि वैठे हैं ओ प्रीतिकर रा(-) ० म भक्तन सो राम के मन्त्रो का कीर्त्तन कर रहे हैं(।) त(-) ० व दूर से देषते ही सुतीक्ष्ण ने गुरु को शिर झुका द(-) ० डवत किया ओ आथ जोडकर कहा

---

१. प्रलय २. हठ।

महाराज सी(-) ० ता लक्ष्मण समेत दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र ० वाहर खड़े हैं आज्ञा होए तो यहा वुला लाऊ सुन(-) ० ते ही अति हर्षित हो अगस्त्य ने कहा अभी ला(-) ० ओ वे तो मेरे प्राण के आधार ओ जीवन मूल हैं ० मै तो विन ही का ध्यान करता ओ उन्ही की वाट ० निहार रहा हू(।) ऐसे कहते ही विसके साथ आप ० भी तुरत उठ दौडे ओ राम के समीप जा प्रणाम क(-) ० र यह वचन कहने लगे(—) आएइ कृपानिधान वडा ० भाग है जो आपका आगमन हूआ तुम से पाहु(-) ० ने के आवने से आज का मेरा दिन सुफल भया(।) ० यह सुन अति प्रसन्न हो सीता लक्ष्मण समेत ० श्रीरामचन्द्र ने दण्डवत किया तद अशीसू दे ऋ(-) ० षि ने तुरत श्री रघुनाथ को गरे लगा लिया ओ मा(-) ० रे आनन्द के आषो मे आशू भर लाये ओ हाथ ० पकड आश्रम के भीतर ला अछे[1] सुन्दर आस(-) ० न पर विठला मन लगा विधि से उनको पूजा अरु ० अमृत समान अनेक पदार्थ भोजन कराया(।) ० जव कि खा पी कर श्री रामचन्द्र सुचित भये त(-) ० व एकान्त कर हाथ जोड अगस्त्य मुनि यह वच(-) ० न लगे विनसे कहने(—) महाराज पृथ्वी का भार उता(-) ० रने के लिये ओ रावण आदि राक्षसन को मार(-) ० ने के अर्थ क्षीर समुद्र के तीर जा व्रह्मा ने आगे तु(-) ० म से वडी विनती करी तभी से तुम्हारे दर्शन की ० आश लगा ऋषिन समेत मै यहा तप कर रहा ० हू ओ आपही के ध्यान मे मगन हो रहा हू(।) तुम्ही ० व्रह्मा होकर सृष्टि उपजाते हो कि विष्णु हो के पा ० लते हो रुद्र वन सहारते हो (।) हे कृपानिधान आ(-) ० प के दर्शन से अव मै निहाल हूआ ओ जो कु(-) ० छ जप तप नेम आचार मैंने किये सो सव सिद्ध ० भये (।) हे महाराज अव मै आपसे यही वर माग(-) ० ता हू कि चलते फीरते ओ सोते हू से मुजे सदा ० तुम्हारी ही सुर्त्त रहै (।) इस प्रकार स्तुति विनती क(-) ० र वहुत प्रसन्न हो रत्न जडित अति सुन्दर एक ० खड्ग ओ राम के लिये इन्द्र का आगे का रष्या[2] हू(-) ० आ तूनी[3] वाण समेत एक धनुष तुरत अग(-) ० स्त्य मुनि ने राम को ला दिया ओ कहा कि पृथ्वी ० के भार हूए राक्षसन को अव जा मारिये इसी लि ० ये माया कर मानुष अवतार लिये हो(।) ऐसे कह ० फिर वोले(—) हे महाराज यहा से आठ कोश पर गौ(-) ० तमी नाम एक नदी है विसके तीर पर अति पवि(-) ० त्र वन से शोभित पचवटी नाम एक आश्रम है ० तहा ही चल के आप वसिए वनवास के और ० जितने दिन रह गये हैं तिन्हे वहा ही वैठ के विता(-) ० इए ओ देवतो के वहा ही सव काज कीजे(।) इतने ० वचन के सुनते ही श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने ओ ० अछा कह मुनि से विदा हो पचवटी को चले (।) ० इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे तृतीयोध्या ० य ३(।) जवकि कुछ दूर वढ आये तव वीच वाट ० मे पहाड का शृग समान ऐक वडे से गीध को वै(-) ० टा हूआ देष कर अति विस्मित हो झट धनुष ० पर वान चढा राम ने लछुमण से ऊचे कहा(—)भैया ० यह तो ऋषिन को षाने वाला कोई राक्षस आ(-) ० गे बैठा है तुम देषते रहो मै अभी इसे मार डाल ० ता हू(।) यह भनक गीध के कान मे जा पडी तो मा(-) ० रे डर के घवरा कर वोला उठा(—)महाराज मै राक्षस ० नही हू मेरा नाम जटायू है मै तुम्हारे पिता का वडा ० प्रेमी हू निरपराध मुजको मारना आपको

१. अच्छे। २. रक्खा। ३. तूणीर, तरकस।

उचि ० त नही है मै तुम्हारी भलाई के लिये अव से पचवटी ० मे जा वसूगा ओ अहेर के लिये आपके पीछे ल(-) ० छुमण के वाहर निकलने पर भरशक्य¹ सीता जी ० की मै रषवारी करूगा(।) जब पक्षी ने यो कहा दया(-) ० वन्त होकर श्रीरामचन्द्र वोले(—)अछा मै तुम्हे छो(-) ० डा पर आज से ओर कि किसी दूर जगल मे मत र(-) ० हो पचवटी के वहुत निकट यह स्थान है इसी ज(-) ० गह मे मेरे समीप वसकर मेरी चौकी किया करो (।) ० ऐसे वुझा समझा विस्से मील भेट विदा हो सी(-) ० ता लछुमण समेत राम जी गौतमी के तीर प(-) ० चवटी मे आन पहुचे तो वहा गगा के उत्तरतट ० जहा केला आदि भाति भाति के वृक्ष सव ० लगे थे ओ किसी मनुष्य का गम्य न था जाक(-) ० र भाई से एक अछा सुथरा मदिर वनवाया ति(-) ० स मे सीता सहित रहकर ऐसे आनन्द विहार ० करने लगे कि मानो कोई दूसरा लोकपाल ही ० आ विहार करे और लक्ष्मण जी विन दोनो को ० नित अछे अछे कन्द मूल आहार के लिये ला ० दिया करे ओ धनुष वाण लिये सारी रात जागे ० ओ पानी का जो कुछ काज लगे सो वेही नित ० भर भर लावे ओ आलस छोड हर्षित हो सव ० सेवा टहल करे ओ तीनो नित गौतमी मे जा न(-) ० हाये पर सीता दोनो भाई के वीच मे होके सदा ० जाया आया करती थी(।) इस प्रकार विन के व(-) ० हा रहते हूए जव तीन मास वीत गये तब एक ० वेर एकान्त मे जा नम्र हो लछुमण जी ने राम ० चन्द्र से पूछा(—)महाराज मै तुमसे थोडे ही मे मुक्ति ० होने का उपाय जाना चाहता हू तिस्से ज्ञान ० विज्ञान ओ भक्ति सहित वैराग्य दया कर जो ० वताइए तो मुजे वडा आनन्द होए इसलिए ० आपसे पूछता हू कि तुमसे कहने वाले इस भरे ० पृथ्वी तल मे कोई मुजको दूसरा नही मीलेगा(।) ० श्री रामचन्द्र प्यार कर वोले(—)भैया यह वात कि ० जिसको जानने से अपना ओ पराया यह भ्रम ० तुरते ही मीट जावे गुप्त से भी अति गुप्त है सा(-) ० वधान हो सुनो तुम्हारे नेहवश हो मै कहता हू(।) ० ऐसे कह फिर वोले कि पहले तो माया का सरू(-) ० प मै कहूगा तिसके पीछे भक्ति वैराग्य समेत ० ज्ञान का साधन कि जिसे जानने ही से सकल ० भय का विनाश होता है(।) सो यह है कि धन सता(-) ० न ओ शरीरादिक को जो कभू अपना नही(,) ० जिस्से निजकर मानते है वही बुद्धि माया है ओ ० वही ससार का जड है(,) सो माया दो प्रकार की ० है(,) एक तो अविद्यासरूप जो यहा से व्रह्मलोक ० तक छोटा वडा नाना जड सरूप हो रही है(,) दूसरी ० विद्या सरूप जिस्से यद्यपि जगत स्वप्न समा(-) ० न झूठ है पर देषने मे सच्च सा लगता है(,) तिस्से हे ० लछुमण जो परमात्मा आकाशरूप आदि ० अनन्त है विसमे रस्सी माह साप का भ्रम(-) सामा(-) ० या ही ने ससार रचा है इस्से जो कुछ देषते सून (-) ० ते ओ सुमरते हो वह विचारने मे कैसा है कि जै(-) ० सा सपना ओ मनोरथ(।) इस प्रकार माया का स(-) ० कल भेद कह फिर रामचन्द्र ज्ञान का साधन ० वतावने लगे(-) इस रीति से कि मन वच कर्मसे(-)सद्गु ० रु को नित जा सेवना ओ निन्दा स्तुति समा(-) ० न कर सव टेढी त्याग वाहर भीतर मन शुद्ध कर ० सत्कर्म मे सदा जी लगाना ओ अहकार विसा(-) ० र जनम मरण ओ बुढापे पर ध्यान रषना स्त्री ० पुत्र धनादिक से मन षैच कर सव

---

१. भरसक।

के सरूप मु(-) ० जमे सदा चित्त न[1]देना ओ शुद्ध देशो मे जा वस(-) ० ना नीचो से नेह न करना ईश्वर को पहचानने ० मे तत्पर हो वेदान्त शास्त्र का अर्थ विचारना य(-) ० ही ज्ञान है। ओ इसका उलटा अज्ञान(।) तिस्से ० वुद्धि प्राण पन देह अहकार इससे सदा अल(-) ० ग चेतन सरूप जो परमेश्वर है विसको जिसने ० पहचाना तिसही को मेरा ज्ञान हूआ औ वि(-) ० सी को वह ज्ञान भी होता है कि जिसके होने से ० विस ईश्वर को आपसे आप पहचान लेते हैं जो ० सव मे व्याप रहा है ओ आनन्द सरूप हैं अरु ० जो अद्वितीय है असग है ओ नाना वर्ण हो०कर आप से आप प्रकाश हो रहे है(।) श्री राम ० चन्द्र कहते है(—) हे लछुमण ज्ञान विज्ञान ओ ० वैराग्य समेत मोक्ष का सरूप जो तुमने पूछा ० सो सव मैंने कहा पर मेरी भक्ति हीन लोग(-) ० न को यह ज्ञान कैसा दुर्लभ है जैसा आष वा(-) ० लो को भी रात को नीके नही सूझता ओ जो ० मेरे भक्त है विन को सहज मे प्रकाश होता है(।) ० यो क[2] फिर वोले हे लक्ष्मण अव मै अपनी भक्ति का का(-) ० रण कहता हू सुचित हो सुनो(।) ऐसे समझा क(-) ० र रामचन्द्र वोले(—)मेरे भक्तन से सग मेरी सेवा ० ओ एकादशी आदि व्रतो मे उपवास ओ मेरे ० पर्व्वों मे उत्सव मेरी कथा सुनने सुनावने[3] सदा ० प्रेम मेरी पूजा मे निश्चय ओ मेरे नाम का सदा ० कीर्त्तन इन काजो मे जो नर तत्पर रहते है ति(-) ० न्ही को मेरी भक्ति होती है ओ तव यह तक ० महिमा को वे पहुचते हे कि मानो सव उत्तम का(-) ० ज कर चूके कुछ अवशेष नही रह ओ मेरी भ(-) ० क्ति के प्रताप से वैराग्य समेत ज्ञान विज्ञान ० पाय तुरत ससार से मुक्त हो जाते है(।) रामचन्द्र ० कहते है(—)हे लक्ष्मण तुम्हारे प्रश्न के अनुस्वार ० से यह सव मुक्ति मार्ग मैंने तुमसे कहा जो म(-) ० नुष्य इसमे जी लगाता है सो मुक्ति का भागी ० होता है(।) इस प्रकार वुझा समझा निदान राम ० चन्द्र ने भाई को जता दिया कि देखिओ जो लो(-) ० ग मेरी भक्ति विमुख है तिन्हे यह भेद कभू मत व(-) ० ताइओ अरु जो मेरे भक्त है विनको वुला कर ० कहिओ जो नर इस सम्वाद को श्रद्धा से पढेगा ० वह ज्ञान पा सव पाप से छूट मुक्तिधाम को पहु(-)० चेगा(।) इति श्रीरामचरित्रे अरण्यकाण्डे चतु(-)० र्थोध्याय (।)४(।)इस प्रकार आपस मे नित अनू(-) ० ठी अनूठी ज्ञान चर्च्चा कर विन्हो के वहा रहते हूऐ जन स्थान की रहने वाली एक महा राक्ष(-) ० सिनी कि जो जैसा चाहे वैसा अपना रूप वना ० शके विस जगल मे ओर दिनो की भाति फी(-) ० रने के लिये निज घर से एक वेर निकली सो फी(-) ० रती फीरती गौतमी तीर पचवटी के समीप आ ० निकली(।) तहा श्रीरामचन्द्र के अति सोहावन चर(-)० णचीन्ह जिनमे वज्र अकुश पद्म इन का मनो(-) ० हर चीन्ह शोभ रहा था जहा तहा उषडा हूआ ० देष कर निपट काम मोहित हो ओही लगी शो(-) ० चने कि जिसके ऐसे अद्भुत पाव है न जाने वह पुरुष ० कैसा सुन्दर होगा(।) निदान षोजती षोजती धीरें ० धीरें रामचन्द्र के आश्रम पर आयी(।) तहा सीता स(-) ० हित कन्दर्प समान बैठे हूऐ रघुनायक को देष क(-) ० र काम से अचेत हो लगी पूछने(—)ऐ प्राण प्यारे तुम ०

---

१. यहाँ 'न' अनावश्यक है। २ कह। ३ सुनने-सुनाने में।

सच कहो किसके लडके हो और कौन जात हो ० ओ जटा वल्कल धारण किये किस कार्य के ल(-) ० ये यहा आये हो (।) यह समझा कर मुजे वताओ (।) मै ० सकल राक्षसो का जो राजा है विस महावली राव(-) ० ण की वडी दुलारी वहन हू (।) सूर्पनखा मेरा नाम है ० खर नाम भाई के साथ इसी वन मे सदा रहती हू ० ओ राजा की आज्ञा पाय मुनिन को पकड पकड ० नित्य खाती हू (।) अव तुम कहो कौन हो यह मै जाना ० चाहती हू (।) रामचन्द्र वोले (—) मै राजा दशरथ का पुत्र ० हू ओ राजा जनक की सुन्दरी यह लडकी सीता ० मेरी भार्य्या है ओ अति सुभग लछुमण को जो ० देषती हो सो मेरे लहुरे भाई हैं पर हे सुन्दरि तुम्हे ० मुजसे क्या काज हैं सो षुल कर कहो (।) इस भाति ० राम की वाते सुन महा कामार्त्त हो सूर्प नखा ने ० कहा (—) तुम मेरे पति होने के योग्य हो तिस्से आओ ० इस पहाड पर अति सोहावन ओ वहुत ऐकान्त ० वन है वहा मेरे साथ चलकर मुजसे विहार करो (।) ० इस्समय हे कलमनयन मारे कामदेव के अचे(-) ० त होकर मै तुमको छोड नही शकती हू (।) जव वि(-) ० सने यो सुनाया तव रामचन्द्र मुस्कुरा कर सीता ० को कनखी दे यह वचन लगे उस्से कहने कि सच है पर देषो मेरी यह भार्या अभी विद्यमान है इस ० के रहते हूए हे सुन्दरि नित सवति का दारुण दु(-) ० ख सह के क्यू कर मेरे सग रह शकोगी जो ऐसी ह(-) ० लकी वाते कहती हो भला तुमही इसका न्याव क(-) ० रो (।) जो तुम्हे अवश्य पति की इच्छा है तो अति सु(-) ० न्दर मेरे भाई लछुमण वाहर खडे है वे ही तुम्हारे ० दुल्हा होने जोग्य है तिस्से मेरा कहा मान कर विन्ही ० को साथ ले जा भली भाति से विहार करो (।) राम की इ(-) तनी वाते सुन ओही वह लछुमण के पास आयी ० ओ कामातुर हो लगी विनसे कहने कि हे सुन्दर तु(-) ० म भाई की आज्ञा से मेरे स्वामी वन अभी मुज से ० विहार करो (।) लक्ष्मण जी ने उत्तर दिया (—) हे पतिव्र(-) ० ता मै तो विनका दास हू मुजे पति पाकर जो उनकी ० लौडी तुम वनोगी तो कहो कैसा तुम्हे दुख होगा ० तिस्से अपना भला विचार कर उचित है कि विनी ० महाराज से जा भिडो क्यूकि वे राजा है ओ सव के ई(-) ० श्वर है (।) इतनी वात के सुनती सुपनखा जी मे वहु(-) ० त रिसियानी (।) निदान चूपके हो क्रोध से भरी हूई ० राम के पास फिर आयी और आती ही यह वात ल(-) ० गी विनसे कहने (—) क्यू लाला मुझसे तुम ठठा करते हो ० तुम्हारे देषते ही अभी मै सीता को खा जाती हू क्या ० मुजे नही जानते (।) ऐसे कह भयावन रूप वना सचमु(-) च जानकी पर दौडी (।) तव तक राम की आज्ञा पा ओही ० हाथ मे खडग ले वडे पराक्रमी लक्ष्मण जी ने पकड क(-) ० र विसके दोनो कान ओ नाक तुरन्त काट लिये तद ० तो सारी आग लोहू लोहान होकर चिल्ला चिल्ला रो(-) ० ती ओ कलपती हूई वहा से गिरती पडती खर के आ(-) गे जा वह गिड पडी ओ वार वार लगी विसे धिरकारने (।) ० चकित होकर विसने विस्से पूछा कि वहन किसने ० तुम्हारी य दशा की है उसे मृत्यु ने आय घेरा तुम ० शीघ्र वताओ जो वह यम समान होगा तो भी मै वि(-) ० सका जी लिये विन न छोडूगा (।) तव सुसक सुसक कर ० सुपनखा लगी कहने कि सीता लछुमण को सग ० लिये सगरे दण्डकारण्य निर्भय करते हूऐ रामचन्द्र ० ने गोदावरी तीर आ डेरा लिया है तिन्ही के लगावने ० से विन के भाई ने यह मेरा गजन किया है जो तुम्हें ० अपने कुल की कुछ लाज है ओ वीर हो तो अभी ० जा विन दुष्टो को मारो मै उनका

लोहू पीऊंगी ओ ० विन दोनो को खाऊगी (।) तुम मेरी प्रतिज्ञा निवाहो ०नही तो प्राण त्याग कर मै यमलोक सिधारूगी (।) ० इतनी वात के सुनते ही मारे क्रोध के मूर्छित हो ० रामलछुमण को मारने के लिये वडे वडे पराक्रमी चौ(-) ० दह सहस्र दानवन को तुरन्त खर ने राम पास भेजा ० तिसके पीछे नाना शस्त्र वान्धे दूखन ओ त्रिशि(-)० रा नाम राक्षसो को साथ लिये आप भी राम पर उ(-) ० ठ दौडा (।) जव निकट सव जा पहुचे तव इन्हो की रौ(-) ० ला सुन कर श्री रामचन्द्र ने लछुमण जी से कहा (—) ० भैया यह जो वडा रौर सुनते हो तिस्से जनाता है ० कि अवश्य राक्षस व[1] आये मुजसे वडी लडाई ० होगी किसी षोह मे सीता को यहा से तुम ले जा ० ओ अरु वहा ही रहो मै ऐक एक कर सव राक्षसो ० को मार लेता हू (।) तुम्हे मेरा शपथ है जो तुम इसमे ० कुछ वोलो (।) इतने वचन के सुनते ही सीता को आ(-) ० गे कर लछुमण जी तो तुरन्त वहा से उठे सो एक ० कन्दरे मे जा धसे ओ श्रीरामचन्द्र ने शिर मे जटा स(-) ० भार के वान्धी ओ दो कछा मार धनुष पर वाण च(-) ० ढा झट उठ खडे भये ओ लगे इधर उधर वाट नि(-) ० हारने कि इतने मे दल वाद साजे वडी धूमधाम ० से राक्षस सव आन ही पहुचे ओ आते ही दात ० कट कटा कर नाना आयुध लगे राम पर चलाव(-) ० ने पर महावली राम चन्द्र ने खेल की भाति निज ० वाणन से विनको क्षण मे खड खड कर डाला (।) नि(-) ० दान क्रुद्ध होए चारो दिश से जव मार मार कर स(-) ० व एक ही वेर दौडे तव सहस्रवाण से सकल राक्ष(-) ० सो के शिर काट आधे पहर मे त्रिशिरा समेत ० खर दूषण को राम ने मार गिराया तव तो सीता को ० लिये पहाड मे से लक्ष्मण जी वाहर निकस राम ० पास आये ओ जानकी को विन्हे समर्प्प राक्षसो ० को जो रण मे मारे गये देष निपट चक्रित भये औ(-) ० र हर्षित हो सीता ने राम को गरे लगा लिया ओ ० उनके देह मे जहाकही वाण लगा था तहा अप ० ने हाथो से लगी पोछने (।)इस अनन्तर खर दूषन ० आदि वडे वडे दानवन को रण मे यूझे[2] हूए देष ० कर मारे शोक के अति दुखित हो सुपनखा रोती ० हूई लका मे गयी तो वहा वीच सभा मे जा रावण ० के पावो पर गिर पडी ओ पुकार पुकार लगी रो(-) ० ने (।)तव वहन की महा दुर्दशा देष वहुत दुख पा वह ० लगा कहने कि वहन उठो उठो सच कहो क्या इद्र ० वरुण कुवेर यम इनमे से किसी ने यह तुम्हारा अ(-) ० ग भग किया है (।) तुम विस का नाम वताओ मै अ(-) ० भी जा विसे भस्म कर डालू (।) राक्षसिनी वोली (—)तुम ० अपने घमण्ड से मात कर[3] पूरे मूढ वन रहे हो ० ओ स्त्री साथ लिये मदिरा मे सदा गडक्क[4] होए ० सव प्रकार शठ समान लष पडते हो न जाने चा(-) ० र[5] रूप जो तीसरी ऐक आख हैं तिसविन किस प्र(-) ० कार तुम राजा वने रहोगे (।) सग्राम मे त्रिशिरा समे(-) ० त खर दूषन आदि चौदह सहस्र वडे वडे राक्षसो ० को क्षण मे मार कर असुरन के वैरी रामचन्द्र ने मु(-) ० निन के लिये सगरे जन स्थान निर्भय कर डाला ० तुम अपनी मूढता से अनवधा[6] हो काहे को जा ० नोगे (।) इसी कारण मै तुम्हे शठ कहती हू (।) रावण ने ० पूछा (—)वह राम कौन है ओ किसलिये राक्षसन को ० मारा यह समझा कर मुजे

---

१. सब। २. जूझे। ३. मत्त होकर। ४. गर्क, डूबे। ५. गुप्तचर। ६. अनवधान, असावधान।

कहो जो विस की जड ० ही जा काट डालू(।) तव सूर्प्पनखा षुलकर लगी क(-) ० हने कि जन स्थान से ऐक वेर मै निकली सो चली ० चली गौतमी तीर जा पहुची तो वहा पचवटी ० नाम एक स्थान है कि जिसमे अनेक मुनि लोग ० आगे रहते थे(।) तिस आश्रम मे धनुषवाण लि(-) ० ये ये जटा वल्कल धारण किये राजीवन[1] महासुभ(-) ० ग राम को ओ वैसे ही निपट सुन्दर विनके छोटे ० भाई लक्ष्मण को मैने देषा अरु विशाल नयनी ० राम की भार्या रूप मे कैसी मुजे वहा दृष्ट आयी ० कि मानो दूसरी लक्ष्मी होए कि जिसके रूप से ० आसपास के जगल सव शोभ रहे हैं(।) वैसी सुन्दरी ० स्त्री आज तक देव गन्धर्व नाग मनुष्य ० इनमे देषी तो क्या मैने किसी की[२] सुनी भी नही(।) तिसको दे(-) ० षकर मैने विचारा कि यह किसी प्रकार से रावण ० की भार्या होए निदान तुम्हारे पास लावने के लि(-) ० ये ज्यो मै विसे पकडने को दौडी कि त्यो ही राम के ० भाई महावली लक्ष्मण ने विनकी आज्ञा पा ० मेरी नाक ओ कान तुरन्त काट लिये तिस दुख से ० वहुत रोती हूई मै खर के पास गयी तो मेरी दशा ० देषते हो मारे क्रोध के लाल हो वडे वडे दानवन ० को साथ ले ओही वह राम पर उठ दौडा और ० जाते ही लगा लडाई करने तद महा-पराक्रमी रा(-) ० मचन्द्र ने खर समेत जितने वहा राक्षस थे तिन ० मे एक को भी नही छोडा सव को मार गिराया(।) जो वे मन करे तो आधे पल मे निस्सन्देह तीनो लो(-) ० क भस्म कर डाले ऐसा मुझको भासित होता है(।) ० जो कमल नयनी सीता विनकी भार्या जो सकल ० लोक मे एक सुन्दरी गिणी जाती है किसी प्रका(-) ० र तुम्हारी स्त्री होए तो तुम्हारा जीवन जन्म सु(-) ० फल हो जावे तिस्से जिसमे वह हाथ आवे सो ० उपाय करो(।) पर साक्षात् राम के आगे चाहिए ० कि तुम ठहर शको यह घमण्ड तो कधी मत जी ० मे रष्षो(।) हा एक है कि माया से राम को मोहित क(-) ० रो तो सहज मे विसे पा शकत्ते हो(।) सुन कर रावण ० वहुत पछताना निदान आव भगति कर मी(-) ० ठी मीठी वाते कह वहन को वुझा समझा सु(-) ० चित कर आप घर के भीतर जा पलग पर लेट ० रहा(।) विस रात मारे अकुलाहट के विसकी आ(-) ० षो मे तनिक नीन्द न आयी(—) इस चिन्ता से कि ० एत्ते वडे वीर ओ युवा ऐसे मेरे भाई खर को (स-) ० व सेना समेत क्यू कर मनुष्य होकर ऐकेले ही रा(-) ० मचन्द्र ने मारा है(।) वे मनुष्य नही हो न हो ईश्वर है(,) ० व्रह्मा की प्रार्थना से रघुकुल मे मनुष्य अवतार ० ले मुजे मारने को आये है (।) अछा जो मै विन के हा ० थो से मृत्यु पाऊगा तो अवश्य वैकुण्ठ जा राज्य ० करूगा ओ नही तो वहुत दिनो तक यहा राक्ष(-) ० सो का राजा वना रहूगा ओ नाना भोग विलाश ० करूगा(।) ऐसे शोच समझ राम को परमेश्वर ठहरा(-) ० य निदान रावण ने ठाना कि अव तो होनी है सो ० हो पर लडाई ही से विन हरि मे जा मीलिये क्यू(-) ० कि भक्ति से वे शीघ्र प्रसन्न नही होते(।) इति ० श्रीरामचरित्रे अरण्यकण्डे पंचमोध्याय।५। इस प्रकार सारी रात जी मे विचार कर वडा बुद्धि(-) ० मान रावण प्रभात होते ही उठा ओ अपने का(-) ० ज के लिये समुद्र तीर मारीच के विस घर पर ग(-) ० या कि जहा जटा वल्कल

---

१. राजीवनयन।

धारण किये मुनि का ० भेष बनाये निर्गुण परमात्मा का मन से ध्यान ० वह कर रहा था(।) जव कै एक घडी के वीते समाधि ० टूट गयी तव रावण को गृह मे आया देषकर मा(-) ० रीच तुरन्त उठ खडा भया ओ गरे लगा मील भे(-) ० ट जैसा कुछ चाहिए वैसा खाने पीने का शिष्टा(-) ० चार कर आसन पर विठला यह वचन लगा विस्से ० कहने (—) महाराज एक रथ के साथ आपके यहा आ ० वने से यह जान पडता है कि किसी काज के लि(-) ० ये तुम्हारे जी मे बडी चिन्ता है पै मुजसे मत छिपा ० ओ शीघ्र सुनाओ जिससे तुम प्रसन्न होगे सो(-) ० ई मैं करूगा पर ऐसा जिन कहिओ कि जिसके ० लिये से मेरे शिर पाप चढे (।) रावण वोला(—)अयोध्या ० का पति दशरथ नाम एक राजा है विसने महा(-) ० वली ओ वनवासियो को अति प्यारा राम ० नाम अपने वडे वेटे को वनवास दिया है सो अव ० निज भाई लक्ष्मण को अरु सव को मोहानहा(-) ० री[1] मृगनयनी सीता नाम अपनी स्त्री को साथ ० लिये पचवटी नाम महावन मे डेरा ले विना अ ० पराध सूर्पनखा नाम मेरी वहन के कान नाक ० काट कर ओ खर दूखण समेत वडे वडे राक्षस(-) न को मार कर निडर होकर गाजता है(।) इसका ० रण मै तुम्हारी सहायता से राम की प्राण प्यारी ० सीता को विसके पीछे हर लाया चाहता हू(।) तुम ० मेरे लिये पचवटी मे जा माया का मृग वनकर रा(-) ० म को देषाई दो(।) मारे लालच के जब वह तुम्हे पक ० डने को दौडेगा ओ लक्ष्मण विसके पीछे निक(-) ० लेगा तव तलक तुम इधर उधर दौडे फिरि (-) ० ओ कि जव तलक सीता को मै न वहा से उठा ला ० ऊ(।) इतना मेरा काम करके फिर तुम अपने हरि ० का ध्यान यहा आ किया करिओ(।) इस प्रकार रा ० वण की वाते सुन जी मे वहुत दुख मान मारीच ० लगा विस्से कहने कि तुम्हारा जड काटने वाला ० किस दुष्ट ने यह उपदेश तुमको वताया है(।) ० वही शत्रु है इस्से जो तुम्हारा नाश चाहता है उ(-) ० सी को मारना उचित है और राम से वैर वेसाहना ० भला नही विनका पौरुष सुमर कर अव तल[2] ० भी मै कापता ही रहता हू तिसका कारण यह ० है कि यग्य की रक्षा के लिये लडकपण मे एक वेर ० विश्वामित्र के पास गये थे तहा एक ही वाण ० से ऐसा मुज को विन्होने मारा कि वहा से चार शौ ० कोश पर समुद्र मे जा मै गिरा तव से मै डरा ही र(-) ० हता था(।) निदान वह वैर लेने के लिये मृग का रू(-) ० प धर अपने समान वहुतेरे साथीन को सग लि(-) ० ये दण्डकारण्य मे भी मै ऐक बेर फिर राम के पा ० स गया और चोषे चोषे सीगन से सीता लक्ष्म ० ण समेत विन पर जो मारने को टूटा तो ही षेंच क(-) ० र एक ऐसा वाण विन्हे[3] जडा कि मेरे हृदय मे आ ग(-) ० ड गया तद लोहू उगलता हूआ भागा भागा सा(-) ० गर तीर आ मै गिर पडा(।) तव से हे रावण इसी स्था(-) ० न मे छिपा रहता हू औ राम का वह पराक्रम सुम ० रते सुमरते अव ऐसा भया कि विन्ही को मै सव ० ठाव देषता हू इस्से दिन रात उनी का ध्यान कि(-) ० या करता हू ओ निपट कापता रहता यहा त(-) ० क कि जव कभी उनका समाचार मुजे कोई आ ० सुनाता है तव ऐसा जी मे भय होता है कि मानो ० रामचन्द्र यहा आन पहुचे(।) इस त्रास के मारे वा ० (-)हर के जितने कुछ काम काज थे तिन सवसे मै ० हाथ धो बैठा ओ नीन्दवश हो जव जव मैं

---

१. मोहने वाली। २. तलक। ३. उन्होंने।

सो(-) ० ता हू तव तव स्वप्ने मे राम को देषकर उठ बैठता ० हू मारे डर के तनिक सोने भी नही पाता(।) तिस्से ० हे रावण जो राक्षस का कुल युगो से चला आ(-) ० ता है विस को कुछ दिन रष्षा चाहते हो तो राम(-) ० चन्द्र से कधू ईर्षा मत करो वे मनुष्य नही ईश्व(-) ० र है(।) यह हित शिषावन जो तुम्हे अछा लगे तो ० मेरा कहा मान भक्ति से विन को भजो ओ झु(-) ० ठ मुठ वैर मत वढाओ इसी मे कुशल है(।) ऐसे व(-) ० हुत कह निदान मारीच ने जताया कि ऋशि(-) ० न के मुह से सुना है कि आगे विष्णु से व्रह्मा ० ने वडी प्रार्थना करी तव प्रसन्न होकर विन्होने ० इनसे कहा हे प्रजापति तू क्या चाहता है सो मै ते(-) ० री वाछा पूरण करू(।) विरचि वोला (—)आप पृथ्वी ० मे जा रघुकुल मे मानुष अवतार ले दशकन्ध(-) ० र को जीव से मारिऐ यही मै तुमसे मागता हू(।) त(-) ० द अगीकार कर परमेश्वर अन्तरधान हो गये(।) ० सोई जगद्गुरु नारायण रामचन्द्र मानुष नही साक्षा(-) ० त भगवान है धरती का भार उतारने के लिये ० माया कर मानुष वेष किये वन मे आ गाजते ० है(।) तुम सुख से अपने घर पर जा आनन्द विहा(-) ० र करो ओ झुठ मुठ राम से रीस मत बढाओ(।) ० रावण ने उत्तर दिया कि जो रामचन्द्र ईश्वर है ० अरु व्रह्मा की की[1] विनती से मानुष हो मुजे मारने ० को आये हैं तो सोवे शीघ्र करे हीगे क्यूकि सत्य(-) ० वादी है विन की प्रतिज्ञा कधी झूठ होने की न(-) ० ही पर मै क्यू चूकूं यत्न कर सीता को लाऊगा इ(-) ० स मे राम के हाथो से जो मेरी मृत्यु हुई तो अव(-) ० श्य परमपद को जाऊँगा ओ नही तो सग्राम मे ० राम को मार कर निर्भय हो सीता को अपने व(-) ० श मे रषूगा(।) तुम मेरा कहा मान कर उठो ओर ० एक अद्भुत मृगवन समीप जा सीता लक्ष्मण ० समेत राम को देषाई दो अरु कुछ ऐसा उपाय ० वहा करिओ कि जिसमे जानकी को एकेली छो(-) ० ड कर भाई सहित वे तुम्हारे पीछे दौडे इसमे फि(-) ० र जो मुझे डराओगे तो देषो इसी चोषे खड्ग से ० अभी मै तुम्हारा शिर काट डालूगा(।) इस प्रकार ० जव रावण ने कहा तव सुन कर क्षण ऐक मारि(-) ० च चुप रहा ओ जी मे शोचा कि दोनो ओर से मे(-) ० रा क्षय है पर राम के हाथो से जो मरू तो ससा(-) ० र सागर सहज मे तर जाऊ नही यह दुष्ट जो ० मुजे मारेगा तो निश्चय नरकवास होगा ति(-) ० स्से उचित है जो राम की[2] के पास चल मरिऐ(।) इस ० भाति श्री रघुनाथ ही से अपनी मरण ठहरा ० निदान मारीच तुरन्त उठ खडा भया ओ राव(-) ० ण से कहा(—)अछा महाराज मै आपकी आज्ञा ० करूगा(।) ऐसे कह तुरन्त रथ पर चढ राम के पास ० चला(।) ० जव निकट जा पहुचा तव गाडी से उतर ० पडा ओ कुन्दन का एक ऐसा विचित्र मृग वन ग(-) ० या कि जिसकी देह मे ठाव ठाव अति सोहावन ० रूप के वुन्दे लगे झलकने ओ मृगे के दोनो शी(-) ० ग हीरे की चारो खुर नीलमणि की अपनी आ(-) ० ष वनाये विजली सा चमकता हूआ विस वन ० मे इधर उधर फिरता फिरता निदान राम के आ(-) ० श्रम के समीप जा सीता के सामने हो क्षण मे ० तो दौडे ओ क्षण मे खडा हो जाए अरु क्षण मे ० विन के निकट जा फिर भाग चले(।) इस प्रकार ० माया कर अद्भुत मृग का भेष वनाये मारीच ल(-) गा सीता को लोभावने (०) इति श्रीराम-

---

१. एक 'की' अनावश्यक है। २. 'ही' होना चाहिए।

चरित्रे ० अरण्यकाण्डे षष्टोध्याय (।) ६ (।) इतने मे वह ० सव रावण की करतूति जान एकान्त मे ले जा ० रामचन्द्र ने सीता से कहा (—) हे जानकी अव को (-) ० ई घडी मे भिषार का भेष वनायें तुम्हारे पास ० रावण आ चला तिस्से ऐसा ही तुम अपना ए (-) ० क दूसरा रूप वनाओ अरु विसे इस आश्र[1] ० मे रषकर मेरी आज्ञा से वर्ष दिन तक तुम ० आग मे जा छिप रहो (।) ० जव रावण का वध हो ० चूकेगा तव आगे की भाति फिर मुजे आ मि (-) ० लिओ (।) प्रभु की इतनी वातें सुन तुरत सीता ने ० माया का एक दूसरा अपना सरूप वनाया ओ ० उसे वाहर आप जा आग मे गुप्त हो गयी ० तव माया की सीता माया के मृग को देषकर हस (-) ०ती हूई राम के पास जा नम्र हो यह वचन कहने ल (-) ० गी कि नाथ देषिये तो नाना रत्न से भूषित ओ वि (-) चित्र वून्दन से निपट सोहावन काञ्चन का यह ० क्या सुन्दर हरन निडर होकर मेरे साम्हने चरता है ० आप इसे पकड कर शीघ्र मुज को ला दीजिये मै खे (-) ० लने के लिये इसको पालूगी तद मुस्कुरा कर अ (-) ० छा कह तुरत धनुष वाण ले उठ खडे हो श्री राम (-) ० चन्द्र ने लक्ष्मण से कहा (—) देषिओ भैया इस वन मे ० वडे वडे मायवी ओ देषने मे अति भयावन अ (-) ० नेक दानव सव रहते है तिस्से वहुत सावधान हो ० कर मेरी प्राणप्यारी सीता को तुम यतन से यहा ० रषिओ (।) मै इस मृग को पकडने जाता हू (।) लक्ष्मण ० जी ने उत्तर दिया (—) ऍ महाराज आप किस भ्रम मे ० पडे है यह तो निसन्देह मारीच है आगे की भाति ० फिर हम लोगन को ठगने आया है रामचद्र वो (-) ० ले कुछ चिन्ता नही जो मारीच है तो मै इस्से[2] विन मा (-) ० रे न छोडता हू ओ नही मृग है तो सीता के लिये ० मै इसको अभी वाध लाता हू (।) तुम सचेत होकर ० जानकी की रक्षा कीजो (।) इस प्रकार भाई को वु (-) ० झा समझा श्री दशरथ के लाल विस मृग पर दौ (-) ० डे (।) महादेव कहते है पारवती से कि देषो जिनका ० आश्रय पा जगत सरूपिणी माया सकल स (-) ० सार को मोह मे डालती है सो परमेश्वर रामचन्द्र ० यद्यपि निर्विकार ओ चेतन सरूप पूरण व्रह्म है ० ओ जैसा कुछ मृग था विसे भले पहचानते भी ० थे (,) तथापि राम भक्त वत्सल है इस वचन को स (-) ० त्य करने के लिये सीता के नेह से उस पर दौडे न ० ही तो जो सदा पूरण मनोरथ है ओ अपने को कभी ० नही भूलते तिन रघुनायक को मृग से कै[3] स्त्री ० से कै ओर किसी से क्या काज वे तो आप परमा ० त्मा है (।) यो कह फिर सदाशिव लगे कथा कहने कि ० जव कुछ दूर हरन[4] को रामचन्द्र रगेद लाये तव क (-) ० भी वह निकट जा विन को देषाई देवेओ कभू दूर ० ओ कभी छिप जाऍ कभी भाग चले (।) इस प्रकार ० जव लगा मारीच माया फैलावने तद राम ने जा ० ना कि हो न हो यह सचमुच दानव है निदान तका ० कर ऐक ऐसा शर मारा कि ओही वहा राक्षस हो पृ (-) ० थ्वी पर गिर पडा ओ लगा राम की भाति पुकार (-) ० ने कि हा अव मै मारा गया हे महावली लक्ष्मण ० तू शीघ्र आ मुजको वचाले इस प्रकार राम की ० भाति पुकार कर अरु मुह से ववक ववक लोहू उ (-) ० गल कर मारीच तुरन्त मर गया (।) तव लोग सव देष (-) ० ते ही है कि उसकी देह से लूक समान कुछ तेज नि (-) ० कला ओ श्री रामचन्द्र मे जा मिल गया (।) सो अच (-) ० रज देष निपट चक्रित

---

१. आश्रम। २. इसे। ३. अथवा। ४. हरिण।

हो देवता सव जो कौतुक ० देषने के लिये वीच अवर मे आ खडे थे आपस ० मे लगे वतराने (—) देषो मुनिन को मारने वाला इस ० महापापी मारीच ने कैसा कर्म किया ओ कैसी ० गति पायी (।) यह रामचन्द्र की महिमा है नही तो ० इस महादुष्ट का भला कभू उद्धार होता (।) तिनमे ० एक यो वोला कि जव राम के वाण से पहले यह घा (-) ० हल हूआ तव से मारे डर के कभी उनको भूला नही ० सदा जी मे ध्यान करते करते आगे ही से निष्पाप हो रहा था अव अन्त समय राम के हाथ मृत्यु पा ० विन्ही मे जा मिल गया तिसका कारण यह है कि ० क्या व्राह्मण क्या राक्षस क्या पापी और क्या धर्मा (-) ० त्मा कैसा ही कोई होवे पर मरण समय जो कोई ० ईश्वर को सुमरेगा वह परमपद को जाहीगा इ (-) ० समे कुछ सन्देह नही (।) इस भाति आपस मे वत (-) ० रा देवता सव अपने अपने स्थान को गये ओ ज (-) ० व मारीच मर गया तव रामचन्द्र ने विचारा कि मर (-) ० णे कि वेरिया इस अधम असुर ने मेरी भाति पु (—) ० कारा कि हा लक्ष्मण दौडे तिस्से मेरी वोली समा (-) ० न इसका पुकार सुन कर सीता कैसी डर गयी हो० गी इस्से अव शीघ्र चल कर उन्हे देषिए (।) ऐसे शोच ० समझ कर वे तो तुरत अपने आश्रम को फिरे ० ओ वहा मारीच का पुकार सुन कर भय से निपट ० व्याकुल हो सीता लगी लक्ष्मण से कहने (—) तुम शी (-) ० घ्र जा देषो तुम्हारे भाई को असुर वहुत सतावता ० है और हा लक्ष्मण दौडो यह विनकी वोली क्या ० नही सुनते जो निश्चित हो वैठे हो (।) उन्हने उत्तर ० दिया (—) ऐ महारानी तुम क्यू वृथा घवराती हो यह ० तो जो राक्षस मारा जाता है विसका पुकार है राम ० चन्द्र की यह कधी नही वोली है वे जो अभी क्रुद्ध ० होकर चाहे तो एक क्षण मे तीनो लोक भस्म कर ० डाले सो निपट कातर सा भला किसलिये मुजे पु (-) ० कारेगे तुम्ही इस वात का विचार करो। (।) इतनी वात ० के सुनते ही सीता वहुत रिसिआ उठी ओ आ (-) ० षो मे आशू भर यह वचन कहने लगी अरे म (-) ० दवुद्धि लक्ष्मण तू काहे को जायेगा तू तो अप (-) ० ने भाई की मृत्यु चाहता है (।) अव मैने जाना है कि ० विनको मार के मुझे लेने के लिये भरत ने तुझे ० भेजा है पर कधी न मुझे पा शकेगा क्यूकि जो श्री ० रघुनाथ जी नही तो मै जी के क्या करूगी मै तो आ (-) ० ज ही अपना प्राण तजूगी ओ चाहिए कि रामच (-) ० न्द्र विन भरत को मै छूऊगी सो कभू होने का नही (।) ० हा रामचन्द्र तुझको नही जानते थे कि मेरी स्त्री ० को यह हरने आया है (।) ऐसे वहुत कह के निदान ० दोनो हाथो से छाती पीट पीट पुकार पुकार लगी ० वह रोने ओ शि[1] धूनने तद सुन कर लक्ष्मण जी ० ने अपने दोनो कानो पर हाथ दिये ओ निपट दुखि (-) त हो कहा (—) अरे कर्कशा धिक्कार है तुझे जो मुह से ० ऐसा वचन निकालती है अव तेरा नाश होने प (-) ० र हूआ यो कह विसकी वातो से कोहा कर ओही ० उसे वन देवीन को समर्प दिया ओ आप रोते क (-) ० लपते राम के षोज मे गये (।) इतने मे अन्तराल पा ० कर भिषार का भेष वनाये हाथो मे सुन्दर डण्ड (-) क (-) ० मण्डल लिये जानकी के निकट रावण आ पहु (-) ० चा (।) तव अतिथि को देष कर विन्हने प्रणाम किया ० ओ क्षेम कुशल पूछ वडा शिष्टाचार कर आस ० न पर उसे वैठलाया ओ कन्द मूल ला विसके आगे रष दि (-) ० या ओ

---

१ शिर।

यह वचन कहा (—) महाराज कृपाकर इसे भो(-) ० जन कर लीजे ओ जी चाहे तो कुछ घडी यहा वि(-) ० श्राम कीजे मेरे स्वामी अभी आ चले वे तुमको ० वहुत प्यार करेंगे (।) ० दण्डी वोला तुम कौन हो अरु तु(-) ० म्हारा पति कहा का रहने वाला है ओ राक्षसन से ० सेवित इस महावन मे किसलिये आवसा है यह ० सव समझाकर मुझ से कहो जो मेरे मन का सदे(-) ०ह जाए (।) सीता ने उत्तर दिया कि अयोध्या के पति ० दशरथ नाम एक राजा है तिनके वडे वेटे श्री राम(-) ० चन्द्र है ओ राजा जन[1] की वेटी सीता नाम मै विनकी ० व्याही स्त्री हू ओ प्राण प्यारे लक्ष्मण जी विन के ० लहुरे भाई है (।) पिता की आज्ञा पा दण्डकारण्य ० मे चौदह वर्ष बसने के लिये दोनो भाई आये है अ(-) ० व आप कौन है सो मुझे सुनाइऐ (।) हस कर भिषा(-) र वोला मै तो पुलस्त्य मुनि का पोता हू ओ सकल ० राक्षसो का राजा अरु रावण मेरा नाम है तुम्हारे ० रूप से कामवश हो तुमको लेने के लिये आया हू ० अब उचित है कि वन का दुख तज मेरे साथ च ० ल कर नाना भोग विलास करो (।) मुनि के भेषधारी ० राम के सग मत रहो (।) तुमसे सुन्दरी को विससे क्या ० काज (।) इतनी वात के सुनती ही पहले तो सीता ० कुछ एक डर गयी निदान क्रुद्ध होकर यह वचन ० कहने लगी (—) अरे दुष्ट जो तू ऐसा वचन मुजसे क(-) ० हता है तो रामचन्द्र के हाथ तेरा विनाश होवेगा ० भाई समेत अभी वे आ चले जो तू वडा वीर है तो ० क्षण भर षडा रह विनके रहते हूए किसका इतना ० सामर्थ्य है जो मुजसे ढिठाई कर शके मै साक्षा(-) ० त् नारायण की भार्या हू तू क्या मुझे समझता ० है जा शीघ्र यहा से भाग नही तो रामचन्द्र के वा (-) ० णो से खड खड होकर धरती पर गिर पडेगा (।) इस ० भाति जव सीताने कहा तव सुनकर क्रोध से मूर्छित हो रावण ने काला मेघ ओ पर्व्वत सभा(-) ० न अपना वह शरीर देषाया जिसमे दश मा(-) ० थ ओ वीश भुजा ऐसे भयावन थे जिन्हको ० देषते ही वनदेविया ओ जितने वहा जीव ज(-) ० न्तु थे सो सव लगे थर थर कापने (।) निदान दे(-) ० षा कि मारे त्रास के सीता भी अव चित्र समान हो ० गयी तव जिस वेदी पर वे वैठी थी तिसे विन समे ० त नषो से दशकन्धर ने उषाड लिया ओ हाथो ० से तौल कर रथ पर विसे रष आकाश पथ मे हो ० लका को चला (।) तद तो दीन की भाति हा राम हा ० लछुमण कर सीता लगी पुकार पुकार रोने ओ ० ऐसी डर गयी कि पृथ्वी ही पर दृष्टि किये चली इ(-) ० तने मे विन का विलाप सुनकर पछिओ का राजा ० जटायु शीघ्र उठ दौडा ओ खडा हो खडा हो कह (-) ० ता हुआ निकट जा रावण से लगा कहने (—) सुन ० अधम जैसे मत्र का पवित्र किया हुआ षीर य(-) ० ग्य मे से कुत्ता ले भागे वैसे ही इस शून्य वन मे से ० त्रिलोकनाथ की भार्य्या चोराये तू मेरे आगे से ० कहा जा शकता है (।) क्या तू नही जानता की[2] इन ० की चौकी मे जटायु रहता है अछा देष अब मै ० तेरी क्या दशा करता हू (।) यो कह चोषे चोषे चोचन[3] ० से विसके रथ को काट खड खड कर डाला ओ वि(-) ० सी प्रकार से विसके घोडो को मार गिराया अरु न(-) ० खो से सारी उसकी देह चूरन कर डाली (।) तव क्रो(-) ० ध से अचेत हो सीता को त्याग रावण खड्ग ले दौ(-) ० डा ओ पछिराज के दोनो पक्ष काट मरणदशा ० को पहुचा धरती पर गिरा दिया ओ आप फिर ०

---

१. जनक। २ 'की' इस रूप से प्रतीत होता है, 'कि' अभिप्रेत है। ३. नख।

सीता को ले दूसरे रथ पर चढ हर्षित हो अपने पु(-) ० र को चला(।)० तव निपट अनाथ हो पुन राम राम क(-) ० र सीता लगी रोने ओ ऐसा किसी को नही पावे जो ० अपने को विस्से वचा शके इस कारण वार वार य(-) ० ही पुकारती वहा से चली कि हा राम हा जगन्ना(-) ०थ इस दुष मे फसी हूई मुजको नही देषते जो रा(-) ० क्षस लिये जाता है कहा हो शीघ्र आकर अपनी ० स्त्री को वचा लो ओ हे लक्ष्मण इस समय तू मेरा ० त्राण कर मै सव प्रकार अपराधिन हू मेरी वातो ० पर मत ध्यान कर अरु वचन रूप वाणो से मैने ० जो तुजे मारा सो मेरा अपराध क्षमा कर तू मेरा ० प्राणप्यारा देवर है इस भाति राम के आने के अ (-) ० र्थ रोती हूई सीता को लिये हूए वायुवेग समान ० जव कुछ दूर रावण निकल आया तव सीता तो ० नीचे शिर किये अधर मे जाती ही थी सो एक प(-) ० हाड के उपर देषा कि चार वादर वैठे हैं तद साडी मे ० अपना सव गहना लपेट कर विन्होके आगे उप(-) ० र से गिरा दिया इसलिये कि ये सव मेरा समाचार रामचन्द्र ० से जा कहे ओ विश्वास के लिये यही चीन्ह विन ० को देवे(।) इस अनन्तर कुछ घडी में समुद्र पार हो ० लका मे आ अपने मन्दिर माह रावण आन प(-) ० हुचा ओ अशोक वन मे जा एक किसी एकान्त ० स्थान माह अनेके राक्षसिनीन के वीच मे सीता ० को रष दिया ओ जी मे माता समान मान कर ल(-) ० गा उन्हे पालने(।) इति श्रीरामचरित्रे आरण्यका ० ण्डे सप्तमोध्याय (।) ७ (।) इस प्रकार लका मे आ रा ० क्षस राक्षसिनीन के वृन्द मे अवश हो सीता लगी रहने तो आकुल हो दिनरात हा राम हा राम य(-) ० ही विलाप किया करे अरु विनकी चिन्ता से सव ० सिगार पटार-भूलकर निपट कृश हो गयी ओ ० वदन विनका शुष गया(।)यह तो वहा का वृत्तान्त ० है अरु यहा विस मायावी राक्षस को जो नाना स(-) ० रूप हो शकता था मार कर श्रीरामचन्द्र अपने ० आश्रम को फिरे तो क्या देषते है कि लक्ष्मण ० जी चले आते है ओ दौडते दौडते इनका मुह शुष ० गया है इस्से निपट विकल हो रहे हैं तव जी ही मे ० लगे शोचने कि जो माया की सीता वनाकर मै रष ० आया था तिसका भेद लक्ष्मण नही जानता ति(-) ० स्से जानकर भी अनजान हो इसे छल कर सीता ० के लिये अव ऐसा शोक करू जैसा कोई अज्ञा(-) ० नी मनुष्य होवे ओ नही उदास हो जो मै चुप चा(-) ० प जा घर मे वैठ रहू तो कोटिन राक्षसो का क्यूकर ० वध होगा तिस्से यही है कि कामातुर की भाति ० जानकी का वहुत शोक सन्ताप करू और क्रम ० क्रम विन्हे षोजते षोजते असुरन के स्थान पर ० जा कुल परिवार समेत रावण को मार अपनी रषी ० हूई सीता को आग मे से निकाल लेकर आलस्य ० छोड अयोध्या को चलू ओ यद्यपि इन्ही काजो ० के लिये व्रह्मा की विनती से मै मनुष्य भया हू तथा(-) ० पि इन कामो से सुचित हो कुछ दिन वहा चल कर ० वसू तो माया मनुष्य का मेरा चरित्र सुन कर सहज ० मे लोगन की मुक्ति होगी(।) ऐसे शोचते ही है कि ल(-) ० छुमण समीप आन पहुचे तव राम ने विन से कहा(—) ० अरे भाई तुम मेरी प्राणप्यारी जनकनन्दिनी को ० एकेली छोडकर क्यू चले आये अव हो न हो राक्ष(-) ० सो ने विसे खाया कै[1] उठा ले गये(।)तव सुन कर लक्ष्म(-) ० ण ने रो दिया ओ हाथ जोड कर सीता का दुर्वा(-) ० च्य भाई को सुनाया

---

१. अथवा।

कि महाराज आपकी भाति हा ० लक्ष्मण कर यम राक्षस ने पुकारा तद सुन कर ० सीता लगीं रोने ओ वार वार मुजसे कहने कि तुम ० शीघ्र जा राम को देषो किसी सकट मे वे पडे है मैंने ० उत्तर दिया रामचन्द्र की यह वोली नही है तुम ० अपने घर मे जा सुचित हो वैठ रहो औ झुठमुठ क्यू ० घबराती हो किसी वात की चिन्ता नही इस प्रकार व(-) ० हुत मैने समझाया पर विन्हो न माना उलटे ही ० जो तुम्हारे आगे कहने योग्य नही सो वचन मुझ ० को कहा तद मुजसे रहा न गया आपको ढूढने ० के लिये कान मुद कर तुरन्त मै वहा से निकला(।) ० रामचन्द्र वोले(—) यद्यपि उन्होने तुम्हे कटु वचन क(-) ० हा तथापि तुमने अनुचित किया जो स्त्री की ० वात का विश्वास कर विसे छोड आए अव होन ० हो राक्षसो ने सीता को खाया कै उठा ले गये इसमे कु(-) ० छ सन्देह नही(।) ऐसे वहुत अछता पछता निदा(-) ० न भाई समेत तुरत अपने आश्रम पर आकर ० देषे तो सचमुच सीता नही है तव अति दुखित ० हो लगे विलाप करने कि हा प्राणप्यारी तुम कहा ० गयी आगे की भाति आज आश्रम मे नही हो ० अथवा मुजको वियोग देने के लिये कै ठट्टा के ० लिये कही जा छिप रही हो तो शीघ्र आ प्रगट हो ० जो मेरा जी ठढा होवे(।)इस भाति अति व्याकुल हो ० श्री रामचन्द्र सगरे वन षोजते फिरे पर सीता को ० कहु नही पाया तव निपट आतुर हो सवसे लगे ० पूछने कि हे वनदेविया तुम वताओ मेरी प्राण प्यारी सीता कहा है ओ हे मृगो हे पक्षियो ओ हे वृक्षो तुम जानते हो तो मेरी प्रिया को देषा दो(।) इस ० प्रकार श्री रघुनाथ जी विलाप करते फिरे पै सी(-) ० ता का भेद किसी ने नही वताया(।) महादेव कहते ० है(—)हे भवानी देषो यद्यपि श्री रामचन्द्र सर्वज्ञ है ० ओ सव को देषनेवाले तो भी जानकी को नही ० देषा अरु आनन्द मुरति है ओ अचल तथापि ० स्त्री का वहुत वियोग किया ओ विसके लिये ज(-) ० हा तहा दौडे फिरे अरु निरहकार है आनन्द स्व(-) ० रूप है तद भी सीता को अपनी स्त्री जान कर व(-) ० हुत रोये कलपे सो है क्या कि यद्यपि श्री रघुना (-) ० थ सव माया मोह से निर्लज्ज है तथापि मायाव(-) ० श हे मूढो को तो ससारिक से लगते है पर ज्ञानी(-) ० न के लेखे पूरण व्रह्म है(।) ऐसे कह फिर सदाशि(-) ० व वोले(—) निदान सव जगल ढूढते ढूढते भाई स(-) ० हित जव रामचन्द्र कुछ दूर निकल आये तो वहा ० देषते क्या है कि कही तो पृथ्वी पर टूटा हुआ र(-) ० थ पडा है ओ कहू छत्र कहू वाण कही धनुष ओ ० कहू रथ का जुआ तव लक्ष्मण जी से राम ने क(-) ० हा देषो कोई राक्षस सीता को लिये जाता था ति(-) ० स्से किसी दूसरे ने यहा छिन लिया इतने मे कुछ ०दूर आगे फिर देषा कि पर्वत समान एक प्राणी ० पडा है ओ सारी विसकी देह लोहू से भीग रही है ० तव रामचन्द्र ने पुन लक्ष्मण से कहा देषो भैया ० यह राक्षस है सीता को खाकर अतितृप्त हो सो ० रहा है शीघ्र धनुषवाण मुजे ला दो मै अभी इस ० दुष्ट को मार डालता हू (।) इस भाति जव राम ने कहा ० तवसुन कर जटायु वहुत डर गया ओ यह वचन ० लगा कहने महाराज आपका जय जय होए ० मुजे मत मारिए मै अपने कर्म से आपे मरता हूँ ० तुम क्यू अपयश लेते हो मेरा नाम जटायु है तु(-) ० म्हारी स्त्री को रावण चुराए लिये जाता था तिस ० से दौड कर मैंने वडा युद्ध किया ओ धनुष वाण ० समेत उसके रथ को खड खड कर डाला ओ घो(-) ० डो को मार गिराया अरु विसकी देहको चूर्ण कर दिया(-) ० तव महाक्रुद्ध हो खड्ग लेकर वह दौडा ओ मु(-) ०

जको मारकर धरती पर लोटा दिया अव निकट ० आ के मुझे देखिए मैं प्राण त्याग कर वैकुण्ठ धा(-) ० म को जाऊगा(।) सो सुन विस दीन को जो कठगत ० प्राण हो रहा था समीप जा रामचन्द्र ने हाथो से ० पोछा ओ आषो मे आशू भर भर लगे पूछने क(-) ० हो जटायु वह कौन राक्षस था जो मेरी भार्य्या को ० ले गया हा मेरे काज के लिये तुम मारे गये इस्से ० तुम मेरे हितू भाई हो इस भाति जद राम ने कहा त(-) ० द मुह से लोहू उगलता हूआ धीरे धीरे वह वोला म(-) ० हा पराक्रमी रावण नाम एक राक्षस है सो सी ० ता को लिये यहा से दक्षिण दिश गया इसके आ(-) ० गे कहने का अव मुजे सामर्थ्य नही आपके आ(-) ० गे अभी मैं प्राण त्याग कर मरूगा(।) भाग से इस ० मरण समय तुम्हारा दर्शन भया तुम साक्षा(-) ० त परमात्मा हो माया कर मनुष्य हूए हो अन्त ० काल मे तुम्हे देष कर अव मैं ससार से मुक्त भया० आप कृपा कर निज कर कमलो से तनिक मु(-) ० ज को फिर छू दीजे तो मैं परमपद को जाऊ(।) इत(-) ० नी वात के सुनते ही मुस्कुरा कर रामचन्द्र ने पु(-) ० न विसके अग पर जो हाथ फेरा कि तो ही प्रा ० ण तज पृथ्वी पर वह गिर पडा(।) तव विसके लि(-) ० ये श्री रामचन्द्र ने वहुत विलाप किया ओ भा(-) ० ई वधु समान रोये अरु लछमण से लकडिया ० मगा तुरत विसको फूक दिया ओ भाई समे(-) ० त स्नान कर वन मे से एक मृग मार ला अनेक ० खड कर अलग अलग घासो पर मास छितरा ० दिये ओ कहा कि इन्हे पक्षी सव खाये जो जटा[१] सतु(-) ० ष्ट होए(।) यो कह फिर रघुनाथ जी वोले हे जटायु ० सव लोग कौतुक देषे तू मेरा स्वरूप हो मेरे धाम ० को जा(।) इतने मे सुन्दर शरीर धारण कर विमा(-) ० न पर चढ तेज मे सूर्य समान हो वीच अधर मे ० आ राम के साम्हने वह खडा भया ओ शखचक्र ० गदा पद्म लिये शिर मे मुकुट धरें पीताम्बर प(-) ० हने साक्षात ईश्वर स्वरूप वन औ वैसे ही विष्णु ० के चारो गणो सहित वडे वडे सिद्धो से पूजित हो ० हाथ जोड लगा राम की स्तुति करने इस प्रकार ० से कि विन परव्रह्म रामचन्द्र को मैं वारवार प्रणा(।) ० म करता हू ओ वे ही मेरी शरण है जो सकल स(-) ० सार की उत्पत्ति पालन प्रलय के कारण है अ (-) ० रु जिसके गुणो का कुछ पारावार नही मिलता ० ओ जो आदि अनन्त है लक्ष्मी की कृपा दृष्टि ० से इन्द्र व्रह्मादिक के दुख दूर करते है मनवाछि- ० त फलदायक है तीनो भुवन मे एक सुन्दर हैं ० अशरण शरण है ससार रूप वन के दावान(-) ० ल है शैकरो सूर्य से प्रकाश हैं सुख के सागर है ० दया की खानि है सकल दानव को विनाशन हा(-) ० रे है श्याम सरीर है ससार से उदास हूए मुनि(-) ० न को सदा दर्शन देनेवाले हैं गौरी लक्ष्मी के ० हृदय मे सव दिन वसनहारे है गोवर्द्धनधारी है ० कोटीन कदर्प्प से सुन्दर है यतीन के मनभाव(-) ० न है ओ जो मनुष्य परधन परस्त्री को नही चा (-) ० हते पर के गुण धन देष कर जी से हर्षित होते ० है ओ सवके हितू है तिन साधुन से जो सदा से (-) ० वित है विन रघु-नाथ को मै पुन पुन नमस्कार ० करता हू (।) इस प्रकार जब जटायु स्तुति कर चूका ० तव प्रसन्न होकर श्री रामचन्द्र वोले(—) अछा अ(-) ० व तू मेरे धाम को जा तेरा किया हूआ इस स्तो(-) ० त्र को जो नर चित्त दे पढेगा ओ लिख लेगा ० वह अन्त समय मुजमे आ मिल जायगा

---

१. जटायु।

इ (-) ० स भा' विनकी बातें सुन वह बहुत हर्षाना ओ ० विन से विदा हो परमधाम को गया० इति श्री ० रामचरित्रे अरण्यकाण्डे अष्टमोध्याय (।)८(।)० जद जटायु जा चूका तद उदास होकर राम ल(-) ० क्ष्मण वहा से किसी और वन मे गये ओ फिर सी(-) ० ता को लगे ढूढने कि इतने मे चार चार कोश के ० दोनो हाथ पसारे वीच वाट पर वैठा हूआ स(-) ० व जीव जन्तु को मारने वाला विन आष पाव का ० ओ ऐसा अद्‌भुत सरूप जिसका वीच छाती मे ० मुह कवन्ध नाम एक राक्षस देषने मे आया ० और फीरते फीरते विसके वाहो के मध्य मे भ्रम ० से दोनो भाई जा फसे(।) जव नीके जाना कि यह दा(-) ० नव है तव हस कर रामचन्द्र ने कहा(—) देषो लक्ष्मण ० विन शिर पाव का यह राक्षस है छाती मे इस ० का मुख है हाथो से जिस जिसको पाता है विसे ० खाता रहता है हम भी इसके हाथो मे आ फसे यहा ० से अन्यत्र जाने का कहू वाट नही देषते अव कहो ० क्या करना (।) कही ऐसा न होए कि हमलोग को ० यह खा डाले(।)लक्ष्मण जी वोले(—)महाराज इसका ० और कुछ विचार नही है हम दोनो एक एक कर इसके दोनो ही हाथ काट ले ० इसी मे कुशल है (।) इस भाति आपस मे वतरा खड्ग ० ले रामचन्द्र ने दहना ओ लक्ष्मण ने वाया तुर(-)० न्त विसका हाथ काट डाला तव तो वह वहुत च(-) ०कित हूआ ओ लगा पूछने(—)अरे भाइओ सच ० कहो तुम दोनो कौन हौ मेरा हाथ काटनेवाला ० इस लोक मे तो क्या देवताओ मे भी कोई नही ० है(।) तव राजीव नयन रामचन्द्र हस कर वोले(—) अ(-) ० योध्या के पति दशरथ नाम एक वडे राजा हैं ति(-) ० न्ही का मै पुत्र हू राम मेरा नाम है ओ यह लक्ष्म(-) ० ण मेरा भाई है राजा जनक की पुत्री सीता ना(-) म जो तीनो लोक मे एक सुन्दरी गिणी जाती ० है मेरी स्त्री थी विसको घर मे छोडकर हम दो (-) ० नो भाई अहेर खेलने को गये तद हमारे पीछे ० कोई राक्षस विसे उठा ले गया उसी को षोजते षो(-) ० जते इस महावन मे हम आये जव तुम्हारे वा(-) ० हो के घेराव मे पडे तव प्राण वचाने के लिये हम ० ने तुम्हारे दोनो हाथ को काटा अव अति अद्‌भुत (-) ० स्वरूप तुम कौन हो यह हम जाना चाहते है(।) ० इस प्रकार जब राम ने कहा(,) कवध वोला(—)कृपा(-) ० निधान मै धन्य हू जो निकट आकर आपने द(-) ० र्शन दिया अव मै कृतारथ हूआ(।) यो कह फि(-) ० र लगा अपना समाचार विन्हे सुनाने(—)महा(-) ० राज मै विस जन्म मे सकल गधर्वों का राजा ० था अपने रूप यौवन के मद से मात कर सव ० लोको मे फिरता था ओ मेरी तपस्या से सतु(-) ० ष्ट हो व्रह्मा ने मुझको वर दिया था कि जा तू कि(-) ० सी से न मारा जायगा इस्से और भी मै चौकस०था निदान एक दिन अष्टावक्र मुनि को देषकर ० मै हस उठा तव क्रुद्ध३[२] होकर उन्हने मुझको श्राप ० दिया(—)रे मतिमन्द जा तू राक्षस हो सो सुनकर मै ० विनके पावो पर जा गिर पडा तव दयावन्त हो फि(-) ० र वे वोले त्रेता युग मे दशरथ के ह्या आप नाराय(-)० ण अवतार लेंगे तद योजन भर के लम्वे लम्वे ते(-) ० रे दानो हाथो को आकर वे काटेगे तव इस श्राप से ० मुक्त हो आगे की भाति फिर गधर्वों का राजा तू ० होगा (।) इतनी वात के

---

१. भाँति। २ 'द्ध ३' से सकेतित है कि मूल की तीसरी पक्ति में चिह्नित स्थान पर 'द्ध' छूट गया है; 'द्ध' अलग से मूल प्रथम पंक्ति के ऊपर मुद्रित है।

सुनते ही महा भयावन मै रा(-)० क्षस हो गया फिर' कुछ दिन के बीतें एक वेर कोप ० कर इन्द्र पर मै दौडा तव वे वहुत क्रुद्ध हूए अरु वज्र ० से ऐसा मुझे मारा कि शिर समेत मेरे दोनो पाव ० कट कर मेरी छाती मे जा लटक गये पर ब्रह्मा का ० वर था विसके वल से मै मरा नही तद मेरी दशा ० देष निपट दयावश हो सव देवताओ ने मेरे लिये ० इन्द्र से कहा(—)महाराज यह दीन मुख विन किस प्र(-) ० कार भला जीवेगा इस्से जिसमे खाने पीने का कुछ ० दुख न इसे होवे सो उपाय कीजे तव विन्हने मुज ० से कहा जा तुजे छाती ही मे मुख होए ओ चार चा(-) ० र कोश के लम्वे तेरे दोनो हाथ होवे(।) ऐसे कह देव(-) ० ताओ समेत सुरपति अपने पुर को गया अरु मै ० वैसा होकर यहा वस रहा ओ हाथो से इस वन के ० जीव जन्तुन को पकड पकड नित्य लगा खाने(।) अ(-) ० व मेरे हाथ आपने काट डाले तो वडा अनुग्रह की (-) ० या अव मै प्राण त्याग करूगा तिस्से कृपाकर एक ० गडहा खन इन्धनो से भर विस पर रष आप मुझ० को जला दीजे तो आग मे भस्म हो अपना पहला ० सरूप धारण कर मै तुम्हारी स्त्री का भेद वताऊँ(।)इ(-) ० तनी बात के सुनते ही रामचन्द्र ने लक्ष्मण से तुर(-) ० न्त एक गडहा खनवाया ओ काठो से भर विसमे ० विसे रष आग लगा कर जला दिया तव तो उस दे (-) ० ह से निकल कन्दर्प समान सुन्दर शरीर प. आगे ० की भाति गन्धर्व वन नाना अलकारो से भूषित हो रा(-) ० मचन्द्र के आगे आ वह खडा भया ओ दण्डवत प्र(-) ० दक्षिणा कर पहले इतना कह लिया कि महाराज ० अव मै कुछ आपकी स्तुति किया चाहता हू त(-) ० व गिडगिडा कर यह वचन लगा विनसे कहने महा(-) ० राज तुम पूरण व्रह्म हो तुम्हारा आदि अन्त नही ० मिलता ओ यद्यपि आपका सूक्ष्म रूप ऐसा अ(-) ० व्यक्त है कि न तो मन से देष पडता न वचन से क(-) ० हा जाता पर स्थूल जो तुम्हारा रूप है वि(-) ० स के विचार से यही ठहरता है कि व्रह्माण्ड मे जितनी व(-) ० स्तु है सो सव तुम ही हो ओ लोक तुम्हारे अग है ति(-) ० न मे पाताल तुम्हारा तलवा है महातल तुम्हारी ० ऐडिया है और रसातल तलातल तुम्हारी घुट्टि(-) ० या है सुतल वितल यह तुम्हारी पिडडी ओ जाघ ० है ओ हे रामचन्द्र तुम्हारा जघन पृथ्वी है ओ नाभी ० आकाश तेज तुम्हारी छाती है महर्लोक जन ० लोक सत्यलोक ये ही तुम्हारा गला वदन ओ ० शिर है इन्द्रादि लोकपाल वाह दिशा कान ० अश्विनीकुमार दोनो नाक अग्नि मुख सूर्य ० आष मन चन्द्रमा ओ तुम्हारी भोह की चाल ० यही काल है वुद्धि तुम्हारी वृहस्पति है अहका(-) ० र रुद्र ओ वेद ही तुम्हारे वचन है नक्षत्र दात ओ ० सव को मोहनहारी माया तुम्हारी हसी है कन(-) षी चलाना ही सृष्टि है धर्म तुम्हारा पीठ है नि(-) ० मेष अनिमेष यही रात ओ दिन हे सातो समुद्र ० ही पेट है नदी सव तुम्हारी नाडिया है वृक्ष औ(-) ० षधीय ही तुम्हारे रोम है वृष्टि वीज हे ओ महि(-) ० मा ज्ञान यही तुम्हारा सामर्थ्य है जो नर तुम्हारे ० इस स्थूल शरीर का ध्यान करता है वह सहज ० मे मुक्त होता है इस्से हे रामचन्द्र मै तुम्हारे स्थू(-) ल ही सरूप को सदा सुमरता था पर अव से वि(-) ० से छोड कर इस श्याम सरूप का ध्यान करूगा ० जो धनुष वाण लिये जटा वल्कल धारण किये ल(-) ० क्ष्मण को सग लिये सीता को ढूढता फिरता ०

---

१ 'फिर' अनावश्यक है।

है ओ हे महाराज यह तुम्हारा सरूप मेरे हृदय ० मे सदा वसे कि जिसका ध्यान पारवती सहित ० आप सदाशिव सदा किया करते है ओ जो म(-) ० नुष्य काशी मे जा मरते है तिनको राम राम यह ० मन्त्र उपदेश कर तार लेते है(।) इस्से हे जान ० कीनाथ तुम निश्चय परमात्मा हो माया से मो ० हित मनुष्य तुम्हे नही पहचान शक्ते तुम मे(-) ० रा त्राण करो मै तुमको वार वार प्रणाम करता हू ० इसलिये कि तुम्हारी माया मे फिर न कभू जा मै ० फसू(।) इस प्रकार जव गधर्व ने कहा तव श्री राम ० चद्र प्रसन्न हूए ओ वोले हे गधर्व मै तेरी स्तु(-) ० ति से वहुत सतुष्ट भया तू अव मेरे विस परम ० स्थान को जा कि जहा योगियो का गम्य है ओ ते(-) ० रे इस स्तोत्र को मन देकर जो नर पढेगा वह ० ज्ञान पा मुक्ति धाम को जावेगा ओ माया मोह ० मे फिर न कभी फसेगा ० इति श्रीरामचरित्रे ० अरण्यकाण्डे नवमोध्याय (।) ९ (।) इस प्रकार जव० रामचन्द्र ने कहा तव गधर्वराज वोला (——) महाराज ० इहा से थोडी दूर आगे शवरी नाम ऐक भिह्‌ल[1] (-) ० न रहती है वडी भाव भक्ति कर आपके चरण क(-) ० मल का ध्यान कर रही है विसके आश्रम पर जा(-) ० इए सीता का सव भेद आपको वह वतावेगी (।) ० यो कह राम से वह विदा भया ओ तेज मे सूर्य ० समान विमान पर चढ विष्णुधाम को गया त (-) ० द वाघ सिह आदि वन जन्तुन से निपट डरा ० वन विस महावन को छोडकर धीरे धीरे श्रीरा (-) ० मचन्द्र जी शवरी के स्थान को चले(।) जव समी(-) ० प जा पहुचे तव उनको देष कर निपट हर्षित ० हो तुरन्त वह उठ खडी हूई ओ आगे जा चरणो ० पर गिर पडी और मारे आनन्द के आषो मे ० आशू भर क्षेम कुशल पूछ आश्रम के भीत (-) ० र ले जा आसन पर विठला भक्ति से वुनके पाव धो ० चरनोदक लिया अरु विस जल को अपने सग(-) ० रे आग पर छिडका ओ सुगध सुगन्ध फूल ला ० विधि से दोनो भाई को पूजा और अमृत समा(-) ० न मीठा मीठा फल जो उनके लिये चुनचुन कर ० आगे से ला रष्षा था भोजन कराया(।) जव खा पी ० कर लक्ष्मण समेत सुचित हो श्रीरामचन्द्र वैठे ० तव हाथ जोड नम्र हो शवरी यह वचन विनसे ० लगी कहने(——)महाराज इस आश्रम मे महर्षि लो(-) ० ग आगे रहते थे वे ही मेरे गुरु थे मैने विनकी से(-) ० वा टहल कै सहस्त्र वर्ष तक की अव वे लोग व्र(-) ० ह्म पद को पहुचे पर जाने की वेरिया इतनी वा(-) ० त मुजे कह गये कि मन को स्थिर कर अभी तुम ० यहा ही रहो अविनाशी परमात्मा राजा दशर(-) ० थ के ह्या अवतरे हैं राक्षसन को मारने के लि(-) ० ये ओ ऋषिन की रक्षा के निमित्त यहा आ(-) ० वेगे तुम विनके ध्यान मे तत्पर रहो अभी आ ० कर चित्रकूट पर वे वसे है जव तलक न उनका ० आगमन होवे तव तलक तो तुम अपने श(-) ० रीर को रष्षो जद वे यहा आवेगे तद विनका ० दर्शन कर भस्म हो विष्णुधाम को जाइओ (।) ० तव हर्षित हो मैने उनकी वात अगीकार की ० ओ तुम्हारे ध्यान मे मगन हो लगी तुम्हारा ० वाट निहारने अव विन्हो का कहा मुझे फ(-) ० ला(।) आपका दर्शन वडे वडे ऋषि लोग भी ० नही पा शक्ते मै किस गिणती मे हू क्यू ० कि एके तो मै स्त्री दूसरे मूढ तीसरे नीच जा(-) ० ति मे मेरा जन्म तिसको तुमसे

---

१. प्रतिलिपिकार ने स्पष्ट प्रतिलिपि नहीं की है; 'मिहजन' या भिह्‌लन' पढ़ा जा सकता है, परपरानुसार दूसरा ही ठीक प्रतीत होता है। ——स०

साक्षात पुर(-) ० ण व्रह्म का दर्शन होवे यह वहुत आश्चर्य्य ० है(।) महाराज मै क्या करू मुजे इतना सामर्थ्य ० नही जो आपका कुछ स्तुति करू पर आप द(-) ० यालु है मुझसे प्रसन्न हूजिऐ(।) रामचन्द्र ने उत्त(-) ० र दिया न तो मेरे भजन मे स्त्री कारण है न पुरुष ० ओ न जाति न आश्रम मेरे भजन मे भक्ति का(-) ० रण है उस विन कितने ही यज्ञ दान तपस्या को(-) ० ई करे वेद पढे पर चाहिए कि मेरा दर्शन पा शके सो ० कभी होने का नही(।) यो कह फिर वोले (—) मै भक्ति व(-) ० श हू तिस्से थोडे ही मे विसका साधन मै कहता ० हू तुम चित्त देकर सुनो(।) एक तो सत्सग ही भक्ति ० का प्रथम साधन है दूसरा मेरी कथा सुनना ओ ० सुनावना तीसरा मेरे गुण का कीर्त्तन चौठा उप(-) ० निषत् का व्याख्यान पाचवा गुरु की सेवा ओ मे(-) ० रे तुल्य विन्हे समझना पुण्य काजो मे लवलीन ० होना हिसा द्वेष न करना ब्रह्मचर्य से रहना यो(-) ० ग कामना नेम आचार सन्तोष तपस्या ओ ईश्व(-) ० र का ध्यान नित्य करना छठा मेरी पूजा मे तत्पर र(-) ० हना सातवा मेरे मत्र की उपासना आठवा मे ० रे भक्तजन को अधिक पूजना इन्द्रियो को रो(-) ० कना सव से उदास रहना सकल जीव जन्तु मे ० मुझे देषना नवा व्रह्मविचार ये नव प्रकार के भ(-) ० क्ति साधन क्या स्त्री क्या पुरुष क्या किसी नीच ० से भी नीच को है विसी को वह भक्ति होती है कि ० जिसके होते ही अनुभव ज्ञान पा विसी जन्म मे ० प्राणी मुक्त हो जाता है(।)तिस्से मोक्ष का कारण ० केवल भक्ति ही है औ यद्यपि नव प्रकार के भ(-) ० क्ति साधन है पर प्रथम साधन जिसे हूआ उ (-) ० सको क्रम क्रम भक्ति ज्ञान मुक्ति सव होते है ० ओ तुम तो मेरी भक्ति पा कृतार्थ हो रही हो य(-) ० ही सुनकर मै तुम्हारे पास आया अव मेरे दर्श(-) ० न से तुम मुक्त हो चुकी इसमे कुछ सन्देह नही(।) यो ० कह फिर रामचन्द्र ने पूछा(—)जो तुम जानती हो तो ० कहो मेरी प्राणप्यारी सीता कहा है ओ कौन वि(-) ० न को ले गया (।) शवरी वोली(—) महाराज तुम सर्वज्ञ ० हो सव जानते हो पर लोक की यह चलन है इस ० कारण पूछते हो तो अछा सुनिऐ सीता को रा(-) ० वण हर ले गया और अव वे लका मे है जो उनको ० लाया चाहते हो तो यहा से थोडी दूर पर पम्पा ना(-) ० म एक सरोवर है विसके निकट ऋष्यमूक नाम ० एक वडा सा पहार है उस पर चार मत्री सग लिये ० सकल वादरन के राजा ओ वडे पराक्रमी सुग्रीव ० रहते है ओ ऋषि के भय से वाली का वहा गम्य न (-) ० ही है आप वहा जाकर विनसे मित्रता कीजे वे स(-) ० व तुम्हारा कार्य करेगे पर हे कृपानिधान एक क्षण ० भर आप खडे रहीऐ मै तुम्हारे आगे अपना श(-) ० रीर भस्म कर परमपद को जाऊगी ऐसे कह स(-) ० चमुच वह आग मे तुरत कूद पडी ओ पाच भौ(-) ० तिक देह को जलाकर रामचन्द्र के प्रताप से दुर्ल (-) ० भ मुक्तिधाम को गयी(।) महादेव कहते है पार्वती ० से कि जो भक्तवत्सल श्री रामचन्द्र प्रसन्न होवे ० तो क्या नही हो शक्ता है यहा तक कि महाअधम ० जाति शवरी सो भी मुक्त हूई और जो उत्तम व्रा(-) ० ह्मण लोग हैं ओ रामचन्द्र के भक्त है वे परमगति पा ० वे तो क्या आश्चर्य है इस्से ज्ञानी लोगन को ० उचित है कि श्याम सुन्दर श्री रामचन्द्र को सदा ० हृदय मे सुमरे ओ विनके चरणकमल की भ(-) ० क्ति मे जो गति मुक्ति देन हारी है नित्य तत्पर र(-) ० हे० इति श्री रामचरित्रे अरण्यकाण्डे दशमो ० ध्याय (।) १०(।) समाप्त (।) जव शवरी वैकुण्ठधाम ० गयी लक्ष्मण समेत श्री राम

चन्द्र जी धीरे धीरे ० वहा से पपातीर आये ओ अति सुन्दर विस स(-) ० रोवर को जो कोशभर का लम्बा था अरु अथा(-) ० ह जल से भरा और वर्ण वर्ण के कमल कुमुद ० जिसमे फूल रहे थे हस सारस वक्रवाक[1] पन(-) ० डूवा वकुला आदि पक्षी सव अति सोहावन वो(-) ० लिया वोल रहे थे तीरो मे नाना प्रकार के वृक्ष फ(-) ० ले थे औ सज्जन का मन समान अति निर्मल ० जिसमे जल था देषकर दोनो भाई वहुत चक्रि(-) ० त भये औ पथ का श्रम मिटावनहार विस का शीत(-) ० ल पानी पी ठढे हो ऋष्यमूक के पास जा धनुष वाण ० लिये जटा वल्कल धारण किये लगे इधर उधर ० फीरने ओ नाना प्रकार के वृक्षो की अरु विस प(-) ० हार की अद्‌भुत शोभा लगे देषने (।) इतने मे चार मत्री ० समेत उस पर्वत के उपर सुग्रीव जो वैठे थे सो इ(-) ० न को जाते हूएे देष कर मारे डरके और भी गिरि के ० उपर चढ गये अरु हनुमान से कहने लगे (——) सखा देषो ० तो ये दोनो वीर कौन है तुम व्राह्मण का रूप धर वि(-) ० द्यार्थी वन समीप जा इन्हो से कुछ वातचीत करो ० और देषो इनके जी मे क्या है जो तो ये मन के षो(-) ० टे होवे तो उगली से सैन हमे करिओ अरु नही ० सीधे होएे तो हमारे ओर मुह कर तनिक हस दी(-) ० जिओ (।) इतने वचन के सुनते ही विद्यार्थी वन कर ० हनुमान जी श्री रामचन्द्र के पास चले आये और ० दण्डवत कर नम्र हो यह वचन लगे विनसे कह(-) ० ने कि सव पुरुषन मे वडे श्रेष्ठ ओ वीर तुम दोनो ० जवान कौन हो ओ अपने तेज से सूर्य की भाति ० चारो दिशा प्रकाश करते हूए किस काज के लि(-) ० ये यहा आये मेरे जी मे तो यह प्रतीत होता है कि ० तीनो लोक को सृजने वाले तुम आदिपुरुष हौ मा(-) ० या कर मनुष वन आनन्द विहार करते फिरते हो ० ओ धरती के भार उतारने के लिये प्रजा लोग को ० पालने के निमित्त क्षत्री सरूप हो मानो नारा य(-) ० ण आ अवतरे ऐैसे मुजे लक्षित होते हौ औ ० जगत की उत्पत्ति पालन प्रलय यह तो हसी मे ० करने को उपस्थित हौ अरु सदा आत्मवश हो ओ ० घट घट व्यापी हौ सव को ससार मे डालनेवाले ० साक्षात ईश्वर हो और नही तो नर नारायण अ(-) ० वतार ले ससार मे फीरते हौ यह मुजे भासित हो ० ता है (।) सुनकर श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि भै(-) ० या इस विद्यार्थी को देषो मुझे जान पडता है कि ० इसने व्याकरण नीके पढा है क्यूकि इसके मुह से ० जो वचन निकलता है सो शुद्ध ही निकलता है (।) यो ० कह फिर विसे अपना परिचय लगे देने कि मै द(-) ० शरथ का पुत्र रामचन्द्र हू ओ ये लक्ष्मण मेरे छो(-) ० टे भाई है पिता की आज्ञा पा सीता नाम अपनी ० स्त्री समेत घर से आकर मै दण्डकारण्य मे वसा ० सो वहा से कोई राक्षस सीता को हर ले गया इस ० कारण विसे ढूढते ढूढते हम दोनो भाई यहा आ(-) ० ये अव तुम कौन हो और किसके छात्र हो यह मु(-) ० झे सुनाओ (।) वह वोला कि सकल वानरो के अधि (-) ० पति ओ वडे ज्ञानवान् सुग्रीव नाम एक राजा है ० सो चार मत्री समेत इस पहार के उपर रहते हैं ओ ० वाली नाम उनका एक वडा भाई है विस महापापी ० ने वुनकी स्त्री को छीन लिया है ओ घर से विन ० को निकाल दिया है इस कारण वाली के डर से भा(-) ० ग कर अव वे ऋष्यमूक पहार पर रहते है (।) मै वि(-) ० नका मत्री हू हनुमान मेरा नाम विख्यात है अरु ०

---

१ चक्रवाक।

वायु का मै पुत्र हूँ अजनी मेरी माता है(।) यो कह ० फिर हनुमान जी वोले(—)महाराज जो सुग्रीव से ० आप मित्रता कीजे तो जो तुम्हारी स्त्री को हर ले ० गया है विसको मारने के लिये वे आपके सहाय ० होगे जो यह वातरूचे तो आइए मेरे साथ विन ० के पास चलिए मै अभी वहा जाता हू(।) रामचन्द्र ० ने कहा(—) मै भी विनसे मित्रता करने को आया हू ० अरु विन मित्र का जो कुछ काम काज होगा सो ० मै भी करूगा इसमे तुम कुछ सदे[1] मत करो तव ह(-) ० नुमान ने अपना सरूप देषाया ओ कहा अछा ० अव आओ मेरे काधो पर चढो जहा वाली के ० भय से मत्री समेत पहार के उपर सुग्रीव है वहा ० मै जाता हू(।) इतनी वात के सुनते ही राम लक्ष्मण ० विस के काधो पर चढ गये तद सभाल कर ऐसा ० वह उछला कि एक पल मे पर्वत के उपर जा पहु(-) ० चा ओ राम लक्ष्मण को एक पेड की छाह मे रष क(-) ० र आप सुग्रीव के पास जा हाथ जोड यह वचन ० कहने लगा(—)महाराज अव तुम्हारा भय गया राम ० लक्ष्मण आये चलो उठो विनसे मिलो मैने तुम ० से मित्रता होने की सव बात विनसे की है अव इत(-)० ना ही है कि अग्नि साक्षी कर आप शीघ्र विन से वचा(-) ० वन्ध कीजे[2] (।) इस भाति जव पवनकुमार ने कहा ० तव राजा सुग्रीव वहुत आनन्द मे मगन भये ० ओ राम पास तुरन्त चले आये और दण्डव[3] ० प्रणाम कर गले लगाके विनसे मिले अरु अप(-) ० ने हाथो से पेड की डाट तोड वैठने को उन्हे आ(-) ० सन दिया विसी प्रकार हनुमान ने लक्ष्मण ० को ओ लक्ष्मण ने सुग्रीव को वृक्ष की शाखा वै(-) ० ठने को आसन दिया(।) जव महा हर्षित होकर स(-) ० व वैठे तव जिस प्रकार से वनवास भया ओ सी(-) ० ता का हरण हूआ सो सव राम का वृत्तान्त एक ० ओर से लक्ष्मण ने सुग्रीव को सुनाया (।) तद ० विन्हने रामचन्द्र से कहा(—)महाराज आप कु(-) ० छ चिन्ता मत कीजे सीता का षोज मै करूगा ० ओ जिसमे तुम्हारा शत्रु का वध होगा वैसी ० आपकी सहायता करूगा(।) यो कह फिर सुग्री ० व वोला कि एक दिन जो कुछ मैने देषा सो तु(-) ० म सुनो मै कहता हू कि एक वेर मत्रीन समेत ० पहार के उपर और दिनो की भाति जो मै जा वै (-) ० ठा तो ही राम राम कर पुकारती हूई एक महा ० सुन्दरी स्त्री को आकाश पथ मे होकर कोई राक्षस लिये जाता था सो पर्वत के उपर हमे दे(-) ० ष के उस नारी ने अपना आभरण सारी मे ल(-) ० पेट कर तुरत हमारे आगे गिरा दिया और ० आप विसी प्रकार दानव के साथ चली गयी ० तद गहना समेत विस कपडे को लेकर मैने क(-) ० न्दरा मे रष दिया उसे देषिये तो आपका है कै[4] ० नही ऐसे कह विस गठरी को मगाकर तुरत ० सुग्रीव ने राम के आगे रष दिया वुसे देषते ही ० रामचन्द्र ने छाती मे लगा लिया और वार वार ० हा सीता हा सीता कर ऐसे रोने पीटने लगे कि ० जैसे कोई अज्ञानी मनुष्य होवे तव लक्ष्मण ० ने उन्हे वहुत समझाया ओ कहा महाराज ० आप क्यू इतना खेद करते है राजा सुग्रीव की ० सहायता से रण मे रावण को मारकर शीघ्र ० आप सीता को पावेंगे(।) इसी भाति सुग्रीव ने ० भी कहा(—)हे रामचन्द्र मै प्रतिज्ञा करता हू कि ० सग्राम मे रावण को वध कर जानकी को मै ० तुम्हे ला दूगा इतने मे विन दोनो के आगे ह(-) ० नुमान

---

१. सदेह। २. प्रतिज्ञा कीजिए। ३. दण्डवत्। ४ या।

जी आग लहराकर ले आये तव अ(-) ० गिन साक्षी कर हाथ पसार सुग्रीव ओ रामचन्द्र ० उठ कर मिले ओ भरशक्य परस्पर सहायता के ० लिये आपस मे वचावध किया[1] इस अनन्तर ० राम के निकट सुग्रीव जा वैठे ओ नम्र होकर ० अपना वृत्तान्त लगे विन्हे सुनावने इस प्रका(-) ० र से कि हे सखा अव मेरा समाचार तुम सुनो ० कि जो वाली ने आगे किया था सो यह है कि म(-) ० यासुर का वेटा मायावी नाम एक महा अह(-) ० कारी दानव था वह पराक्रम के मद से मात ० कर एक दिन किष्किधा नाम नगरी के समी(-) ० प गया ओ सिंह सा गर्ज गर्ज वाली को वाहरे ० ही से लगा ललकारने कि जो तू वीर है तो आ ० मुझसे अव लड(।) तव वाली से सहा नही गया ० तो मारे क्रोध के लाल लाल आषे कर तुर(-) ० न्त विसके पास जा पहुचा ओ जाते ही एक ० ऐसा दृढ मुक्का उसे जडा कि विस मार से व्या(-)कुल होकर अपनी कन्दरा की ओर वह भागा ० तद वाली ने विसे रगेदा और मै भी उसके साथ ० दौडा(।) जव हम दोनो भाई समीप जा पहुचे तव कद ० रा मे वह घुस गया तव रिसियाकर वाली ने मु(-) ० जसे कहा तुम तो वाहर खडे रहो मै भीतर ० जा अभी इसे मार डालता हू यो कह विस गुहा ० के भीतर आप भी पैठ गया सो हे महाराज ए(-) ० क मास हो गया तव तलक भी वह नही निक(-) ० ला ओ मास के वीते पर विस कन्दरा मे से वहु(-) ० त लोहू लगा निकलने विसे देषकर मैने जा (-) ० ना कि हो न हो वाली अव मारा गया निदान ० वहुत अछता पछता उस कन्दरा की द्वार पर(-) ० एक शिला रषकर मै अपने घर मे आया ० तव कन्दरा मे राक्षस ने वाली को निश्चय मा(-) ० रा यह सुनकर विसके मत्री लोग वहुत दुखि भ(-) ० ये ओ यद्यपि मै नही चाहता था तथापि वि(-) ० न्होने मुजी को राज्य का तिलक दिया तो कुछ ० दिन तक मैने राज्य किया(।) इस अनन्तर देषता ० क्या हू कि वाली आन पहुचा और आते ही म(-) ० हा क्रुद्ध होकर वहुत मुझको धमकाया ओ ० कठिन कठिन गालिया दी और यहा तक कि ० एक घुमा मुजे मारा तद मारे डर के विस नगर से० मै निकला ओ भागा भागा सव लोक मै फिर० आया पर अपना वचाव कहू नही देषा तव ० ऋष्यमूक पर ऋषि के श्राप के भय से वाली ० नही आ शकत्ता ह[2] यह जान जानकर इस पहार प(-) ० र मै आ रहा तद से वह महा अधम वाली मेरी स्त्री ० से आप भोग करता है वुस लाज से मै निपट ० व्याकुल था ओ स्त्री समेत घर द्वार सव मुझ ० से छूटे इस चिन्ता से अति आतुर(।) पर अव ० तुम्हारे चरण कमल के यहा आने से मेरे स(-) ० व कष्ट गये और मै वहुत सुखी हूआ इस भा(-) ० ति मित्र का वृत्तान्त सुनकर श्रीरामचन्द्र नि ० पट पीडित भये ओ यह वचन कहने लगे(—) मित्र ० तुम किसी बात का सन्देह मत करो तुम्हारी ० भार्य्या को जिसने हर लिया है विस वैरी को मै ० शीघ्र मारूगा(।)इस प्रकार जव राम ने प्रतिज्ञा ० की तव सुग्रीव वोले महाराज जो कहते हो ० सो करोगे पर वाली वडा वलवान है किस प्र(-) ० कार विसे मारोगे वह तो देवताओ से भी नही ० मारा जावेगा(।) वुसका पराक्रम सुनो मै तुम ० से कहता हू कि एक समय महा भयावन व(-) ० डा सा भैसा वर कर[3] दुदुभी नाम महावली ० दानव किष्किधा मे रात को आया ओ युद्ध के

---

१. प्रतिज्ञा की। २. है। ३. बनकर?।

लिये वाली को पुकारा सो सुन कर विस्से ० सहा नही गया तो निपट रिसिया कर तुरत ० वहा चला आया ओ आते ही दोनो सिह ० पकड कर भेंसे को पृथ्वी पर दे पटका ओ ए(-) ० क पाव से विसकी देह दवा दोनो हाथो से विस ० की मुडी को मरोर कर ऐसा खेंचा कि तन से ० वह अलग हो गया तद हाथ से तौलकर वि (-) ० से ऐसा फेका कि वहा से चार कोश पर मतग मु(-) ०नि का आश्रम था विसके समीप वह माथ ० जा गिरा ओ वुस ऋषि के सगरे स्थान मे रक्त ० के छीटे पर गये सो देष क्रोध से मूर्छित हो म(-) ० तग मुनि ने वाली को जा कहा अव से जो तू मे(-) ० रे पर्वत पर कभी आवेगा तो इसी भाति तेरा भी ० शिर कट जावेगा ओ तू मर जायेगा इस प्रकार ० जव ऋषि ने श्राप दिया तव से ऋष्यमूक पर वा(-) ० ली नही आ शकत्ता(।) यह जान निर्भय होकर ० यहा मै रहता हू आप दुदुभी का शिर जो पर्वत ० समान है चलकर देषिए जो तो उठाके विसे फे(-) ० क शको तो मै जाना कि वाली को अवश्य तु(-) ० म मारोगे(।) यो कह सुग्रीव ने राम का हाथ पक(-) ० ड लिया ओ पहार के पास जहा वह माथ पडा हू(-) ० आ था तहा वुन्हे ले जाकर विस शिर को देषा दि(-) ० या तव देष कर श्री रामचन्द्र मुस्कुराने ओ पाव ० के अगुठे से उठाकर विसे ऐसा फेका कि दश यो(-) ० जन पर वह जा गिरा सो देष के लोग सव चकृत ० ये[1] ओ मत्रीन समेत सुग्रीव ने वहुत धन्य धन्य ० किया ओ भक्तन के हितकारी रामचन्द्र से पुन ० यह वचन कहा हे महावीर ये तार के सातो पेड ० जो साम्हने दृष्ट आते है वडे सारिल[2] है ऐक ऐक कर ० हिला के सहज मे विन पत्ते के इनको वाली करता ० है[3] जो एक ही वाण से इन सातो को आप छेद डा ० लिये तो मुजे और भी वडा विश्वास होए कि हा ० वाली का विनाश निश्चय तुम कर शकत्ते हो(।) इत(-) ० ने वचन के सुनते ही रामचन्द्र ने तुरन्त धनुष ० उठा लिया ओ विस पर रष कर ऐसा एक वाण मा(-) ० रा कि विन सातो पेडन को काट फिर वह वाण आ(-) ० कर राम की तूणी[4] मे पैठ गया तव सुग्रीव वहुत च ० कित भये ओ निपट हर्षा कर यह वचन कहने ल(-) ० गे(——)महाराज तुम देवता हौ ओ जगत के नाथ प(-) ० रमात्मा हो इसमे कुछ सन्देह नही मैने विस ज(-) ० न्म मे शायद वहुत पुण्य किये जो आपसे सग (-)हू ० आ ससार के आवागमन से छूटने के लिये महा(-) ० त्मा लोग तुम्ही को भजते है तुम गति मुक्ति के दा(-) ० यक हो तुम्हे पाकर इस लोक का सुख मै क्यू मा(-) ० गू स्त्री पुत्र धन राज्य ये जितने है सो सव तुम्हा(-) ० री माया के रचे हूए है ओ कभी अपने नही है इ(-) ० स्से हे देवन हू के देव मै इन्हे कभू नही चाहता मुझ ० पर प्रसन्न हूजिए(।) आप आनन्द कन्द ओ अनु(-) ० भव ज्ञान के मुरति हो वडा भाग है जो निर्धन मनु ० ष्य को धन की राशि समान मुजे मिले हो(।) अव मै(-) ० ने जाना कि विषयो मे वासनारूप जो मेरा वन्ध(-) ० न था विसे आपने काट डाला कितने ही यज्ञ दा(-) ० न तपस्या कोई करे ओ तलाव इन्दरा आदि ख(-) ० नावे पै ससार का आवागमन विनसे भी नही छी(-) ० जता और भी अधिक वढता ही जाता है(।)

---

१. भये। २ जब वृक्ष पुराने पड जाते हैं, तब और मजबूत हो जाते हैं, ऐसे वृक्ष को बिहारी बोलियों में 'सारिल' कहते हैं, जिसका विपरीतार्थक होता है—'असरा'। ३. इन्हें विना पत्ते का करता है, अर्थात् हिला कर पत्ते गिरा देता है। ४. तूणीर, तरकस।

तुम्हा(-) ० रे चरण के दर्शन से निसन्देह उसका नाश होता ० है(।) हे राम जी आधा क्षण भी जिसका चित्त तुम ० मे लवलीन रहता है विसकी अज्ञानता का जड ० ततक्षण तुम काटते हो इस कारण मै यही चाह ० ता हू कि मेरा मन सदा तुमे[१] लगा रहे क्यूकि जो ० नर मधुर स्वर से एक क्षण भी राम राम कर गाता ० सो कैसा ही पापी होवे यहा तक कि व्राह्मण व(-) ० ध किया होए कै सुरापी होए तो भी सव पाप से छू(-) ० टता है तिस्से हे रामचन्द्र न तो मै जय चाहता न ० स्त्री पुत्र राज्य ससार के वन्धन से छोडावनहा (-) ० री तुममे मुजे भक्ति होवे यही सदा चाहता हू(।) ० आपकी मायावश होकर ससार मे फस रहा ० हू पर हे कृपानिधान मै तुम्हारा हू अव उचित है ० कि अपने चरण की भक्ति दे ससार के सकट ० से मुझको वचा लीजे तुम्हारी माया से जद मै अ(-) ० धा था तद हितू वैरी उदासी आदि अनेक प्र(-) ० कार के लोग मुझे दृष्ट आते थे और अव तुम्हा(-) ० रे चरण कमल के दर्शन से सव व्रह्म ही मुझको ० भासित होता है हितू वैरी कोई अव मेरा नही है(।) ० तिसका कारण यह है जव तलक माया मे प्राणी ० वधा हूआ रहता है तव तक चर अचर नाना ० स्वरूप तुम विसको देष पडते हो ओ जव ० तक तुम नाना प्रकार हौ तव तलक अज्ञानता ० है और तभी तक उस प्राणी को मृत्यु का भय है ० फिर जव माया नष्ट हो जाती है तव वुसे उत्त(-) ० म ज्ञान होता है ओ तुममे नहे अधिक(।) हा[२] तक ० कहू स्त्री पुत्र आदि रूप जो वधन है विसका ज(-) ० ड माया ही है दयाकर उसे आप काटिए वह तु(-) ० म्हारी दासी है ओ ऐसा अनुग्रह कीजे कि आ(-) ० प के चरण कमल मे मगन हो कर मै सदा तुम्हा(-) ० रा निर्मल यश गाया करुँ ओ मेरे हाथ तुम्हारी ० सेवा पूजा मे नित्यतत्पर रहे ओ तुम्हारे भक्तो ० ओ मन्दिरो को मेरी आषे देषे ओर गुरु का द(-) ० र्शन नित्य करे ओ तुम्हारे विन चरणो को मेरा ० सिर सदा प्रणाम करे कि जिन्हे शिव व्रह्मादि(-) ० क सदा वदते है ० इति श्री रामचरित्रे किष्कि(-) ० धाकाण्डे प्रथमोध्याय (।) १(।) इस भाति जव देषा ० कि सुग्रीव को निज अक मे लगाने से अव दि(-) ० व्य ज्ञान भया तव अपने काज के लिये श्री राम(-) ० चन्द्र ने मोह करावनहारी माया को उन्ह पर फ(-) ० यला दिया ओ मुस्कुरा कर कहा(—)ऐ सखा जो ० तुम कहते हो सो सव सच है पर लोग मुजे यह ० कहेगे कि देषो अग्नि साक्षी रष मित्रता कर रा(-) ० म ने सुग्रीव का क्या भला किया(।) इस भाति ससा(-) र मे निसदेह मेरी हसी होगी तिस्से गति मुक्ति ० की वात तुम अभी रहने दो ओ यहा से जाकर ० युद्ध के लिये वाली को पुकारो जद आकर तुमसे ० वह लडने लगेगा तव यह जान लो कि एक ही वा(-) ० ण से विसे मार कर मै तुमको राजा करूगा(।) इतनी ० वात के सुनते ही राम साथ हो तुरन्त सुग्रीव वहा से चले ओ ० किष्किधा के निकट जा वडे गर्ज कर वाली को ० पुकारने लगे कि आ मुज से युद्ध कर(।) तव भाई की वो(-) ० ली सुन वह महाक्रुद्ध हूआ ओ झट घर से निक(-) ० ल कर जहा सुग्रीव खडे थे वहा जो आन पहु(-) ० चा तो ही दौड कर विसकी छाती मे विन्हने एक ० घुसा लगाया तद कोप से महामूर्छित हो वाली ० ने भी विन्हे दोनो हाथो से दो मुक्के मारे इस भा(-) ० ति निपट क्रुद्ध हो आपस मे ऐसे वे दोनो लडने ०

---

१. तुममें। १. कहाँ।

लगे कि एक रूप हो गये कोई पहचाना न गया(।) ० तव अलग से देष कर श्रीरामचन्द्र बहुत विस्मि(-) ० त हुऐ ओ वाण नही छोडा इसलिये कि कहू सुग्रीव को न शर लगे निदान लोहू उगलते हू (-) ० ए डर कर सुग्रीव तो वहा से भागे ओ वाली भी ० अपने घर को आया(।) तव इकठे हो कर सुग्रीव ० लगे राम से कहने(—)ऐ महाराज भला सुनिए तो ० भाई रूप जो शत्रु है विसके हाथो से क्यू मेरा प्रा(-) ० ण लीजिए है जो मारने ही की इछा है तो आपे ० क्यू न मुजे मारिए(।) ऐसे विश्वास दे ओ महा स(-) ० त्यवादी कहा कर किसलिये मुझ को त्यागते ० हो मै तो आपका शरणागत हू(।) यह सुन श्री रा(-) ० मचन्द्र की आषे भर आयी तो सुग्रीव को गरे ० लगा कर यह वचन कहने लगे(—)मित्र डरो मत तु(-) ० म दोनो का एक सरूप लष मैने वाण नही छोडा इसलिये कि तुम न वधे जाओ पर अव भ्र (-) ० म मिटने के लिये तुम्हारी देह मे एक चिन्ह मै क(-) ० र देता हू तुम फिर जा वाली से लडो अव की वे(-) ० र रण मे मारा ही हूआ विसको देष लोगे मै तु(-) ० म्हारा शपथ खाता हू कि अव जो उसे विन मा(-) ० रे मै छोडू तो आज से फिर न कभी राम कहा(-) ० ऊ(।) इस प्रकार सुग्रीव को वहुत वुझा समझा सु(-) ० चित कर श्री रघुनाथ ने लक्ष्मण से कहा कि फू(-) ल की माला पहना कर वाली के पास इन्हे भेज ० दो(।) इतनी वात के सुनते ही लक्ष्मण जी ने तुर(-) ० न्त उठ कर विन के गरे मे एक माला डाल दी ० ओ कहा कि मित्र यह वहुत सुन्दर मुहूर्त्त है तु(-) ० म इसी समय प्रस्थान करो(।) इस भाति राम ल(-) ० क्ष्मण की आज्ञा पाय फिर सुग्रीव किष्किधा ० के निकट गये ओ महाशब्द कर वाली को पु(-) ० कारा सो सुन कर वह निपट विस्मित भया ओ म(-) ० हा क्रोधवश हो दो कछा मार ओही उठ खडा ० हूआ(।) तव तारा ने विसको हाथ पकड कर रोका ० ओ कहा हे नाथ मै पाव पडती हू अव तुम विस्से ० मत जा लडो मेरे जी मे शका होती है क्यूकि तुम्हा(-) ० रे हाथ से अधमूआ होकर अभी वह भाग ग (-) ० या था फिर जो तुरन्त आया है तो निश्चिय वि(-) ० से कोई वडा वलवान सहाय मिला है (।) वाली वो (-) ० ला झुठमुठ तुम डरती हो चलो जाओ मेरा हा(-) ० थ छोड दो शत्रु को मार के मै अभी चला आता ० हू(।) को ऐसा है जो विसका सहाय होएगा ओ स(-) ० हाय ही होगा तद भी विसका प्राण लेकर के एक ० क्षण मे मै आन पहुचता हू तुम किसी वात का ० मन्देह जन करो शूर कहा के क्यू कर मै घर मे रहू ० (—)तिस पर शत्रु पुकारता है यह सुन कर (।) तिस्से तु(-) ० म कुछ सदेह मत करो वैरी को मार कर मै अभी ० चला आता हू(।) इस भाति जव स्वामी ने कहा त(-) ० व तारा फिर लगी उसे समझावने(—)महाराज ए(-) ० क वात और भी मुज से सुन लीजे फिर जैसा ० जी चाहै वैसा कीजै सो यह है कि एक दिन अग(-) ० द नाम मेरा पुत्र अहेर खेलने को कही गया ० था सो वहा से सुन कर विसने मुझसे कहा कि ० दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो अयोध्या के राजा है ० लक्ष्मण नाम अपने भाई को सग लिये ओ सी(-) ० ता नाम निज स्त्री के साथ हो पहले दण्डकार(-) ० ण्य मे आ उतरे तहा सीता का हरण हूआ तव ० भाई समेत उसे षोजते षोजते ऋष्यमूक पहार ० पर आय सुग्रीव से वे मिले वहा अग्नि साक्षी क(-) ० र वुन दोनो भाई से सुग्रीव ने मित्रता की तद वि(-) ० न्होने यह प्रतिज्ञा करी है कि रण मे वाली को मा(-) ० र कर तुमको हम राजा करेगे सो हे महाराज तु(-) ०

म निश्चय जान लो कि सुग्रीव के साथ वे ही दो(-)० नो सहाय आये है नही तो जो अभी तुम से हा(-) ० र गया है सो फिर क्यू लडने को आता तिस्से अ(-) ० व यही सम्मत है कि सव वैर तज किसी प्रकार ० से सुग्रीव को जा मना लाओ अरु यौवराज का ० उसे तिलक दे शीघ्र रामचद्र की शरण मे तुम जा ० पहुचो(।) इसमे अगद सहित मुझे ओ कुल परि ० वार समेत अपने राज्य को तुम वचा लेते हो औ(-) ० र यह भी मुझ से सुन लो कि ऋष्यमूक के निक (-) ० ट दुदुभी का जो वडा सा शिर रषा था विसे एक ० ही अगुठा पर उठा कर दश योजन पर रामचन्द्र ने फेका है ओ एक ही वाण से सातो तार को का(-) ० ट गिराया तिस्से इसी मे कल्याण है कि विन से तु(-) ० म जा मिलो(।) ऐसे वुझा समझा निदान पति ० के पावो पर तारा गिर पडी ओ हाथो से विसके ० चरणो को पड[1] कर मारे डर के लगी रोने तव वाली ० ने उठाकर उसे गरे लगा लिया ओ प्यार कर क(-) ० हा कि स्त्री स्वभावश[2] हो करके वृथा तुम डर(-) ० तीहो मुझे कुछ भय नही है(।) जो लक्ष्मण समेत ० रामचन्द्र आये होगे तव तो निसन्देह उन से ० मुजे प्रीति ही होगी क्यूकि मैने सुना है कि धरती ० के भार उतारने के लिये रामरूप होवे साक्षात ० नारायण अवतरे है उन्हे अपना पराया को(-) ० ई नही है तिस्से पाव पकड कर मै अपने घर ० विन्हे लाऊगा वे करुना निधान है जो जैसा वुन्हे भ(-) ० जता है विसे वैसा ही वे चाहते है इसलिये कि भक्ति ० वश है ओ परमेश्वर है विनके लेखे सव समान ० है और जो एकेला आप सुग्रीव ही आया होवे(-) ० गा तो एक क्षण भर मे उसको मै मार डालता हू तु (-) ० म वहुत हठ मत करो मै कधी न विसे मनाऊगा ० ओ न यौवराज्य का तिलक दूगा क्यूकि सव लो(-) ० गो ने जिसे एक वीर ठहराया है सो वाली उस श(-) ० त्रु से जो लडने को बुलाता है निपट दीनताई ० की वाते भला क्यू कर इस समय कहे(।) इसमे लो ० ग क्या कहेगे तुम ही इसे शोचो(।) तिस्से हे सुन्द(-) ० रि शोक तज सुचित हो तुम अपने घर मे जा ० वैठो मेरे लिये कुछ सन्दे[3] जिन करो(।) इस भाति ० तारा को बुझा समझा कर आप सुग्रीव से लडने ० को गया तव फूलकी माला गर मे डाले हूए म ० हा पराक्रमी सुग्रीव ने वाली को देषते ही दौ(-) ० ड कर दोनो हाथो से पहले दो घुसे जडे ओ ० विसने भी वैसे ही विन्हे मारा इस प्रकार आप(-) ० स मे वे महायुद्ध लगे करने तिस मय[4] रह रह ० कर राम की ओर सुग्रीव निहारे तव एक वृ (-) ० क्ष के ओट मे जा अदेष हो महाप्रतापी श्री रा(-) ० मचन्द्र ने तूणी मे से निकाल कर वज्र समान ० वह वाण धनुष पर चढाया जो इन्द्र का दिया ० हूआ था ओ कान तक विसे षैच तका के ऐ(-) ० सा वाली को मारा कि विसकी छाती मे शर ० गड गया ओ चिल्लाता हूआ उछल कर ऐ(-) ० सा वह गिरा जो धरती लगी कापने तद क्षण ० एक तो अचेत रहा फिर कुछ एक सचेत हो आ(-) ० ष षोल कर देषे तो धनुष वाण लिये जटा मु(-) ० कुट धारण किये चीर वमन पहने गले मे अ(-) ० द्भुत वन माला डाले सुग्रीव लक्ष्मण को सग ० लिये श्याम सुन्दर श्री रामचन्द्र जी आगे आ ० षडे है तव नीचे से ऊपर तक निहार कर धीरे ० धीरे वाली लगा विन्हे धिरकारने इस प्रकार ० से कि ऐ रामचन्द्र भला सुनो तो मैने क्या अप(-)० राध किया जो तुमने मुझे मारा(?)

---

१. पकड। २ स्वभाववश। ३ सदेह। ४. समय।

क्या राजधर्म ० कुछ भी नही जानते जो ऐंसा निन्दित कर्म ० किया इसमे क्या तुम्हारा नाम होगा जो पेड ० के ओट मे जा चोर वटमार की भाति छिपकर ० मुझ पर वाण चलाया मै तव जानता कि सच ० तुम वडे वीर हो ओ क्षत्रियो के जात भाई हो ० ओ मनु के कुल मे उत्पन्न हो जो साम्हने ० हो कर मुज से तुम लडते तव विसका फल पा(-) ० ते(।) सुग्रीव ने क्या तुम्हारा उपकार किया ओ ० मैने नही जो मेरे वैरी हूए मै सुनता हू कि व(-) ० न मे से सीता को रावण हर ले गया है तिस ० कारण सुग्रीव की शरण मे तुम आये हो(।) क्या ० मेरा पराक्रम नही जानते जो सगरे लोक मे ० विख्यात हो रहा है(?) मै चाहू तो कुल परिवार स(-) ० मेत रावण को ओ सीता सहित लका को उ(-) ० खाड के एक क्षण मे तुम्हारे आगे ला रख दू(।) ० तुम किस लिये मुजसे विगडे(?) इस लोक मे तो ० वडे धर्मात्मा तुम कहाते हो पर व्याधा की भाति(-)० छिप कर वानर को मारने से कहो क्या पु(-) ० ण्य तुम्हे होगा(?) यह भी नही कि खाओगे सो ० तो वानर का मास अभक्ष्य है मुझे मार कर ० क्या करोगे(?) इस प्रकार जव वाली ने वहुत कहा(,) ० श्रीरामचन्द्र वोले(—) सच है पर धर्म का मै रक्षक ० हू इस कारण धनुष-वाण लिये फिरता हू ० ओ जहा कही अधर्मी प्राणी को पाता हू उ(-) ० से ओ ही मार कर अपने धर्म को पालता हू(।) ० मेरे जानने मे वेटी वहन पतोहू ओ भाई की ० भार्या ये चारो समान है जो मूढ इन को कुदृ० ष्टि से देखता है वह महापापी है विसे राजा लो(-) ० ग विन मारे कभी नही छोडते यह प्रसिद्ध है ति(-) ० स पर भी तुम अपने छोटे भाई की स्त्री को व(-) ० ल से भोगते हो इस हेतु धर्म समझ कर मैने ० तुम्हे मारा है तुम वानर हो इस्से सच है कि तुम ० कुछ नही जानते पर महात्मा लोग जो ससा(-) ० र को पवित्र करते है वहुत विचारते है विनकी ० निन्दा कधी न कीजे(।) इतनी वात के सुनते ही ० वाली निपट डर गया ओ रामचन्द्र ओ ईश्व(-) र जान प्रणाम कर यह वचन कहने लगा(—)दी(-) ० न दयाल मै जानता हू कि तुम परमे-श्वर ० पर भुल चू[1] कर मैने तुमको कटुवचन क(-) ० हा है सो मेरा अपराध क्षमा कीजे धन भा(-) ० ग है जो आपके वाण से घाहल होकर औ ० विशेष आपके आगे मै अपना प्राण तज ० ता हू(।)तुम आदि पुरुष हो ओ सीता जी ल(-) ० क्ष्मी है व्रह्मा की प्रार्थना से रावण को मारने ० के लिये रामरूप हो अवतरे हो अव आज्ञा ० करो मै तुम्हारे उत्तम पद को जाऊ(।)यो कह फि(-)० र वोला कि हे कृपा निधान मेरे तुल्य पराक्र(-) ० मी अगद है उस पर दया रषियो ओ अरु ० अपने शीतल कर से तनिक मेरा हृदय छू दी(-) ० जे तव रामचन्द्र ने कहा वहुत अछा ओ विस ० की छाती मे से वाण षेंच लिया ओ जो वुस ० पर हाथ फेरा तो ही वानर की देह तज देवता ० का शरीर धारण कर वैकुण्ठधाम को वह ग(-) ० या (।)०इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा काडे ० द्वितीयोध्याय (।) २(।) महादेव कहते है(—)हे पार(-) ० वती जव रण मे वाली मारा गया विसके सा(-) ० थ के वानर सभ डर करके किष्किन्धा को ० भाग गये ओ वहा तारा से कहा कि सग्राम मे ० वाली मारे गये तुम मन्त्रियो से एकमत हो के शी(-)० घ्र अगद को राजा करो हम सब चारो द्वारो मे क(-) ० वाड लगा के नगर की चौकी[2] जा करते हैं(।)वानरो

---

१. चूक। २ रक्षा, निगरानी।

का राजा अगद को तुम तुरन्त करो(।) इस प्रकार ० जद उन्होने कहा तव वाली का मरण सुन कर ० शोक से तारा मूर्छित हूई ओ छाती पीट पीट व(-) ० हुत लगी रोने ओ कहने कि अव मुझे अगद ० ओ राज्य से क्या काम ओ नगर धन से क्या प्रयो(-) ० जन मै अभी जा स्वामी के साथ अपना भी प्रा(-) ० ण तजती हू(।) यो कह शिर के वार छितराये रोती ० हूई तुरन्त तारा वहा जा पहुची कि जहा लोहू ० लोहान होकर ओ धूर मे लोट कर मूआ हूआ ० वाली पडा था तव देषकर उसके पावो पर गिर प(-) ० डी ओ नाथ नाथ कर लगी वहुत रोने और पी(-) ० टने (।) इतने मे श्री रघुनाथ पर विसकी दृष्टि पड ० गयी तो महा विलाप कर यह वचन लगी विन ० से कहने कि हे राम जिस वाण से वाली को तुम ० ने मारा है उससे मुझे भी मार डालो जो मै भी प्री(-) ० तम के साथ जा रहू ये अपने सग मुजको ले जा(-) ० या चाहते है मेरे विन स्वर्ग मे भी इनको सुख नही ० होवेगा(।)स्त्री का वियोग तुम नीके जानते हो इ(-) ० स्से मुजे मार कर तुम वाली के पास भेज दो(।) तुम्हे स्त्री(-) ० दान किये का फल होगा ओ इस धर्म से तुम्हा(-) ० री भी भार्या मिलेगी(।) ऐंसे वहुत रो कलप पुनि सु(-) ० ग्रीव से कहने लगी कि वाली को मारनहारे राम (-) ० चन्द्र ने सहज मे तुम्हे राज्य दिला दिया अव मे(-) ० रे साथ हो इस निकटक राज्य को भोगो तुम्हारा ० मनोरथ पूरण हूआ(।) इस भाति वहुत रो रोकर० जव तारा लगी कहने तव दयावन्त हो ज्ञान की ० अनेक वातन से श्री रामचन्द्र लगे विसे सम(-) ० झावने कि सुनो जिसका कभू न मोह कीजे उ(-) ० स पति के लिये क्यू व्यर्थ शोक करती हो क्या प(-) ० डी हूई यह देह तुम्हारा पति है कै[1] इसमे जीव ० था वह यह नीके मुजे समझाओ हा जो कहो कि ० कलेवर मेरा पति है तो यह अज्ञानता है क्यूकि ० चाम मास लोहू हाड इनसे भरी हूई पाच भौ(-) ० तिक देह जो जड सरूप है कर्मवश होकर सुख ० दुख भोगने के लिये वार वार उत्पन्न हूई क(-) ० रती है फिर नष्ट हो जाती है सो तो अव भी तु(-) ० म्हारे आगे पडी है विसमे एत्ता नेह क्या करना ० ओ जो जीव को अपना स्वामी मानती हो तो ० वह तो अविनाशी है न तो वुह जनमता न म(-) ० रता न कही चलता न वैठता ओ न वह स्त्री पु(-) ० रूष नपुसक है वह तो एक है ओ सव ठाव व्या(-) ० प रहा है आकाश सा निर्लेप है ओ शुद्ध ज्ञान ० सरूप अरु सनातन है विसका शोक क्या(।) ० तारा वोली कि जो देह काठ सा जड है ओ जीव ० चेतन सरूप तो भला कहो सुख दुख का भोग(-) ० ने वाला कौन है(।) रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि देह ० ओ इन्द्रियो के सग से आत्मा अपने तई भू(-) ० ल जाता है ओ अहभाव उसे होता है कि जि(-) ० ससे शरीरादिक को निज कर मान लेता है तव ० तलक ससार के जो सव प्रकार मिथ्या है सुख दु(-) ० ख उसी को होता है ओ आप से नही छूटता(।) ० जैसा विषय मे जिनका चित्त है उन्हे स्वप्ने मे रा(-) ० ज्यादिक लाभ तभी तक है जव तक वे सो(-) ० ऐ हूऐ है तिस्से यह जान लो कि देह ओ इन्द्रि(-) ० न के साथ रहते-रहते आत्मा निज रूप भूल जा(-) ० ता है ओ अह-भाव उसे होता है वुस अहभाव ० से उपजा हूआ यह ससार जो राग द्वेष से भर र(-) ० हा है निपट झूठ है ओ सच पूछो तो विसकी उ(-) ० त्पत्ति का कारण मन है कि जिसका सरूप हो

---

१. या।

सु(-) ० ख दुख का भागी आत्मा होता है ओ उसके व(-) ० न्धन से आप वद्ध होता है जैसा स्फटिक आ(-) ० प निर्मल है पर नील पीत आदि रग के झलक ० पडने से वह भी वैसा ही दृष्ट आता है(।) इसी प्रका(-) ० र देह इन्द्रियो के सग से आत्मा को वल से सुख ० दुख भोग होता है(।) जव किसी पुण्य के प्रभाव से मे(-) ० रे भक्तन से सग होवे तव प्राणी को मुज मे प्रीति ० होए ओ मेरी कथा सुनने मे अति दुर्लभ श्रद्धा ० तव देह इन्द्रिय मन प्राण इन सवसे अलग आ(-) ० नन्द सरूप आत्मा को जो एक है महज मे जान ० कर तुरन्त प्राणी मुक्त होवे(।) यह सच मैंने तुमसे ० कहा है जो इसे जी लगा कर शोचता है विसे स(-) ० सार का दुख कभी न होगा तुम भी मेरी वात को ० जो मन देकर विचारो तो कभू न क्लेश पाओगी ० और कर्म के वन्धने से छूटोगी विस जन्म मे तु(-) ० मने मेरी वडी भक्ति करी इससे तुम्हे मुक्त कर ० ने के लिये मैंने अपना सरूप देषाया अव से ० दिन रात मेरे सरूप का ध्यान करती रहोगी ओ ० जो मैंने कहा विसे विचारती रहोगी तो ससार ० के कर्म बन्धन मे फिर न कभी फसोगी(।) इस भाति ० श्री रामचन्द्र की वाते सुन तारा वहुत चकृत ० भयी ओ देह के अभिमान से उत्पन्न हूए शो(-) ० क को त्याग रामचन्द्र को प्रणाम कर ओ क्षण ० भर के विनके[1] सग से निष्पाप हो ससार का दुख तज जी(-) ० वन मुक्त हूई ओ श्रीरघुनाथ की वाते सुन स(-) ० व अज्ञान तज सुग्रीव भी वहुत सुचित भये (।) ० इस अनन्तर रामचन्द्र ने विन से कहा कि अ(-) ० व देषते क्या हो वडे भाई का जैसा कुछ पार लौ(-) ० किक काज करना उचित है सो सव अगद से ० जा कराओ(।) इस भाति जव राम ने कहा तव श्रे(-) ० ष्ठ वानरो से वाली को उठवा कर पुष्प(-) ० क समान वाहन पर राजो की रीति से तुरन्त ० सुग्रीव ने रष लिया ओ नगर के प्रधान जित(-) ० ने वानर थे तिन समेत तारा ओ अगद को सा(-) ० थ ले मत्रीन सहित ब्राह्मणो के सग हो भेरी द(-) ० मामे आदि वाजे आगे कर विसे वहा से ले जा ० शास्त्र के विधि से फूक दिया ओ स्नान कर म(-) ० त्रीन समेत फिर निकट आ रामचन्द्र को चर(-) ० ण छूकर प्रणाम किया ओ हर्षित हो कर यह ० वचन कहा कि महाराज अव उचित है कि वान(-) ० रो का राज्य जो लक्ष्मी से भर रहा है आप अगी(-) ० कार कीजे ओ मैं आपका दास हू इस्से लक्ष्म(-) ० ण की भाति तुम्हारे चरण की सेवा टहल करू(।) ० श्री रामचन्द्र मुस्कुरा कर वोले कि मित्र हम तु(-) ० म एक ही हे इगमे कुछ सन्देह नही तिस्से तु (-) ० म शीघ्र किष्किन्धा मे जा राज्य पर वैठो चौदह वर्ष तक किसी नगर गाँव मे मै जाने का नही मेरा भाई लक्ष्मण तुम्हारे ह्या जागा[2] अगद ० को यौवराज्य का तिलक तुम दीजो ओ आद ० र साथ विसे रषिओ तुम्हारे निकट ही पहार ० पर भाई समेत वरस दिन मै रहूगा तव तक सु(-) ० चित हो कुछ दिन पुर मे रह के सीता का षोज ० तुम करिओ(।) इस प्रकार जब रामचन्द्र ने आ ० ज्ञा की तव सुग्रीव ने उन्हे दण्डवत किया ओ ० कहा कि अछा महाराज जो आप आज्ञा क(-) ० रते है सोई मै करूगा(।) यो कह लक्ष्मण समेत ० विदा हो सुग्रीव किष्किन्धा मे आये तो जित(-) ० ना कुछ रामचन्द्र ने कह दिया था सो सव कर ० धर लक्ष्मण को विधि से पूज लगे राज्य काज ० करने तव लक्ष्मण

---

१. उनके क्षणभर के, अर्थात् क्षणिक, सयोग से। २. जायेगा।

जी विससे विदा हो तुरत ० राम के पास आये तद दोनो भाई वहा से उठे ओ ० प्रवर्षणनाम गिगिवर[1] पर गये तो वहा जिसके ० आसपास मे वहुत से कन्द मूल थे और वात ० वर्षा धूप इन्होका जहा ओट था ऐसी स्फटि[2] ० की अति सोहावनी एक कन्दरा देष कर वहु(-) ० त हर्षित हूए ओ विसमे जा सुख से रहने लगे० इति श्री ० रामचरित्रे किष्किन्धा काण्डे तृतीयो ध्याय (।) ० जव लक्ष्मण समेत श्री रामचन्द्र विस पहाड ० पर आये ओ कन्द मूल आहार कर सुख से ० लगे रहने तव[3] जितने वहा ऋ(-) ० षि थे सो सव अति हर्षा कर पछी मृग हो हो कर विन के चहु(-) ० दिश आय आय दौडे ओ उन्हे देष दृष्टि पसा(-) ० र कर ऐसे खडे होए कि जैसे ध्यान लगाये ० मुनि सव होवे (।) इस प्रकार जद श्री रामचन्द्र व(-) ० हा वसे तद एक वेर पूजा अर्चा से सुचित हो ० कर एकान्त मे वैठे हूए विनसे लक्ष्मण जी ० नम्र हो कर कहने लगे(—) महाराज आपने जो ० आगे कहा था उस वचन से मेरे हृदय का स(-) ० देह जो अज्ञानता से भया था सव नष्ट हू(-) ० आ पर ब्राह्मण आदि चारो वर्ण को मोक्ष(-) ० दायक ओ स्त्री शूद्रो को भी तारने वाली ० जो आपकी पूजा है वुसे अव मै जाना चाह(-) ० ता हू कि जिस भाति से योगी लोग करते है ० ओ नारद व्यास ब्रह्मा ये सव उसी को भक्ति ० साधन कहते है (।) मै तुम्हारा भक्त हू और भा (-) ० ई इससे कृपा कर मुजे वताइए इसमे लोगो ० का वहुत उपकार होता है (।) श्रीरामचन्द्र वो(-) ० ले कि मेरे पूजन के विधि तो इतने है कि उ(-) ० नका अन्त नही पर तो भी जैसा कुछ आ(-) ० गे से चला आता है सो मै तुमसे सक्षेप कर कहता ० हू कि जो अछे कुलीन है ओ वैसे ही गुरू से ० मत्र पाय मेरी भक्ति भाव मे लवलीन हे वे ० जो विधि वतावे उससे चाहे हृदय ही मे मुझे ० पूजे चाहे प्रतिमा जल आग शालग्राम आ(-) ० दि इनमे इस प्रकार से कि पहले तो देह शुद्ध ० के लिये प्रात स्नान करे तव नित्य कर्म से सु(-) ० चित हो निज मनोरथ पूरण होने के लिये स(-) ० कल्पकर भक्ति भाव से पहले अपने गुरु को ० पूजे ओ मेरे तुल्य जाने ओ विसके अभावे[4] ० ध्यान से वुसकी आराधना करे ओ प्रतिमा ० शिला को जो अर्चा चाहे तो आगे विसे स्ना(-) ० न करावे तद अक्षत चन्दन गध धूप दीप नै(-) ० वेद्य पान सोपारी उस पर चढावे ओ विभव ० होवे तो नाना अलकार वस्त्र पहनावे ओ ० अगर चन्दन कपूर आदि से पूजे ओ विधि ० से होम करे ओ कुन्दन सी मेरी मूरति का विस[5] ० कुण्ड मे ध्यान करे अरु मेरे लिये नृत्य गा(-) ० न करे ओ यह वचन कहे कि हे दीनानाथ इस ० ससार मे तुम मेरी रक्षा करो (।) इस प्रकार से ० जो मेरा भक्त दिन दिन मुजे पूजे तो ससा(-) ० र का सव भोग विलास कर अन्त समय मु(-) ० जी मे आय मिले इस परम पवित्र रहस्य को ० जो सनात[6] है ओ जिसे साक्षात आप राम ० ने कहा है जो नर सदा पढता ओ सुनता है ० विस को नित्य पूजा किये का फल सहज मे ० होता है (।) इस भाति लक्ष्मण जी से पूजा का वि(-) ० धि कहकर के निदान मनुष्य की भाति माया ० फैला हा सीता हा सीता कर श्री रामचन्द्र ल(-) ० गे विलाप करने ओ ऐसे व्याकुल भये कि वि(-) ० स रात विन को नीद न आयी (।) यहा तो यो ही ० रहा था औ वहा किष्किन्धा

---

१. गिरिवर। २. स्फटिक की। ३. मूल पुस्तक में कुछ लिखा था, जो फिर काट दिया गया है। ४. अभाव में। ५. उस। ६. सनातन।

मे किसी दिन ह() ० नुमान जी ने सुग्रीव को एकान्त मे ले जाकर ० कहा कि सुनो राजा जी (-) श्री रामचन्द्र ने तुम्हा () ० रा वडा उपकार किया पर मै जानता हू कि कृ () ० तघ्न की भाति तुम उन्ह को भुल गये देषो ० जो वाली तीनो लोक मे एक वीर गिणा जाता ० था तिस को तुम्हारे लिये वुन्होने मारा ओ ० तुमको राज्य पर विठलाया ओ विनही के पुण्य ० प्रताप से तुमने तारा को पाया सो रामचन्द्र ० भाई समेत पहार पर वसे है ओ सीता को ढू () ० ढने के लिये तुम्हारी वाट निहारते है पर तु () ० म्हारा जो वानर का स्वभाव है विस्से स्त्री वश ० होकर काहे को विनकी सुधि लोगे (।) प्रतिज्ञा ० भी करते हो पै सीता का कुछ षोज नही क (-) ० रते तुम निपट कृतघ्न हो (।) मै जानता हू कि ० वाली सा एक दिन तुमको भी श्रीरामचन्द्र ० निश्चय मार डालेगे (।) इस प्रकार जव हनुमा () ० न ने कहा तव तो सुग्रीव वहुत डर गया ओ ० कहने लगा कि हनुमान तुमने सच कहा ० अभी मेरी आज्ञा से दश सहस्त्र वानर जो ० वेग चलने वाले है दशो दिशा को तुम भे () ० जो जो सातो द्वीप के वानरन को वे सव यहा ० वुला लावे ओ एक पक्ष मे आवे ओ जो ए () ० क पक्ष मे नही आवेगा सो जीव से मारा जा () ० वेगा (।) यो कह सुग्रीव तो अपने मन्दिर मे ग () ० यें तव विन की आज्ञा पा हनुमान ने तुरत ० सव वानरो को कि जो पवन से भी अधिक ० शीघ्र चलने वाले थे ओ जिनका पराक्रम ० का वषान ही किया जाता दशो दिशा मे भे ० जा (।) इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा का (-) ० ण्डे चतुर्थो-ध्याय (।) ४ (।) यह तो यहा का वृत्ता () ० न्त है और वहा सीता के वियोग से श्री रा () ० मचन्द्र निपट आकुल हूए तो भाई से कह () ० ने लगे कि देषो लक्ष्मण मेरी सीता को वल ० से राक्षस हर ले गया पर अव तलक भी मै ० निश्चय नही जान शकता हू कि वह मर ग () ० यी कै जीवती है इस समय जो मुझे कोई ० कहे कि सीता अभी जीवती है तो विस का ० मै वहुत गुण मानू ओ जो मैं जानू कि वह ० जीती है तो जहा कही वह होऐ तहा से ऐसा ० मै विस को वल से हर लाऊ कि जैसा समुद्र ० मे से अमृत मैने लाया था (।) यो वहुत कह फि (-) ० र वोले कि सुनो भाई लक्ष्मण मेरी प्रतिज्ञा ० कि जो दुष्ट मेरी भार्या को चोरा ले गया है वि (-) ० से कुल परिवार समेत मै भस्म कर डालूगा हा ० सीता तुम मेरे विन राक्षस के घर मे रह के क्यू ० कर जीती होगी तुज विन यह पापी चन्द्रमा ० भी मेरे लेखे सूर्य सा तपता है हा इस समय ० सुग्रीव भी निर्दयी हूआ जो इस दुख मे मुजे दे () ० षता भी नही अहो लक्ष्मण वह निपट कृतघ्न ० है क्यूकि निकटक राज्य पा कामवश हो स्त्री () ० न को सग लिये एकान्त मे जा भोग विला (-) ० स करता है और यह वर्ष वीता चला जाता ० है यह देष कर भी मेरी भार्या को षोजने के लिए (-) ० ये नही आता है (।) वह दुष्ट मेरा उपकार भुल ग () ० या अव वाली की भाति भाई वन्धु समेत वि (-) ० स दुष्ट को भी मार डालता हू ओ उसका नग (-) ० र चल कर फूक देता हू (।) इस प्रकार जव श्री ० रामचन्द्र क्रुद्ध हूए तव लक्ष्मण जी ने विन से ० कहा कि महाराज मुजे आज्ञा कीजे अभी ० सुग्रीव को मार कर मै आक[१] के पास चला आ () ० ऊ (।) यो कह तुरन्त खड्ग समेत धनुष वाण ले स (-) ० चमुच वे चल खडे भये (।) तव श्री रघुनायक ने ० कहा कि

---

१. आप।

सुनो लक्ष्मण (—) सुग्रीव मेरा वडा मित्र ० है तिस्से वुसे मारना नही पर जाकर के डरा(-) ० ओ कि वाली सा आज मै तुम्हारा भी सहार क(-) ० रूगा(।) यो कह सुग्रीव को जता कर अभी तो तु ० म चले आओ पीछे जो कुछ उचित होगा ० सो किया जावेगा(।) इस भाति श्री रामचन्द्र की ० आज्ञा पाय महापराक्रमी लक्ष्मण जी नि(-) ० दान क्रुद्ध होकर किष्किन्धा को ऐसे चले कि मानो जाते ही सव वानरो का सहारकर डाले०गे(।) जवकि निकट जा पहुचे ओ विन्हको डरा(-) ० वने के लिये धनुष का भयावन शब्द लगे क(-) ० रने तव क्षेत पर लक्ष्मण को देषते ही सव ० वानर कि जो उनको पहचान ही शक्ते थे ० किच किचा उठे ओ पाषाण पेड ले ले मार मा (-) ० र कर विन पर दौडे तव तो वानरो को देषते ही ० लक्ष्मण जी बहुत रिसियाने तो ओ ही धनु (-) ० ष पर वाण चढा कर सकल वानर को निर्मूल करने को ० उपस्थित हूए इतने मे लक्ष्मण जी का आ(-) ० गमन जान अगद तुरन्त आन पहुचा ओ वा(-) ० नरो को वरज समीप जा लक्ष्मण के चरणो प(-) ० र गिर पडा तव गरे लगा कर वे इससे मिले ओ ० कहने लगे कि सुनो अगद मुजे श्री राम च(-) ० न्द्र ने कुद्ध होकर भेजा है तुम शीघ्र जा अप(-) ० ने चाचा से मेरा आगमन जनाओ(-) इतने व(-) ० चन के सुनते ही अगद ने तुरन्त सुग्रीव से ० आय कहा कि हे महाराज पुर के द्वार पर ल(-) ० क्ष्मण जी खडे है ओ मारे कोप के दात पीस ० रहे है किसी प्रकार से विन्हे जा मनाइए इसी ० मे कुशल है (।) इस भाति अगद की वाते सुन ० सुग्रीव वहुत घवराने तो मत्रीन मे श्रेष्ठ हनु(-) ० मान को बुला कर कहने लगे कि तुम अभी ० अगद के साथ जाओ अरु नम्र हो मना कर ० लक्ष्मण जी को यहा ले आओ(।) यो कह हनु (-) ० मान को भेज के फिर सुग्रीव ने तारा के पास ० जा कहा कि तुम भी जाओ अरु मीठी मीठी ० वातो से लक्ष्मण जी को शान्त कर पहले यहा ० ले आलो[1] तिस पीछे मुज से भेट कराइओ(।) इ(-) ० स प्रकार राजा की आज्ञा पा निदान तारा भी ० वहा से चली ओ विचली डेवढी मे आन पहु(-) ० ची तव तलक अगद को साथ लिये लक्ष्मण ० के पास हनुमान जी जा पहुचे ओ शिर झुका ० प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ यह वचन वि(-) ० नसे कहने लने कि आइऐ महाराज यह घ(-) ० र द्वार सव आप ही का है तिससे भीतर च(-) ० ल के रानी समेत सुग्रीव से पहले भेट क (-) ० र लीजे फिर जो कुछ आज्ञा कीजेगा सो स(-) ० व हम करेगे यो कह प्रीति से हाथ "पकड लक्ष्म(-) ० ण जी को हनुमान जी घर के भीतर ले चले(।) ० जव वीचली डेवढी मे आ चूके तव सव सिगा-० र पटार किये चन्द्रमुखी तारा लक्ष्मण जी के ० आगे जा खडी हूई ओ प्रणाम कर मुस्कुरा ० मुस्कुरा यह वचन लगी विन से कहने कि ० आओ देवर तुम किस लिये सुग्रीव पर रु(-) ० ष्ट हो वे तो तुम्हारे दास ओ भक्त" है वहुत दिन ० तक दुख मे रहे है पर तुम ही ने विस सकट से ० उन्हे वचा लिया है अव तुम्हारे प्रताप से व(-) ०हुत सुख पाते है ओ आज काल्ह श्री रामच(-) ०न्द्र के कामकाज के भीर भार से निपट आकु(-) ० ल रहते है इससे विनकी सेवा मे नही पहुच ० शके और देश देश से वडे वडे वानरो को वुला ० ने के लिये दश सहस्र वानर विन्हने भेजे है ज ० द वे आवेगे तद उनको सग लिये तुम्हारे सा ० थ हो आप सुग्रीव लका मे जागे ओ रावण स ० मेत

---

१. आओ।

सव दैत्यन को मारेगे इस भाति तारा की ० वातें सुन लक्ष्मण जी कुछ एक ठढे हूऐ तो ० विन्हके साथ धीरे धीरे विस मदिर के भीतर ० चले कि जहा रुमा नाम अपनी स्त्री को लि ० ये राजा सुग्रीव पलग पर बैठे थे जद समीप ० ज पहुचे तद लक्ष्मण को देष कर वे वहुत डर ग ० ये ओ तुरन्त पलग से उतर प्रणाम क ० र हाथ जोड विन के आगे जा खडे भये तव ० सुग्रीव को देषते ही लक्ष्मण जी निपट क्रुद्ध ० हो विनसे कहने लगे(—) "क्यू रे दुष्ट तू श्री रामचन्द्र ० को भूल गया मै जानता हू कि जिस वाण से ० वाली मारा गया विस शर से अव तू भी मा(-) ० रा जाया चाहता है (।) इस प्रकार जव कडी कडी ० वाते लक्ष्मण जी कहने लगे तव हनुमान जी ० वोले(—)महाराज आप किस लिये ऐंसा वच(-) ० न मुह से निकालते है ये तो तुमसे भी अधि(-) ० क श्री रामचन्द्र के भक्त है विनके काज की चि(-) न्ता से सदा आकुल रहते है यहा तक कि सो(-) ० ते भी नही उन को भला क्यू कर ये भूलेगे देषि(-) ० ए चहुदिश से कोटि वानर सव ये ही आन ० पहुचे इन को सग ले करके सीता को ढूढने के ० लिये अभी ये जावेगे और जो कुछ श्री राम(-) ० चन्द्र का काज होगा सो सव कर लावेगे आ(-) ० प किसी वात का सन्देह मत कीजे(।) इस भाँति हनुमान की वाते सुनि निदान लक्ष्मण व(-) ० हुत लजाने तव अर्घ पदार्थ कर सुग्रीव ने ० विधि से उन्हे पूजा ओ गरे लगा कर कहा(—) महाराज मै तो श्रीरामचन्द्र का दास हू उन्हो(-) ० ने वडे सकट से मुझे वचाया वे ऐंसे प्रतापी पु(-) ० रुष है कि अपने तेजे[1] से आधे क्षण मे सव लो(-) गन को जीत लेगें(।) वानरो समेत मै तो कहने ० को विन का सहाय होऊगा(।) यह सुन लक्ष्मण ० वोले(—)अहो सुग्रीव तुम रामचन्द्र के वडे भक्त ० हो मैंने क्रोध से जो कुछ तुम्हे कहा सो मेरा अ(-) ० पराध क्षमा करो अव मै श्रीरामचन्द्र के पास ० जाता हू वे वन मे ऐकेले ही है ओ सीता के वि(-) ० रह से वहुत आकुल हो रहे है(।) इतनी वात के ० सुनते ही अच्छा कह विन समेत तुरन्त रथ ० पर चढ सकल वानरो को साथ लिये सुग्रीव ० श्रीरामचन्द्र के पास चले तो भेरी मृदग आ(-) ० दि वर्ण वर्ण के वाजो समेत भाल वानरो की ० वडी सेना लिये छत्र चामरन से शोभित हो नील ० अगद हनुमान आदि ये प्रधान सव भी वि(-) ० न के साथ हो लिये(।) इति श्री रामचरित्रे कि(-) ० ष्किन्धा काण्डे पचमोध्याय (।) ५(।) जव सुग्रीव ० निकट जा पहुचे तव कन्दरा के द्वार पर चीर ० वस्त्र पहने शिर मे अद्‌भुत जटा वान्धे श्याम श(-) ० रीर विशाल नयन श्री रामचन्द्र को जो सीता के ० विरह से अकुला रहे थे ओ नाना मृग पक्षीन ० को देषते थे देषकर लक्ष्मण समेत तुरन्त रथ ० पर से उतरे ओ विनके चरणो पर जा गिरे तव ० श्री रामचन्द्र उठकर विन से मिले ओ कुशल ० क्षेम पूछ आदर समेत अपने समीप उन्हे ० विठला लगे शिष्टाचार करने तब नम्र होकर ० राजा सुग्रीव ने विनसे कहा(—)देषिए महाराज य(-) ० ह वानरो की महासेना आन पहुची(।) इनमे ० कितने एक तो कुलाचल नाम पहार पर के र(-) ० हने वाले है ओ कितने मेरु ओ मन्दराचल ० के वसने हारे इस प्रकार नाना द्वीप नदी पर्व(-) ० त ओ जगलो मे से ये सव चले आते है ओ अस(-) ० ख्य है ओ जैसा चाहे वैसा अपना सरूप वना श(-) ० कत्ते है इसलिए कि देवता के अस से हूऐ हैं ओ ० युद्ध मे वडे निपुन है ओ देषने

---

[1] 'जे' के बदले 'ज' होना चाहिए।

(मे) पर्वत से हैं ओ व(-) ० ल मे जो पूछिए तो कितने तो हाथी के तुल्य है ० ओ कितने एक दश हाथी के समान ओकित(-) ० ने ऐसे है कि विन्हे दश सहस्त्र नाग का पराक्र (-) ० म है ओ वहुतेरे ऐसे हैं कि जिन्हो का वल का कु(-)०छ (अ)न्त नही मिलता और कितने तो काले काले ० हैं कितने काचन के रग से है कितने स्फिटक से ० उजले है ओ कितने राक्षस से डरावन है युद्ध ० के लिये चहुदिश से गर्जते हूए चले आते है ओ ० ये सव आपके आज्ञाकारी है और फल मूल ० इनका आहार है अरु ऋक्षो के नायक ये जो ० जाम्ववान है सो मेरे मत्रीन मे श्रेष्ठ ओ वडे वु(-) ० द्धिमान है औ वायु के पुत्र महापराक्रमी ये ह(-) ० नुमान जो विख्यात हो रहे है सो भी मेरे मत्री है इ(-) ० न की वुद्धि अपरम्पार है इसी प्रकार नल नील ० गवय गवाक्ष गधमादन शरभमैन्द गज ० पवन वलीमुख दधिमुख सुषेण तार औ(-)०र हनुमान के पिता केशरी नाम ये सव एक से ०एक महावीर है और पराक्रम मे इन्द्र के तुल्य है ० ओ कोटीन झुण्डो के राजा हैं(।) ये सव आपके ० आज्ञाकारी है ओ देवता के अश से उत्पन्न ० हूए है ओर यह जो वाली का सुत अगद है सो ० वल मे अपने पिता ही समान है अरु राक्षसो ० के लेखे तो साक्षात यमसरूप है(।) इन आदि ० और भी वहुतेरे है जो तुम्हारे लिये जी देने को०उपस्थित हो रहे है ओ लडाई मे ऐसे निपुण ० है कि अभी पहार से भी होवे तो उनसे भी जा ० युद्ध करे(।) तिस्से हे महाराज अव आप आज्ञा ० कीजिये सव तुम्हारे वश मे है(।) इतनी वात के सु(-) ० नते ही श्री रामचन्द्र उठकर सुग्रीव से मिले ओ ० हर्ष से आषो मे आशू भर भर यह वचन लगे विनसे कहने (—)अहो सुग्रीव तुम मेरा काम सव ० जानते हो तिस्से सीता को ढूढने के लिये जो ० जिस दिशा के योग्य है वुन्हे वहा भेजो(।) यह सु(-) ० न अति हर्षित हो तुरन्त राजा सुग्रीव ने दि(-) ० शा दिशा मे वानरो को जो वडे पराक्रमी थे भे(-) ० जा और अगद जाववान हनूमान नल सुषे(-) ० ण शरभ मैन्द-दिविद-इन महावीरन को ० यत्न कर दक्षिण दिशा मे भेजा ओ चलने के वेर वुन सवन से यह वचन कहा कि सुनो भा(-) ० इओ तुम सव मन लगा करके एक मास मे सी(-) ० ता का समाचार लाओ अरु यह जान लो कि ० वुन्हे विन देषे एक मास के उधर एक दिन के ० भी वीते जो यहा आवेगा सो जी से मारा जावे(-) ० गा यही विसका दण्ड होगा(।) इस प्रकार वडे व ० डे पराक्रमी वानर को भेज कर सुग्रीव पुन रा(-)० म को प्रणाम कर उनके पास आ खडे हूए ओ च(-) ० लने की वेरिया श्री रामचन्द्र ने हनुमान से क(-) ० हा कि सुनो वायुकुमार तुम जाते हो "तो विश्वास ० के लिये यह अगूठी कि जिसमे हमारा नाम लि(-) ० खा है लिये जाओ अरु सीता को दीजो(।) इस ० काज मे तुम्हारा ही भरोसा है तुम्हारा वल ह(-) ० म जानते है जाओ वाट मे तुम्हे शुभ होवे(।) इ(-) ० स प्रकार सुग्रीव ओ रामचन्द्र की आज्ञा पा(-) ० य अगद आदि वानर सव सीता को षोजने ० के लिये चले तो जहा तहा विसे ढूढते ढूढते ० निदान विन्ध्याचल पर सव आन पहुचे तो ० वहा देषते है क्या कि पर्वत समान महा भया(-)० वन एक राक्षस वैठा" है ओ मृग पक्षीन को प(क)ड०प(क)ड खाता है तव हो न हो यही रावण है य(-) ०ह ठहरा किचकिचा कर सव उस पर जा टूट परे ओ०लगे घुसो से उसे मारने ओ दातो से काटने(।) ० जव कि जाना कि यह रावण नही है उसे छो(-) ० ड कर वहा से उठे ओ दूसरे किसी महावन मे ० गये तहा षोजने षोजते मारे प्यास के ऐसे व्या(-) ० कुल भये

कि कठ ओ तालू लगे शुषने ओ ० कहू पानी देषने मे न आवे इतने मे घास औ ० लताओ से छिपा हूआ पर्वत का वडा सा ए(-) ० क षोह देषने मे आ[1] कि जिममे से पानी के भी(-) ० गे हूऐ हस ओ वकुले सव वाहर निकल नि(-) ० कल पक्ष सुखाते थे(।) तद सव वानरो ने विचा(-० रा कि इस कन्दरे मे अवश्य जल है चलो भी(-) ० तर जाकर के पीगे(।) यो कह विस अधेरे षोह ० मे आगे हनुमान जी पैठे तिसके पीछे परस्प(-) ० र एक का एक हाथ पकड कर सव वानर भी घुस गये(।) जद वहुत दूर जा पहुचे तद देषे तो अ(-) ० ति निर्मल जल से भरा हूआ ओ कल्पद्रुम ० के समान एक महा सुन्दर तलाव है वुसके ० तीरो पर पक्के पक्के ओ मधु से मीठे मीठे फलो ० के भार से झूके हूऐ अति सोहावन वृक्ष स(-) ० व लगे हैं ओ नाना मणि वस्त्रन से ओ खाने ० पीने की भाति भाति की वस्तुन से भरे हूऐ सु(-)० वर्ण के घर है पर कोई मनुष्य उन्हमे नही है (।) ० तव चकित होकर पहले वुस सरोवर पर सव ० गये निदान धीरे धीरे विन मदिरो के भीतर ० पैठ तो एक भवन मे देषते क्या है कि चीर वस(-) ० न पहने तेज मे सूर्य समान एक योगिनी ० आसन मारे वैठी है ओ व्रह्म के ध्यान मे मग(-) ० न हो रही है तद डर कर सवो ने भक्ति से वि(-) ० से प्रणाम किया कि इतने मे वानरन को देष ० कर वह वोली कि तुम सव कौन हो ओ किस ० के दूत हो ओ वल से किसलिए मेरे स्थान मे ० आये(।) यह सुन हनूमान जी लगे कहने कि ० सुनो माता वात यह है कि अयोध्या के पति ० दशरथ नाम एक राजा थे विन के जेष्ठ पुत्र श्री ० रामचन्द्र हैं सो पिता की आज्ञा से स्त्री भाई स(-) ० मेत दडकारण्य मे आये तहा से विनकी भा(-) ० र्य्या को दुष्ट रावण हर ले गया तव वे दोनो भा(-) ० ई सुग्रीव पास गये तद अति हर्षित हो सुग्रीव(-) ० ने उनसे मित्रता करी औ हमसे कहा कि ० तुम सव जानकी को जा ढूढो (।) तव प्रभु की ० आज्ञा पाय तुरन्त हम सव निकले ओ वि(-) ० से षोजते षोजते तृषातुर हो इस महा कद(-) ० रे मे पैठे तो सयोगन यहा आन पहुचे(।) अव ० कहो तुम कौन हो ओ किसलिए यहा रह(-) ० ती हो(?) योगिनी सुनकर वहुत हर्षानी ओ ० वोली कि अच्छा तु(म) सव भर पेट फल मूल खा ० अमृत समान पानी पी सन्तुष्ट होकर मेरे ० पास आओ तद एक ओर से मै अपना वृ(-) ० त्तान्त तुम्हे सुनाऊगी(।) इतनी वात के सुनते ० ही वे सव उस घर मे से निकले ओ वाहर जा खा० पी अति तृप्त हो फिर योगिनी के पास आ हा(-) ० थ जोड कर सव खडे हूऐ तव हनुमान से वह ० लगी कहने कि आगे विश्वकर्मा नाम गध(-) ० र्व की हेमा नाम एक पुत्री थी विसके नृत्य से ० अति प्रसन्न होकर महेश ने विश को यह ० महा अद्भुत नगर वसने को दिया तव वह य(-) ० हा ही आ लगी रहने ओ दिव्य गधर्व की पु(-) ० त्री दिव्य प्रभा नाम मै विसकी सखी थी ज(-) ० व लाषो वरस के वीते व्रह्मलोक को वुह चली ० यह वात मुज से कह गयी कि तुम अभी इ(-) ० सी शून्य नगर मे वसी रहो जव कि त्रेता युग ० आवेगा तव राजा दशरथ के ह्या आप ना(-) ० रायण अवतार लेगे ओ धरती के भार उ(-) ० तारने के जगलो मे फीरेगे तद विन की भा(-) ० र्या को ढूढते हूऐ वानर सव तुम्हारे कन्दरे मे ० आवेगे(।)तव समाचार पा निकट जा श्री राम(-) ० चन्द्र

---

१. आया।

को पूज यत्न से उनकी स्तुति कर विष्णु(-) ० धाम को कि जहा योगिओ का गम्य है तुम ० जाइओ तिस्से श्री राम के पास तुरन्त मै यहा ० से जाऊगी तुम अपनी अपनी आषे मूदो ० तो सहज मे इस कन्दरे के वाहर जाओगे (।) इ(-)०तनी वात के सुनते ही वानर सव जो आष ० मूद चूके कि तो ही वुस षोह मे से वाहर वन मे ० सव आन पहुचे तद विस मन्दिर मे से तुरन्त ० निकलकर वुह योगिनी भी श्री रघुनाथ के ० निकट गयी ओ सुग्रीव लक्ष्मण समेत उ (-) ० न्हे देष प्रदक्षिणा प्रणाम कर नम हो यह ० वचन लगी विनसे कहने(—)महाराज मै तुम्हा(-) ० री दासी हू आपके दर्शन करने के लिये आ(-) ० यी हू लाषो वरस कदरे मे मैने महा कठिन ० तपस्या करी सो अव मेरा तप फला जो आ(-) ० प का दर्शन हूआ(।) मै तुम्हे प्रणाम करती हू तु(-) ० म माया से रहित आदि पुरुष हौ वाहर भीत(-) ० र सव मे व्याप रहे हो ओ जैसे नट भेष वना(-) ० ता है वैसे ही माया कर मानुष सरूप हुऐ हो ० पर अज्ञानता से लोग तुम्हे पहचान हीं' श(-) ० कत्ते अपने भक्तन के हृदय मे भक्ति उप (-) ० जाने के लिये अवतार लिये हो(।) स्त्री होकर ० मै क्यूकर तुमको पहचान शकू(।) ससार मे तुम्हारा भेद कोई जाना करे पर हे कृपानिधा(-) ० न मेरे हृदय मे आपका यही सरूप सदा व(-) ० से(।) वडा भाग है कि जिनके दर्शन से ससार सा(-) ० गर फिर कभी दृष्ट आने का नही ओ हि (-) ० य मे सुमति उपजाती है ऐसे जो मुक्ति दाय ० क आपके युगल चरण है विनका दर्शन मु(-) ० जे कराया है(।) महाराज स्त्री पुत्र धन इनके म ० द से माते हूए जो मुज से लोग है तिनसे तुम्हा(-) ० री स्तुति कुछ न हो शकत्ती तुम निर्गण सगुण दो(-) ० नो सरूप हो मै तुम्हे वार वार प्रणाम करती हू तुम्हा (-) ० रा आदि अन्त नही मिलता तुम सर्वव्यापी ओ ० काल सरूप हो मै तुम्हे आदि पुरुष मानती हू(।) म(-) ० हाराज तुम्हारी गति को जान शके (।) न तो तुम्हे ० कोई मित्र है न वैरी पर तुम्हारी माया से मोहि(-) ० त मनुष्यन को तुम वैसे हि सुझते हो(।) यो कह फि(-) ० र योगिन वोली कि अपनी कथा का जो श्रवण ० है उसका फल लोगन को देने के लिये तुम अ(-) ० वतरे हो कितने तो तुम्हे यो कहते है ओ कि(-) ० तने यो वोलते है कि राजा दशरथ की तपस्या ० सुफल करने के हेतु(,) ओ वहुतेरे ऐसा कहते है ० जो कौशल्या की प्रार्थना से तुम जन्म लिये हो(,) ० ओ कितने यह कहते है कि दुष्ट राक्षसन को ० मार धरती का वोझ उतारने के निमित्त व्रह्मा ० की विनती से तुम मानुष स्वरूप हूए हो(।) तुम्हा(-) ० री कथा जो नर सुनता ओ गाता है तिनही को ० तुम्हारे इन चरणो का जो भव सागर पार उतार(-) ० न हारे है दर्शन होता है (।) रज तम सत ये जो तुम्हा(-) ० री माया के गुण है तिनमे मै वद्ध हू ओ तुम इन ० से अलग हो इस कारण मै तुम्हे क्यू कर पहचा(-) ० नू जो आपकी स्तुति करू तिस्से लक्ष्मण सु(-) ग्रीव सहित धनुष वाण लिये यह जो सावली ० तुम्हारी मुरति है तिसको मै सदा प्रणाम करती ० हू(।) तुम घट घट वासी पूरण व्रह्म हो(।) इस भाति ० अतिनम्र होकर जव वह स्तुति कर चुकी प्र(-) ० सन्न हो के श्री रामचन्द्र वोले कि तेरे मन मे कि(-) ० स वस्तु की लालसा है सो मुज से माग तव उ(-) ० सने कहा कि मै जहा कही रहू तहा तुम्हारे चर(-) ० णो की मुझे भक्ति

---

१. नहीं।

होए ओ आपके भक्तन ० के सग और मेरी जीभ प्रीति से सदा राम राम ० कहती रहै ओ धनुष वान लिये जटा धारण ० किये पीत वसन अरू कौस्तुभ आदि नाना अल(-) ० कार पहने सीता लक्ष्मण को साथ लिये श्या(-) ० म सुन्दर जो आपकी मूरति है विसका सदा ० मै ध्यान करती रहू यही वर मै मागती हू (।) श्री ० रामचन्द्र वोले(—)अछा वदरिकाश्रम मे तुम ० जाओ अरु वहा ही मुजे स्मरण करती हुई ०इस देह को तज कर मुजी मे मिल जाइओ(।) इ(-)० स भाति जव श्री रघुनाथ ने कहा प्रणाम क(-)० र योगिन विन से विदा हूई ओ तुरन्त वदरि(-) का श्रम मे जा मन से राम का ध्यान करती हू(-)० ई कुछ दिन तो वहा रही निदान देह तज कर प(-)० रमपद को गयी० इति श्री रामचरित्रे कि (-) ० ष्किन्धा काण्डे षष्टोध्याय (।)६(।) वहा विस० षोह मे से निकल कर जव वानर सव वाहर आ ० ये तव सीता को ढूढते ढूढते एके तो दुवले हो ० ही रहे थे निदान विसकी चिन्ता से निपट व्या(-) ० कुल हूए तद अगद जो वुन मे वडा प्रधान ० था सव वानरो से लगा कहने कि जगलो मे फि(-) ० रते हूए हम लोगन को यह मास अव-निश्च(-) ० य वीता न तो सीता का उद्देश मिला ओ न रा(-) ० जा की आज्ञा रही(।) जो किष्किन्धा को चले तो ० सुग्रीव हम लोग को जी से मार डालेगा तिस ० मे मुजे तो वह कधी छोडने का नही(।) वुसे मुझ ० मे क्या प्रीति(?) रामचन्द्र ने मेरी रक्षा की है सो वि(-) ०न का काज नही भया मै विनसे झूठा हूआ ० तिस्से सुग्रीव मेरा निश्चय प्राण लेगा विस ० दुष्ट को लाज दया धर्म का डर कुछ है ० नही क्यूकि भाई की स्त्री मा तुल्य है तिस्से भो(-) ० ग करता है इससे विस अधम के पास मै जा(-) ० ने का नही वरन जिस डौल से होगा विस डौ(-) ० ल से यहा ही मै अपना प्राण तजूगा(।) इस प्र(-) ० कार विलक विलक जद अगद ने कहा तद ० दूने दुखित होकर सव वानर न लगे उससे कहने कि०ऐ महाराज तुम किसलिये इतने घवराते हो ० तुम्हारे प्राण के रक्षक हमलोग है तुम्हारे लिये ० इसी षोह मे जो सव प्रकार के सुखदायक ओ ० इन्द्रपुरी के समान है हम सव वसेगे तुम तनि(-) ० क भय मत करो(।) इस भाति जव वानर सव ल(-) ० गे कहने तव सुन कर हनुमान ने अगद को ० गरे लगा लिया ओ कहा तुम किस लिये ऐ(-) ० से कातर होते हो तुम तारा के पुत्र हो राजा सु(-) ० ग्रीव तुम्हे वहुत प्यार करते है ओ लक्ष्मण ० से भी अधिक प्रीति श्री रामचन्द्र तुमसे कर(-) ० ते है विनसे तुम्हे कधी भय नही है (।) मै तुम्हा(-) ० रे हित मे सदा रहता हू तुम अपने जी मे औ(-) ० र कुछ मत विचारो ओ वानरो ने जो कहा कि ० इस कदरे मे वास करो यहा श्रीरामचन्द्र से तु(-) ० म्हारी कुछ वुराई होने की नही सो तीनो लो(-) ० क मे ऐसा कौन जगह है जो राम के वाण से भ(-) ० स्म नही हो शकत्ता ओ जो वानर तुम्हे वुरी म(-) ० ति देते है सो अपनी स्त्री पुत्रादि को छोड क(-) ० र भला क्यूकर तुम्हारे साथ सदा रहेगे तुमही ० इस वात को शोचो(।) यो कह फिर हनुमान जी ० वोले कि और भी रहस्य मुज से सुनो(—)श्री रा(-) ० मचन्द्र मनुष्य नही है वे साक्षात नारायण ० हैं ओ सीता को जो सुनते हो सो सवको मो(-) ० हनहारी भगवान की माया है ओ लक्ष्मण ० जी इस पृथ्वी के आधार साक्षात शेष ना(-) ० ग है व्रह्मा की प्रार्थना से सकल दानवन को ० वधने के लिये माया कर मानुष सरूप हूए है ० ओ हम सव उन वैकुठ वासी विष्णु के गण है ० अपनी इछा से जव वे मनुष्य भये हम सव भी ० वुन की माया से वानर हूऐ

हमने आगे विन ० की वडी आराधना करी तव विन की कृपा ० से वुन के गण भये अव उनकी सेवा टहल क (–) ० र वैकुण्ठ मे जा उनके सग फिर हम सव आ(-) ० नद विहार करेगे (।) इस भाति अगद को जद ० हनुमान जी समझा चूके तद वुन समेत स (-) ० व वानर वहा से चले तो सीता को ढूढते हूए ० धीरे धीरे पहले विध्य नाम पहाड पर गये (।) ज(-) ० व वहा भी वुसका कुछ भेद न पाया तव वहा ० से उठकर दक्षिण समुद्र के तीर महेन्द्र ना(-) ० म गरिवर के वहुत निकट अति पवित्र एक ० दूसरे पर्वत पर सव जा पहुचे तो वहा अगा(-) ० ध ओ महाभयावन सागर को जिसका कु(-) ० छ पारावार न सूझे देषकर सव निपट घवरा ० गये ओ लगे कहने कि अव क्या करे यह वत ० राते हूऐ निदान उदधि तीर सव वीर गये तो ० आपस मे लगे समत करने ओ कहने कि ० फीरते ही फीरते हमलोगन को यह मास यो ० ही वीत चूका न तो अवतक रावण को देषा न ० सीता जी का समाचार पाया अव सुग्रीव को ० क्या उत्तर देगे वह महाक्रोधी है निसन्देह ह(-) ० म को मार डालेगा तिससे उस अधम के मार(-) ० ने से यह अति उत्तम विचार है कि यहा ही वैठ ० कर आप से हमलोग मरे (।) यह निश्चय कर ० कुश विछा विछा मरने के लिये सचमुच स(-) ० व वैठ गये कि इतने मे महेन्द्र की कदरे से व(-) ० डा सा एक गीध धीरे धीरे वाहर निकल आ(-) ० या औ पात जोर से वैठे हूए सकल वानर को देष कर लगा मद मद कहने (—) अहा आज ० तो भगवान ने वहुत भक्ष्य मुजे भेज दिये ० है अव नित्य एक एक कर इन सव को मै खाऊ(-) ० गा इस भाति गीध की वाते सुन वानर सव ० जी मे वहुत डर गये ओ कहने लगे कि हा य(-) ० ह निश्चय हमलोगन को खावेगा (,) न तो श्री ० रामचन्द्र का कुछ काज किया न सुग्रीव का हि(-) ० त और न अपना ही कुछ भला हूआ इस दुष्ट ० से वृथा अपमृत्यु पा अव अवश्य हम सव ० यमलोक जाएगे (।) अहो जटायु तुम वडे धर्मा ० त्मा थे जो राम के काज मे अपना प्राण तज वि(-) ० स मुक्ति धाम को पहुचे कि जहा योगी लोग ० भी शीघ्र नही जा शकत्ते (।) जव उन्होने यो क(-) ० हा सपाति वहुत भैचक हूआ अरू वोला ० कि अरे यारो तुम सव कौन हो जो मेरे भाई का ० नाम कि जिसका श्रवण मेरे कानो मे अमृ(-) ० त सा लगता है आपस मे लेते हो निडर हो ० कर अपना समाचार मुजे सुनाओ (।) यह ० सुन अगद तुरन्त उठे ओ विस के समीप ० जा कहने लगे (—) महाराज राजा दशरथ के पु(-) ० त्र रामचन्द्र है सो लक्ष्मण भाई समेत सी(-) ० ता को सग लिये घर से निकल कर वन मे व(-) ० से थे जव अहेर के लिये वे दोनो भाई एक दि(-) ० न वाहर निकल गये तव दुष्ट रावन वहा से ० सीता को हर ले चला तो राम राम कर विन ० का पुकार ओ रोना सुन कर महाप्रतापी ओ ० पक्षिन मे इन्द्रतुल्य जटायु तुरन्त उठ दौडे ० अरु जाते ही रावण से लगे दारुण युद्ध कर(-) ० ने निदान दानव वडा वलवान था सो जटा(-) ० यु को मार कर सीता को लिये अपने भवन ० को चला ही गया तिस पीछे श्री रघुनाथ के हाथ से ० आग पा जटायु विष्णुपद को गये तव ल (-) ० क्ष्मण सहित रामचन्द्र सुग्रीव के पास आ(-) ० ये ओ अग्नि साक्षी कर विन से मिले औ(-) ० र वुनके कहने से महावीर वाली को मार क(-) ० र सकल वानरो के राजा[1]

---

१. 'राज' होना चाहिए।

श्रीरामचन्द्र उ(-) ० न को दिया तद सीता को ढूढने के लिये वि(-) ० न राजा ने हमे भेजा ओ कहा कि एक मास ० के भीतरे ही यहा आओ नही तो मै तुम्हे जी ० से मार डालूगा सो महाराज सुग्रीव की आ(-) ० ज्ञा से पर्वत पर्वत जगल जगल सीता को ढूढते ढूढते हम सव यहा आन पहुचे ओ यह ० मास यो ही वीत गया पर न तो आज तलक ० रावण से भेट हूई न जानकी का कुछ समा (-) ० चार मिला(।) इस कारण इस पार समुद्र के ती(-) ० र पर वैठ कर हम सव अपना अपना प्राण ० तजा चाहते है(।) जो सीता को आप जानते ० हो तो कृपा कर हमे वता दीजे इस भाति ज(-) ० व अगद ने कहा तव मन मे हर्षा कर सपाति ० वोला(—)जटायु तो मेरा वडा प्यारा भाई था ला(-) ० षो वरस पर आज तुमने विसका वृत्तान्त ० मुझे सुनाया है तिससे मै तुम्हारे वचन ० की सहायता करूगा पर उस भाई को ति ० लाजलि देने के लिये पहले मुजे जल के समी(-) ० प ले चलो तव तुम्हारे काज के लिये सीता का० समाचार सव मै तुम्हे सुनाऊगा(।) ० इतने वच ० न के सुनते ही अति हर्षित हो तुरन्त सव वा(-) ० नरो ने सपाति को वहा से उठा कर सागर ती(-) ०र ला रष दिया और जव वह शलिल मे स्ना(-) ० न कर भाई को पानी दे चूका तव फिर विसे वु(-) ० सके स्थान पर सव ले आये तद सकल वानर(-) ० न को हुलसित करता हूआ लगा वह कहने ० कि त्रिकूट नाम पहाड पर लका नाम एक न(-) ० गर है तहा अशोक वाटिका मे सीता है ओ ० राक्षसिन सव विनकी चौकी करती है पर स(-) ० मुद्र के वीच मे यहा से चार शौ कोश पर लका ० है(।) सीता और वुस पुरी को निसन्देह मै यहा ० से देषता हू तुम सव अपने जी मे तनिक भी ० सशय मत करो मै गीध हू वडी दूर तक मेरी ० दृष्टि पहुचती है(।) जो वीर चार शौ कोश समु(-) ० द्र लाघ शके सोई सीता को देष कर निश्चय फिर ० आवेगा (।) क्या करू सकल राक्षसो के अधिप ० ति विस दुष्ट रावण को तो मै एकेला ही जा क(-) ० र मार डालता पर विना पक्ष का हू इससे कुछ ० नही कह शकत्ता(।) तुम सागर लाघने का यत्न क(-)०रो तव तो रावण को श्रीरामचन्द्र मारेगे तिससे ० शौ योजन समुद्र लाघ लका के भीतर जा जा(-)० नकी को देष वातचित उनसे कर पुन वारि(-) ० धि लाघ यहा आने का तुममे किसे सामर्थ्य ० है यह आपस मे ठहराओ ० इति श्री रामच (-) ० रित्रे किष्किन्धा काण्डे सप्तमोध्याय (।) ७(।) यो ० कह फिर अपना आगे का वृत्तान्त सपाति ० लगा वुन वानरो को सुनावने कि आगे हम ० ओ जटायु दोनो भाई जव अछे युवा हूए तव ० वल के गर्व से मात रहे थे निदान अपना अप ( ) ० ना पराक्रम जानने के हेतु मारे मद के सूर्य म(-) ० डल तक जाने के लिये हम दोनो भाई उपर ० को उडे तो जाते जाते वहुत सहस्र योजन ० जा पहुचे(।)जव सूर्य के तेज से जटायु की देह ० लगी जलने तव वुह छोटा भाई था इससे औ(-) ० र उसके मोह से मैने रक्षा के लिये अपने पाखो ० के नीचे विसे कर लिया ओ वीच अधर मे पख ० पसारे तनिक मै ठहर गया कि इतने मे कीरण ० से मेरे पख जल गये ओ इस पहाड पर मै गि(-) ० र पडा तो दूर के गिरने से मै निपट मूर्छित हो ग(-) ० या कुछ चेत नही रहा निदान तीसरे दीन मे ० फिर मुझे प्राण पलटा पर पक्ष जो मेरे जल ग(-)० ये थे इससे मन मे ऐसा भ्रम हूआ कि न तो मै दे(-) ० श को पहचान शका और न पर्वत को(।) जद कुछ ० घडी के वीते धीरे धीरे मेरी आखे खुली तद ० थोडी सी दूर पर अति सुन्दर एक

आश्रम देष ० कर आहिस्ते आहिस्ते मै वहा जा पहुचा तो ० चन्दमा नाम एक वडे ऋषीश्वर जो विस स्था(-) ० न मे रहते थे मुजे देष के वहुत विस्मित भये ओ ० लगे मुज से कहने(—)अरे सम्पाति यह क्या तेरा ० डौल है किसने यिह तेरी दुर्दशा की है मै नीके ० जानता हू तू आगे वडा वलवान था पर किस ० कारण तेरे पाख जल गये सो समझा कर मु(-) ० ज से कह जो मेरा सन्देह जावे (।) इस भाति ज(-) ० व मुनि ने पूछा तव सव अपनी करतूति सु(-) ० नाकर निदान दीन की भाति मैने विन से क(-) ० हा(—)महाराज अव मै विना पक्ष का क्यू कर जी(-) ऊगा इस चिन्ता से मै वहुत जलता हू यह सु(-) ० न मुझे देष निपट दयावत हो आषो मे आ(-) ० शू भर भर ऋषि लगे मुज से कहने कि हे पुत्र ० जो मै कहता हू विसे पहले सुन लो फिर जो ० जी चाहे जो कीजो(—)सो यह है कि इस दुख का ० कारण देह है सो देह कर्मसे उत्पन्न हूई ओ ० कर्म अह भाव से (-) अहभाव अज्ञानता से(।) सो ० अहभाव जड है पर जैसे आग सग लोहा ० भी आग वनता है वैसे ही जीव से सदा सयु(-) ० क्त होकर अहभाव भी जीव ही सरूप होना ० है तव जीव सरुप जो अहभाव है विससे देह ० चेतन होती है इसी प्रकार जैसे जीव से काया ० चेतन होती है तैसे ही अहभाव से जीव को य(-) ० ह वुद्धि होती है कि मै देह हू(।) यही जो विस की स(-) ० मझ है सोई इस ससार मे मुख दुख का हेतु ० है ओ विसी वुद्धि से वह जीव अपने को देह ० ओ मै काज करने वाला हू यह निश्चय कर ० नाना कर्म करता है ओ भले वुरे जो विन के फल है तिनमे वद्ध होता ओ पुण्य से ऊपर जाता ० है पाप से नीचे आता है(—) इस प्रकार से कि य(-) ० ज्ञ दान आदि वहुत पुण्य मैने किया अव स्व(-) ० र्ग मे जा सुख भोगूगा यह वासना कर पुण्य ० के प्रताप से स्वर्ग जा पहले तो वुह जीव वहुत ० वर्ष आनन्द विहार करता है निदान जव पुण्य ० निघटता है तव वहा से चद्र मण्डल मे गिरता है ० फिर वहा से शीत समेत के पृथ्वी मे विरवान[1] आ(-) ० दि पर वरसता है तहा कुछ दिन रह के निदान प्रा(-) ० णी के चार प्रकार के भोजन से वीज होकर ऋ(-) ० तु समय स्त्री की योनि मे गिरता है तो विस के ० लोहू समेत गर्भ मे जा एक दिन मे तो गढा के[2] कु(-) ० छ एक कठोर होता है ओ पाच रात मे वुल्वु(-) ० ल्ला[3] सा वनता ओ सात रात मे वुह मास का पि(-) ० ण्ड होता है सो पिण्ड एक ही पक्ष मे रक्त माह ० डूवता है और पच्चीश रात मे वुस पिण्ड मे से ० पाच अकुर निकलते है(।) वे ही क्रम क्रम एक ० मास मे गला शिर काध पीठ पेट ये पाचो अग ० वनते है(।) इसी प्रकार दूसरे मास हाथ पाव पा(-) ० जर कटि जाघ(,) तीसरे माह अग मे जहा जैसा ० चाहिए वैसा जोड चौठे मे क्रम क्रम सव उग(-) ० लिया पाचवे मह नाक कान आख नख ओ ० दातो की पगति छठे मास के भीतरे ही का(-) ० नो मे छेद सातवे मे मार्ग लिग उपस्थ ना(-) ० भी ओ आठवे मास मे रोम शिर मे केश ये स(-) ० व विस जीव को उत्पन्न होते है(।) इस प्रका ० र से स्त्री के गर्भ मे वह जीव नित्य वढता है ० ओ पाचवे मास से चेतन होता है ओ माता ० जो खाती है विस अन्न का सार रस नाभी ० के निपट सूक्ष्म छेद से वुस जी को पहुचता ० है तिसी से गर्भ मे दिन दिन वुह वढता है ओ ० कर्म भोगने के लिये नही मरता अरु जहा ० जहा जन्म लिया ओ जो जो कर्म किया

---

१. वृक्ष। २. गढ़ा जाकर ३. बुलबुला।

सो ० सव सुमर जठर की आग से दग्ध हो यह वच (-) ० न कहता है कि नाना योनि भ्रमता हूआ को(-) ० टीन का मै वाप भया ओ कोटीन का पुत्र पर ० पशु की सी मेरी बुद्धि थी क्यूकि कुटुम्ब पाल (-) ० ने के लिये भला वुरा अनेक यत्न कर जैसे ध(-) ० न अर्जन किया वैसे आवागमन से वचने ० के हेतु स्वप्न मे भी हरि की चिन्ता नही करी औ० जो गृह पुत्रादिक सदा अनित्य है तिन को ० नित्य कर माना जो काज नही करने का सो(-) ० ई सव किया अपना हित कुछ न विचारा ० उन्ही का यह फल है जो गर्भ का महा दुख ० भोगता हू अव जो नरक समान यह गर्भ है तिसमे से किसी प्रकार से निकलूगा तो विष्णु ० ही को नित्य पूजूगा कि जिससे ऐसे सक(-) ० ट मे फिर न कभी फसूगा(।) इस प्रकार चिन्ता ० करते करते निदान अति दुखित होकर जै(-) ० से नरक मे से पापी ओ सडे हूए घाव मे से ० कीडा वराए वैसे ही जनम समय जोनि मे ० से वह जीव निकलता है तो लडकपण का म(-) ० हा महा दुख भोगता है औ यौवनादिक मे ० जो जो कष्ट पाता है सो सव मे विदित है ओ ० तुम भी जानते हो इसलिए विन कष्टो का ० वर्णन मैने तुमसे नही किया(।) इस प्रकार देह ० की ममता से नरक भोग ओ गर्भवास का दुख ० जीव को होता है तिस्से प्राणी को उचित है कि ० ममता को छोड देवे और देह से अलग सुद्ध ज्ञा(-) ० न सरूप जीव को अपना सरूप पहचाने कि ० जिसके जानने से देह जावे अथवा कर्म भो ० गने के लिये रहे पर योगिन को सुख दुख का ० कुछ हर्ष विषाद नही होता(।) यह समझ जव ० तक कर्म भोग है तव तलक इस देह को जैसे ० साप केचूल रषता वैसे ही रष्षो ओ पीडा से ० आकुल मत हो(।) यो कह फिर चन्द्रमा वोला ० सुनो पुत्र एक और भी हित वात मै तुम्हे वता(-) ० वता हू कि रावण को मारने के लिये राम रूप ० हो त्रेता युग मे नारायण अवतार लेगे औ ० सीता लक्ष्मण समेत दडकारण्य मे आवे(-) ० गे तहा राम लक्ष्मण के वाहर गये पर विनके ० आश्रम मे से चोर की भाति सीता को रावण ० हर लेगा ओ लका मे ले जा रष्षेगा तव सुग्री(-) ० व की आज्ञा से सीता को ढूढने के लिये सा(-) ० गर तीर वानर सव आवेगे तो वहा तुम से ० विन को भेट होगी तद सीता की स्थिति तुम ० विन्हे वताइओ तधी तुम्हारे ये दोनो पक्ष ० फिर कर नये उत्पन्न होगे(।) इस भाति चद्र ० मा मुनि ने समझा कर मुजे वहुत हर्षित कि(-) ० या सो हे वानरो सच मुज अव मेरे पख न ० ये हूए(।) जाओ तुम्हारा कल्याण होवे(।) तुम सव ० निश्चय सीता को देषोगे पर समुद्र लाघने का यत्न करो(।) इसमे जिन घबराओ तुम स(-) ० व पार हो शकत्ते हो क्यूकि जिनके नाम के ० सुमरने से अपार ससार सागर तर पापी ० जन भी विष्णुपद को जाते है तिन श्री राम ० चन्द्र के जो तीनो लोक के सृजने वाले है तु(-) ० म सव दूत हो ऐसे वुझा समझा वानरो को ० सुचित कर सम्पाति आकाश पथ को गया ० ० इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा काण्डे अ(-) ० ष्टमोध्याय (।) ८(।) जव पक्ष पाकर गीध वहा ० से उड गया तव वानरन को वडा हर्ष हूआ ० ओ सीता को देषने के लिये अति लाल(-) ० सा तो वडे वडे जलजन्तु ओ तरगन से नि(-) ० पट भयावन ओ आकाश सा अगम्य ० सागर को देषकर आपस मे यो सव लगे व(-) ० तराने कि अव क्यूकर इसे पार होवे निदान ० अगद वोले सुनो वीरो तुम सव अत्यन्त ० शूर हो तुम्हारा पराक्रम विख्यात

है तिस ० से मै तुमसे यह पूछता हू कि सागर पार हो ० कर राजकाज[1] को कर लावेगा सो मेरे आगे आ ० खडा होवे वही हम सभो का प्राणदाता ओ राम ० सुग्रीव का भी प्रतिपालक होए(।) इस भाति अग(-) ० द की वाते सुन सव वानर चुपके हो रहे ओ आ(-) ० पस मे परस्पर एक का एक लगे मुह देषने तद०फिर अगद वोले कि सुनो यह मौन साधने का०समय नही है राजकाज के लिये तुम सव अप(-) ० ना अपना पराक्रम हमे सुनाओ देषे किस ० से यह काज हो शकेगा(।) जव कि उन्होने यो क(-) ० हा वीर सव अलग अलग लगे अपना अ(-) ० पना वल सुनाने तो कोई वोला दश योजन ० सागर मै हेल शकत्ता हू ओ किसी ने कहा वी(-) ० श किसी ने कहा तीश इस प्रकार दश दश यो(-) ० जन कर अशीतलक सव आये तिनमे जाव ० वान यो वोला की जव भगवान वामन अवता(-) ० र हूए थे ओ सारी पृथ्वी को एक डेग किये जव तक ० खडे थे तव विनके पग को इक्कीश वार मै प्रद(-) ० क्षिणा कर आया अव मैरी वुढापे की अव (–) स्था है इस कारण अधिक नही नब्बे योजन ० तक सागर हेलने का अव मुझे सामर्थ्य है(।) इ(-) ० सी प्रकार अगद भी वोले कि चार शौ कोश स(-) ० मुद्र मै पार हो शकत्ता हू पर फिर इसे लाघ आ(-) ० ने का मुज मे सामर्थ्य है कै नही यह मै नही जा(-) ० नता(।) जाम्ववान ने उत्तर दिया कि सुनो महा(-) ० राज तुम यद्यपि समर्थ हो पर तो भी आपको ० भेजना हमे उचित नही क्यूकि हम सभो को ० आज्ञा देने वाले तुम राजा हो(।) अगद वोले(—) ० अछा ऐसा ही है तो आगे की भाति फिर कुशा(-) ० सन पर हम सव वैठ रहे क्यूकि किसीने यह का(-) ० र्य नही किया तो क्यू कर जी शके(।) तव जाम्व(-) ० वान विन से कहने लगा कि अव मै तुम्हे वीर ० देषलाता हू कि जिससे हमारा काम सिद्ध होगा ० यो अगद को सुना कर पुन लगा हनुमान से क(-) ० हने(—)ऐ पवन कुमार इस महाभारी काज मे तू ० अनजान सा एकान्त मे जा क्यू चुपचाप वैठा ० है अपना सामर्थ्य देषला तू साक्षाद्वायु का पु(-) ० त्र है औ पराक्रम मे वाय समान तेरा जन्म रा(-) ० म काज ही के लिय[2] हूआ है(।) जनते[3] ही पहले तू ० ने उगते हूऐ सूर्य्य को देषकर जाना कि यिह ० कोई पक्का हूआ फल है इसे तोड लू यो शोच ० लडकपण वश हो ऐसा फलास[4] मारा कि पा(-) ० च शौ योजन पर अधर मे जा निदान धरती ० पर गिर पडा(।) तेरे पराक्रम की महिमा को व(-) ० र्णन कर शके(।) उठ श्री रामचन्द्र का कार्य क(-) ० र हम सभो का प्राण वचा ले(।) इस भाति जव ० जाम्ववान ने कहा सुन कर हनुमान जी बहुत ० हर्षाने तो सिंह समान ऐसा महानाद किया कि ० मानो सारा व्रह्माण्ड ही गर्ज उठा और जैसे दू(-) ० सरे त्रिविक्रम ही होवे ऐसे पर्वत सरूप वन कर य(-) ० ह वचन वे कहने लगे कि सागर हेल लका जला ० कुल समेत रावण को मार कर सीता को मै ला ० दू अथवा दहने कर से रावण को वाँध लिये ० ओ वाये हाथ से पर्वत सहित लका को उखा(-) ० डे रामचन्द्र के आगे जा रख दू अथवा सीता ० को देष ही कर चला आऊ तुम सव नीके वि ० चार के कहो वैसा मै करू(।) जाम्ववान वोले हनु(-) ० मान तुम यह देष ही कर चले आओ कि सीता ० जीवती है कै नहीं पीछे राम समेत अपना ० पौरुष हमे देषलाइओ(।) हम जानते है तुम ० समान महावीर इस

---

१. राजा का कार्य। २. लिये। ३. जनमते। ४. छलाँग।

ससार मे दूसरा कोई न(-) ० ही है अव आकाश पथ होकर तुम शीघ्र ० जाओ तुम्हारा कल्याण होए ओ राम का(-) ० र्य के लिये जाते हूएे तुम्हे वायु सहाय हो(-) ० वे(।) इस प्रकार आशीस कर जाववान आदि ० प्रधान वानरो ने जद हनुमान को विदा कि(-) ० या तव वे महेन्द्र पहार के ऊपर गये तिस सम(-) ० य मारे हर्ष के फूल कर पर्वत सरूप हो गये ओ ० विनकी देह की शोभा कैसी हूई कि जैसा का(-) ० चन ओ अरुण वर्ण मुख औ शेषनाग से ० विनके दोनो वाह ऐसा विसका सरूप सभो(-) ० ने देषा। इति श्री रामचरित्रे किष्किन्धा का(-) ० डे नवमोध्यायः(।) ९(।) समापृत ० जव हर्षि (-) ० त होकर हनुमान जी उस पहार प[१] जा खडे हू(-) ० ऐ और चार शौ योजन का चौडा सागर जो म(-) ० गरो का घर है पार होने को उपस्थित हूऐ तव ० रामचन्द्र का ध्यान कर यह वचन लगे सभो से ० कहने हे वानरो जैसे श्री रघुनाथ जी का स(-) ० फल वाण चले वैसे ही अव मै जाता हू तुम ० देषो मै अभी सीता जी को देष कृतार्थ हो पु(-) ० न रामचन्द्र का दर्शन आ करता हू तुमकि(-) ०सी वात का सन्देह मत करो मै एक क्षण मे स(-) ० मुद्र पार हूगा क्यूकि मरण समय जिनका नाम ० एक वार भी जो नर सुमरता है सो अपार ससा(-) ० र सागर तर परम पद को जाता है तिन रामचन्द्र का ० मै दूत हू ओ विन के अग की मुदरी मेरे पास है ० तिस्से हृदय मे रघुनाथ को सुमर इस लघु स(-) ० मुद्र को मै सहज मे पार हूगा(।) यो कह वाह पसा(-) ० र पुछ समेट दोनो पाव लम्वे कर विस पहार ० पर से वायु वेग समान तुरन्त हनुमान जी द(-) ० क्षिण दिशा को उडे तिस समय कौतुक देष(-) ० ने के लिये देवता सव वीच अधर मे जो आ आ ० खडे थे सो वायु वेग समान पवनकुमारको जा(-) ० ते हूऐ देष के आपस मे सव यो लगे वतराने कि ० महापराक्रमी यह वानर उडा हुआ तो चला ० जाता है पर हम नही जानते कि लका मे यह ० पैठ शकेगा कै नही तिससे इसके वल ओ ० वुद्धि की परीक्षा लिया चाहिए यो आपस मे ० मता[२] कर निदान कौतुक देषने के लिये वि(-) ० न्होने सुरसा को जो नागो की मा थी वुला क(-) ० र कहा कि यह वानर चला हूआ जाता है तू इ(-) ० सके जाने मे कुछ विघ्न जाकर दे ओ इसका व(-) ० ल वुद्धि जान के तुरत यहा चली आ(।) इतनी ० वात के सुनती ही ओही वह दौडी तो आगे ० वढ वाट रोक हनुमान के आगू खडी हो कह ० ने लगी कि आओ अव शीघ्र मेरे मुह मे पै(-) ० ठो इस समय मारे भूषके मै वहुत व्याकुल ० हो रही हू ओ देवताओ के वनाये हूये तुम मेरे ०भक्ष हो(।) हनुमान वोला(—) सुनो माता मै राम की ० आज्ञा से सीता जी को देषने जाता हू जव व(-) ० हा से फिरूगा ओ विन का क्षेम कुशल राम को ० जा सुनाऊगा तव आकर मै तुम्हारे मुह मे पै (-) ० ठूगा तुम मेरी वाट छोड दो मै तुम्हको प्रणा० म करता हू। वह वोली नही मै निपट भूषी हू तु(-) ० म मेरे मुह मे पैठो नही तो पकड कर मै तुम्हे खा ० जाती हू(।) हनुमान ने कहा तो अछा मुह वा(-) ० ओ मै पैठ कर फिर तुरन्त चला जाऊ(।) यो कह ०जोगन भर के लम्वे होकर हनुमान जी सन्मु (-) ० ख खडे हो गये तो विन का सरूप देष कर सुर(-) ० सा ने अपना मुह पाच योजन का किया त(-) ० व हनुमान हूए द्विगुणे(।) फिर जव सुरसा ने वी(-) ० श योजन

---

१. पर। २. विचार।

का मुख वढाया तव हनुमान हू(-) ० ए तीश योजन के लम्वे निदान जव सुरसा ० ने निज मुह पचाश योजन का किया तद ह(-) ० नुमान झट अगुठा भर के हो विस के वदन मे ० पैठ तुरन्त वाहर निकल आये ओ वुस के आ(-) ० गे हो के कहने लगे कि लो अव तुम्हारे मुखडे ० मे पैठ कर मै निकल आया(।) मेरा प्रणाम लो(।) ० यो कहते हूऐ हनुमान को देष कर वह वोली ० तो अछा जाओ राम का काज कर लाओ तुम ० वडे वुद्धिमान हो तुम्हारा पराक्रम जानने के ० लिये देवताओ ने मुझे भेजा है तुम निश्चय ० सीता जी को देष के फिर रामचन्द्र का दर्शन क(-) ० रोगे(।) ऍसे कह विदा हो सुरसा देवलोक को गयी त(-) ० व पवन कुमार अति हर्षित हो वायु वेग समान ० पुन वहा से चले(।) जद कुछ दूर वढ आये तद स(-) ० मुद्र ने मैनाक नाम पर्वत से जो नाना मणि ओ ० काचन का है कहा कि यह पवन कुमार महा व(-) ० ली हनुमान राम के काज के लिये चला जाता ० है तुम इसकी सहायता जा करो क्यूकि जि(-) न सगर के सन्तानो ने मुजे खन के वढाया ० ओ जिनसे मेरा नाम सागर हूआ तिनके वश ० मे रामचन्द्र उत्पन्न हूऐ है विन के काज के लिये य(-) ० ह वानर जाता है तुम जल मे से तुरन्त उपर नि(-) ० कलो जो तुम पर विश्राम करके यह जाए (।) यह ० सुन शीघ्र वह पानी मे से उपर हूआ तो विस पर ० मनुष्य का सरूप होकर विसने हनुमान को पु(-) ० कार के कहा महाराज मेरा नाम मैनाक है आ(-) ० प के विश्राम के लिये समुद ने मुझे भेजा है ति(-) ० समे यहा आइए अमृत समान मेरे पक्के फल ० खा विश्राम कर फिर सुख से चले जाइऐ(।) हनुमा(-) ० न ने उत्तर दिया(---) सुनो वावा[1] राम काज के हेतु मै ० जाता हू भोजन ओ विश्राम मै क्यू कर करु मु(-) ० जे शीघ्र जाना है यो कह उगली से विस पर्वत का ० शिखर छू पुन हनुमान लका को चले(।) जद कु(-) ० छ दूर निकल आये तो वहा सिहिका नाम ग(-) ० क महा राक्षसी ने जो सदा पानी के भीतर रह ० ती थी ओ जो कोई आकाश मे होकर विस प(-) ०थ से चलता था विसकी छाया पकड कर उस प(-) ० थिक को षैच कर खाती थी हनुमान की छाया प(-) ० कड हनुमान को रोका तव वे महावली लगे चि(-) ० न्ता करने कि किस विघ्न करने वाला ने यह मेरा ० वेग रोधन किया मै तो यहा किसी को देषता भी ० नही जो विससे पूछू यह अति विस्मय मुझे ० लगता है(।) ऍसे विचार निदान झुकके नीचे दृष्टि ० पसार कर जो देषे तो सिहिका मेरी छाया पकड ० कर षैचती है यह देषते ही पवन कुमार तुरन्त पा(-) ० नी मे कूद परे तो महाक्रुद्ध हो लातो ही से वि(-) ० से मार पुन उपर निकल आये ओ दक्षिण दि(-) ० शा को उडे तो जाते जाते कुछ घडी मे सागर के ० दक्षिण तीर पर जहा नाना लतान से छाये हू(-) ० ऐ अनेक वृक्ष सव फल रहे थे ओ विन वृक्षो ० पर नाना पक्षी रहते थे हनुमान जी जा पहुचे(।) ० तद वहा से अति निकट त्रिकूट नाम पहार के ० उपर वडी वडी अटारीन से अधिक शोभाय(-) ० मान और चहुदिश गहिरी खाइन से महा ० अगम्य लका नाम नगर को देष के लगे वहुत ० चिन्ता करने कि रावण से पालित इस नगरी के ० भीतर अव क्यू कर मै पैठू(।) निदान शोचते शोच(-) ० ते शोचा कि कि सूक्ष्म होकर रात को मै जाऊ(।) यो वि(-) ० चार दिन भर वहा ही रह रैन समय निपट

---

१. बाबा।

सू(-) ० क्ष्म रूप धारण कर द्वार पर जा जो हनुमान ० लका भीतर जाने लगे तो ही साक्षात राक्षसी ० का वेष किये आगे आ लका ने हनुमान को वर्जा ० और कहा तुम कौन हो जो वानर का रूप वन मेरा ० निरादर कर चोर की भाति रात को भीतर जाते ० हो ओ क्या किया चाहते हो(।) ० ऐसे कह निपट रिसि(-) ० आ कर निदान एक लात हनुमान को मार वै (-) ० ठी कि इतने ही मे वाये ही हाथ से हनुमान ने ए(-) ० क ऐसा घुसा वुसे लगाया कि ओ ही मूर्छा कर ० वह धरती पर गिर पडी ओ वार वार लगी मुह से ० लोहू उगलने(।) निदान किसी किसी प्रकार से उ(-) ० ठ कर वह लगी हनुमान महावली से कहने कि ० लो जाओ महाराज तुम्हारा भला होवे तुम ० ने लका को जीता मुज से व्रह्मा ने आगे ही कहा ० था कि अठाईशवी चौयुगी मे जव त्रेता युग ० आवेगा तव अयोध्या मे राजा दशरथ के ह्या राम ० रूप हो नारायण अवतरेंगे और विनकी योग ० माया सीता जनक के घर उत्पन्न होगी तद कि(-) ० सी समय की मेरी प्रार्थना से पृथ्वी का भार दूर ० करने के लिये स्त्री भाई समेत रामचन्द्र दण्ड(-) ० कारण्य मे जाऐंगे तहा सीता महामाया को ० रावण हर ले जागा तव दशरथ के लाल सु(-) ० ग्रीव से जा मिलेंगे तद सीता को ढूढने के नि(-) ० मित्त सुग्रीव अनेक वानरो को सव दिशा५[1] भेजेगा तिन ० मे से एक वानर रात को तुम्हारे निकट आवे(-) ० गा तव तुम विसे एक लात मारोगी ओ वह भी ० तुम्हे मुक्के से हनेगा तिस मार से जद तुम व(-) ० हुत पीडित होगी तधी रावण का विनाश होवेगा ० तिस्से जो तुमने लका को जीता तो मानो सक(-) ० ल राजान को जीत लिया इसमे कुछ सन्देह ० नही (।) ऐसे कह पुन वोली कि रावण के मन्दिर मे ० अति उत्तम एक वाटिक है विसके वीच मे महा(-) ० सुन्दर अशोक का वन है तहा शीशो का वडा सा ० एक वृक्ष है विसी के नीचे सीता जी का वास ० है ओ निपट भयावन राक्षमी सव उनकी चौ(-) ० की मे सदा रहती है(।) तुम जानकी को देष ही कर ० तुरन्त जा राम से समाचार जनाओ(।) आज मै ० कृतार्थ भयी (।) वहुत दिनो पर श्री रामचन्द्र का ० स्मरन जो ससार के आवागमन से वचावन हा(-) ० रा है मुजको हूआ और राम के भक्त से दु(-) ० र्लभ सग अव मै यही चाहती हू कि कि दशर(-) ० थ के लाल सदा मुझ पर प्रसन्न रहे(।) यह सुन ० अति हुलसित हो निदान पवन कुमार भी(-) ० तर को चले(।)इस प्रकार सागर हेल जद वे विस ० नगर मे जा पहुचे तद सीता ओ रावण की वायी ० आष ओ रामचन्द्र के दाहिने अग ये सव लगे वा(-) ० र वार फरकने (।) ० इति श्री रामचरित्रे सुन्दर का(-) ० डे प्रथमोध्याय (।) १ (।) जव रात समय लका मे ह(-) ० नुमान जा चूके तव सगरे नगर सीता को ढूढ(-) ० ते ढूढते निदान राजभवन मे आये तो वहा ० सव ठाव मृदग आदि अनेक वाजे वजा वजा ० ओ मनोहर गीत गा गा नाना कौतुक करते हुए ० नर नारीन को देष और जहा तहा चारो वेद की ० धुनि सुन वहुत चकित हूऐ ओ वडी वडी सुन्द(-) ० री स्त्रीन मे जो वहुत शृंगार पटार किये वनठ(-) ०न कर फिरती थी जानकी को नही देषकर जी ० मे कहने लगे कि सीता को यह समय कहा है ० जो इन रण्डियो के साथ हुलसे क्यूकि वे तो स्वा(-) ० मी के वियोग से महा व्याकुल हूई होगी विन्हे ० ऐसा हर्ष क्यू कर होवे

---

१. मूल पुस्तक में यह शब्द नीचे से पाँचवीं और छठीं पंक्ति के बीच में है।

गा(।) यो कह पुन जहा जहा ० गये तहा तहा अद्भुत ही अद्भुत कौतुक देषा ओ ० उज्वल ही सवका भेष(।) निदान जव जनक नदि(-) ० नी का भेद कही न पाया लका का कहा सुमर ० तुरन्त विस अशोक वन मे कि जहा फूलो फ(-) ० लो के भार से पेड सव नीचे को झुक रहे थे ओ ० जहा कल्पवृक्षो के बीच मे रत्न की सीढीन से ० अति सोहावन और नाना पक्षीन से शोभि ० त ओ तीरो पर सुवर्ण की अटारीन से महा मनो(-) ० हर वावलीया अधिक छवि दे रही थी पवन ० सुत आये और वहा से अति निकट देवता(-) ० न के वडे वडे मन्दिर जिनमे मणिन के शैक(-) ० डो षभे लगे थे देष विस्मित हो जो कुछ दुर आ(-) ० गे वढे तो ही वह शीसो का पेड कि जिस पर का(-) ० चन वर्ण पक्षी सव रहते थे औ सघन पत्तो से ० जिसके नीचे कभी धूप का दर्शन नही होता ० देषने मे आया तो र्हषित हो समीप जा सूक्ष्म ० सरूप वन डाढ पर चढ विसके पत्तो मे छिप कर वे ० देषे तो विस गाछ के नीचे राक्षसीन के वीच मे मै(-) ० ला कपडा पहने एक चोटी वाधे धरती पर सीता ० लेट रही है ओ राम के शोक से उपास करते करते ० शुष कर निपट दुवली सी हो रही है ओ किसी को ० ऐसा नही पाती कि जिस्से अपना त्राण होए त(-) ० व हनुमान अपने मन मे लगे कहने कि अव मै ० सीता को देष के कृतार्थ हू कृता[1] हूआ(।) मै ही ने रा(-) ० मचन्द्र का काज किया यह कहते ही है कि मदि(-) ० रो के वाहर वडा कोलाहल हूआ सो सुन पवनकु(-) ० मार वृक्ष के पत्तो मे और भी छिप गये कि इतने ० मे नील पर्वत सा श्याम ओ दश शिर वीश हा(-) ० थ इनसे अति अद्भुत सरूप रावण स्त्रीन को ० साथ लिये कहू से चला आता है(।) यह देष वहुत ० चकित हूऐ ओ रावण अपने भवन मे आया ० तो लगा मन मे कहने कि रामचन्द्र के हाथ से मेरा ० मरण तुरन्त किस प्रकार से होवे वे तो सीता के ० लिये भी नही आते क्या कारण है इसी चिन्ता ० मे रात हो गयी ओ विसे नीद आयी तव स्वप्ने ० देषता है क्या कि राम की आज्ञा से कोई वानर ० यहा आया है ओ निपट सूक्ष्म सरूप हो वृक्ष ० के पत्तो मे छिपकर सीता को देष रहा है(।) यह ० अद्भुत स्वप्न देषते ही रावण तुरन्त उठ वैठा ० ओ अपने जी ही मे शोचने लगा कि स्वप्न क(-) ० भू सत्य भी हो जाता है तिस्से वचन के शरो से ० जानकी को चल के दुखित करू जो वह वानर दे(-) ० ष कर राम को सव समाचार जा सुनावे(।) यो विच (-) ० र[2] होत सवेरे नारीन को स[3] लिये अति शीघ्र सी(-) ० ता के पास रावण चला जब निकट जा पहुचा घु(-) ० घुरु ओ किंकिनी के झझनाहट सुन सीता ० वहुत डर गयी ओ नीचे शिर कर राम मे ध्यान ० लगा सभर वैठी और आषो मे आशू लगी ० भरने इसमे[4] रावण भी आन पहुचा ओ सीता को दे(-) ० षकर कहने लगा कि ऐ प्राण प्यारी तू मुझे देष के व्यर्थ क्यू लजाती है जिस राम का घमड रष(-) ० ती है सो तो भाई समेत वनेचरो के बीच मे रहता ० है कभी किसी के देषने मे आता है कभी नही ० मैने विसे देष आने के लिये वहुत लोग भेजे ० पर किसी को वुससे भेट नही होती तिससे वु(-) ० स निर्मोही राम को लेकर तू क्या करेगी वह यद्य(-) ० पि सदा तेरे पास रहा पर तो भी हृदय से तुज मे ० उसे तनिक भी प्रीति नही है वह महा कृतघ्न ० ओ निर्गुणी है तेरा गुण ओ तेरे साथ जो जो ० भोग विलाश किया सो सव वह अधम भूल ग(-) ०

---

१. 'हूकृता' अनावश्यक है। २. विचार। ३. सं=संग। ४. इतने मे।

या देष मै तुझे यहा लाया ओ तू दुख शोक ० से व्याकुल हो रही है अव भी वह नही आता ० वुसे कुछ तेरा मोह नही है वह निष्पराक्रमी ० मूढ झुठमुठ अपने को वीर ओ पण्डित मान ० ता है तिससे वुस नराधम को जो तुझे कधी न ० ही चाहता लेकर क्या करेगी तू मुज से प्रीति क(-) ० र मै सकल दानवन मे श्रेष्ठ हू मै तेरी ही वश मे ० सदा रहूगा ओ जो तू मुज को स्वीकार करेगी ० तो देव गधर्व नाग यक्ष किन्नर इनकी स्त्री स(-) ० व तेरी आज्ञा मे सदा रहेगी(।) इस भाति जव रा(-) ० वण ने कहा सुन कर सीता रिसिआ उठी ओ नी(-) ० चे शिर ,किये ही वीच मे एक तृण रष कर यह वच(-) ० न लगी कहने(—)अरे निर्लज्ज तेरी प्रभुता मै नीके ० जानती हू तू वही वीर है जो रामचन्द्र के डर से भि(-) ० क्षुक सरूप होकर मेरे स्थान पर गया था और ० राम लक्ष्मण के पीछे जैसे यज्ञ मे से कुत्ता षीर ० ले भागे वैसे ही घर मे से मुझे हर लाया तिसका ० फल शीघ्र तू पावेगा अभी जो जी चाहे सो वक ० जव तू रामचन्द्र के वाणो से खण्ड खण्ड होकर य(-) ० म लोक सिधारेगा तद राम को मनुष्य जानेगा ० वे समुद्र को वाध कर अथवा वाणो से शो(-) ० ष कर रण मे तुझे मारने के लिये भाई समेत ० निसन्देह यहा आवेगे औ सैन्य पुत्र सहित ० तुजे मार के अपने पुर मुजे ले जावेगे यह तू ० निश्चय जान ले(।) इस प्रकार सीता को अति क(-) ० ठोर वाते सुन रावण वहुत क्रुद्ध हूआ तो ला(-) ० ल लाल आषे कर खड्ग ले ओही विन्हे मारने ० को चला तव मन्दोदरी ने जो पति का हित चाह(-) ० ती थी विसे वर्जा और कहा(—)महाराज आप इ(-) ० से छोड दीजे यह दीन तो स्वामी के वियोग से ० आपे मर रही है ओ मनुष्य की स्त्री है इस्से ० तुझे क्या काम देव गधर्व नागो की वहुत सी ० स्त्रीया तुझे है जो मदन मद से मत्त हो हो ० तुमही को चाहती है(।) सुनकर दशकधर ठढा० हूआ ओ महा भयकर भयकर राक्षसीन ० को एकान्त मे ले जाकर कहने लगा कि धमका कर ० अथवा पोल्हा कर[1] सीता जीस प्रकार से मेरी०वश होए सो यत्न तुम तुरन्त करो(।) जो तो[2] दो मा(-) ० स के भीतर वह मेरी वश होगी तव मेरे साथ रा(-) ० ज्य भोग करेगी औ दो मास के वीते भी मेरी पल(-) ० ग पर न आवेगी तो प्रातष्काल के मेरे भोजन ० के लिये विसे मार कर तुम तल डालियो(।) यो क(-) ० ह स्त्रीन समेत रावण तो अपने मन्दिर मे ग(-) ० या और राक्षसी सव सीता पास आयी और ० अपनी वुद्धि से वात वना वना लगी उसे डराने (।) ० तिनमे एक ने कहा(—)हे सीता यह तेरा जोवन अ(-) ० कारथ चला जाता है रावण के साथ इसे जा ० सफल कर क्यू भूलती है(।) दूसरी कोपकर यो ० वोली कि लो तुम चूप रहो मै तो अभी इसके ० अग काट के खड खड कर डालती हू इसमे कु(-) ० छ मुझे विलम्ब नही है(।) तीसरी तो खड्ग ले झ(-) ० ट मारने ही को उपस्थित हूई औ चौथी म(-) ० हा भयावन मुह वा[3] निगलने को दौडी(।) इस भा(-) ० ति जव जानकी को राक्षसीनी सव लगी धम(-) ० काने तव त्रिजटा ने जो विन मे वहुत वुढिआ ० थी सव को वरजा और कहा सुनो दुष्ट राक्षसी ० सव जो तो मेरा कहा तुम हित समझो तो इ(-) ० स रोती हूई सीता को तुम लोग मत डराओ ० वरन इसको नमस्कार करो मैने अभी स्वप्न दे(-) ० षा है कि कमलनयन श्री रामचन्द्र भाई समेत ० ऐरावत

---

१. बहला कर। २. बिहारी बोलियो मे प्रचलित। ३. बाकर, फैलाकर।

हाथी पर चढ के यहा आये है अरु सा(-) ० री लका जला भस्मकर सीता को अक मे ले ० पहार के उपर जा खडे हूए है ओ रावण तेल ० लगा नगा हो अपने मुण्ड की माला अपने हा(-) ० थ मे लिये पुत्र समेत गोवर के ऱ्हद[1] मे जा ० नहाता है ओ विभीषण हर्षित हो राम के पा(-) ० स जा विन के चरण की सेवा करता है तिससे तु(-) ० म यह निश्चय जान लो कि सव प्रकार से राव(-) ० ण को मार कर विभीषण को राज्य दे सीता को ० अक मे ले निसन्देह रामचन्द्र अपने नगर मे ० जाऐगे (।) तुम लोग झुठमुठ क्यू अपयश लेती ० हो(।) त्रिजटा की वाते सुन कर राक्षसीनी सव व(-) ० हुत डरी और चुप होकर वहा ही सव शो रही तव ० सीता विन्हो के डर से निपट व्याकुल हूई ओ ० निज त्राण करनेवाले किसी को नही देष स(-) ० जल नयन हो अपने मन मे लगी चिन्ता कर(-) ० ने कि अव हो न हो प्रात काल राक्षसी सव नि(-) ० सन्देह मुजे खा डालेगी तिस्से ऐसा कोई उपाय(-) ० हो ताकि जिससे अभी मै मर जाती इस प्र(-) ० कार दुख से वहुत घवरा मरणाठान निदान ० डाढ पकड कर सीता लगी रोने इसलिए कि ० मृत्यु का उपाय कुछ नही जानती इति ० श्री रामचरित्रे सुन्दरकाण्डे द्वितीयोध्याय (।) २(।) ० इम भानि अति व्याकुल हो रोती हुई सीता ने ० निदान अपने मन मे ठहराया कि मेरी चोटी ० वडी लम्वी है इसी को फासी वना गले लगा ० अव मै अपना शरीर त्याग करू क्यूकि राक्ष(-) ० सीन से जो मै कदाचित वची तो रामचन्द्र वि(-) ० ना राक्षसो के वीच मे जीने से मुजे क्या फल(।)इ(-) ० स प्रकार जानकी ने जद मरण ठाना तव विन ० को देष अवसर जान सूक्ष्म रूप हो धीरे धीरे ० हनुमान उसे सुना कर यह वचन लगे उपर से ० कहने कि इक्ष्वाकु के वश मे उत्पन्न अयोध्या ० के पति राजा दशरथ हूऐ तिनके राम लक्ष्म(-) ० ण भरत शत्रुघ्न ये चार पुत्र कैसे है कि देवता स(-) ० मान ओ लोक मे विख्यात ओ एक से एक सु(-) ०लक्षण तिन चारो मे जेठ रामचन्द्र है सो पिता ० की आज्ञा पाय सीता लक्ष्मण को सग लेकर ०दण्डकारण्य मे आ गौतमी तीर पच-वटी मे व(-) ० से थे तहा रामचन्द्र के पीछे दुष्ट रावण ने सीता ० को हर लिया तव रामचन्द्र अति व्याकुल हो ० सीता को ढूढने निकले तो वाटमे[2] पक्षिराज ० जटायु को पृथ्वी पर पडा देष उसे स्वर्गवास ० दे कर आप शीघ्र ऋष्यमूक पहार पर आये ०तहा जव सुग्रीव से मैत्री हूई तव विन की भा(-) ० र्या हरने वाले वाली को मार कर रामचन्द्र ने कि (-) ० ष्किन्धा का राजा सुग्रीव को किया तद विन्हो(-) ० ने सकल वानरन को वुला भेजा ओ सीता को ०षोजने के लिये विन्हे चहु दिश भेजा(।) तिन्ही ० मे सुग्रीव का मत्री मै भी एक वानर हू(।)सपाति ० के वचन से शौ योजन सागर लाघ लकापुरी ० मे आ जानकी को ढूढता हूआ धीरे धीरे अ(-) ० शोक वन मे होकर अव मै इस शीशो के गाछ ० पर आया तो यहा राम की स्त्री सीता को जो ० पति के शोक से वहुत घवरा रही है देषकर मै ० निपट कृतार्थ हूआ(।) यो कह वह महावुद्धिमा(-) ० न हनुमान चुप हो रहा तव क्रम क्रम सव सुन क(-) ० र सीता अति विस्मित हूई ओ कहने लगी(—) यिह ० आकाश मे क्या पवन की वोली मैने सुनी कै ० स्वप्न देषा है इस समय तो चिन्ता से मुझे नीद ० नही आती है तिस्से जो यह स्वप्न नही सत्य ० है तो जिसने यह अमृत समान वचन मेरे

१. ह्रद। २. रास्ते मे।

का(-) ० नो मे डाला है सो दीनदयालु आगे आकर ० मुजको देषाई दे(।) जव जानकी ने ऐसें कहा सुन ० के हनुमान धीरे धीरे पत्तो मे से नीचे उतरे ओ ० वया समान हो पीतवर्ण देह ओ लाल मुख व (-) ० नाये जानकी को प्रणाम कर हाथ जोर विन के ० आगे जा खडे हूऐ विनको देष के वे डर गयी कि ० हो न हो मुजे ठगने के लिये वानर का सरूप हो य(-) ० ह रावण आया है(।) यो समझ नीचे शिर किये सी(-) ० ता फिर वैठी ओ कुछ वोली नही(।) तव पवन कु(-) ० मार ने कहा कि सुनो माता तुम जिसका सदेह ० करती हो सो मैं नही हू मैं श्री रामचन्द्र का दास ० हू ओ वानरो के राजा जो सुग्रीव है उनका मत्री ० हू और जो वायु सभ के प्राण हूए है तिनका पु(-) ० त्र हू(।) सुन कर जानकी वोली कि तुम जो कहते हो ० कि मैं रामचन्द्र का दास हू सो मनुष्य ओ वानर को ० सग किस प्रकार से हूआ यह मुझे समझाकर ० कहो(।) हनुमान ने उत्तर दिया कि शवरी से भेद ० पा राम लक्ष्मण पहले ऋष्यमूक पहार पर आ(-) ० ये वुस पर्वत के उपर आगे से सुग्रीव रहते थे सो ० इनको दूर से देषकर डर गये निदान मुजसे ० कहा कि तुम इन्हो के हृदय की वात जा समझ आ(-) ० ओ किसलिये ये आये है(।) तव व्रह्मचारी का स(-) ० रूप हो के मैं राम पास गया तो वुन का मन शुद्ध ० देष के वुन दोनो भाई को अपने काधो पर उठा ० कर सुग्रीव के पास मैं लाया ओ उनसे इनसे मि(-) ० त्रता करा दी तव जिसने सुग्रीव की भार्या को ह(-) ० र लिया था विस वाली को एक ही वाण से राम ० चद्र ने मार डाला ओ वुस के राज्य पर सुग्रीव ० को विठलाया तद आपको ढूढने के लिये सु(-) ० ग्रीव ने सकल वानरन को दिशा दिशा को भे(-) ० जा मैं भी विन के सग चला मुझे देष कर साथ ० आदर के रामचन्द्र ने मुज से कहा कि सुनो हनु(-) ० मान यह सव भार तुम ही पर है तिससे जी ल(-) ० गा के सीता को ढूढना ओ जो मिले तो मेरा ल(-) ० क्ष्मण का षेम कुशल कहना ओ विश्वास के ० हेतु यिह मेरी अगूठी लीये जाओ इसमे मेरा ० नाम लिखा हूआ है सीता को इसे दीजो(।) यो ० कह उगली मे से निकाल कर विस मुदरी को वि(-) ० न्हने मुजे दिया सो अति यत्न से मैं लाया हू आ(-) ० प इसे देष लीजे ऐसे कह विस अगूठी को सीता ० के हाथ पर हनुमान ने रष दिया और वुन्हे प्रणा(-) ० म कर हाथ जोड अलग जा आप खडे हूए तव ० रामचन्द्र की अगूठी पा शिर चढा अति हर्षित ० हो सीता लगी कहने अहो कपि तुम मेरे प्राण ० दाता हौ वुद्धिमान हौ रामचन्द्र के वडे भक्त ओ ० हितकारी हौ वुन्हे तुम्हारा ही विश्वास है नही ० तो मेरे पास दूसरे पुरुष को वे क्यू भेजते तुम मे ० रा सव दुख श्री रामचन्द्र से जा कहो जो विन को ० दया उपजे मैं दो मास वचूगी इसके आगे जो वे ० नही आवेगे तो राक्षस सव निश्चय मुजे खा ० डालेगे तिसमे राजा सुग्रीव आदि सकल वा(-) ० नरो समेत यहा आ रण मे पुत्र सेना सहित० दशमुख को मारकर इस सकट से जो मुझे०श्री रामचन्द्र छोडावे तो लोक मे विनकी वडी ० कीर्त्ति होगी ओ वीरो मे वडाई(।) यह समझ शी(-) ० घ्र रावण का नाश कर जिस प्रकार से रामचन्द्र० मेरा उद्धार करे सो यत्न तुम करो तुम्हे वडा धर्म ० होगा(।) हनुमान वोले कि मुजे देषते ही शस्त्र ले ० लक्ष्मण सुग्रीव सहित सकल सेना लिये रा(-) ० मचन्द्र यहा आवेगे ओ दशशीस को जी से मा(-) ० र के निसन्देह तुम्हे अयोध्या ले जाऐगे तुम ० किसी वात का सदेह मत करो(।) सुन के सीता ने ० पूछा कि वानरो समेत एत्ता वडा सागर वे क्यू क(-) ० र पार होगे जो यहा

आवेगे यह मुझे समझा ० के कहो जो मेरे मन की शका जावे(।) हनुमान ० वोले(—)सुग्रीव समेत सकल सेना सग लिये मे(-) ० रे काधो पर चढ आकाश पथ मे हो क्षण मे रा(-) ० म लक्ष्मण दोनो भाई यहा आवेगे ओ तुम्हारे ० कारण सव राक्षस को निसन्देह जलाकर भ (-) ० स्म कर डालेगे अव आज्ञा करो मै विन का पा(-) ० स जाऊ ओ ऐसी कुछ वस्तु मुझे दो जिस्से वे ० मेरा विश्वास करे ओ हर्षित हो तुरन्त यहा आ(-) ० वे इतने वचन के सुनती ही सीता ने कुछ सोच ० विचार के अपने जूडे मे से चूडामणि निकाल ० कर हनुमान को दिया ओ कहा कि लो रामल(-) ० क्ष्मण इससे तुम्हारी प्रतीति करेगे ओ विश्वा(-) ० स के लिये एक और भी वात मै तु मसे कहती ० हू सो यह है कि चित्रकूट पर्वत पर एक वेर ए(-) ० कान्त मे जा मेरे अक मे शिर किये श्रीरामच ० न्द्र जी सोते थे तहा कौआ का रूपधर इन्द्र लो(-) ० क से इन्द्र का पुत्र गया तो मेरे पाव का अगुठा ० लाल देष आमिष जान नख ओ चोच से ल(-) ० गा वुसे वार वार षोदने(।) जव कि विसमे से लो(-) ० हू लगा निकलने तद रामचन्द्र उठ वैठे ओ मे(-) ० रा अगुठा देष चकित हो कहने लगे कि किस ० दुष्ट ने तुम्हारी उगली मे यह वुरा घाव कर दि(-) या(।) यो कह शिर उठा आगे देषे तो वह कौ(-) ० आ मुझ पर वार वार झपटता है विसके चोच ० नख मे लोहू लगा हूआ है(।)यह देषते ही अ(-) ० ति कोपकर श्री रामचन्द्र ने एक तृण उठा लि(-) ० या ओ वुसी को वाण वना जो विस कौऐ पर ० चलाया तो ही वहा से वह भागा ओ वाण भी ० उसके पीछे लगा निदान भागा भागा वह कौ(-) ० आ जद तीनो लोक फिर आया औ इन्द्र व्र(-) ० ह्मादिक भी वुस की रक्षा न कर शके तद वह ० पक्षी रामचन्द्र के चरणो पर जा गिर पडा विसे ० शरणागत देष दयावन्त हो श्रीरामचन्द्र ने ० कहा मेरा शस्त्र सदा सफल है तिस्से तू अप(-) ० नी एक आष इसे दे के यहा से चला जा निदा(-) ० न वायी आष देकर कौआ निज भवन को ग(-) ० या सो हे हनुमान जी श्रीरामचन्द्र ऐसे सम(-) ० र्थ है पर मुझे अव क्यू तजते है(।) वे वोले कि हे ० देवी जो रामचन्द्र जानेगे कि तुम यहा हौ तो ० यह निश्चय जान लो कि राक्षसन से शोभिति[1] ० इस लका को एक क्षण मे भस्म कर डालेगे(।)य(-) ० ह सुन जानकी ने वुन से पूछा कि जैसा तुम्हा(-) ० रा निपट सूक्ष्म शरीर है वैसे ही तुम्हारे साथी ० सव भी जो है तो भला कहो असुरो से तुम क्यू ० कर लडोगे(।) जव सीता ने यो कहा तव मेरु मदर ० पर्वत समान ओ राक्षसन को महा भयदाय(-) ० क ऐसा अद्भुत अपना सरूप हनुमान ने सी(-) ० ता को दिषलाया तद पहार तुल्य इनका रूप ० देष वे वहुत आनन्द मे मगन हूई ओ कहने ० लगी कि पवन कुमार तुम वडे समर्थ हो मुझे ० निश्चय हूआ अव अपना यह रूप छिपाओ ० नही तो तुम्हे महावलवान देष राक्षसी सव ० रावण से जा कहेगी तुम शीघ्र राम पास जा(-) ० ओ तुम्हारा पथ शुभदायक होवे(।) तव हनुमा(-) ० न ने कहा माता मै कैक[2] दिन का व्रती हू तुम्हा(-) ० रे दर्शन से अव मुजे पारण करना उचित ० है तिस्से आपके देषे हूए जो कही पक्के फल ० होवे तो वताइऐ वे ही मुझे पारण होगे(।) यो क(-) ० ह सीता की सैन पा एक वाटिका मे वायुकुमार ग(-) ० ये वहा से अमृत फल भोजन कर तृप्त हो फिर ० जनकनन्दिनी पास आये

---

१. शोभित। २. कई एक।

उन्हे प्रणाम कर वि (-) ० दा हो रामचन्द्र के ह्या चले (।) जद कुछ दूर निकल ० आये अपने मन मे विचारने लगे कि जो दूत ० निज स्वामी के काम के लिये कहू आवे ओ वि(-)० सकाज से कुछ अधिक्काम[1] नही कर चले सो म (-) ० हा अधमो मे गिणा जाता है तिससे कुछ औ(-)० र भी करतूति कर रावण को देष ओ वात चि (-) ० त विससे कर पुन राम का तर्शन जा कीजे(।) यह०जी मैं ठान ओही हनुमान फिर कर अशोक ० वन मे आये तो जहा सीता थी वुस गाछको ० छोड के एक क्षण मे वहा के सकल वृक्षो को उ (-) ० खाड के विस वाटिका को शून्य कर डाला(।) सो दे(-) ० ष राक्षसीनिओ ने सीता से जा पूछा कि वान (-) ० र का सरूप किये यह वीर कौन है तुम शीघ्र व(-)० ताओ(।)वुन्होने उत्तर दिया कि यह राक्षसो की ० माया तुम ही सव जानती हो मै तो अपने शो(-) ० क संताप से आपे व्याकुल हो रही हू(।) तुम लोग का ० प्रपच कुछ नही मै जानती(।) जद जानकी जी ० ने ऐसे कहा राक्षसीनी सव निपट डरी हुई ० तुरन्त रावण पास आयी ओ हनुमान की स(-) ० भ करतूति लगी वुससे कहने कि महाराज ए(-) ० क महा पराक्रमी कोई वानर सीता का पास ० आया था सो वुन से कुछ सदेश कह एक क्ष(-)० ण मे उस कपि ने सारा अशोक वन उजाड डा(-) ० ला ओ अटारीन को तोड दिया ओ जितने ० वहा रषवारे थे तिन सव को मार करके निर्भ(-) ० य हो वहा ही वैठा है इस प्रकार अशोक वन का ० वडा वुरा समाचार सुन रावण तुरन्त उठ खडा०हूआ और लाष किंकरो को वहा भेजा कि ज(-)० हा पर्वत समान हो लोहे की षभा ओ गदा आ(-)०युध हाथ मे लिये ओ लाल मुह डरावन सरूप ० किये हनुमान जी वैठकर पूछ फहरा रहे थे(।) जद ० वे किंकर सव निकट जा पहुचे ओ नाना शस्त्र ० लगे इन पर चलावने तव उठ कर के इन्होने मा(-) ० रे गदान के एक क्षण मे विन को मछड की भाति ० पीस डाला(।)यह सुन अति क्रुद्ध हो फिर रावण ० ने पाच सेनापतिन को भेजा उन सव को भेज उन सव को भी हनु(-) ० मान ने समाप्त किया तद कोप से मूर्छित होक(-) ० र दशशीश ने अपने मत्रीन के सात वेटे भेजे ० निदान आगे की भाति पल भर मे तिन सभो ० को भी ठेकाना लगा पुन हनुमान अपने स्था(-) ० न पर आ षडे हूए ओ राक्षसो को निहारने ल(-) ० गे कि देषिए अव कौन सा वीर मेरे पास आ ल(-) ० डता है(।) इतने मे रावण का पुत्र महा-प्रतापी अ(-) ० क्षय कुमार आन ही पहुचा तव देषते ही उछ(-) ० ल कर पवन कुमार ने वुस के शिर मे एक ऐसा ० गदा मारी कि वह ओही रह गया(।) इस प्रकार ज(-) ० व कि अक्षय कुमार रण मे मारा गया तद पुत्र ० का मरण सुन दशानन कोप से महा जाज्वल्य(-) ० मान हूआ तो इन्द्रजित नाम अपने दूसरे वेटे ० से कहने लगा हे पुत्र जहा वह शत्रु है तहा मैं ० अव जाता हू विसे मार के अथवा वाध करके ० तुम्हारे पास मैं लाता हू(।) वह वोला पिता मेरे रह(-) ० ते हूए ऐसा दीन वचन आप क्यू कहते हैं आ(-) ० प कुछ खेद मत कीजे मै वुस वानर को ब्रह्मपा(-) ० श से वाध कर शीघ्र तुम्हारे निकट ला देता हू (।) ० यो कह रथ पर चढ राक्षसो को साथ लिये इन्द्र (-) ० जित तुरन्त हनुमान पास आया (।) इसे देषते ० ही वे गर्ज उठे और षभा हाथ मे लिये गरुड ० की भाति उड कर

---

१. अधिक काम।

झट आकाश मे जा लगे म (-) डल मारने तद इन्द्रजीत ने आकाश मे घूमते ० हुए उनको देष कर वाणो से छेद डाला (।) इस प्र (-) ० कार से कि पाच शर तो शिर मे मारे ओ हृदय मा(-) ० हृ आठ(,) पावो मे छ(,) पूछ मो एक(,) इस भाति मा(-) ० रे वाणो के वुनकी सारी देह छेद कर निदान ० सिंह-सा लगा गर्जने (।) तव पवन कुमार वहुत ० रिसियाने तो घोडे सारथी समेत विस के रथ ० को षभे से मार क्षण मे चूर्ण कर डाला तद म (-) ० हा प्रतापी मेघनाद दूसरे रथ पर चढा ओ व्रह्मा(-) ० स्त्र से हनुमान को वाध के रावण पास ले चला(।) ० इस प्रकार पाशवद्ध हो नगर देषते हूए जव ० कि हनुमान वहा से चले कौतुक देषने के लिये ० पुर वासी सव वुन के पीछे पीछे हो लिये ओर ० क्रुद्ध हो हो घुसो सें लगे विनको मारने ओ दा(-) ० त पीसने पर व्रह्मास्त्र की महिमा रहे ओ आ(-) ० गे कुछ काज करना था इस कारण कैक[1] क्षण ० के लिये ब्रह्मास्त्र का वधन अगीकार कर वा(-) ० यु सुत विस फद मे परे थे नही तो वुस वंधन ० को काटकर पल मे वे निकल जाते क्यूकि जि(-) ० न का नाम नित्य जप क्षण मे कर्म वन्धन से छू(-) ० ट कर लोग सव विस परमपद को जाते है जो(,) ० कोटीन सूर्य सा प्रकाश हो रहा है(,) तिन श्रीरा(-) ० मचन्द्र के चरण कमल का नित्य ध्यान करते ० जो सदा मुक्त हो रहा है वुसको और किसी व (-) ० धन से क्या होना है ० इति श्रीरामचरित्रे सु ० न्दरकाण्डे तृतीयोध्याय (।) ३ (।) जद सभा मे रा(-) ० वण के आगे हनुमान को मेघनाद पकड लाया ० तव कहने लगा कि देषो पिता मै इसे व्रह्मास्त्र से ० वाध लाया हू(।) इसी दुष्ट वानर ने महा असुरन ० को मारा है अव मत्रीन से विचार के जो कुछ इ(-) ० सका दड करना है सो कीजे(।) यह साधारण वान(-) ० र नही है कोई देहधारी है(।) जव वुसने यो कहा ० अपने आगे वैठे हूए प्रहस्त को देष कर रावण ० ने कहा कि तुम इस शाखा मृग से पूछो कि तू ० कहा सें औ किस लिये यहा आया और यहा तु(-) ० जे क्या कार्य है ओ अशोकवन को क्यू उजाडा ० अरु किस कारण हमारे राक्षसन को वल से ० मारा(।) प्रभु की आज्ञा पाय अति आदर साथ ० प्रहस्त लगा हनुमान से पूछने कि एँ वन्दर तु(-) ० म्हे किसने यहा भेजा है(।) महाराज के निकट तुम ० सत्य कहो डरो मत मै तुम्हे प्राण दान कर शीघ्र छो(-) ० ड दूगा(।) सुन कर वे वहुत हर्षाने ओ रावण को ० जो तीनो लोक का कंकट[2] था देष वारवार राम ० को सुमर विनकी निर्मल कथा एक क्रम से ल(-) ० गे कहने(—)इस प्रकार से कि सुन देवतान का वैरी[3] ० मै विन रामचन्द्र का दूत हूं जो सव के हृदय मे ० वसे हूए हैं ओ अपने नाश के लिय[4] जिनकी ० भार्या को तू कैसे हर लाया है जैसें यज्ञ की षी(-) ० र कुकर चोरा लेवे सो रामचन्द्र दंडकारण्य से ० पहले मतंग पर्वत पर आये तहां आग समी(-) ० प जा सुग्रीव से मित्रता कर एक ही वाण से वि(-) ० न्होने वाली को मारा ओ वुसके राज्य पर सु(-) ० ग्रीव को विठलाया(।) वे वानरो के प्रभु राजा सु(-) ० ग्रीव वडे वडे वानरन को संग लिये राम लक्ष्म(-) ० ण के साथ हो प्रवर्षण गिरि पर आ उतरे हैं ० ओ सीता को ढूढने के लिए अति वलवीर वा(-) ० नरन को सव दिशा भेजा

---

१. कई एक। २. कंटक। ३. इस प्रकार से कहने लगा, 'हे देवताओं के बैरी, सुनो ।" ४. लिये।

है(।) तिन्ही मे का एक ० मै भी वानर हू सीता को षोजता हूआ यहा ० आ निकला तो वुन को देषा मेरी जाति च(-) ० चल है इस कारण मैने तुम्हारी वाटिका उ(-) ० जाडी सो देष धनुष वाण ले राक्षस सव मु(-) ० झे हठ से मारने को आये तव मैने विन को ० मार कर अपनी देह वचायी(।) शरीर सव प्रा(-)० णीन को प्यार[1] है अव ब्रह्मास्त्र से वाध कर मेघ ० नाद जो मुझे लाया है सो ब्रह्मवर के प्रभाव ० से इस ब्रह्मास्त्र ने मुज को छूआ पै त्याग चू(-) ० का है यह सव मैं जानता हू पर दयावश हो तु(-) ० म्हे समझावने के लिये आपसे इसमे वद्ध हो ० कर मै आया हू तिस्से हे रावण जो तुम अ० पना हित विचारो तो राक्षस की बुद्धि पर क(-) ० धी मत जाओ(,) जिसमे ससार से मुक्ति हो(-) ०वे विस वातो मे चित्त दो(,) तुम ब्राह्मण हो उत्त(-) ० म वश मे तुम्हारा जन्म है पुलस्त्य मुनि के पो(-) ०ते हो ओ कुवेर के भाई वन्धु हो(,) कुछ निरे रा(-) ० क्षस ही नही हो (।) इससे मेरा कहा मान कर ० श्रीरामचद्र को तुम भजो(।) वे पुराण पुरुष है ० ओ लक्ष्मी के पति यह समझ अपनी मू(-) ० र्खता विचार वैरत्याग सीता को आगेकर कु(-) ० ल परिवार समेत तुम राम से जा मिलो तुम्हा(-) ० रा भय दूर होगा वे रघु-नाथ निज शरनागत ० को प्यार करते है(।) यह अमृत समान वचन ० सुनकर दशानन प्रसन्न तो क्या होगा उल(-) ० टा ही रिसिया उठा ओ कोप से लाल लाल ० आषे कर हनुमान से कहने लगा(—)अरे दुष्ट ० वन्दर तू दीठ होकर मेरे आगे क्यू इतना व(-) ० कता है(।) वह राम कौन है वुस सरीषे वन जतु ० तो कितनेन ही पडे हूए हैं सुग्रीव समेत वि(-) ० स अधम को तो मै शीघ्र जा मार डालता हू ० ओ तुझे तो अभी तिस पीछे सीता को मा(-) ० र कर निदान राम लक्ष्मण को देष लूगा प(-) ० र वानरन समेत सुग्रीव को पहले वधूगा(।) इ(-) ०तनी वात के सुनते ही महाकोप कर हनुमा(-) ० न वोल उठा कि तू एक तो क्या कोटिन रावण० हो के आवेगा तो अभी मेरे साम्हने तू खडा ० नही होवेगा ओ श्री रामचन्द्र तो ईश्वर है वु(-) ० न का तू क्या कर शकक्ता है मै उनका दास हू०मेरा पराक्रम अपार है(।)जव पवन कुमार ने ० यो कहा अति क्रुद्ध होकर दशशीश ने ए(-) ० क राक्षस से जो पास वैठा था कहा कि इस वन्द(-)० र को खड्ग से मार कर तुम खड खड कर डालो ० जो मेरे भाई वन्धु सव देषे (।) तद विभीषण ने ० रावण को वर्जा ओ कहा(—)महाराज तुम समा(-) ० न महा प्रतापी राजान को इसे मारना उचित ० नही यह पराये राज्य का वानर है ओ दूत है ० जो यह मारा जावेगा तो जिस राम से तुम अ(-) ० पना वध चाहते हो वुसे यहा का समाचार को ० जा सुनावेगा जो वह लडने को आवेगा तिस ० से वध के तुल्य इसे और कुछ दण्ड दो कि ० जिससे चिह्नित होकर यह वांनर जावे जो इ (-) ० स को देष कर सुग्रीव समेत राम तुरन्त यहा ० आवे ओ तुम से युद्ध करे(।) इस प्रकार विभी(-) ० षण की वाते सुन रावण वोला तो अछा वा(-) ० नरन को पुछ वडा प्यारा है तिस्से इसके पू(-) ० छ मे यत्न से कपडे लपेट आग लगा सग(-) ० रे नगर इसे फिराओ जो राक्षस सव इसकी दशा ० देषे(।)यह सुनते ही अनेक वस्त्र ओ शण[2] तेल ० मे भिगा भिगा हनुमान के पूछ मे राक्षसो ने दृ(-) ० ढकर लपेटे ओ वुस पुछ के उपर आग रष औ(-) ० र

---

१. प्यारा। २. सन।

रस्सियो से दृढ कर हनुमान को वाध कर ढोल ० समेत सव लगे नगर मे फिरावने ओ वार वार ० उन्हे मारने (—) यह कहते हूए कि यह चोर है (,) पर ह (-) ० नुमान को अपना कुछ नाम करना था इस ० लिये दानव सव जोजो गजन करे सो सभ ये ० लगे सहने जवकि पछिम द्वार के निकट जा ० पहुचे तव पवनकुमार सूक्ष्म होकर विस वध (-) ० न मेसे झट निकले ओ पर्वत समान हो कूद ० कर तुरन्त गढ के भीतर जा रहे (।) वहा एक षभा ० हाथ मे ले वहा के सकल रषवारन को मार चूर्ण ० कर झट एक अटारी पर चढ गये वहा से पूछ ० लहराये विस घर पर से वुस घर पर जा जा ल (-) ० गे सारी लका जलावने (।) तिस समय उनचा (-) ० शो वायु लगे वहने ओ सगरे नगर हाहाका (-) ० र पर गया औ हा पुत्र हो नाथ हा वाप यह क (-) ० ह कर रोती पीटती हूई दानवन की रडिया को (-) ० ठो की छत्तो पर चढ चढ कर ऐसी शोभने लगी ० जैसे देवताओ की स्त्रिया होवे (।) इस प्रकार से ० जव हनुमान एक विभीषण का घर छोड स (-) ० गरे पुर भस्म कर चूके तव वहा से कूदकर समु (-) ०द्र मे जा रहे तहा पूछ वुझा सुचित हो पुन० विदा होने के लिये सीता पास चले (।) कहते हैं ० कि वायु के नेह से ओ सीता की विनती से ह (-) ० नुमान का पूछ आग नही जला शकी वर (-) ० न वुस समय और भी शीतल हूई थी तिस ० का कारण यह है कि जिनका नाम सुमर स (-) ० कल पातक से लोग मुक्त होते ओ तीनो ता (-) ० प से वचते हैं तिन रघुवर का श्रेष्ठदूत जो हनु (-) ० मान वह इस आग मे भला क्यू कर जले ० इति ० श्री रामचरित्रे सुन्दर काण्डे चतुर्थोध्याय (।) ४ (।) ० इस अनन्तर सीता के समीप जा प्रणाम कर ० हनुमान ने कहा (—) देवी अव आज्ञा करो मै रा (-) ० म पास जाऊ जो मुझे देष के वे शीघ्र यहा आ (-) ० वे (।) ऐसे कह तीन वेर विन्हे प्रदक्षिण ओ प्र (-) ० णाम कर जव वे विदा हो चले तव यह वचन ० कहने लगे (—) हे सीता तुम किसी वात का सदे (-) ० ह मत करो कोटीन वानर साथ लिये सुग्री (-) ० व लक्ष्मण समेत श्रीरामचन्द्र को तुरन्त ० देषोगी मेरे पहुचने ही का विलम्ब है (।) वे वो (-) ० ली कि तुम्हे देष के मै सव दुख भूल गयी थी ० पर अव तुम जाओगे तो इसके आगे विना० रामचन्द्र का समाचार सुने मै क्यू कर जीऊ (-) ० गी (।) हनुमान ने कहा (—) ऐसा ही है तो अछा तुम ० मेरे काधो पर चढो मै तुम्हे एक क्षण मे राम ० पास पहुचा दूगा (।) तद फिर वे वोली कि यो नही ०सागर वाध कर अथवा वाणो से शोष कर वान (-) ० रन सहित श्री रामचन्द्र यहा आवे ओ रण मे रा (-) ० वण को जी से मार कर जो मुजे यहा से ले जाऐ ० तद लोक मे वुनकी वडी कीर्त्ति होगी तिससे ०तुम जाओ मै तव तलक किसी प्रकार अपना ० प्राण वचाऊगी (।) ऐसे वुझा समझा जव सीता ० ने हनुमान को विदा किया तव सागर पार होने ० के लिये लका के निकट एक पर्वत के उपर वे चढ ० गये तो वुसे पावो से दवा पवन समान ऐसे वहा ० से उडे कि यद्यपि वह पहार तीश योजन का ऊ (-) ० चा था पर विन के भार से पाताल मे इतना धस ० गया कि पृथ्वी का समान हो गया ओर जद ह (-) ० नुमान आकाश पथ होकर चले औ लगे गर्ज (-) ० ने तद विनकी चाल पा इस पार के वानर सव भी ० अति हर्षित होकर लगे गर्जने ओ आपस मे ० कहने कि हो न हो ये हनूमान है इनके गर्जने से ० यह जाना जाता है कि रामचन्द्र का कार्य किये ० चले आते हैं (।) इतने मे पर्वत पर हनुमान आ उ (-) ० तरे ओ आते ही सकल वानरन से कहने लगे ० कि भाइओ मै सीता को

देष सारी लका जला ० रावण से वातचित करके चला आता हू तुम स (-)० व अभी मेरे आथ राम सुग्रीव के पास चलो(।) इत(-) ०नी वात सुनते ही अति हर्षित हो सब वान ( ) ० रो ने हनुमान को गले लगा लिया तिनमे कि(-) ० तने एक तो लगे विनका पूछ चूमने ओ कित (-)० ने एक लगे नाचने(।) इस प्रकार अति आनन्द ० मे मगन हो निदान हनूमान समेट सव भाल ० वानर प्रवर्षण गिरि को चले तो कुछ दूर जा वा(-)०ट के निकट राजा सुग्रीव की मधुवन नाम वाटि(-)०का को देष वहुत हर्षित हो अगद से सव कह(-) ० ने लगे(—)महाराज हम सव वहुत भूषे हैं तुम आ(-) ० ज्ञा करो तो इस वाग के फल खा सन्तुष्ट हो ले ० तद राम लक्ष्मण का दर्शन जा करे(।) वह वोला ० कि हनुमान ने कार्य किया है इनकी कृपा से तुम ० सव भर इछा भोजन करो मैं इसमे अति प्रस(-)० न्न हू इतनी वात के सुनते ही विस वाटिका मे ० सव पैठ गये ओ रषवारो का कहा न मान अ(-) ० मृत समान फल तोड तोड कर खाने लगे(।) इत(-) ० ने मे दधिवक्ता की आज्ञा पा सव रषवार मार मा(-) ० र कर दौडे तद अगद आदि वानरो ने विन्हे ० घुसो ओ लातो से मार चूरण कर डाला(।) यह ० देष दधिवक्त्र जो सुग्रीव का मामू था निपट ० क्रुद्ध हूआ ओ सकल रषवारन को साथ लि (-) ० ये राजा सुग्रीव पास जा कहने लगा महारा(-) ० ज वहुत दिनो के पाले हूए तुम्हारे मधुव(-) ० न को हनुमान ओ अगद ने अव नष्ट कर दिया ० ओ चौकी देनहारन को मार गिराया(।) इस भा(-) ० ति दधिमुख की वाते सुन राजा सुग्रीव वहुत० हर्षित हूए ओ कहने लगे कि हो न हो सीता ० को हनुमान देष आया नही तो किसका सा(-) ० मर्थ्य है कि मधुवन के निकट जा शकक्ता[1](।) इस(-) ० से जानाता है कि पवनकुमार ही ने कार्य कि(-) ० या इसमे कुछ सदेह नही है(।) यह भणक[2] राम ० चन्द्र के कानो मे जा पहुची तो सुग्रीव से पूछने ० लगे(—)हे राजा तुम क्या सीता का वारवार नाम ० लेते हो(।) वे दूर ही से वोले महाराज हनुमान आ(-)० दि वानर सव जानकी जी को देष मधुवन मे ० आ फल खाते है ओ जो रषवारा वरजता है ० विसे मारपीट कर वहा से निकाल देते है इस ० से यह निश्चय होता है कि सीता का समाचार ० वे सव ले आये नही तो आपका काज किये० विना मेरे मधुवन मे कभी नही जा शकक्ते(।) इ(-) ० स प्रकार सीतापति से वतराकर फिर रषवार(-) ० न को सुग्रीव ने कहा कि तुम सव डरो मत मेरी ० आज्ञा से अगद आदि सकल वानरन को मेरे[3] पा(-)०स वुला ले आओ(।) यह सुनते ही वायुवेग समा(-)० न वे सव वहा से चले ओ हनुमान आदि पास ० जा कहने लगे कि राजा कि आज्ञा है तुम अ(-) ० भी चलो राम लक्ष्मण समेत सुग्रीव तुम्हे शी(-) ०घ्र देषा चाहते हैं ओ तुम पर वे वहुत प्रसन्न है(।) ० जव कि वुन्हो यो कहा हनुमान अगद को आ ० गे कर आकाश पथ हे[4] तुरन्त वानर सव वहा ० से चल खडे हूऐ जद समीप जा पहुचे पहले रा(-) ० मचन्द्र को तिस पीछे सुग्रीव को सभो ने दडवत ० प्रणाम किया ओ हनुमान लगा राम से कहने(—) ० महाराज सीता लका मे है मै देष आया अप(-) ०ना षेम कुशल वुन्होने तुम्हे कहा है ओ अशो(-)० क वन मे शीशो के पेड के नीचे राक्षसीन के वीच ० मे वे है पर आहार तज निपट दुवली सी हो

१. सकता। २. भनक। ३. मेरे। ४. से।

रही ० है ओ शिरम एक चोटी बाधे मलीन कपडा प(-) ० हने दिन रात हा राम हा राम यही रटती रहती ० है मैने वुन्हे देष कर वहुत आशा भरोशा दिया ० इस प्रकार से कि अति सूक्ष्म सरूप ही वृक्ष की ० शाखा मे छिप कर एक ओर से मै लगा तुम्हा(-) ० री कथा कहने कि घर से रामचन्द्र दण्डकारण्य ० मे आये तहा विन के वाहर गये पर सीता को ० रावण हर ले गया तद सुग्रीव से मित्रता कर रा(-) ० मचन्द्र ने वाली को जी से मारा तव सीता को ढू (-) ० ढने के लिये बडे बडे वीर धानरन को सुग्रीव ने ० चहु दिश भेजा तिन्ही मे सुग्रीव का मत्री ओ रा(-) ० मचन्द्र का दास मैं भी एक वानर हू(,) यहा आ सी ० ता को देषा तो मेरा परिश्रम सुफल हूआ(,) हे ० सीता तुम किसी वात का सदेह मत करो श्री ० रघुनाथ अव शीघ्र यहा आवेगें ओ रावण ० का विनाश करेगे(,) महाराज यह सुनती ही जा(-) ० न की जी वहुत चकित हूईं तो दृष्टि पसार चहु ० दिश निहार कर कहने लगी कि अमृत समा(-) ० न यह वचन किसने मुझे सुनाया है जो यह सच ० है तो वह अपना दर्शन मुजे दे(।) इतनी वात के सु(-) ० नते ही धीरे धीरे पेड पर से मै नीचे उतर आया ० ओ सीता को प्रणाम कर अलग जा हाथ जो(-) ० ड के मै खडा हूआ जब कि वहुत प्रकार से वे ल(-) ० गी पूछने कि तुम कौन हो तव एक क्रम से पह(-) ०ले अपना सभ समाचार सुनाया पीछे तुम्हा(-) ० री दी हूई अगुठी मैने वुन्हे दी तद अति विश्वा(-) ० स कर आपका षेम कुशल सव पूछ के वह व(-) ० चन वे कहने लगी कि हे हनुमान राक्षसीन ० के दिनरात के डाट डपट से जैसी व्याकुल मु(-) ० झ को देषते हो सो सव समाचार राम से तुम क (-) ० हिओ(।) ओ मै वोला हे देवी वे तुम्हारी ही चिंता मे ० रहते हैं तुम्हारा वृत्तान्त सुने विना दिन रात ० विन को तनिक चैन नही है तुम्हारा समाचार मै अ(-) ० भी जा कहता हू वे सुनते ही सुग्रीव लक्ष्मण स(-) ० मेत सकल वानरन की सेना लिये तुम्हारे पा(-) ० स आवेंगे जो कुछ परिवार सहित रावण का ० विनाश कर अपने नगर तुम्हे ले जावेगें पर ० ऐसी कुछ वस्तु मुजे दो जिससे मेरी वात पति(-) ० आए यह सुन अपने जूडे मे से एक रत्न निका(-) ० ल कर तुरन्त सीता ने मुज को दिया ओ चित्र(-) ० कूट गिरि पर कौए ने जो चरित्र किया था सो भी ० तुमसे कहने को वे वोली ओ रो रो कर कहने ल(-) ० गी कि स्वामी से मेरा षेम कुशल कहिओ अ(-) ० रु लक्ष्मण देवर को अज्ञानता से जो कुछ ० उत्कट वचन मैंने कहा था सो मेरा अपराध ० तुम वुन से क्षमा कराइओ और हे हनुमान ० जिस प्रकार से रामचन्द्र मुजे यहा से ले जाए सो ० यत्न तुम कीजो यो कह अति व्याकुल हो सु(-) ० सक सुसक कर लगी रोने तव विन्हे बहुत आशा ० भरोशा दे सुचित कर मै विदा हूआ तो चल ० ने के समय मैने अशोक वन को जा उजाडा ० ओ रावण के पुत्र समेत अनेक राक्षसन को ० क्षण मे वहा मार रावण से वातचित कर सा (-) ० री लका जला हर्षित हो एक क्षण मे यहा आन पहुचा हू (।) इस प्रकार जव पवन कुमार ने ० कहा सुन कर श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने ओ ० कहने लगे देषो जो काज देवताओ से भी हो ० ने का नही सो हनुमान तुमने किया इस उप (-) ० कार की सन्ती[1] जो अपना सर्वस्व मैं तुम्हे दू तो ० भी मै तुम्हारा ऋणी ही सदा रहूँगा (।)ऐसे कह ० हनुमान को गरे लगा सजल

---

१. के बदले।

नयन हो दशरथ ० के लाल वहुत मगन हूए ओ कहने लगे(—)सु(-) ० नो हनुमान तुम सा आज्ञाकारी मेरा भक्त ० इस लोक मे दूसरा कोई नही है मै तुमसे वहु(-) ० त प्रसन्न हू: इति श्री रामचरित्रे सुन्दर का(-) ० डे पचमोध्याय (।) ५(।) समाप्त(।) यो कह फिर राम(-) चन्द्र लगे हनुमान को सराहने कि शौ योज(-) ० न सागर को लाघ शकक्ता ओ किसका साम(-) ० र्थ्य है कि राक्षसन से पालित लका मे जा अ(-) ० पनी प्रभुता जनावे जो काज देवताओ से भी ० नही हो शकक्ता सो वायु के पुत्र ने किया ऐंसा ० भृत्य सुग्रीव को न कोई हूआ होगा न फिर ० कोई होवेगा सीता के दर्शन से सुग्रीव लक्ष्म(-) ० ण समेत हम सव को हनुमान ने वचा लिया (।) ० पर यह चिन्ता अव मुजे हूई कि जिसके सुम(-) ० रने से मेरा जी घवराता है(—)विस समुद्र को जो ना(-) ० ना जलजन्तु से भर रहा है क्यू कर हम स(-) ० व पार होगे जो सीता को देषेगे (।) सुग्रीव वोले ० कि समुद्र लाघ लका को जा भ्रष्ट कर सहज ० मे रावण को हम मारेगे आप किसी वात की चि(-) ० ता जिन कीजे चिन्ता ही काज विगाडती है इन ० महावीर वानरन को आप देषिए ये सव तुम्हा(-) ० रे लिये आग मे कूदने को उपस्थित हो रहे है अ(-) ० व समुद्र पार होने को पहले समत कीजे तिस ० पीछे जद लका मे हमलो[1] जा पहुचेगे तद यह ० जान लीजे कि रावण का विनाश हो चूका क्यू(-) ० कि तीनो लोक मे ऐंसा किसी को हम नही देष (-) ० ते जो रण मे तुम्हारे साम्हने ठहर शके सभ प्र(-) ० कार से हम लोग का जय होगा इसमे कुछ सदे(-) ० ह नही हम प्रतिज्ञा कर कहते है ओ जितने का ० सव डौल हम देषते है(।) इस भाति जव सुग्रीव ० ने कहा तव विन की वात अगीकार कर राम(-) ० चन्द ने हनुमान से कहा अछा जिस प्रका ० र से होगा विस प्रकार से समुद्र हम पार होगे ० पर जहा देवताओ का भी गम्य नही विस लका ० का सरूप हमे सुनाओ तद जैसा कुछ विचार मे ० ठहरेगा सो किया जाएगा(।) सुन के हनुमान हाथ जो(-) ० ड कर कहने लगे कि त्रिकूटगिरि के शिखर पर ० अति मनोहर लका नगर वसता है ओ सुवर्ण ० ही का वडा सा ऊचा सा विस का घेरा है निर्मल ज(-) ० ल से भरी हूई ओ महा अगम्य चहुदिश उस पु(-) ० री के खाई है ओ नाना वावलीन से वन उप-वन ० की शोभा से ऐंसा वह नगर सोहावन हो रहा है ० जिसका वर्णन मुज से नही किया जाना ओ म(-) ० णिन के खभन से अति अद्भुत काचने ही के व(-) ० हा सभ घर है वुस नगर के पछम द्वारा पर सहस्त्र(-) ० न घोडे हाथी ये सव रहते है ओ पूरव उत्तर द्वार ० पर कोटिन चढैते ओ दक्षिण द्वार पर रथवाले ० लाषो राक्षस ओ अनगिणत हाथी घोडो स(-) ० मेत नाना शस्त्र वाधे हूए असख्य लोग(।) ये सव ० देवढीयो मे जा जा सदा लका की चौकी देते हैं ० इस प्रकार नाना शस्त्र ओ वीरन से यद्यपि ल(-) ० का भर रही है यहा तक कि क्या सामर्थ्य है जो इ(-) ० न्द्र वरुण ये सभ भी वहा जा के कुछ ढिठाई करे ० तद भी रावण की चौथाई सेना हम मार आये ० है ओ सारी लका जला भस्म कर दिया ओ सुव(-) ० र्ण के वडे वडे मदिर ओ अनेक शस्त्र इन सव को ० तोड डाला(।) यह सव काज आपकी प्रताप से हम ० कर आये है अव यही समत है कि इन महावली ० वानरन को साथ लिये यहा से प्रयान कर सागर ०

---

१. हम लोग।

तीर आप डेरा कीजे (।) इस भाति हनुमान की वाते ० सुन श्री रामचन्द्र ने सुग्रीव से कहा कि सव सेना(-) ० पतिन को तुम अभी प्रस्थान कराओ यह विज(-) ० य नाम मुहूर्त वीतता है इसमे प्रस्थान कर राक्षस(-) ० न समेत लका का विनाश कर रावण को वध सी(-) ० ता को मै लाऊगा देषो मेरी दाहिनी आष फर(-) ० कती है सव प्रकार हमारा जय है तुम सेनापति ० न को कहो कि सव सेना वीच मेकर तुम लोग अ(-) ० भी प्रस्थान करो (।) ऐसे वुझा समझा फिर सी(-) ० ता पति वोले कि हनुमान के काधे पर चढ कर ० सभ से पहले मै चलता हू सुग्रीव तुम मेरे सा(-) ० थ रहो ओ अगद के काधे पर लक्ष्मण चढ ले ० और गज ० गवाक्ष ० गवय ० मैन्द ० द्विविद ० नल ० नील ० सुखेन ० जाम्ववान आदि जितने वी(-) ० र है सो सव अपनी अपनी सेना लिये चले (।) ० इस प्रकार जद राम ने सुग्रीव से कहा तद वि(-) ० न की आज्ञा पाय अति वलवीर ओ महाग(-) ० ज समान वानर सव आपस मे नाना कौतुक ० करते ओ आगे आ आ राम से कहते हूए कि अ(-) ० भी जा रावण को हम मारते है ओ गाछो पर ज(-) ० हा कहू फल पावे उन्हे खाते हूऐ झुड के झुड ० तुरन्त दक्षिण दिशा को चले ओ सुग्रीव समे(-) त राम लक्ष्मण ये दोनो भाई सेना के वीच मे ० हो लिये तिस समय वे ऐसे शोभने लगे कि मानो ० नक्षत्रन के वीच चन्द्रमा सुरज होवे (।) इस भाति ० सारी पृथ्वी छाये असग्य वानरन की सेना महा(-) ० मगन हो दिन रात वहा से ऐसी शीघ्र चली कि क्ष(-) ० ण भर भी न कोई कहू विश्राम कर शके जव ना(-) ० ना वन पहार देषते हूऐ मलय ओ सह्य नाम ० पर्वत लाघ आये ओ जहा तरगन के अति भ(-) ० यावन शव्द होते थे उस सागर तीर आन पहु(-) ० चे तव हनुमान के काधे से उतर सुग्रीव सहित ० पानी समीप जा रामचन्द्र यह वचन कहने लगे ० कि सागर तीर तो हम सव आन पहुचे अव जव ० तलक इसे पार होने का कुछ यत्न न ठहरे तव ० तलक सेना यहा ही डेरा करे (।) इतने वचन के सुन(-) ० ते ही सुग्रीव ने समुद्र तीर सभो को डेरा दिया त(-) ० व महाअपार सागर को जो मगरो का घर है ओ ० आकास सा जिसका कुछ आदि अन्त नही ० सुझता देष कर वे सभ वहुत लगे चिन्ता कर(-) ० ने कि नाना जलजन्तुन से भरे हूऐ इस समुद्र ० को किस प्रकार से हम लोग पार होगे जो राक्षसन ० मे महाअधम रावण को मारेगे इस प्रकार वी(-) ० र सव तो चिता से अति व्याकुल भये ओ सीता ० को सुमर कर रामचन्द्र लगे वहुत विलाप करने ० ०इति श्री रामचरित्रे युद्धकाण्डे प्रथमोध्याय (।) १ (।) ० यहा तो यो हो रहा था ओ लका मे हनूमान ० की करतूति जो वडे वडे देवतान से भी होने की ० नही देष रावण कुछ एक डर गया ओ सव म(-) ० त्रीन को वुला नीचे शिर कर यह वचन कहने ल(-) ० गा कि जहा दूसरे किसी का प्रवेश होने का नही ० तिस लका मे आ सीता को देष वीरन समेत अ(-) ० क्षय कुमार को मार सारी लकापुरी जला तुम ० सव को जीत सुचित हा हनुमान सागर पार हो ग(-) ० या यह वुस की करतूति तो तुमने देषी अव क(-) ० हो इसका क्या यत्न करना (।) तुम सव मेरे मत्री ० हो जिससे मेरा कल्याण होवे सो आपस मे ठह(-) ० रा कर कहो (।) वे सव वोले कि महाराज तुम इन्द्रा(-) ० दिक को रण मे जीतनवाले हौ तुम्हे राम से ० किस वात की शका तुम्हारा वह पुत्र मेघनाद ० है जिसने इन्द्र को वाध कर अपने नगर मे ला ० रष्षा था ओ कुवेर को जीत पुष्पक विमान ० विससे छीन कर तुम भोगते हो ओ जिसके ० डर से सारा

जगत कापता है विस यम को तु(-) ० मने जीता वुस के शस्त्र से तुम्हे तनिक भय ० नही हूआ ओ वरुण का पराजय सहज मे ० तुमने किया ऐसा कोई देव राक्षस नही है जो तु(-) ० म से हार न वैठा तुम्हारे डर से मयासुर ने आ(-) ० पसे अपनी कन्या तुम्हे ला दी ओ सदा तुम्हा (-) ० री वश मे रहता है फिर किसका मुह है जो आ(-) ० प के साम्हने ठहर शके हा हनुमान ने सच ढि(-) ० ठाई की है पर जानकर हमने वुस का पीछा ० नही किया इसलिये कि वह वन्दर है इसे अप(-) ० ना पौरुष क्या दिषलावे यह समझ के वुसे छो(-) ० ड दिया तिससे क्या वह वीर कहावेगा अथवा ० हमलोग सावधान नही हूऐ तिससे क्या हम ० को उसने जीत लिया जो हमलोग लडने को ० चाहते तो कधी नही यहा से जीता हूआ वह ० जाता(,) अव हम सव को अथवा एक ही को जो ० आज्ञा कीजे तो सारा जगत विना मानुष का ० करके चले आवे(।) इस प्रकार जव मत्री सव क(-) ० ह चूके तव कुभकर्ण ने रावण से कहा कि यह ० काज तुमने केवल अपने नाश के लिये कि(-) ० या है ओ भाग्य से वच आये हो नही तो जो रा(-) ० मचन्द्र तुम्हे देषते तो कधी नही जीते हूऐ तु(-) ० म यहा आते वे मनुष्य नही साक्षात नाराय(-) ० ण है ओ सीता जी लक्ष्मी है कि जिन्हे राक्षस(-) ० न के विनाश के लिये यहा लाये हो पर जैसे व(-) ० शी निगल कर मछली पीछे वहुत पछताती ० है वैसे ही सीता को लाने से तु भी पीछे पछता(-) ० ओगे ऐसे कह फिर कुम्भकर्ण वोला(—)यह अ(-) ०नुचित काज यद्यपि अन-जान कर तुमने ० किया पर तो भी जिसमे तुम प्रसन्न होगे सो(-) ०ई मै करूगा यह सुन इन्द्रजीत ने वाप से कहा(—) ० महाराज आप आज्ञा कीजे तो सुग्रीव लक्ष्म(-) ० ण को ओ सकल वानरन समेत राम को मार के ए(-) ० क क्षण मे मै चला आऊ आप मेरा वचन स(-) ० त्य कर मानिऐ इतने मे राम के वडे भक्त ओ स(-) ० व वुद्धिमानो मे अतिश्रेष्ठ विभीषण वहा ० आन पहुचे ओ रावण को प्रणाम कर विस(-)० के निकट जा कहने लगे कि कुम्भकर्ण इन्द्र(-)० जीत महापार्श्व महोदर ० निकुम्भ ० कुम्भ ओ ० अतिकाय ये सव भी युद्ध मे राम के सन्मुख ० ठहर नही शकेगे और किसकी गिणती है तु(-)० किस घमड मे भूले हो सीता सरूप ग्रह तुम्हा(-)० रे शिर पर चढा है तुम्हारा कल्याण किसी प्रका(-)० र मुझे दृष्ट नही आता जो मेरा कहा मानो तो ० जव तक रामचन्द्र के चोष[1] वाण सव लका मे राक्षसन के शिर न काटे ओ रूप मे पर्वत स(-) ० मान पराक्रम मे सिंह तुल्य वानर भाल आ(-) ० के जव लग दातो ओ नहो से दानवन के प्रा(-) ० ण न लेवे तिसके पहले ही सीता से अपराध ० क्षमा करा वहुत धन समेत वुन्हे राम पास भे(-) ० ज दो नही तो यह जान लो कि स्वर्ग मर्त्य पा(-) ० ताल कहू तुम जाओगे अथवा इन्द्र वरुण म(-) ० हेश ये सव तुम्हारी रक्षा करे तद भी राम तु(-) ० म्हे जीते नही छोडेगे(।) इस प्रकार विभीषण ० ने वहुत शिषलाया पर जैसे मरनेवाले प्राणी ० को औषध नही भावे वैसे ही विन की वातो ० पर रावण तनिक भी सावधान न हूआ ओ ० कालवश हो विभीषण मे कहने लगा(—) रे दुष्ट० मैनै तुझे नाना पदार्थ खिला पिला कर एत्ता ० वडा किया ओ सदा तेरी भलाई मे रहता हू ० तद भी तू मेरी वुराई चाहता है(,) तू भाई नही ०

---

१. चोखे = नुकीले।

निसदेह मेरा शत्रु है तुज सा कृतघ्न किसी ० को आजतक नही देषा तेरे साथ रहना मुझे ० उचित नही है देषो जातिन का विनाश सदा जा(-) ० ति चाहते है जो दूसरा कोई मेरे आगे ऐसा ० वचन वोलता तो वुसी क्षण मे वुसका शिर ० काट डालता धिक्कार है तुजे राक्षसो के कुल ० मे तू अधम उत्पन्न हूआ(।) इस भाति जव रा(-) ० वण ने अति उत्कट उत्कट वचन कहा तव ० महावली विभीषण हाथ मे गदा लिये वीच ० सभा मे चार मत्रीन समेत तुरन्त अधर मे जा ० रहे ओ क्रुद्ध हो वहा से कहने लगे कि सुनो ० रावण तुम आपसे अपना विनाश मत क(-) ० रो मै तुम्हारे भले के लिये कहता हू तुम यद्य(-) ० पि मुझे धिरकारते हो तथापि तुम जेठ भाई ० पिता समान हो मै तुम्हारा कल्याण ही चाह(-) ० ता हू तुम यह नीके जान लो कि दशरथ के ० घर मे राम सरूप तुम्हारा काल उत्पन्न हूआ ० है ओ राजा जनक के मदिर मे सीता सरू(-) ० प काली उत्पन्न हूई है वे दोनो पृथ्वी के भा(-) ० र दूर करने के लिये यहा आये है वे ही काल ० तुम्हारे शिर पर चढे है इस कारण मेरी हित ० वात तुम नही सुनते श्रीरामचद्र मनुष्य न(-) ० ही वे आप रूप परमेश्वर है प्राणीन के वाह(-) ० र भीतर सव मे व्याप रहे है व्रह्मा की प्रार्थ(-) ० ना से तुम्हारे नाश के लिये यहा आये है अ(-) ० पनी प्रतिज्ञा क्यू कर वे झूठ करे कुल परि(-) ० वार समेत तुम्हारा सहार निश्चय करेगे त(-) ० द मुझ से देषा नही जाऐगा इस कारण रा(-) ० म पास मै जाता हू तुम सुख से अपने घर मे विरा(-) ० जो(।) ऐसे वहुत वकझक सव घर द्वार तज राम ० के चरण कमल की सेवा के लिये चार मत्रीन स(-) ० हित विभीषण तुरन्त वहा से राम पास चला ० इति ० श्री रामचरित्रे युद्धकाडे द्विती-योध्या(-) ० य (।) २ (।) जद विभीषण अधर मे राम के सन्मु(-) ० ख आन पहुचा उपर ही से यह वात लगा वुन(-) ० से कहने कि हे कमलनयन हे स्वामी मेरा प्र(-) ० णाम लीजे मै रावण का छोटा भाई हू विभी(-) ० षण मेरा नाम है भाइ ने मुजको निकाल दि(-) ० या है इसलिए मै आपकी शरण मे आया रा(-) ० वण से मैने हीत वात कही कि सीता को राम ० पास तुम भेज दो पर कालवश होकर मेरी ० वात पर वह सावधान नही हूआ उलटा ही ० खड्ग लेकर मुझे मारने को दौडा तद डर कर ० चार मत्रीन समेत मुक्त होने के लिये मै तु(-) ० म्हारी शरण मे आया(।) सुनकर सुग्रीव ने राम से ० कहा महाराज यह अधम राक्षस वडा मायावी ० है कवहू मत इसका विश्वास कीजे तिस पर रा(-) ० वण का भाई है आयुध लिये हूऐ मत्रीन के सा(-) ० थ ही छल से हम सव को मारने आया है वान(-) ० रन को कह दीजे इसे तुरन्त मार डाले मुजे कप(-) ० टी सा यह लक्षित होता है ओ आपके विचा(-) ० र मे क्या ठहरता है सो कहिए (।) मुस्कुरा कर वे वो(-) ० ले कि मै अभी चाहू आधी पल मे सातो ० लोक नष्ट कर डालू फिर जो का तो सृज दू ० तुम किसी वात का भय जिन मानो यह परम ० साधु है इसे शीघ्र मेरे पास लाओ मेरा यह प्र(-) ० ण है कि सव प्राणी मे जो कोई नीच से भी अ(-) ० ति नीच है ओ वह मुजे ऐक वेर भी कहे कि तु(-) ० म मेरी आपदा हरो तद मै वुस का भी सकट ० नाशता हू ओ यह तो उत्तम व्राह्मण है इस ० का भय तो अवश्य दूर किया चाहिऐ इतनी ० वात के सुनते अति हर्षित हो विभीषण को ० सुग्रीव राम पास लाया तव श्याम सुन्दर ० विशाल लोचन विकशित वदन ओ लक्ष्म(-) ० ण सहित धनुष वाण लिये ऐसे रामचन्द्र जी ० को देष के विभीषण ने साष्टाग

दडवत किया ० ओ हाथ जोर गिडगिडाकर लगा वुनकी ० स्तुति करने इस प्रकार से कि हे भक्त-वत्सल ० हे सुग्रीव के मित्र हे सीतापति हे रघुनन्दन ० मै तुम्हे वार वार प्रणाम करता हू तुम सव के ० माता पिता ओ जगत के आदिकारण हौ ० तुम्हारी माया से मोहित मनुष्य तुम्हारी म(-) ० हिमा नही जानते इन्द्र अग्नि यम वरुण ० कुवेर रुद्र ये सव तुम ही हौ ओ चर अचर प्रा(-) ० णीन के वाहर भीतर व्याप कर जगत सरूप ० हो के तुम ही भास रहे हौ पर माया से छिप ० कर मनुष्य से लगते हो तुम्हारे चरण कमल० की उत्तम भक्ति पाय सहज मे ससार से मै ० मुक्त हूआ चाहता हू हे करुणानिधान तुम ० मुज पर दयालु होकर मेरा त्राण करो(।) इस प्र(-)० कार विभीषण की वाते सुन वहुत प्रसन्न हो ० भक्त वत्सल श्री रामचन्द्र वोल उठे कि तुम ० क्या चाहते हो सो वर तुम्हे मै दू (।) विसने कहा हे ० कृपा निधान मै धन्य हू आपके चरणकम(-) ० ल के दर्शन से निमदेह मै मुक्त हूआ अव ० मुझ सा भाग्यवान पवित्र ओ श्रेष्ठ इस लो(-) ० क मे दूसरा कोई नही होगा मै तुम से विष(-) ० य का भोग कुछ नही मागता कर्म वधन से ० छोडा-वनहारी तुम्हारे चरण मे मुझे भक्ति ० होवे यही वर मै चाहता हू(।) तव वे कहने लगे कि ० सुनो जो मेरे भक्त वहुत शान्त है ओ काम क्रो(-) ० ध आदि जीत कर योग मे मगन है विनके ० हृदय मे निसन्देह मै सीता समेत वसता हू ० तिससे सव विषय वासनातज सदा शान्त ० होकर तुम मेरा नित्य ध्यान किया करो इस म (-) ० हा घोर ससार सागर को सहज मे पार हो जा(-)० ओगे मै तुम्हे वर दिया तुम्हारा किया हूआ ० मेरा स्तोत्र जो कोई पढेगा अथवा मुज मे ० प्रीति होने के लिये किसी को लिख देगा ओ ० जी लगा कर सुनेगा वह अन्त समय मुजी मे ० मिल जागा(।) यो कह भक्ति से प्रसन्न हो श्री रा(-) ० मचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा भाई तुम समुद्र० मे से शीघ्र जल लाओ मै विभीषण को ल(-) ० का का राजा करू मेरे दर्शन का फल अभी ० यह पावे जव तलक चन्द्र सूर्य धरती अरु ० लोक मे मेरी कथा रहे तव तलक लका का ० राज्य यह करे ऐसे कह लक्ष्मण से कलश मे ० जल मगा मत्रीन समेत भाई से तुरन्त विभी (-) ० षण को रामचन्द्र ने राज्य का अभिषेक करा(-) ० या तिस समय सव वानरोने धन्य धन्य क(-) ० र वहुत विन्हे सराहा ओ सुग्रीव उठकर वि(-) ० भीषण से मिले और कहने लगे कि श्री र(-) ० घुनाथ जी के हम सव कोई दास है तिन सभो ० मे अतिश्रेष्ठ आज से तुम हूए अव जिस ० प्रकार से रावण का विनाश होवे वैसी श्री र(-)० घुनाथ की सहायता किया चाहिए(।) वह वो(-) ० ला कि रामचन्द्र तीनो भुवन के नाथ है विन ० की सहायता करने की योग्यता हममे क्या ० है पर जहा तक होगा वहा तक तुम्हारे साथ ० विनकी टहल करेगे(।) इतने मे रावण का भेजा हू(-) ० आ शुक नाम महा असुर वीच आकाश मे ० वहा आकर सुग्रीव से यह वचन कहने ल(-) ० गा कि महाराज तुम्हारे पास दशशीश ने ० मुजे भेजा है यह कहने को कि तुम वडे कुल ० मे उत्पन्न और सकल वनवासी के रा ० जा ओ मेरे भाई समान हौ तुम किस लि(-) ० ये राम की सहायता करते हो विसकी भा(-) ० र्या मै हर लाया हू इसमे तुम्हारा क्या अका(-) ० ज होता है तुम वानरन समेत किष्किन्धा ० को फिर जाओ यह लका देवताओ को भी ० हाथ लगने की नही और अति अल्प वल ० मनुष्य वानर ये किस गिणती मे है(।)। यह सु(-) ० नते ही वानर सव वहुत रिसियाने तो ओ(-) ० ही अधर मे कूद जा किचकिचा

कर घुसो ० से लगे विस दैत्य को मारने तद वुसने राम ० से कहा महाराज दूतन को मारना उचित ० नही इन वानरन को आप वरजिऐ(।) इस ० प्रकार दानव की अति आरत वचन सु(-) ० न राम ने वानरो को वर्ज दिया तव वह दुष्ट ० राक्षस पुन सुग्रीव से कहने लगा(—) राजा जी ० महाराज अव मै जाता हू रावण से क्या जा ० कहूगा सो उसके सदेश का उत्तर आप दी(-) ० जे(।) वे वोले मेरी ओर से तुम कहिओ कि ० वानरो मे जैसा नीच वाली मेरा भाई था वै(-) ० सा ही राक्षसो मे महाअधम तू है कुलप(-) ० रिवार समेत तुझे अभी आके मै मार डा(-) ० लता हू श्रीराम की भार्या हर कर तू कहा ० जा शकक्ता है(।) यो कह प्रभु की आज्ञा पा(-) ० य शुक को तुरन्त पकड कर सुग्रीव ने वाध ० रष्षा(।) इस अनन्तर सागर देष कोप से ला(-) ० ल लाल आषे कर रामचन्द्र लगे भाई से ० कहने देषो लक्ष्मण यह समुद्र वडा दुष्ट ० है हमारे आगमन से इसे हर्ष नही है इसी ० लिये हमारे दर्शन को आता नही यह ह(-) ० मको मानुष जानता है ओ समुझता है ० कि वानरो मे मेरा ये क्या कर शकक्ते है इसी ० घमड से मारे तरगन के और भी उमड चला(।) ० तुम देषो इसे अभी मै शोष डालता हू जो ० अति निश्चिन्त हो या वधा नही[1] वानर सव ० पार जाऐ(।) यो कह महा क्रोध कर काल ओ ० अग्नि समान वान तूणी मे से तुरन्त निका(-) ० ल धनुष पर चढा पुन यह वचन वे कहने ल(-) ० गे कि राम के वाण का चमत्कार सव प्राणी दे(-) ० षे नदीन के पति इन सागर को अभी भस्म ० कर डालते हैं(।) इस भाति जव श्री रामचन्द्र ० लगे कहने पर्वत वन समेत धरती लगी का(-) ० पने ओ चहुदिश से महा अधियाला सा ० हो आया ओ डर कर एक योजन भर समु(-) ० द्र भीतर हट गया और छोटे वडे जितने वि(-) ० स मे जल जन्तु थे सो सव वहुत व्याकुल भ(-) ० ये इस अनन्तर अति सुन्दर शरीर धारण ० कर नाना आभरण पहन अनेक रत्न हा(-) ० थ मे लिये पानी मे से तुरन्त समुद्र वाहर नि(-) ० कल आया ओ राम के आगे जा सभ मणि रष ० दडवत कर हाथ जोड यह वात लगा विनसे ० कहने(—)हे जगन्नाथ हे त्रैलोक्य रक्षक तुम मे(-) ० रा त्राण करो सारा जगत रचते हूऐ तुमने मु(-) ० ज को महा जड स्वरूप वनाया देवता का रचा० हूआ मेरा स्वभाव कौन दूर कर शके निपट ज(-) ०डवुद्धि ओ मूरख होकर मै तुम्हे क्यू कर पह(-) ० चानू तुम निर्गुण व्रह्म हौ क्रीडा करने के लिए(-) ० ये माया मे छिप के मनुष्य से लगते हो अव ० मेरा अपराध क्षमा कीजै मै तुम्हारी शरण ० मे आया तुम भक्तव सल हौ मुज को अभ(-) ० य दान दीजे लका की वाट मै आपको देता ० हू)।(।)जव विसने ऐसे कहा श्री रामचन्द्र कुछ ० एक प्रसन्न हूए ओ वोले कि मेरा वाण सदा ० अमोघ है तिससे तुम शीघ्र वताओ किस ० देश मे इसे मै फेकू सुन के महा तेजस्वी साग(-) ० र ने विनती की कि महाराज यहा से उत्तर दे(-) ० श मे द्रुमकल्पनाम एक जगह है वहा वहुत ० पापी लोग वसते हैं वे दिन रात मुजे दुख देते ० हैं वहा ही इस शर को आप फेक दीजे इत(-) ० नी वात के सुनते ही जद राम ने विस शस्त्र ० को छोडा तद द्रुमकल्प मे जा एक क्षण मे ० अहीरो की मडली जला भस्मकर पुन वह ० वाण आके राम की तूणी मे पैठ गया(।)यह कौ(-) ० तुक देष सागर वहुत चकित भया ओ नम्र० हो कर श्री

---

१. बाधा-रहित ।

रघुनाथ से कहने लगा कि आप ० की सेना मे विश्वकर्मा का पुत्रजो नल है वह ० इस मेरे जल मे अव वाध वाधे वह वुद्धिमा(-) ० न इन कामो मे वडा दृढ है विसी से यह काज स(-) ० धेगा ओ लोक मे तुम्हारी उत्तम कीर्त्ति होगी(।) ० ऐसे कह सुन राघव को प्रणाम कर सागर तो० अतरधान हो गया तव लक्ष्मण सुग्रीव ० समेत आपस मे समत कर रामचन्द्र ने नल ० से कहा कि वानरन के साथ होकर समुद्र मे ० तुम शीघ्र वाध वाधो(।) सुनकर वह वहुत आ(-) ० नन्द मगन हूआ ओ सेनापतिन समेत वा ० नरो से वडे वडे पर्वत वृक्ष मगा शौ योजन स(-) ० मुद्र को तुरन्त दृढ कर वाध लिया ० इति श्री ० रामचरित्रे युद्ध काण्डे तृतीयोध्याय (।) ३ (।) ज(-) ० व समुद्र वाध चूका तव वुस वाध पर रामचन्द्र० ने एक शिव की स्थापना करी ओ उस महादे(-) ०व का नाम रामेश्वर रष्षा ओ विसे पूजा हर्षि(-) ० त हो लोगो के हित के लिये यह वचन कहा ० कि इस सेतु वध को जो कोई प्रणाम करेगा ० और रामेश्वर का दर्शन करेगा वह मेरे अनु(-) ० ग्रह से व्रह्महत्यादिक पाप मे मुक्त होवेगा अ(-) ०रु जो नर सेतु वध मे न्हा कर रामेश्वर को देषेगा ० और काशी मे जा शकल्प कर वहा से गगा ज(-) ० ल भर ला के रामेश्वर को स्नान करावेगा वह ० निसदेह व्रह्मपद को प्राप्त होवेगा(।) इतनी ० कथा सुन कर पार्वती ने शिव से पूछा महारा(-) ० ज वह वाध कितने दिन मे वाधा गया सो आ(-) ० प समझा कर हमे कहिए जो हमारे मन का स(-) ० देह मिटे (।) वे वोले कि प्रथम दिन मे तो चौदह यो(-) ० जन ओ दूसरे मे वीश तीसरे चौथे दिवस मे ० इक्कीश वाईश पाचवे दिन मे तेइश योजन ० इस क्रम से सागर मे नल ने वाध वाधा तव ० असख्य वानर सव वुस पर होकर तुरन्द समु(-) ० द्र पार हूऐ ओ लका के निकट सुवेल नाम प(-) ० र्वत पर गये और राम लक्ष्मण भी हनुमान अ(-) ० गद के काधो पर चढ के लका को देषने के लि(-) ० ये उस पहार पर गये तो देषते क्या है कि नाना ० ध्वजा पताकान से ओ चित्र विचित्र अटारीन ० से लका की अति अद्भुत शोभा हो रही हे ओ ० विस नगर मे एक कोठे के चौडी सी छत पर ० मत्रीन सहित वैठ कर रावण आपस मे वात(-) ० चित कर रहा है औ शिरो मे किरीट मणि पट्ट ० ने अति सुन्दर हूआ है ओ कैसा लगता है ० कि जैसा नील पर्वत होवे ओ वर्षाकाल का ० श्याम मेघ अरु अनेक छत्र चौरन से शोभित ० हो रहा है(।) यह देषकर रामचन्द्र ने शुकासुर को ० छोड दिया तव वानर से मार खाता हूआ व(-) ० ह भाग कर रावण पास आया रावण ने हस ० के वुस से पूछा कि क्या जी तुम्हे वानरो ने वहु(-) ० त सताया वुह कहने लगा कि सागर पार जा ० जव मै तुम्हारा सदेश सुग्रीव से लगा कहने ० तव छौकर[1] वानरो ने मुजे पकड लिया ओ ० घुसो से लगे मारने ओ नहो से नोचने दातो ० से काटने तद रामराम कर मेरा पुकार सुन राम के ० वर्जने से विन्होने मुझको किसी किसी प्रका(-) ० र से छोड दिया तव डर से भाग के मै यहा आया रा(-) ० क्षसो ओ वानरो की दोनो सेना मैने देषी इन्हो(-) ० का कवहू मिलाप होने का नही देषो वानर सव ० तुम्हारे पुर के निकट आन पहुचे अव कै तो सी(-) ० ता को राम के पास भेज दो कै लडने को उपस्थि(-) ० त हो इन दोनो मे एक शीघ्र करो ओ राम ने मुझ ० से कहा है कि

---

१ छोकड़े।

रावण से मेरी यह वात तुम वोलि(-) ० ओ कि जिस वल से जानकी को तुम हर ले गये ० हो सो अपने भाई वन्धु ओ सेना समेत आके ० मुजे दिषलाओ मै वडे तडके आके लका न(-) ० गरी को देष लूगा ओ मारे वानो के तुम्हारे रा(-) ० क्षसन की सेना ध्वस्त कर डालूगा यह तुम ० देष लोगे तुम सव प्रकार सचेत हो मै तुमसे व(-) ० हुत क्रुद्ध हू यो कह रामचन्द्र चुपके हो रहे औ(-) ० र जहा लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण थे विस स्था(-) ० न मे गये(।) जो ये चारो ही अभी चाहे तो तुम्हारी ० लका को उखाड के भस्म कर डाले और वानर ० सभतो कहू पडे रहे तिन चारो मे भी जैसा कु(-) ० छ राम के पराक्रम रूप शस्त्र मैने देषे विस्से ० यह मुजे निश्चय होता है कि लक्ष्मण सुग्रीव ० विभीषण ये भी तीनो अलग रहे एकेले रा(-) ० मचन्द्र जो जी के धरे तो तुम्हारे पुर मे आके स(-) ० व को मार डाले वह देषो वानरो की असख्य ० सेना जो राम की आज्ञा से सुवेल पर्वत पर द(-) ० ल वादल सी उमड आयी है मेघ समान वा(-) ० नर सव वहा गर्जते है किसे सामर्थ्य है जो वु(-) ० न्ह की गिणती कर शके पर जो जो विनमे प्र(-) ० धान है तिनका नाम सुनो मै तुमसे कहता हू ० कि लका के साम्हने लाषो सेनापतिन के वी(-) ० च मे अतिहर्षित होकर वे जो षडे है सो राजा ० सुग्रीव है ओ वुन के पास सेनान के पति अरु ० अग्नि के पुत्र नील महावीर है ओ वे जो वार(-) ० वार पूछ पहरा रहे है ओ रूप मे पर्वत के शृग ० समान लगते है सो वाली के पुत्र अगद महा(-) ० वली है ओ जिन्होने यहा आकर के सीता को ० देषा और तुम्हारे पुत्र को मारा सो वे विग्ग्या(-) ० त हनुमान है ओ वुन के पास जो रूपा सा ज्ञ(-) ० लकता है सो महा वुद्धिमान वडा पराक्रमी श्वे(-) ० त नाम वानर है अरु वार वार सुग्रीव पास जो ० जाता आता है विस अतुल पराक्रमी का ना(-) ० म रभ है वह अभी चाहे तो एकेला ही आक(-) ० र लका को एक क्षण मे उलट डाले ओ वे जो ० क्रुद्ध हो होकर तुम्हारे नगर को ऐसे देष रहे ० है कि मानो इसे जला ही देगे सो (को) टिन सेनाप(-) ० तीन के नायक है इनका नाम शरभ है इसी ० प्रकार ० पनस ० द्विविद ० मैन्द ० वे जो साम्हने ० दृष्ट आते है एक से एक महावीर है ओ वि(-) ० श्वकर्मा के पुत्र वे नल नाम महावली है जि(-) ० न्होने सागर माह सहज मे चार शौ कोश का ० वाध वाधा है किसका सामर्थ्य है जो वानरो ० की गिणती कर शके ओ वुन्हो का गुण वर्ण(-) ० न करे सव एक से एक शूर है सभो को युद्ध की ० श्रद्धा है राक्षसो समेत इस लका को ये सव ध्व(-) ० स्त कर शकते है(।) इन्होके साथ जितनी सेना हे ० सो सुनो मै तुमसे एक एक कर कहता हू कि स(-) ० हस्र लाष कोटि ओ एकतीश सहस्र कोटि ० वानर ये तो एक नील के सग है इसी भाति अ(-) ० गद हनुमान ० श्वेत ० रभ ० शरभ ० पसन ० द्विवि (-) ० द ० मैन्द ० नल ० ये नव सुग्रीव के और जो मत्री ० है तिन्हो के साथ भी इतने ही इतने ही जान ० लो इनसे अधिक और जितने वीर है विन ० के सग कितनी सेना है यह कहने का साम (-) ० र्थ्य मुजे नही है तिससे हे रावण श्रीरामच(-) ० न्द्र मानुष नही ये साक्षात आदि नारायण ० है ओ जगत सरूपिणी सीता विनकी माया ० है(।) इन्ही दोनो से स्थावर जगम सव ससार उ(-) ० त्पन्न हूआ तिस्से चर अचर जितने प्राणी ० है विन सभो के ये माता पिता है इन से वैर क(-) ० रना भला नही तुम भूल कर सीता को हर ला ० ये हो यह जगत अनित्य है इसमे मल मूत ० मास हाड ओ दुर्गंध इनो से भरा हूआ भोग ० का यह अध्रुव देह कि जिसके लिये अने(-) ० क

ब्रह्महत्यादिक पाप किये हो किसी न कि०सी दिवस अवश्य छूट जाऐगी यिह विचार० शरीर का अभिमान तज शुद्ध मन से जोति ०सरूप भगवान को भजो ओ स्त्री पुत्रादिक० से सदा उदास रहो(।)भोग के लिये क्यू आप से ० अपना नाश करते हो विवेक का घर मानुष की० देह पाकर(,) विशेष व्राह्मण की(,) तिसमे भी भा(-) ० रत खण्ड मे ऐसा मूर्ख होगा जो अप० नी देह अपने वश मे न करके भोग पर चि(-) ० त्त दौडा वेगा तिस्से उत्तम व्राह्मण हो(,) पुल(-) ०स्त्य मुनि का पोता(,) कहा (कर) अज्ञानी सा भोग० के पीछे क्यू तुम झुठमुठ सदा दौडते हो अ ० व से मेरा कहा मान सव का सग त्याग भक्ति ० से सदा राम को सुमरो ओ सीता को उन्हे स(-) ० मर्पण करो सव पाप से छूट कर सहज मे ० तुम विष्णुपद को पहुचोगे नही तो ससा(-) ० र के आवागमन मे सदा पडे रहोगे मै तुम्हा(-) ० रे हित के लिये कहता हू मेरा वचन अगीका(-) ० र करो नही तो निश्चय तुम्हारा नाश होगा ० इति श्री रामचरित्रे लका काडे चतुर्थो(-) ० ध्याय (।) ४ (।) इस प्रकार शुकासुर की वाते कि० जिनके श्रवण से अज्ञानता जाती है सुन ० कर रावण वहुत रिसियाना ओ लाल ला(-) ० ल आखे कर यह वचन लगा वुससे कहने(—) ० अरे मतिमन्द तू सेवक होकर गुरु समान ० क्यू मुजे ज्ञान वतावता है मै तीनो लोक को० शिषलानेवाला हू तू मुजी को लगा शिष(-) ० लाने(,) तुजे लाज नही लगती(,) मै तुजे अभी० मार डालता पर मेरा दूत होकर तू राम पास० गया था इस्से छोड दिया चल जा यहा से ० दूर हो(,) तू मढ है तेरी वात मुजसे सुनी नही० जाती(।) यह सुन अति अनुग्रह मान शुका(-) ० सुर वहा से डरता कापता हूआ अपने घर ० को गया(।) वह आगे व्राह्मण था अपने व्रह्म(-) ० कर्म मे निपुन हो वाणप्रस्थ के विधि से व(-) ० न मे जा वास कर देवतान की वृद्धि के लिये० और राक्षसो के विनाश निमित्त सदा य(-) ० ज्ञ किया करता था सो वहा वज्रदत नाम० एक वडा राक्षस रहता था उसने मन मे शो(-) ० चा कि राक्षसो से तो यह विरोध रषता है० ओ देवतान की चाहता है भलाई तिस० से अवसर पाय इस दुष्ट का कुछ अपका(-) ० र किया चाहिए(।) यो जी मे ठहरा वुस की वुरा(-) ० ई मे वह प्रवृत्त हूआ तो कितने एक दिन ० के वीते शुक के घर पर एक वेर अगस्त्य मु(-) ० नि आ निकले तव शुक ने ऋषि का वडा० आदर मान किया ओ भोजन के लिये वु(-) ० न्हे नेवता जव वे मुनि स्नान करने को ग(-) ० ये तव अवसर पा विस ऋषि का भेष धर० वज्रदत ने शुक से कहा कि जो मुजे षिला(-) ० या चाहते हो तो मास समेत भोजन मुझ० को दीजो छाग का मास खाये मुजे वहुत ० दिन हूऐ(,) सुनकर वह अति हर्षित हूआ० ओ रसोई मे वहुत सा मास वनवाया(,) ज(-) ० व अगस्त्य मुनि आ जेमने को वैठे तव शु(-) ० क की भार्या का अति सुन्दर रूप धर जी मे ऋ(-) ० षि को मोहित करता हूआ वह दुष्ट राक्षस० ही लगा परोसने तो परोसते परोसते नि(-) ० दान मनुष्य का वहुत सा सुपक्व मास वुन० मुनि को देकर आप अन्तरधान हो गया० इस अनन्तर अभक्ष्य आमिष देष अति ० क्रुद्ध हो अगस्त्य मुनि शुक से लगे कहने(—) ० अरे दुष्ट तूने मनुष्य का यह अभक्ष्य मास ० मुजे खाने को दिया है तो जा तू राक्षस हो(,) ० जो मनुष्य ही तेरा आहार होवे(।) इस भाति ० शाप पा निपट डर कर वह वोला(—) महाराज ० तुम आपे अभी कह गये कि मास मुजे षि(-) ० लाओ अव मैने ला दिया तो विना

अपरा(-) ० ध मुजे शाप क्यू देते हो इसमे भला मेरा क्या ० दोष मैंने तो छाग का मास वनवाया वह् मनु(-) ० ष्य का मास क्यूकर हो गया यिह् चरित्र कुछ मै ० जानता नहीं(।) जव वुसने यो कहा क्षण ए(-) ० क ध्यान कर राक्षस की सभ करतूति जान० निदान अगस्त्य जी वहुत लज्जित भये ० ओ विससे कहने लगे कि तुम्हारा अपका(-) ० र करने वाले राक्षस का यह् सव कर्म है मै ० ने अनजान कर तुम्हे श्राप दिया पर अव ० मेरा वचन झूठ होने का नही(,) तुम राक्षस ० होके रावण की सहायता जा करो जव रा(-) ० वण को मारने के लिये वानरो समेत श्री रा (-) ० मचन्द्र लका समीप आवेगे औ अपना ० दूत कर रावण तुमको वुनके पास भेजेगा ० तव उन्हे देष मेरे श्राप से मुक्त हो रावण ० को तत्त्वज्ञान वता फिर तुम अपने पद ० को पहुचोगे(।) ऐसे वुझा समझा अगस्त्य ० मुनि तो निज आश्रम को गये ओ शुक० नाम वह् व्राह्मण राक्षस हो रावण पास ० आया ओ उसकी सहायता लगा करने(।) ज० व राम लक्ष्मण लका निकट आये तव दूत ० हो वुन दोनो भाई का दर्शन कर रावण को ० ज्ञान वता शीघ्र घर जा पुन वह व्राह्मण का ० व्राह्मण हूआ ओ अपने पद को प्राप्त(।) तिस ० अनन्तर मल्यवान नाम एक महावृद्ध ० राक्षस जो सभो मे वडा वुद्धिमान था ओ ० नीतिविद्या मे अति निपुन ओ नाता मे रा(-) ० वण का नाना था रावण पास आया ओ ० शान्त हो यह् वचन लगा वुससे कहने(—)हे रा(-) ० जा मै तुमसे एक वात कहने को आया हू ० वुसे सावधान होकर सुन लो फिर जो जी(-) ० हे सो कीजो(,) सो यह् है कि जव से इस नगर ० मे सीता का प्रवेश हूआ है तव से सव प्रका ० र विनाश ही का लक्षण यहा दृष्ट आता हे ० देषो ये भयकर मेघ सव अति कठोर गर्जते ० है ओ लका मे सदा लोहू आग वरसाते है ० ओ देवतान की प्रतिमा सव रोती है ओ प(-) ० सेनो से भर जाती है ओ राक्षसो के आगे ० आ वडे वडे पाडुर पाडुर दान्त निकाले का ० लिका देवी नित्य हसती है ओ गौओ को ग(-) ० दहे जनते है और नेउले विल्ली सो(,) चूहे ० ओ गरुड सो साप सदा युद्ध किया करते हैं ० ओ अति भयान[1] सरूप मृत्यु को साथ लिये ० काल सव के घर घर नाच रहा है इस आ(-) ० दि और भी अनेक दुर्योग देषने मे आ(-) ० ते है तिस्से हे दशानन कुल रक्षा के लिये तुम ० मन को शान्त करो ओ आदर मान कर कु(-) ० छ धन सहित सीता को राम पास भेज दो ० ओ श्री रामचन्द्र को नारायण कर जानो वु(-) ० न से विरोध कवहू मत करो उनही के चर(-) ० ण सरूप नाव का आश्रयण कर ओ विन(-) ० की भक्ति से पवित्र हो ज्ञानी लोग सहज मे ० भवसागर पार होते हैं(।) वे रामचन्द्र मनुष्य न(-) ० ही ईश्वर है भक्ति भाव से वुन्हे भजो वे सव ० के घट घट वासी है तुम यद्यपि दुराचारी हौ ० तथापि वुनकी भक्ति से पवित्र होगे कुल ० परिवार की रक्षा के लिये मेरी यह वात ० तुम मानो इसी मै कल्याण है(।) इस प्रका(-) ० र माल्यवान ने वहुत शिषलाया पर व(-) ० ह दुष्ट रावण काल का वश हो रहा था इ(-) ० स कारण उसकी वातो पर तनिक भी साव ० धान नही हूआ ओ रिसियिा कर कहने ० लगा कि जो राम एक छोटा सा मनुष्य है ० ओ वानरो का भरोसा रषता है वुसे क्यूक(-) ० र समर्थ्य मानते हो मै जानता हू कि शि ० षला पढा के नीश्चय राम ने तुम्हे भेजा है ० जो ऐसा अनर्थ वक्ते

---

१. भयावना या भयानक।

हो चलो जाओ वुढे ० हो इससे तुम्हारा कहा सव सव मैने सहा है इस ० के आगे फिर जो कवहू ऐंसा वचन मुह से नि ० कालोगे तो मै तुम्हे तुरन्त मरवा ही डालूगा (।) ० यो कह सव मत्रीन समेत वहा से उठ के एक ० दूसरी अटारी के ऊपर रावण गया तहा से ० वानरो की सेना देष सव राक्षसो को वुला ० युद्ध के लिये लगा उतावली करने तव मत्री(-)० न से घेरे हूऐ ओ शिरो मे किरीट मणि पह ० ने रावण को सुवेल पर से देष कर लक्ष्मण ० समेत श्री रामचन्द्र जी वहुत क्रुद्ध भये तो अ(-) ० र्द्ध चन्द्राकार एक ऐंसा वाण मारा कि आधे ० पल मे इसके दशो किरीट ओ सहस्रो श्वे(-) ० त छत्र काट कर धरती पर गिर पडे सो लो (-) ० गन को अति अद्‌भुत लगा ओ लज्जि(-) ० त होकर रावण तुरन्त नीचे उतर आया ० और भवन के भीतर जा प्रहस्त आदि सक(-) ० ल मत्रीन को वुला समत कर वानर से लडने ० को सव राक्षस को आज्ञा करी(।) तव मेरी मृदग ० ढाक आदि भाति भाति के वाजो समेत भैसो ० उटो गदहो ओ हाथी घोडो सिहो पर चढे हूऐ ० ओ खड्ग शूल धनुष वाण वरछे गदा धोप ० आदि नाना शस्त्र वाधे तुरन्त वीर राक्षस स(-) ० व अपने अपने स्थान से निकले ओ चहुदि(-) ० श लका के सव द्वार रोक रोक(क)र खडे हो गये औ(-) ० र वहा हनूमान अगद कुमुद नील-नल-स ० रभ-मैन्द-द्विविद-जाम्ववान ० दधिमुख केश(-) ० री तार इन आदि और जो सहस्र सहस्र ० लाष लाष शौ शौ कोटि वानरो के नायक थे ० सो सव राम की आज्ञा पा पहार के वडे वडे च(-) ० टान ओ नाना वृक्ष उखाड कर हाथो मे ० लिये आगे ही से लडने को उपस्थित हो रहे ० थे सो रावण की सेना देषते ही मारे हर्ष के कू(-) ० दते फादते ओ गर्जते हूऐ लका पर चढ दौडे ० ओ चहुदिश से विसे घेर लिया ओ राजा सु(-) ० ग्रीव समेत राम लक्ष्मण का जय यह कहते ० हूऐ लगे राक्षसो को शिला ओ वृक्ष फेक फे(-) ० कर मारने ओ लपट झपट कर दातो से का(-) ० टने ओ द्वारो को फाद फाद पुर के भीतर ध(-) ० सने (।) निदान राक्षस सव महाक्रुद्ध हूऐ तो द्वा(-) ० रो से निकल ओही शत्रु की सेना मे जा गिरे ० ओ खड्गो शूलो फरसो से लगे वुन्हे काटने ० ओ गदान से चूर्ण करने तिस समय वान ० र ओ राक्षसो की जो परस्पर अपना अप(-) ० ना जय चाहते थे ऐंसी अद्‌भुत लडाई हूई ० कि लोहू और मास का वहा चहला हो ग(-) ० या(।) कोई वहा से हट शके नही जिस जिस प्र(-) ० कार से वानर सव राक्षसो को मारे विसी वि(-) ० सी भाति से ये वुन को हने ओ अति भया(-) ० वन चितकार शव्द करे निदान वानरो पर श्री-० राम की सुदृष्टि थी ओ देवतान के अश से वे ० उत्पन्न हूऐ थे इससे वुन वानरो ने राक्षसो को ० ऐंसा मारा कि उनकी चौथाई सेना नष्ट० हो गई सो देष मे(घ) नाद जो शस्त्र विद्या मे वडा० निपुन था वहुत क्रुद्ध हूआ तो झट नभ मे ० जा अन्तरधान हो व्रह्मास्त्र समेत नाना ० शस्त्रन से वानरो का विनाश लगा करने ० ओ रामचन्द्र पर ऐंसा लगा वाण वरसाने ० कि लोग सव देष कर वहुत चकित हूऐ(।) तव ० व्रह्मास्त्र की महिमा रषने के लिये क्षण ऐक ० तो श्री रामचन्द्र चुप होके रहे निदान वानरो ० का नाश देष कोप से लाल हो लक्ष्मण से क (-) ० हा कि व्रह्मास्त्र सहित मेरा धनुष तुम मुझे ० ला दो मै एक क्षण मे इन असुरो को भस्म क (-) ० र डालता हू मेरा पराक्रम आज तुम देषो(।) य(-) ० यह[1] सुनते ही मेघनाद तुरन्त वहा से भागा ओ ०

१. 'य' पहले ही आ चुका है।

लका मे आया तद वानरो की सेना निहत ० देष अति दुखित हो रामचन्द्र ने हनुमान से ० कहा तुम शीघ्र क्षीर समुद्र तीर जाओ वहां ० द्रोणाचल पर सजीवनी नाम औषधी है ० वुसे यहा लाकर इन महापराक्रमी वानरो ० को जिला फिर वहा विसे रष आइओ इस ० मे तुम्हारी वडी कीर्त्ती होगी इतनी वात के ० सुनते ही अनिलकुमार वहा से वायुवेग स(-) ० मान उडे ओ औषधी समेत द्रोणगिरि को ० उखाड ला सकल वानरो को जिला फिर उस ० पर्वत को जहा के तहा तुरत रष आये तव तो ० आगे की भाति वानर सव पुन भारी कोला(-) ० हल करने लगे सो सुन रावण वहुत विस्मित ० हूआ ओ सभ राक्षसो को वुला कर कहने ल(-) ० गा कि देवतान का रचा हूआ राम मेरा वडा श(-) ० त्रु उत्पन्न भया विसे मारने के लिये सेनान के ० नायक जितने मेरे भाई वन्धु ओ मत्री है सो स ० व मेरी आज्ञा से शीघ्र रण मे जाऐं और जो मे(-) ० रा शासन नही मानेगे प्राण वचाने के लिये ड(-) ० र कर लडने को नही जावेगे विन सव को जी ० से मै मार डालूगा (।) इस प्रकार जव रावण ने ० कहा तव अतिकाय ० प्रहस्त ० महानाद ० महो ० दर ० देवशत्रु ० निकुम्भ ० देवान्तक ० नरान्तक आ(-) ० दि जो लाषो करोरो शूर थे सो सव मारे भ(-) ० य के वानरो से लडने को तुरन्त लका से निक(-) ० ले ओ विन की सेना मे पैठ कर खड्ग शूल आ(-) ० दि नाना प्रकार के आयुधो से लगे वानरो को ० पटरा करने ओ मारे चटानो वृक्षो के ओ दा(-) ० तो घुसो से वे भी इनका प्राण लगे लेने कित- ० ने एक असुरन को तो राम सुग्रीव ने मार गि(-) ० राया अरू कितने एक को हनूमान अगद ल(-) ० क्ष्मण ने ओ वहुतेरन को वानर के नायको ० ने मार कर चूर्ण कर डाला ० इति श्री रामचरि(-) ० त्रे युद्ध काण्डे पचमोध्याय (।) ५ (।) जव अतिका(-) ० य आदि अनेक वीर सव युद्ध मे मारे गये ओ ० सेना सव नष्ट हूई तव सुन कर रावण वडा दू(-) ० खित हूआ ओ अति क्रोध कर चौकी के लि(-) ० ये इन्द्रजीत को लका मे रष सव शस्त्र लिये ० सुदर रथ पर चढ़ राक्षसो समेत आप सग्रा(-) ० म पर आया ओ आते ही राम पर दौडा तो मा(-) ० रे वाणो के अनेक वानरो को वध सुग्रीव आ(-) ० दि सेनापतिन को अचेत कर धरती पर लो टा(-) ० ता हूआ आगे जा देषे तो राम पास हाथ मे ग(-) ० दा लिये विभीषण महावीर खडे हैं (।) यह देषते ० ही जो विसने यम की दी हूई महाशक्ति वि (-) ० भीषण पर चलाई है तो ही धनुष वाण लेक(-) ० र विभीषण के आगे लक्ष्मण जी जा पर्वत से ० खडे हो गये(—)यह कहते हूऐ कि हमने इसे अभ(-) ० य दान दिया है यह महा असुर वध का योग्य ० नही है(।) इतने मे वह महाशक्ति लक्ष्मण की ० देह मे आ लगी वे यद्यपि साक्षत शेषनाग(-) ० के अवतार थे विन्हे शक्ति वह कुछ नही क(-) ० र शकक्ती थी पर तो भी वे मनुष्य हूऐ थे इस हेतु ० मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडे (।) तव घर पर ला ० ने को रावण लगा वुनको हाथो से उठा वने ० पर नही उठा शका वहुत चकित हूआ कारण ० इसका यह है कि जिनके पीठ पर सारी पृथ्वी ० है विन परमेश्वर को छोटा सा राक्षस भला ० क्यूकर उठा शके(।) निदान जव फिर लगा साह(-) ० स करने तव लक्ष्मण को रावण ले जाया चा(-) ० हता है यह देषते ही हनूमान ने वुसे वज्र स(-) ० मान एक ऐंसा घुसा मारा कि मुहो आषो ओ ० कानो से वहुत लोहू उगलता हूआ अपने र(-) ० थ के निकट जा अचेत हो कर वह गिर पडा(।) त(-) ० व लक्ष्मण को राम

पास तुरन्त हनुमान उठा ० लाया (।) उसकी प्रीति ओ भक्ति से उठावने की ० वेरिया लक्ष्मण जी वहुत हलके हो गये (।) जव ० जाना कि लक्ष्मण जी नारायण के अवतार हैं ० तव वन्हे त्याग कर वह महाशक्ति रावण के ० रथ पर फिर आयी (।) तद चेत कर[1] रावण भी धी (-) ० रे धीरे उठ वैठा ओ रथ पर जा धनुषवान ले ० अति क्रोध कर पुन रामचन्द्र पर दौडा (।) वुसे ० रथ पर आते हूऐ देष हनुमान महावलीय ० के काधे पर चढ धनु का वज्र समान टकार श (-) ० ब्द कर श्री रमचन्द्र भी आगे वढ आये ओ वि (-) ० स राक्षस से लगे कहने (—) अरे अध० असुर तू ० ऐता वडा अपराध कर मेरे आगे से अव कहा ० जा शक्ता है (,) खडा रह जिन वाणो से मार कर ० तेरे राक्षसन को मैंने यमलोक भेजा विन्ही ० शस्त्रन से तेरा भी आज प्राण लेता हू मे (-) ० रे साम्हने आ यह सुनते ही तीक्ष्ण तीक्ष्ण वा (-) ० णो से हनुमान को विम दानव ने वहुत मारा पर उ (-) ० न को कुछ नही हूआ वरन और भी देह मे ते (-) ० ज वढा ओ लगे गर्जने इस उपरान्त हनुमा (-) ० न की देह मे शस्त्र के घाव देष अतिक्रुद्ध हो ० छत्र पताका समेत रावण के धनुष आयुध ० ओ घोडे रथ सहित विसके सारथी को मा (-) ० रे वाणो के श्री रामचन्द्र ने खड खड कर डाला ० ओ वज्र समान एक महावाण से विस दुष्ट ० को ऐसा मारा कि वह मूर्छित हो गया ओ ल (-) ० गा कापने (।) तद अर्द्ध चन्द्राकार वाण से वुसके ० शिर के किरीट मणि जो सूर्य से झलकते थे ० काट गिरा यह वचन लगे विससे कहने (—) मेरे ० वाणो से तुम वहुत पीडित हूऐ अव लका मे ० जाओ वहा सव को सुचित कर सवेरे यहा आ ० के फिर मेरा पराक्रम देष लीजो (।) इस प्रकार ज ० व राम ने कहा हतदर्प्प हो वडी लज्जा पा राव (-) ० ण लका मे फिर आया तव लक्ष्मण को मू (-) ० छित देष मानुष की भाति वहुत पछता कर ० श्री रामचन्द्र ने हनुमान से कहा (—) भैया आगे ० की भाति फिर सजीवनी लाकर वानरो स (-) ० मेत लक्ष्मण को जिलाओ (।) यह सुन अ (-) ० ति शीघ्र सागर पार हो वायुकुमार औषधी ० लाने को चले (।) सो समाचार किसी दूत ने ० रावण से जा कहा कि लक्ष्मण को जिलाने ० के लिये सजीवनी लाने को राम का भेजा हू (-) ० आ हनूमान क्षीर समुद्र तीर गया (।) जद दू (-) ० त ने यो कहा सुन कर रावण वहुत लगा चि (-) ० ता करने निदान रात समय ऐकेले ही उ (-) ० ठ कर कालनेमी के घर पर तुरन्त गया (।) काल (-) ० नेमी वुसे देषकर वहुत चकित हूआ ओ ० डर गया ओ आदर मान कर हाथ जोड यह ० वात विससे कहने लगा (—) महाराज क्या कारण ० है कि आप आये सो कहिऐ मै करू (।) वह वो (-) ० ला क्या पूछते हो कालवश होकर मुज प (-) ० र भी कष्ट आ प्राप्त हूआ मैंने यमकी श (-) ० क्ति से लक्ष्मण को मार कर पृथ्वी पर गिरा ० दिया है वुसे जीलाने के लिये सजीवनी ला (-) ० ने को हनूमान गया है तुम मुनि का भेष ध (-) ० र अद्भुत माया फैला ऐसा विसे जा मोहित ० करो कि औषध लाने मे विसे विघ्न हो जावे ० ओ समय वीत जाऐ (।) यह काज करके फिर अ ० पने मदिर पर आओ (।) सुन कर कालनेमी व (-) ० हुत पछताया ओ कहने लगा अछा जिस ० मे तुम प्रसन्न होगे सोई मै करूगा यहा तक ० कि तुम्हारे लिये अपना प्राण तजूगा पर हे ० रावण तुम यह नीके जान लो

---

१. तब, चेतना आने पर।

कि मृग सरू(-) ० प मारीच की जो दशा वन मे आगे हूई सोई दशा ० मेरी भी होगी इसमे कुछ सदेह नही (।) मै तुम्हा(-) ० री आज्ञा कधी न टालूगा शीघ्र जाऊगा ओ ० जो कहते हौ सो करूगा पै यह मै तुमसे कह ० ता हू कि पुत्र पौत्रादिक समेत सकल परिवा(-) ० र का सहार करा ऐकेले एक तुम जी कर क्या क(-) ० रोगे ओ सीता सहित इस राज्य ही से क्या तुम्हे ० होगा जो ऐसा कर्म करते हो(।) इसमे कधी नही ० तुम्हारा भला होगा तुम मेरा कहा मानो तो अ(-) ० भी जा सीता को राम पास भेज दो औ विभीष(-) ० ण को राज्य पर विठला वन मे जा मुनिन के सा(-) ० थ वसो ओ वहा निर्मल जल मे प्रातस्स्नान ० कर सध्या वदनादिक क्रिया से सुचित हो ए(-) ० कान्त मे जा सुन्दर आसन पर वैठ विषय वास(-) ० ना त्याग सदा निर्गुण व्रह्म का ध्यान करो इ(-) ० स ससार से सहज मे मुक्त होगे(,) ओ निर्गुण ० का ध्यान नही कर शको तो नाना रत्नो से रचि(-) ० त सुवर्ण के सिहासन पर सीता सहित वैठ[1] हूए ० सगुण सरूप श्री रामचन्द्र को जो नाना भूष ० ण पहने अति अद्भत शोभ रहे है ओ धनुष ० वाण लिये जिनके पास लक्ष्मण जी खडे है ० ओ जिनकी देह मे विजली सा पीताम्वर चम(-) ० कता है सदा अपने हृदय मे ध्यान करो ओ वि(-) ० न के भक्तो से विन का चरित्र मन देके सुनो(।) वे ० सव घट वासी पूरण व्रह्म है वुनकी भक्ति मे ० जो मगन होगे तो ससार सागर को निसन्देह ० तर जाओगे ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे ० षष्ठोध्याय (।) ६ (।) इस प्रकार कालनेमी का अ(-) ० मृत समान वचन सुनकर मारे क्रोध के राव(-) ० ण ऐसे जल गया जैसे उष्ण घृत मे पानी प(-) ० डे(।) निदान दात पीस कर कालनेमी से कहने ० लगा क्या मेरा कहा तुम नही मानोगे(,) अछा मै ० तुम्हे अभी मार डालता हू मै जानता हू मेरे वै(-) ० री से कुछ ले कर ऐसा वचन तुम वोलते हो(।) सु(-) ० न कर विसने कानो पर हाथ दिये ओ कहा ऐ महाराज तुम क्रुद्ध क्यू होते हौ मेरा ० कहा तुम्हे नही रुचे तो लो मै अभी जाता हू(।) यो ० कह विदा हो वाट मे हनुमान को विघ्न करने ० के लिये कालनेमी शीघ्र वहा से चला तो जा ० ते जाते हिमालय के पास जा हनुमान का प(-) ० थ रोक माया कर एक अछा सुन्दर तपोवन र(-) ० च मुनि का भेष वन अनेक शिष्य साथ लि(-) ० ये एक आश्रम मे जा वैठा ओ विधि से लगा ० शिवपूजन करने(।) इतने मे पवन कुमार वहा ० जा पहुचे ओ विस सोहावन स्थान को देष ० कर वहुत चकित हूए ओ जी मे कहने लगे ० कि ऐसा आश्रम ओ ऐसा मुनिमडल आ(-) ० ज तलक मैने कहू देषा नही क्या मै पथ भू(-) ० ल गया कै मुजे चित्तभ्रम हूआ(,) ऐसे वहुत ० कह कर निदान ठहराया कि अव कुछ होवे प(-) ० र इस आश्रम मे जा मुनिन का दर्शन कर पा(-) ० नी पी लू तद द्रोणाचल को चलूगा(।) यह मनो(-) ० रथ कर विस स्थान के भीतर कि जहा पक्के ० हूए फलो के भार से केला कटहल खजूर आ(-) ० दि अनेक वृक्ष सव नीचे को झूक रहे थे औ(-) ० र जहा किसी से किसी को वैर न था हनूमा(-) ० न गये(।) तहा शिव पूजते हूए कालनेमी को ० जो मुनि सरूप हूआ था देष के निपट प्रस(-) ० न्न हूऐ ओ निकट जा प्रणाम कर यह वचन ० लगे विससे कहने कि मै श्रीरामचन्द्र का दू(-) ० त हू हनूमान मेरा नाम है अपने प्रभु के का(-) ०

---

१. बैठे।

ज के लिये क्षीर समुद्र को मै जाता था सो ० अति प्यासा होकर यहा आया कहू पानी ० होए तो वताइए जो भर इछा जा पीऊ(।)सु(-) ० न कर वह कपटी मुनि वोला मेरे कमडलु मे ० जल रष्षा हूआ है वुसी को पीओ अरु पक्के ० हूए फलो को खाकर सुख से यहा विश्राम ० करो ओ जी चाहे तो सो रहो(।) भूत भविष्य व(-) ० र्त्तमान तीनो काल अपनी तपस्या के वल ० से मै जानता हू (।) तुम किसी वात की चिन्ता न ० करो(।) वानरो समेत लक्ष्मण जी अव उठ वै(-) ० ठे है(।) मै नीके जानता हू इस लडाई मे श्रीराम(-) ० चन्द्र निश्चय जीतेगे(।) यिह सुन हनूमान व(-) ० हुत आनन्द मगन हूऐ ओ वोले अछा ० अव मुजे पानी पिलाइऐ मारे प्यास के मेरी ० जीभ लरपरा रही है पर कमडलु के जल ० से मेरी तृषा न जाऐगी कोई सरोवर मुझे ० दिषा दीजे(।) इतनी वात के सुनते ही विस ऋ(-) ० षि ने माया के वनाये हूऐ अपने एक चेले ० से कहा कि तुम एक जलाशय इनको दिषा ० आओ अरु सुनो हनूमान तुम आष मू(-) ० द के पानी पीकर शीघ्र मेरे पास आना(,) मै तुम्हे ० एक मत्र शिषला दूगा जिस्से औषधी शीघ्र ० पहचान लोगे(।) इस प्रकार जव गुरु ने कहा त(-) ० व वुस विद्यार्थी ने हनूमान को तुरन्त ले जा ० कर एक सुन्दर सरोवर देषा दिया(।)विसमे पैठ ० आष मूद कर जो पवनकुमार लगे पानी पी(-) ० ने तो ही एक वडी सी मकरी जो विस तालाव ० मे वहुत दिनो से रहती थी वुन्हे पाव पकड के ० खैच ले चली ओ लगी निगलने तव देष क(-) ० र वे महाक्रुद्ध हूऐ और हाथो से उसके ठो(-) ० ट[1] पकड के ओही वुसे चीर डाला अरु वह म(-) ० र गयी तद आकाश मे जा सुन्दर स्त्री सरू(-) ० प हो हनूमान से वह कहने लगी(—) ० महाराज मै धा(-) ० न्यमाली नाम अप्सरा हू (,) एक ऋषि के श्रा(-) ० प से मै मकरी भयी थी सो आपके प्रसाद ० मे मै मुक्त हूई(।) इस आश्रम मे जिसे तुमने ० देषा है सो कालनेमी नाम महाअसुर है राव(-) ० ण का भेजा हूआ(,) तुम्हारे काज मे विघ्न करने ० को आया है इसके भेष मे मत भूलो(,) यह रा(-) ० क्षस है सहस्त्रन मुनि को इसने मारा है इस ० दुष्ट को मार कर तुम शीघ्र द्रोणाचल को जा(-) ० ओ(।) मै व्रह्मलोक को जाती हू(।)तुम्हारे पुण्य प्रता(-) ० प से अव मै नि पाप हूई(।) यो कह अप्सरा तो ० स्वर्ग को गयी ओ हनूमान विस आश्रम मे ० आये(।) वुन्हे देषकर कालनेमी वोल उठा(—) ० लो क्यू वहुत विलम्व करते हो आओ मुझ ० से मत्र ग्रहण करो ओ गुरु दक्षिणा मुजे ० दो(।) यह सुनते ही हनुमान ने वुसे वडा मुक्का ० मारा ओ कहा यिह गुरु दक्षिणा तो पहले तुम ले लो तिस पीछे मुजे मत्र दीजो(।) तव ० मुनि का भेष त्याग नाना माया फैला काल(-) ० नेमी महासुर लगा हनूमान से महायुद्ध क(-) ० रने(।)निदान रिसिया कर एक ऐंसा मूका वि(-) ० स के शिर मे विन्होने मारा कि विसका शि(-) ० र चूर्ण हो गया ओ वह मर गया तव हर्षि(-) ० त होकर पवनकुमार तुरन्त द्रोणाचल ० पर गये(।)जव वहा औषधी न पहचान श(-) ० के तव विस पर्वत ही को उखाडे लिये वा(-) ० युवेग समान तुरत राम पास आये ओ ० कहने लगे महाराज मै इस पहार ही को ० वहा से उठा लाया अव जो कुछ करना क(-) ० राना है सो शीघ्र कीजे विलम्व का समय न(-) ० ही है(।) सुनकर श्रीरामचन्द्र वहुत प्रसन्न हू(-)० ऐ तो ओषधी

---

१. चोच, होठ।

ले सुखेन वैद्य को वुला तु(-) ० रत लक्ष्मण की वैदकी करा कराई(।) तव वे ऐं(-) ० से उठ वैठे कि जैसे सो के जागे होवे(—)यह कह(-) ० ते हूए कि खडा रह खडा रह रावण अव तू ० कहा जा शक्ता है मै अभी तुझे मार डाल(-) ० ता हू(।) तव लक्ष्मण को गरे लगा विनका मा(-) ० थ चूम श्रीरामचन्द्र ने हनूमान से कहा(—)व(-) ० त्स केवल तुम्हारे प्रसाद से लक्ष्मण वचे ० अव किसी वात की चिन्ता नही तुम इस ० द्रोणाचल को जहा से लाये वहा शीघ्र रष ०आओ(।) यिह सुनते ही विस पर्वत को जव ० पवनकुमार क्षीर समुद्र तीर रष आया त(-) ० व विभीषण के समत से सुग्रीव आदि ० सकल वानरो समेत श्री रामचन्द्र पुन श(-) ० त्रु से लडने को उपस्थित हूएं तो शिला पा(-) ० षाण वृक्षो हाथो मे ले ले युद्ध करने के लि(-) ० ये निशाचरो के सन्मुख जा तुरन्त वानर स(-) ० व खडे हो गये ओ जैसे सिह से हाथी(,) गरू(-) ० ड से साप महा पीडित होएं वैसे ही राम के ० वाणो से घाहल होकर लका मे रावण तो ० व्याकुल हो ही रहा था तिस पर हनूमान ० के प्रताप से लक्ष्मण को आराम हूआ य(-) ० ह सुन अति दुखित भया ओ सिहासन ० पर जा राक्षसो को वुला कहने लगा(—)सुनो ० भाईओ व्रह्माने आगे मुज से कहा था कि ० मनुष्य के हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी सो इस ० पृथ्वीतल मे ऐसा कोई मनुष्य नही है जो ० मुजे मार शके इस कारण राम सरूप आप ० नारायण मनुष्य हूए है(,) मुजे मारने के लि(-) ० ये यहा आये है ओ एक समय अनरण्य ० नाम राजर्षि ने भी मुझे श्राप दिया था कि ० जाओ मरे[1] वश मे परमेश्वर अवतार लेगे ० तव पुत्र पौत्र सहित तुम्हारा नाश वे करे(-) ० गे मै समझता हू कि वे ही नारायण राम स(-) ० रूप होकर मुजे मारने को आये है(।) तुम कि(-) ० सी प्रकार कुम्भकर्ण को उठाकर मेरे पास ० लाओ (।) वह वडा मूढ है क्यूकि सदा ही नीद ० वश रहता है(।) इस भाति जव प्रभु ने कहा ० राक्षस सभ अतिशीघ्र कुम्भकर्ण के घर मे ० गये ओ नाना यत्न कर वहा से वुसे जगा रा(-) ० वण पास ले आये(।) जव राजा को प्रणाम ० कर आसन पर वह जा वैठा तव राजा राव(-) ० ण लगा विससे कहने(—)भाई कुम्भकर्ण तुम ० जाओ मुज पर वडा कष्ट आन पहुचा पुत्र ० पौत्रादिक समेत मेरे भाई वधुन को जो व(-) ० डे वीर थे राम ने मार डाला(,)कहो अव क्या ० करना(,)मेरा मृत्यु योग आन पहुचा(,) देषो० सुग्रीव सहित सकल सेना साथ लिये द[2](-) ० दशरथ का वेटा यिह राम महावली सगार पा(,) ० र हो हम सव का जड काटता है जो जो वडे ० वडे राक्षस थे तिन्हे वानरो ने युद्ध मे मार गि(-)० राया ओ रण मे वानरो का नाश किसी प्रकार ० मुझे दृष्ट नही आता तुम विनका सहार क (-)० रो इसीलिये मैने तुम्हे जगाया है तुम महा ० वीर हो भाई के लिये यह काज (,) जो दूसरे कि(-) ० सी से होने का नही(,) करो(।) सुनके कुम्भकर्ण ० खिलखिला कर हस उठा ओ कहने लगा ० कि आगे के विचार से मै तुम्ह से कह चूका हू ० कि रामचन्द्र साक्षात नारायण है ओ सीता ० जी विनकी योगमाया मैने वहुत समझाया ० पर अपनी अज्ञानता से तुम काहे को सम ० झोगे(।) यो कह फिर वोला कि एक वेर वडी रात ० को वन मे जा एक शिला पर मै वैठा था तहा ० अचानक नारद मुनि आये प्रणाम कर मै(-) ० ने वुन से पूछा महाराज इस समय आपक(-) ०

---

१. मेरे। २ 'द' अनावश्यक है।

हा से आते है वे वोले देवताओ के पास से मै ० आता हू वहा का समाचार यिह है कि तुम दो(-) ० नो भाई से पीडित हो विष्णु पास जा देवता(-) ०ओ ने एक वेर विनकी वडी स्तुति करी और ० वर मागा कि महाराज आप रावण को मारि(-) ० ऍ वह तीनो लोक का कटक हो रहा है(।) विधा(-) ० ता ने मनुष्य हाथ विसकी मरण रची है ति(-) ० स्से मानुस होकर विस दुष्ट को आप मारि(-) ० ए(।) इस वात को भगवान ने स्वीकार किया था ० सो वही अपनी प्रतिज्ञा सत्य करने के लिए(-) ० रघुकुल मे राम सरूप हो आप नाराय(-) ० ण अवतरे हैं(,) तुम सभो को मारेगे(।) यो कह ० नारद मुनि सुरपुर को गये तिस्से हे राव(-) ० ण श्री रामचन्द्र को तुम पूरण ब्रह्म जानो ० वे माया कर मनुष्य सरूप हूऐ है विन से वै(-) ० र मत करो वरन सदा उनको भजो वे भक्ति ० से वहुत प्रसन्न होते हैं भक्ति ही ससार से ० प्राणी को मुक्त करावनहारी है ओ हृदय ० मे ज्ञान उपजाती विना भक्ति कभू गति मु(-) ० क्ति होने की नही भगवान के अवतार व(-) ० हुत से है तिन सभो मे अति श्रेष्ठ श्री राम ० चन्द्र है जो चतुर लोग निशवासर विन्हे भ(-) ० जते है वे सहज मे ससार सागर तर विष्णु(-) ० पद को जाते है ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध(-) ० काण्डे सप्तमोध्याय (।) ७(।) इस प्रकार कुभ (-) ० कर्ण की वाते सुन कर दशानन महा क्रु(-) ० द्ध हूआ ओ भौ चढा यह वचन लगा वुससे ० कहने कि ज्ञान वताने के लिये मैने तुम्हे न(-) ० ही वुलाया है मैने जो कहा है सो जो तुम्हे ० रुचे तो राम से जा लडो नही तो चुप-० चाप जा सो रहो अभी तुम नीद से अकु(-) ० ला रहे हो(।) जव रावण ने यो कहा वुसे क्रुद्ध ० जान युद्ध के लिये कुम्भकर्ण तुरन्त वहा ० से उठा ओ गढ की पर्वत समान भीते टप[1] ० नगर के वाहर हो अति शीघ्र वानरो की से(-) ० ना मे ऍसे जा गिरा जैसे देह धर काल ही ० आन पहुचे तो महा चित्कार शव्द करता ० हूआ कोप से वानरो को पकड पकड लगा ० खाने ओ मुगरो से चूरण करने पावो से मल(-) ० ने(।) वुसे देषकर वानर सव चहुदिश भाग च(-) ० ले तव कुभकर्ण को देष जेठ भाई जान तुर(-) ० न्त विभीषण आगे आये ओ चरण छू प्र(-) ० णाम कर यह वचन लगे विससे कहने(—)मै ० विभीषण हू मुज पर दया करो मेरा कुछ ० दोस नही मैने रावण को वहुत समझा(-) ० या था कि सीता को राम पास तुम भेज दो वे ० साक्षात नारायण है विन से वैर मत वेसाहो[2] ० पर विन्होने मेरी वात को हित नही माना उ(-) ० लटे ही खड्ग लेकर मुझे मारने को दौडे ओ ० कहने लगे कि धिक्कार है तुजे जो तू मेरे ह्या से ० जा ऍसे कह जव एक लात वुन्होने मुजे मा(-) ० री तव चार मत्रीन समेत वहा से भाग के राम की ० शरण मे मै आया(।) यह सुन भाई जान कर कु(-) ० भकर्ण ने विभीषण को अक मे लगा लिया० ओ प्यार कर कहा कि कुल रक्षा के लिये ओ ० राक्षसो के हित निमित्त तुम युग युग जी(-) ० ओ भगवान के तुम वडे भक्त हो मै नारद ० मुनि से आगे सुन चूका हू अव जाओ इस ० समय मुजे अपना पराया कोई नही सु(-) ० झता(।) यह सुन भाई के चरणो की वदना क(-) ० र विलकता हूआ राम पास विभीषण गया ० ओ वहुत चिन्ता लगा करने तव कुम्भकर्ण ० हाथो पावो से वानरो को पीसता हूआ लप(-) ० क झपक कर शत्रु की सेना का सहार लगा ० करने(।)

---

१. लांघकर। २. वैर मत ठानो।

उसे देषके श्री रामचन्द्र अतिक्रुद्ध ० भये ओ वायु का दिया हूआ एक ऐसा वाण ० मारा कि मुगरे समेत विस राक्षस का दह(-) ० ना हाथ कट गया ओ वह निशाचर महा ० घोर शव्द करने लगा औ वह हाथ अनेक ० वानरो को चूरण करता हूआ धरती पर जा ० गिरा(।) तिस समय रण भूमि मे मर्कट सव जो ० खडे थे सो राम ओ राक्षस की लडाई देषकर ० मारे डर के लगे कापने(।) जव कुभकर्ण शिसो[1] ० का वृक्ष उखाड लेकर राम को मारने दौडा ० तव रामचन्द्र ने इन्द्र के दिये हूऐ वाण से पेड ० समेत वुसका वाया हाथ भी काट गिराया तो ० भी सिह सा गर्जता हूआ फिर वह राम पर झप(-) ० टा तव दो वाण से विन्ह ने विसकी दोनो जा(-) ० घ काट डाली सो जाघ लका के द्वार पर जा ० गिरी तद भी वुस राक्षस ने हार न मानी ओ ० चन्द्रमा पर राहु की भाति मुह वाकर[2] पुन ० निगलने को जो रामचन्द्र पर चला तोही को(-) ० प कर विन्होने ऐसा वाण मारा कि तनु से अ(-) ० लग हो विसका शिर तो वडा हाहास करता ० हूआ लका के द्वार मे जा अटक रहा ओ शरी(-) ० र समुद्र मे जा गिरा विस से अनेक जलजतु ० सव चूर्ण हो गये(।) तव देव मुनि गधर्व पन्नग ० खग सिद्ध गुह्यक चारण अप्सरा ये सव अ(-) ० धर मे आ आ राम पर झोरियो लगे फूल व(-) ० रसाने ओ दुदुभी वजा वजा विनका यश व(-) ० षानने(।) विसी समय नारद ऋषि वहा आये ० ओ श्याम सुन्दर विशाल लोचन श्री रामच(-) ० द्र को जो वाणो से अति पीडित हूऐ वानरो को ० दया दृष्टि से ताक रहे थे देष प्रणाम स्तुति ० कर कहने लगे(—)महाराज आप पूरण व्रह्म ० है तुम्हारी पूजा भक्ति मे जो नर सदा लीन ० रहते है विनके लेखे यह ससार सागर गो प(-) ० द[3]समान है इस हेतु सदा हृदय मे तुम्हारा ध्या(-) ० न कर मुक्त हो सव लोको मे मै फिरता हू ओ दे(-)० वतान से अपने को पुजाता हू यह केवल तु(-) ० म्हारे भजन का प्रताप है(।) ऐसे वहुत स्तुति क(-) ० र पुनि वोले(—) सुरन की हिताई के लिये महा(—) ० राज आपने यह वडा काम किया जो कुम्भक(-) ० र्ण को मारा इसके वध से धरती का भार अ(-) ० व गया कल्ह की लडाई मे मेघनाद को ल(-) ० क्ष्मण जी मारेगे ओ परशो रावण को आप ० सहारेगे(,) पृथ्वी का वोझ उतरा(,) मै तुम्हारे द(-) ० र्शन को आया अव आज्ञा कीजे मै सुर पु(-) ० र को जाऊगा(।) यो कह श्री रामचन्द्र से विदा ० हो नारद मुनि व्रह्मलोक को गये तव ० कुभकर्ण का वध सुन रावण अति शोक ल(-) ० गा करने ओ मूर्छित हो पृथिवी पर गिरा ओ ० वहुत विलाप लगा करने तिस अवमर मे(-) ० घनाद वहा आया ओ चचा के वध से पिता ० को निपट व्याकुल देष यह वचन लगा कह(-) ० ने महाराज मै मेघनाद महावली हू मेरे जी(-) ० ते हूऐ आप शोक मत कीजे यिह मोह का सम(-) ० य नही है तुम देवतान को सहारने वाले हो तु(-) ० म्हारे लेखे वानर भाल मनुष्य किस गिणती ० मे हैं आप निश्चिन्त हूजिऐ तुम्हारे वैरीन को ० मै कल्ह जा मार डालूगा मेरी प्रभुताई आप दे(-) ० ष लीजेगा मै अभी निकुभिला मे अग्नि दे(-) ० वता को सतुष्ट कर लडने की रथ आदि ना(-) ० ना सामग्री वुनसे या[4] सहज मे वैरी को जीत लू(-) ० गा (।) यो कह तुरन्त होम की जगह मे जा वैठा ओ ० लाल कपडे लाल ही माला पहन देह मे रक्त ० चन्दन लगा मौन साथ[5]

---

१. शीशम। २ बाकर। ३. गोष्पद। ४. 'पा' (पाकर) हो सकता है। ५ साध।

विधि से लगा होम क(-) ० रने सो समाचार सुन कर विभीषण ने राम ० से जा कहा(—) महाराज मेघनाद निकुभिला मे ० जा होम करता है जो यह हवन काज समाप्त ० होवेगा तो वुस दुष्ट को कोई नही जीत शकेगा ० तिस्से आप आज्ञा कीजे तो लक्ष्मण से मै शी(-) ० घ्र विसे जा मरवा डालू मुजे निश्चय है कि तुम्हा(-) ० रे भाई निसन्देह मेघनाद को वधेंगे(।) रामचन्द्र वो(-) ० ले कि आग्नेय महावाणो से जो सकल राक्षसो ० को विनाशहारा है मै ही जा मेघनाद को मा(-) ० रूगा तुम दोनो यहा सेना की चौकी मे रहो(।) त(-) ० व विभीषण ने कहा(—) वुसे दूसरा कोई नही वध ० शकेगा(।) जो नर वारह वर्ष सोआ न होगा ओ ० न कुछ आहार किया होगा वुसी से इन्द्रजीत ० का वध विधाता ने लिखा है ओ मै जानता हू ० कि तुम्हारे साथ जव अयोध्या से लक्ष्मणजी ० निकले तभी से न तो आजतक कभी वे सोए ० है ओ न कुछ खाया है तिस्से आप आज्ञा ० कीजे मेरे साथ चलके निसदेह मेघनाद को ० लक्ष्मण जी मार गिरावेंगे वे साक्षात शेष(-) ० नाग के अवतार है ओ तुम आपरूप नारा(-) ० यण हो पृथ्वी का वोझ उतारने के लिये मानुष्य ० सरूप तुम दोनो हूए हो मै यह सव जानता हू (।) ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे अष्टमोध्या ० य (।) ८(।) विभीषण की वाते सुनकर श्रीराम (-) ० चन्द्र वोले मेघनाद की माया सभ मै जानता(,) ० वह व्रह्मास्त्र चलाने (मे) वडा वीर है ओ नाना ० माया रचने मे अति निपुन और लक्ष्मण ० का भी सरूप मै जानता हू तो भी अनजान ० सा चुपचाप रहता हू इसलिये कि आगे वहु(-) ० त कुछ काज करना है ऐसे कह पुन लक्ष्म(-) ० ण वोले कि हनूमान आदि सकल सेना(-) ० पतिन समेत ओ सैन्य सहित राजा जाव(।) ० वान के साथ हो तुम शीघ्र जा मेघनाद को मा(-) ० रो मत्री समेत विभीषण तुम्हारी सहायता ० के लिये तुम्हारे सग जावेगे ये सव घर घाट जा(-) ० नते है(,) जहा मेघनाद होम करता है विस जग(-) ० ह को ये तुम्हे वता देगे (।)यह सुनते ही विभीष(-) ० ण समेत लक्ष्मण ने वडा धनुष हाथ मे ले ० लिया ओ अति हर्षित हो राम के चरण छूक(-) ० र विन से कहा आप यह जान लीजे कि आ (-) ज मेरे कार्मुक से वाण निकल मेघनाद का ० शिर काट पाताल लोक मे जा भोगवती के ज(-) ० ल मे स्नान करेगे(।) यो कह श्री रामचन्द्र को ती(-) ० न वेर परिक्रमा दे प्रणाम कर मेघनाद को ० मारने के लिये तुरन्त लक्ष्मण जी वहा से वि(-) ० दा हूए तो अपने अपने मत्रीन सहित को(-) ० टीन वानर भाल साथ लिये हनुमान जाव(-) ० वान विभीषण ये सव विन के पीठ पर होलि(-) ० ये(।) जव निकुभिला के साम्हने जा पहुचे(,) दूर से ० राक्षसो की सेना देखते ही धनुष वाण ले ० कर लक्ष्मण जी ओ अगद समेत हनुमा (-) ० न जाम्ववान आदि वहुत सचेत हो गये तद ० विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि देषिए ० यही राक्षसो की सेना है जो श्याम घटा सी दृष्ट ० आती है इन्हे भगाने का अव यत्न कीजे इन ० राक्षसो के अलग होने से मेघनाद दृष्ट आ(-) ० वेगा(।) जव तक विसका होम समाप्त न होवे इ(-) ० सी वीच मे वुस महादुष्ट को शीघ्र जा मारो(।) य(-) ० ह सुनते ही निकट जा लक्ष्मण जी मेघनाद ० पर लगे वाण वृष्टि करने ओ जितने वानर भा(-) ० ल थे सो पाषाणो ओ वृक्षो से राक्षसो को प(-) ० टरा करने लगे ओ फरसा शक्ति तोमर ख(-) ० ड्ग यष्टि वाण आदि नाना शस्त्रन से दैत्य स(-) ० व भी मर्कटो को लगे काटने(।) तिस समय धर ० धर मार मार कर वहा वडा कोलाहल हूआ ० दोनो ओर से ऐसी वाणवृष्टि

लगी होने कि ० मानो मघा मेघ ने झडी लाई है निदान निज से(-) ० ना अति पीडित देष होम तज धनुष वाण ० ले निकुभिला से निकल रथ पर चढ युद्ध के ० लिये तुरन्त मेघनाद रणभूमि पर आन पहु(-) ० चा तो पुकार कर कहने लगा(—)सुनो लक्ष्मण ० मैं मेघनाद हू विना वधे अव मै तुम्हे छोडने ० का नही(।) इतने मे विभीषण पर वुसकी दृष्टि ० परी तो वुन्हे कटुवचन लगा कहने(—)रे दुष्ट तू इ(-) ० हा ही ऐत्ता वडा हूआ ओ मेरे पिता का तू सा(-) ० क्षात भाई है वुन्हे तज पर की सेवकाई अगी(-) ० कार कर क्यू मुझ से वैर करता है(,) रे पापी कृतघ्न ० मै तो तेरा लडका हू(।) ऐसे कह हनुमान आदि ० को देष के पुन वोला(—)हे वानरो मेरे ये वाण स(-) ० दा अचूक है तुम्हारा प्राण अव व्यर्थ जाऐ(-) ० गा(।) यह सुनते ही अति क्रुद्ध हो वज्र समान ० वाणो से लक्ष्मण ने वुसे ऐसा मारा कि क्षण ए(-) ० क तो वह अचेत हो गया फिर चेत कर कोप व(-) ० श हो धनुष वाण ले लक्ष्मण को देष कर क(-) ० हने लगा कि पहली लडाई मे जो तुम मेरा प(-) ० राक्रम नही देषे हो तो अव मै तुम्हे देषाऊगा ० खडे रहो(।) यो कह सात वाण तो लक्ष्मण को वि(-) ० सने मारे ओ दश हनूमान को ओ शौ विभी(-) ० षण को(।) तव लक्ष्मण भी विस शत्रु पर वाण ० वृष्टि करने लगे वुन के वाणो से वुसका कव(-) ० च जो काचन सा झलकता था तिलतिल क(-) ० ट कर पहले रथ पर गिरा पीछे धरती पर(।) तव ० मेघनाद ने वहुत रिसियाकर सहस्त्र वाण से ० लक्ष्मणजी को छेद डाला ओ अति सुन्दर ० विनका कवच काट गिराया(।) इस प्रकार पहरो ० वे दोनो आपस मे महायुद्ध लगे करने ओ ० मारे वाणो के सगरे अग लोहू लोहू हो गये(।) ० निदान सभर कर लक्ष्मण ने ऐसे पाच वा(-) ० ण मारे कि सारथी घोडो समेत मेघनाद का ० रथ ओ धनुष खड खड हो गया(।) जव वह शी(-) ० घ्र दूसरा धनुष लेकर पुन लगा लडने तव (-) ० लक्ष्मण जी तीन वाण से फिर विसका चाप काट ० गिराया तद दूसरा कार्मुक लेकर शौ वाण से ० विसने लक्ष्मण के सगरे गात भेद डाला सो ० देष वानर सव डर गये ओ दिशा दिशा को भा(-) ० ग चले तव इन्द्र का दिया हूआ महाकठोर वा(-) ० ण ले धनुष पर चढा कान तक विसे षैच के ल(-) ० क्ष्मण जी ने श्रीरामचन्द्र के चरण कमल का ध्यान कर यह वचन कहा कि जो श्रीरामच(-) ० द्र धर्मात्मा है ओ सत्यवादी औ तीनो लोक ० के एक ठाकुर हैं तो उनके पुण्यप्रताप से यह मे(-) ० रा वाण मेघनाद का शिर काटे(।) यो कह विस म(-) ० हावाण को इन्द्रजीत पर चलाया तो मुकुट ० समेत विसका शिर जो कुडलो से अति प्र(-) ० काश हो रहा था कटकर धरती पर गिर पडा(।) ० तव इन्द्र समेत देवता सभ वहुत हर्षित हूऐ ० ओ उपर से फूल वरसा वरसा लगे राम ल(-) ० क्ष्मण का यश वषानने ओ आकाश तुरन्त निर्मल ० हो गया ओ धरती वहुत स्थिर हूई ओ ० ऋषि लोग सव निपट जुडाने ओ मेघनाद ० को रण मे जूझा हूआ देष जय जय कह ल(-) ० क्ष्मण जी सिहनाद समान लगे शखधुनि क(-) ० रने(।)वुस शब्द से देवता सव महाहर्षित भये ० ओ वानरो को वडा आनन्द हूआ ओ परिश्रम वु(-) ० न का मिटा तव हनूमान विभीषण सहित ल(-) ० क्ष्मण जी राम पास आये ओ शिर झुका प्रणा(-) ० म कर यह वचन लगे वुनसे कहने(—)महाराज ० आपके प्रताप से मेघनाद को मैने मारा(,) सुनक(-) ० र श्रीरामचन्द्र ने भाई को हृदय मे लगा लिया ० ओ माथ चूमकर विससे कहने लगे(—)अहो ल(-) ० क्ष्मण तुमने यह वडा कठिन काज किया है मै ० तुमसे वहुत

प्रसन्न हू मेघनाद को जूझने से स(-) ० व राक्षसो को मैंने जीत लिया(।) तीन दिन मे इन्द्र(-) ० जीत को क्यू कर तुमने मार गिराया मुझे व ० डा आश्चर्य लगता है(।) तुमने मुजे निकटक ० किया(।) अव पुत्र के शोक से जो रावण लड(-) ० ने को आवेगा तो वुस दुष्ट को अपने हाथो ० से मै मारूँगा(।) यहा तो यो हो रहा था औ वहा मे(-) ० घनाद महावीर की मरण सुन रावण मूर्छित ० होकर धरती पर गिर पडा पुन उठकर पुत्र का ० गण सुमर सुमर महा विलाप करने लगा(—) इ(-) ० स प्रकार से कि देवता लोकपाल ओ मुनि लो(-) ० ग ये जितने हैं सो सव मेघनाद की मरण सुन ० निर्भय हो सुख से अव सोवेगे(।) इस भाति वहु ० त शोक सताप कर निदान अति क्रुद्ध हो स(-) ० कल राक्षसो को वुलाकर आज्ञा करी कि तु(-) ० म सव रणभूमि पर जा लडाई करो सीता को ० मार कर मै भी तुरन्त चला आता हू(।) यो कह ख(-) ० ड्ग हाथ मे लेकर रावण चला सीता को मारने(।) उ(-) ० से देष के सीता वहुत डर गयी(,) तव सुपार्श्व ना(-) ० म रावण का मत्री जो वडा वुद्धिमान था रावण ० से कहने लगा(—)महाराज तुम साक्षात कुवेर ० के भाई हौ औ वेद विद्या पढ कर अपने कर्म ध(-) ० र्म मे निपुन ओ अनेक गुण के खानि हौ(।) स्त्री ० का वध तुम क्यू कर चाहते हौ(।)इन राक्षसो के ० साथ हो रण मे जा राम लक्ष्मण को मार कर सी(-) ० ता समेत आनन्द विहार करो(।) इस प्रकार जव ० सुपार्श्व मत्री ने वहुत समझाया वुसका व(-) ० चन हित विचार निदान रावण अपने घर ० फिर आया ओ पुत्र को शोक से महाव्याकुल ० हो हितून सहित सभा मे जा वैठा ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे नवमोध्याय (।) ९ (।) इस ० भाति सभा मे जा सकल राक्षसो ओ मत्रीन ० से एक मत हो निदान जूझने से जो जो वचे ० हूऐ थे विन दानवन के साथ हो राम पास लड(-) ० ने को फिर रावण ऐंसा गया जैसा प्रज्वलित ० आग मे फनिगो समेत फनिगा जा गिरे (।)तव ० श्री रामचन्द्र ने सग्राम पर से सकल राक्षसो ० को मार हटाया ओ रावण के हृदय मे एक ऐं(-) सा चोष वाण जडा ओ अति व्याकुल होकर ० लका मे वह भाग आया ओ राम हनूमान ० का वडा पराक्रम जो ओर किसी मनुष्य मे ० न था देष चकित हो तुरत शुक्राचार्य पास ० गया(।) ० विन्हे शिर झुका प्रणाम कर हाथ जोड ० कहने लगा(—)महाराज वडे वडे दैत्यन को राम ० ने रण मे मार गिराया(,) तुमसे गुरू के रहते हूऐ ० यह महादुख क्यूकर मुजे हूआ(।) वह वोला (—)हे ० रावण तुम एकान्त मे जा वहुत यत्न से होम ० करो जो विस होम मे कुछ विघ्न न होवेगा तो तू(-) ० णी वाण समेत धनुष ओ सारथी घोडे सहित ० एक वडा सा रथ वुस आग मे से निकलेगा वि(-) ० से लेकर जो तुम लडोगे तो कोई न तुम्हे जी(-) ० त शकेगा(।) आओ मुज से मत्र लिखलो ओ ० शीघ्र जा उससे होम करो(।) यो कह जव विन्ह(-) ० ने विसको मत्र लिखा दिया तव तुरन्त निज ० मदिर मे आके विस राक्षस ने एक वडा सा ० भोहरा[1] खनवाया ओ लका की द्वारो को कवा(-) ० डे लगवा कर होम की सव सामग्री ले वुस भोह(-) ० रे के भीतर जा मौन साध लगा होम करने(।) ० तव वहा से वहुत धूआ निकलते देष कर ० विभीषण ने राम से जा कहा(—)धर्म्मावतार ० वह देषो रावण होम करता है जो यह यज्ञ स(-) ०

---

१. भूमिगृह (तहखाना)।

माप्त होगा तो विस दुष्ट को कोई न जीतेगा ० तिससे होम मे विघ्न करने के लिये वानरो को ० वहा आप भेज दीजे(।) यह सुनते ही सुग्रीव अ(-) ० गद समेत हनुमान आदि सकल वानर ० को वुला कर रामचन्द्र ने कहा कि तुम अभी ० जा रावण का यज्ञ विध्वस करो(।) तव दशक ० रोर मर्कटन को साथ लिये चार दिवाली हे(-) ० ल के तुरन्त रावण के मदिर मे वे गये(।) वहा घो(-) ० डे हाथी सहित रषवारो को एक क्षण मे मा(-) ० र चूरण कर होम की जगह लगे षोजने त(-) ० द शरभा नाम विभीषण की भार्या ने उग(-) ० ली की सैन से विस स्थान को उन्हे वता दिया(।) ० तहा तुरन्त अगद जा पहुचे ओ पावो से ० मुह पर की शीला अल(ग) कर आसन पर ध्या(-) ० न लगा वैठे हुए रावण को देष विस भोहरे ० के भीतर पैठ गये ओ विनकी आज्ञा पा वा(-) ० नर सव भी विसमे जा घुसे तो महा कोला(-) ० हल कर रावण के सेवकन को मार गिरा हो(-) ० म की सामग्री कुड मे डाल दी ओ कुड को ० ढाह दिया ओ रावण के हाथ से हनुमान ० ने श्रुवा छीन ली वुसी से उसे वहुत मारा ० ओ वानरो ने दान्तो से काटा ओ सोटो घुसो से ० निपट पीटा(।) जव शत्रुन को जीतने के लिये कि(-) ० सी प्रकार रावण ने अपना ध्यान न छोडा तव अ(-) ० ति शीघ्र अगद वहा से निकले ओ घर के भी ० तर जा चोटी पकड के मदोदरी को घसीटे हू(-) ० ऐ रावण के आगे लाये ओ वह अनाथ सा ० लगी विलाप करने(।) तव अगद ने वुसकी अ(-) ० गिया जो नाना रत्न से भूषित थी फाड डा(-) ० ली ओ मोतीन की माला तोड दी(।)जव निज ० देह के भूषण सव जहा तहा गिर पडे ओ व(-) ० डा गजन लगा होने मदोदरी रो रो कर स्वामी ० से लगी कहने(—)तुम वडे निर्लज्ज हो जो तुम्हा(-) ० रे आगे ही तुम्हारी भार्या को शत्रु सव ऐसा ० दुख देते है तिस पर भी वैठे होम करते हो औ ० लजाते नही(।) जिसकी स्त्री को वैरी लोग ऐसा ० गजन करे ओ वह वैठा हूआ कौतुक देषता ० है वुस पति के जीने से मरण ही भला है(।) हा ० मेघनाद तुम कहा हो तुम्हारी माता को वा(-) ० नर सव ऐसी दुर्गति करते है(,) मै जानती हू तु(-) ० म्हारे जीते हूऐ यह दुख मुजे कवहू न होता(।) ० इस भाति जव मदोदरी ने वहुत विलाप कि(-) ० या रावण से रहा न गया तो ओ ही खड्ग ले क(-) ० र वहा से उठा यह कहता हूआ कि रानी (को) छो(-) ० ड दे नही तो मै तेरा शिर काट डालता हू त(-) ० व यज्ञ विध्वस जान वानर सव वहा से निक(-) ० ले ओ अति हर्षित हो राम-पास आये(।) तद ० रावण लगा मदोदरी से कहने(—)हे रानी तुम ० खेद मत करो ईश्वर की इछा प्रवल है इस ० मे मेरा शक्य कुछ नही(।) जीता है सो क्या न ० देषता है यह समझ शोक को जो अज्ञान(-) ० ता से हूआ है तजो ओ हृदय मे ज्ञान करो(।) ० वह शोक विनाशनहारा है ओ जो इस ० झूठा शरीरादि का अभिमान अज्ञानता से ० हूआ है वही इस ससार मे स्त्रीपुत्र आदि ० के मोह मे फसने का कारण है ओ काम क्रोध ० लोभ मोह भ्रम मद जनन मरण यह सव ० अज्ञानता से हूआ है और आत्मा शुद्ध आ(-) ० नन्द सरूप निर्लेप है असग है ओ सकल ० उपाधि से रहित वुसे जानकर शोक तजो(।) ० मै अभी जा राम लक्ष्मण को मार के चला ० आऊगा ओ नही वाणो से जो राम ही मु(-) ० जे मार गिरावेगा तो मै वुसके धाम को जा(-) ० ऊगा तव जो कुछ मेरी क्रिया करनी होए सो ० करना ओ सीता को मार कर मेरे साथ आग ०मे तुम जलना(।) सुन के मन्दोदरी वहुत दु(-) ० खित भयी ओ लगी विससे कहने(—)हे नाथ ० तुम मेरा वचन

सुन लो फिर जो जी चाहे सो ० कीजो(—)सो यह है कि श्रीरामचन्द्र को तुम कभी ० न जीत शकोगे हठ छोड दो वे साक्षात आदि ० पुरुष परमेश्वर है उन्ही भक्तवत्सल नाराय(-) ० णने मत्स्य रूप होके आगे वैवस्वत मनु को ० सकल आपदा से वचा लिया था ओ समु(-) ० द्र मथन समय कछप अवतार हो लक्ष योजन ० निज देह विस्तार कर मन्दराचल को अपने पी(-) ० ठ पर ले रष्षा था ओ विन्ही महापुरुष ने हिर(-) ० ण्याक्ष नाम दानव को जो महादुष्ट था मार गि(-) ० राया(,) शूकर शरीर हो धरती का उद्धार किया ० और तीनो लोक के महाकटक हिरण्यकशि(-) ० पु नाम असुर को नृसिह रूप होकर सहारा(,) ० वामन अवतार ले स्वर्ग मर्त्य पाताल तीन डेग ० कर राजावलि को छल तीनो लोक विससे छी(-) ० नके इन्द्र को दिये ओ वुन्ही परमेश्वर ने सक(-) ० ल क्षत्रियन को जो इस पृथ्वी के वोझ हूए थे ० विनाश कर धरती को जीत कश्यप मुनि को दा(-) ० न कर दिया था(।) सोई भगवान अव तुम्हारे लिये ० रघुकुल मे मानुष अवतार लेकर यहा आये ० है विन की भार्या सीता को अपने समेत मेरे पु(-) ० त्र के विनाश के लिये क्यू तुम वल से हरलाये ० हो अव जो मेरा कहा हित समझो तो जानकी ० को तुरत राम पास भेज दो ओ विभीषण ० को सव राजपाट दे सुचित हो चलो मेरे सग व(-) ० न मे वसो(।) रावण वोल उठा कि भाई वेटो समेत ० सकल राक्षस मडली को रण मे जुझा कर अ(-) ० व कहो अपना प्राण वचाने के लिये भला क्यू ० कर वन मे चलके वसू तिससे अव जो कुछ हो(-) ० नी है सो होवे पर राम से जा मै लडूगा ओ वि(-) ० न के वाणो से विदीर्ण हो विष्णु पद को जाऊँगा(।) ० मै राम को जानता हू वे विष्णु है ओ सीता जी ल(-) ० क्ष्मी यह जानवुझ कर जानकी को मै हर ला(-) ० या हू अव राम के हाथ मृत्यु पा मै परमपद को ० जाऊगा ० इति श्री रामचरित्रे युद्धकाण्डे दश(-) ० मोध्याय (।) १० (।) इस प्रकार अति प्रीतिकर रानी ० मदोदरी को वहुत वुझा समझा निदान श्री(-) ० रामचन्द्र से लडने को फिर रावण अपने घर से ० निकला तो वडे वडे भयावन राक्षसन के साथ ० हो सोरह पहिए का रथ पर चढ नाना प्रकार के ० शस्त्र लिये डरावन सरूप वनाये रणभूमि प(-) ० र जा पहुचा(।) विसे देषते ही वानरो की सेना वहु(-) ० त डर गयी तव हनूमान वहा से कूद कर रावण ० के आगे आ खडे हूए ओ आते ही वुस की छा(-) ० ती मे ऐक ऐसा मुष्टिका प्रहार किया कि विस ० चोट से वह महा असुर मूर्छा कर रथ पर गिर ० पडा ओ मुहूर्त्त भर अचेत रहा(।) फिर उठ कर ० हनुमान से कहने लगा(—)मैने जाना तुम वडे ० वीर हो(।) वे वोले(—)धिक्कार है मुजे जो तुम जीते ही हो(,) ० आओ अव पहले तुम मेरी छाती मे मूका मा(-) ० रो तिस पीछे मै तुम्हे मारूगा तव निसदेह तु(-) ० म अपना प्राण तजोगे(।) इस वात को रावण ने ० माना ओ हनूमान के उर मे झट एक वडा घु(-) ० सा मारा(।) वे कपिराज क्षण भर तो मूर्छित हो र(-) ० हे फिर चेत कर जो रावण को मारने चले तो ही ० डर कर वह और जगह मे भाग गया(।) तव हनूमान(-) ० अगद नल नील ये चारो महावीर वहुत ० रिसियाने तो अग्निवर्ण सर्वरोमा खड्ग रोमा ० ओ वृश्चिकरोमा इन चारो राक्षसन को क्र(-) ० म से रण मे मार गिरा सिह से गर्जते हूए रा(-) ० म पास जा खडे हूए(।) इस अनन्तर दशानन ० महा क्रुद्ध भया ओ दात पीसता हूआ राम ही प(-) ० र दौडा ओ रथ ही पर हो वज्र समान वाणो से ० लगा विन्हे मारने ओ वुन के साम्हने सव वा(-) ० नरो को काटने

तद पावक समान वान जो ० काचन से भूषित थे रामचन्द्र भी रावण प(-) ० र लगे वरसाने तव रावण को रथ पर ओ सीता(-) ० पति को धरती पर देष इन्द्र ने मातलि नाम ० अपने सारथी को वुला के कहा तुम मेरा रथ ० लेकर भूतल मे जा शीघ्र राम को दो(।) यह का(-) ० ज तुरन्त करो(।) इतनी वात के सुनते ही विस देव ० सारथी ने घोडो को झट सुन्दर रथ मे जोता ओ ० विसे ले स्वर्ग से उतर राम पास आया ओ प्र(-) ० णाम कर हाथ जोड यह वचन लगा विनसे ० कहने(—)महाराज तुम्हारे जय के लिये यह र(—) ० थ तुम्हे देने को इन्द्र ने मुझे भेजा है आप इ (-) ० से लीजे ओ खड्ग धनुष समेत दो तूणी(-) ० ओ अभेद्य कवच ये भी उन्होने तुम्हे भेजे ० है इन्हे लेकर इस रथ पर चढिए ओ मुजे अ(-) ० पना सारथी कर वृत्रासुर को इन्द्र की भाति ० रावण को मारिऐ(।) इस प्रकार जव मातलि ने ० कहा परिक्रमा प्रणाम कर रामचन्द्र वुस र(-) ० थ पर जा वैठे तो राम रावण का महा सग्राम लगा ० होने(।) निदान लडते लडते श्रीरामचन्द्र ने रावण ० के आग्नेय शस्त्र को आग्नेय ही शस्त्र से ओ दैव श(-) ० स्त्र को दैव ही शस्त्र से काट डाला(।) तव रावण म(-) ० हा वाण वृष्टि लगा करने वे वाण सव विषधर स(-) ० र्प हो हो कर रामचन्द्र पर लगे गिरने(।) जव मुहो से ० आग उगलते हूऐ विन सापो ने दिशा विदिशा ० सव छा ली तव चहुदिश उन्हे देषके श्रीराम ने वी(-) ० च रण मे सौपर्ण अस्त्र छोडे(।) वे शस्त्र ओही ग(-) ० रुड सरूप हो गये ओ रावण के वाणो को पक(-) ० ड पकड झट निगल गये फिर राम पर महाघोर वा(-) ० ण वृष्टि लगा रावण करने तो दशरथ के लाल ० को अति पीडित कर मातली को सारी देह छे(-) ० द रथ पर गिरा काचन की ध्वजा काट क्रोध से ० अति मूर्छित हो इन्द्र के घोडो को लगा मारने ० तव आरतहरन भगवान को अति व्यथित ० देष देव गधर्व सिद्ध चारण पितर महर्षि ओ ० विभीषण समेत सकल वानर भाल वहुत दु(-) ० खित हूऐ(।) उस समय विशो हाथो मे विश धनु(-) ० ष लिये कैसा लोगन को रावण देषने मे आया ० मानो मैनाक पहार ही आ खडा होवे(।) विसे देष ० कोप से आषे लाल कर भौ चढा श्रीरामचन्द्र ० ने हाथ मे अद्भुत धनुष ले लिया ओ शत्रु ० को अपना पराक्रम देषाने के लिए अति प्र(-) ० ज्वलित सरूप हो गये ओ वानरो को हर्षित ० करते हूऐ रावण पर दौडे(।) विनका प्रचण्ड रू(-) ० प देष प्राणी सव वहुत डर गये ओ धरती ० लगी कापने(।) रावण को भी वडा भय हूआ ओ ० देव सिद्ध गधर्व किन्नर ये सव अपने अपने ० विमानो पर चढ अधर मे आ प्रलय समान ० युद्ध लगे देषने (।) तव ऐन्द्रवाण लेकर श्रीराम ० ने हाथो समेत रावण के शिर काट डाले(।) वे माथ ० लोहू लोहू हो के विसके तन से धरती पर ऐसे ० गिरे जैसे आकाश से ताल फल खसे(।) तिस स(-) ० मय विस महा सग्राम मे मारे धूर के न तो किसी ० को कोई दिशा सूझे ओ न दिन समझा जावे ० न रात न साझ न चाद न सूरज देषने मे आ(-) ० वे जव कि रावण के माथ फिर ज्यो के त्यो हो ग(-) ० ये(।) विसे देष कर रामचन्द्र वहुत चक्रित हूऐ ० ओ कहने लगे(—)एक सौ एक वेर इसके शिर मै ० ने काट गिराये तो भी इस महादुष्ट का प्राण न(-) ० ही जाता फिर जो के तो ही इसे देषता हू जिन ० जिन वाणो से अनेक दैत्यन को मैने सहारा ० सोई ये मेरे वाण हैं रावण के विनाश करने ० मे अव निष्फल हो गये (।) इस भाति जव राम(-) ० चन्द्र वहुत चिन्ता लगे करने तव विभीषण ० जो पास खडा था विन से कहने

लगा (—) महारा (-) ० ज इसे ब्रह्मा का वर है इस कारण यद्यपि इसके ० शिर हाथ काटे जाते हैं तो भी फिर तुरन्त उत्प (-) ० न्न होते हैं इस दुष्ट के नाभि कमल मे अमृत ० वसता है वुस को शोषिए तभी यह मरेगा (।) इत (-) ० ने वचन के सुनते ही पावकास्त्र से पहले राम ० ने वाणो से रावण की नाभी छेद डाली तिस पीछे विस (-) ० के नव शिर अठारह हाथ तनु से काट गिराये (।) ० तव अति कोपकर महाशक्ति ले विभीषण ० पर वह दौडा (।) विस शक्ति को भी राम ने वाणो० से खड खड कर दिया तद शिर कटने से रावण ० के शरीर का सभ तेज निकल गया ओ कटे० हूऐ माथो से विसका सरूप महामलीन हू (-) ० आ अरु एक शिर दो हाथ विसे रह गये तो ० भी अति क्रुद्ध हो फिर वह महा असुर राम ० पर नाना शस्त्र वृष्टि करने लगा (।) विसी प्र (-) ० कार राम भी वुस पर लगे वाण वरसाने (।) ति (-) ० स समय विन दोनो को आपसे[1] महाघोर सग्रा (-) ० म लगा होने तव मातलि ने राम से कहा (—) महारा (-) ० ज जिसलिये देवताओ ने तुम से वडी प्रार्थना ० की थी सोई रावण का विनाश काल यह आज ० आन पहुचा अव इसे ब्रह्मास्त्र से शीघ्र मारिए ० ओ हे रामचन्द्र इस रावण का माथ आप मत ० काटिए इसे मर्मस्थान मे वाण मारिऐ तव यह ० मरेगा (।) इस भाति मातली की वाते सुन श्रीराम (-) ० चन्द्र ने विस दिप्त वाण को जो साप सा उसास ० भर रहा था ओ जिसके दोनो पजरे मे पवन ० का वास था ओ शिर मे अग्नि सूरज रहते थे ओ ० पोर पोर मे लोकपाल ओर जो मेरु पर्वत समा ० न भारी था आ सूर्य सा प्रज्वलित हाथ मैं उ (-) ० ठा लिया ओ वेद के मत्र से अभिमत्रित कर ज्यो ० वुसे धनुष पर चढाया सकल जीव जन्तु त्रसित ०हूऐ ओ धरती लगी कापने (।) तव राम ने वह वज्र स (-) ० मान वाण रावण की छाती मे मारा वुह वाण रा (-) ० वण के कलेजे मे चुभ गया तद वह महादुष्ट राक्ष (-) ० स मूर्छित हो धरती पर गिर परा अरु तुरन्त म (-) ० र गया ओ वह वाण रावण को मार के फिर राम (-) ० की तूणी मे जा पैठ गया (।) तव रावण को भूमि ० पर गिरा हूआ देष राक्षस सव जो जूझने से ० वचे थे अनाथ हो दिशा दिशा को भाग गये ० ओ कितने एक अति व्याकुल हो लका मे जा घु (-) ० से ओ वानर सव वहुत हर्षित होकर राम का जय ० रावण का वध यह वार वार लगे पुकारने (।) इस अ (-) ० नन्तर रावण का क्षय देष आकाश मे देवता ० सव जो विमानो पर चढ युद्ध देषने को आये थे ० लगे ढोल डमामे वजाने ओ चहुदिश से राम ० पर फूल वरसावने ओ सिद्ध मुनि सव यश व (-) ० षानने अपसरा गण नाचने ओ रावण की ० देह मे से लुक सा तेज निकला ओ देवताओ ० के देषते हूऐ रामचन्द्र के शरीर मे पैठ गया (।) सो ० अचरज देष देवता सव आपस मे कहने लगे ० कि देषो हम सव सात्विक देहधारी है ओ विष्णु० की दया हम पर सदा रहती है तो भी ससार का दु (-) ० ख भय हम लोग पर व्यापा ही रहता है ओ यह ० महातामसी क्रूर राक्षस जो ब्रह्मघातक ओ ० परदार मे रत था ओ विष्णु का द्वेषी और तप (-) ० स्वीजन का हिसक था सकल प्राणीन के देष (-) ० ते राम मे जा मिल गया (।) इसके भाग्य का कुछ ० पारावार नही है (।) तव नारद मुनि वोले (—) सुने दे (-) ० वता सव इसका कारण यह है कि जव रावण ० ने सुना कि राम के हाथ मेरी मृत्यु होवेगी तव ० से भृत्यन

---

१. आपस मे।

समेत वैर भाव से निशवासर राम ० का ध्यान करते करते ऐसा हूआ था कि भय ० से सव ठाव राम ही को देषता था निदान अ ० त समय विनके हाथ मृत्यु पा निष्पाप हो स(-) ० कल कर्म वधन से छूट राम ही मे जा मिला सो ० है क्याकि कैसा ही कोई पापी होय पर नेह से ० अथवा डर से नित्य इश्वर को सुमरता होवे व(-) ० ह भी सव दुख से मुक्त हो विष्णु पद को जाता है(।) ० हरि के ध्यान का यही महातम है तुम लोग वृ(-) ० था खेद करते हौ ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध का(-) ० डे ऐकादशोध्याय (।) ११(।) जव रावण मारा गया ० विभीषण हनुमान अगद ओ सुग्रीव को प्र(-) ० सन्न मन देष के रामचन्द्र कहने लगे(—)सु(-) ० नो वीरो तुम्हारे वाहु-वल से रावण को मैने मारा ० है यह तुम्हारी उत्तम कीर्ति जव तलक चद्र(-) ० मा सूर्य रहेगे ससार मे रहेगी ओ सकल पा(-) ० प हरनहारी अरु महापुण्यदाय इस कथा ० को जो नर गावेगा सो परमगति पावेगा(।) इस भा(-) ० ति श्रीरामचन्द्र कहते ही है कि मन्दोदरी आ(-) ० दि रावण की सकल स्त्रिया रावण पास आ(-) ० न पहुची ओ पृथ्वी पर विसे पडा हूआ देष धर(-) ० ती पर गिर पडी और छाती पीट पीट लगी व(-) ० हुत रोने (।) वुन्हे देष कर विभीषण को वडा शोक ० भया तो रावण के आगे जा गिर पडा ओ महा ० विलाप करने लगा तव राम ने लक्ष्मण से कहा ० तुम इन्हे समझाओ जो भाई का दाहकर्म ० करे क्यू वहुत विलम्व करते है और रावण की ० प्यारी राक्षसी सव मदोदरी आदि को चुप करा(-) ० वे अव रोने पीटने से कुछ होने का नही(।) इतनी ० वात के सुनते ही विभीषण के पास जो शोक ० से अति व्याकुल हो मृन के निकट मृतक ही ० सा पडा हूआ था लक्ष्मण जी गये ओ यह व(-) ० चन लगे विससे कहने(—) हे विभीषण तुम जिस ० का मोह करते हौ वह ससार के पहले(,) अव(,) ओ ० आगे तुम्हारा कौन है ओ तुम विसके कौन हौ ० ज्ञान दृष्टि से विचार देषो तो जैसे कभी तो वालू ० पानी के साथ रहता है ओ कवहू विससे अल(-) ० ग होता है वैसे ही काल से प्राणीन के सयोग वि(-) ०योग है ओ जैसे विरवान मे फल लगता ओ ० झरता है विसी प्रकार हरि की माया से प्राणीन ० मे प्राणी उत्पन्न होते ओ मरते है तिस्से क्या ह(-) ० म क्या तुम क्या दूसरे सव काल वश होकर उत्प(-) ० न्न हुए है जव जिससे जिसका जनम मरन हो(-) ० ना है हो ही गा इसमे किसी का कुछ शक्य है न(-) ० ही(।) ईश्वर सकल जी को उत्पन्न करते ओ मा ० रते है तुम वृथा एत्ता मोह करते हौ(।) देह के ज्ञा(-) ० न से माता पिता भाई वधु ये सव है ओ जव देह ० से अलग आत्मा को आपसे आप जाने तव ० को किसका भाई वधु ओ माता पिता मित्र है(।) ० स्त्री पुत्र घर द्वार विपय भोग नाना प्रकार ० की सपत भडार वल राज्य भूमि यिह सव अ(-) ० ज्ञानता से हूऐ है क्षण मे नष्ट हो जाते है यह सम ० झ मोह त्याग कर तुम उठो ओ जो कुछ हुआ ० ओ होगा विसकी चिन्ता तज भक्ति से नित्य ० राम का ध्यान करते हूऐं अपना राज्य जो भा(-) ० ग्य से हाथ लगा है भोगो ससार के दुख मे क(-) ० वहू न फसोगे(।) यो कह फिर वोले(—)रामचन्द्र ० की आज्ञा है शास्त्र के विधि से भाई का दा(-) ० ह कर्म जा करो ओ रोती हूई स्त्रीयो को वर्जो ० वे शीघ्र लका मे जाये(।) इस भाति जव लक्ष्म(-) ० ण ने कहा शोक मोह तज विभीषण तुरन्त ० राम पास आया ओ यह वचन लगा विनसे ० कहने महाराज इस क्रूर रावण का जो स(-) ० दा लपट ओ महाअधर्मी था अग्नि सम्का(-) ० र करना उचित नही(।) विन्होने उत्तर दिया म(-) ०

रने तक वैर था अव इससे किस वात का विरो(-) ० ध(।) तुम शीघ्र जा इसे दाह दो(।) इस प्रकार राम ० की आज्ञा शिर पर रष के निदान ज्ञान की ० वातो से शीघ्र विभीषण ने रानी मदोदरी को चु(-) ० प कराया ओ भाईन मत्रीन के साथ हो रावण को ० तुरन्त वहा से उठा चिता पर रष विधि से जला ० स्नान कर गीला ही वस्त्र पहने विसे तिलाज(-) ० लि दे प्रणाम कर स्त्रियो को वहुत वुझा समझा लका ० मे भेज दिया(।) वुन्हो के वहा से गये पर आप रा(-) ० म पास आ षडा हूआ(।) वुसे देष लक्ष्मण सुग्रीव(-) ० समेत श्रीरामचन्द्र वहुत हर्षाने(।) तव राम को ० प्रदक्षिणा प्रणाम कर विनकी आज्ञा पा विदा ० हो मातलि स्वर्ग लोक गया तव अति मगन ० हो श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा विभीष(-) ० ण को लका राज्य मैं आगे दे चूका हू तिससे ० अव लका मे जा विप्रन मत्रीन के साथ हो वि(-) ० भीषण को राज्य पर विठलाओ(।) यह सुन वा(-) ० नरो समेत तुरन्त लक्ष्मण जी लका मे गये ० और सुवर्ण के कलशो मे समुद्र के जल मगा(-) ० विभीषण को राज्य का अभिषेक किया ओ भेंट की ० नाना सामग्री हाथो मे लिये हूऐ पुरवासीन के सा(-) ० थ हो विसे उपायन दिया(।) तव अति हर्षित हो वि(-) ० भीषण ने राम को आ दडवत किया विसे देष क(-) ० र वे वहुत प्रसन्न हूए ओ अनुज समेत अपने को० धन्य कर माना ओ सुग्रीव को गले लगा कर य(-) ० ह वचन कहा(—)हे वीर तुम्हारी सहायता से राव(-) ० ण को मैंने जीता ओ विभीषण को लका का ० राज्य दिया(।) इस प्रकार सुग्रीव से वतरा फिर न(-) ० म्र हो हनूमान से राम ने कहा कि विभीषण से ० पूछ कर तुम रावण के घर मे जाओ अरु जिस ० जिस प्रकार से रावण का वध हूआ सो सभ स(-) ० माचार सीता से जा कहो ओ जो कुछ वे कहे सो ० मुझे आ सुनाओ(।) इस भाति प्रभु की आज्ञा ० पा विभीषण से समत कर पवन कुमार तुरत ० लका मे गये वहा निशाचरो से पूजित हो रावण ० के घर भीतर शीशो के वृक्ष तले राक्षसीन के वीच मे ० सीता को जो राम के ध्यान मे मगन हो रही थी देष शि(-) ० र झुका प्रणाम कर हाथ जोडे विन के आगे जा ख(-) ० डे हूए(।) वुन्हे देष जानकी जी पहले तो डर कर मुह फे(-) ० र वैठी फिर आगे की वात सुमर राम का दूत जान ० वहुत हुलसित भयी(।) तव सीता का प्रसन्न मुख देख ० राम का सव सदेश हनूमान ने सुनाने को आरम्भ ० किया इस प्रकार से कि हे देवी विभीषण को सहा(-) ० य पा लक्ष्मण सुग्रीव के साथ हो पुत्र समेत ओ ० सकल सेना मत्री सहित रावण को रण मे मार क(-) ० र विभीषण को लका राज्य दे श्री रामचन्द्र ने अप(-) ० ना क्षेम कुशल तुमसे कहने को हमे भेजा है(।) सुन क(-) ० र सीता वहुत हर्षित हूई ओ वोली(—)अहो तुमने मु(-) ० जे वडा हर्ष सुनाया(,) इसकी वधायी(,) मै तुम्हे कौन व(-) ० स्तु दू(,) तुम्हारे इस प्रिय वचन के तुल्य न तो तीनो लो(-) ० क मे कोई रत्न मै देषती ओ न कोई आभरण(।) ह(-) ० नूमान ने उत्तर दिया कि नाना रत्न की ढेड ओ ० स्वर्ग के राज्य इन से भी अधिक लाभ यही मुझे ० है कि शत्रु को मार कर सुचित हूए हैं जो श्री रामच(-) ० द्र विनका दर्शन पाता हू(।) तव सीता ने कहा(—)सव ० गुणो से तुम भरे हूऐ हौ तुम्हारी क्या वात है अव ० ऐसा यत्न करो जो रामचन्द्र मुजे शीघ्र वुलावे ओ ० मै विन्हे जा देषू(।) यह वचन सुन अछा कह सीता से तुर(-) ० त हनूमान विदा हूआ ओ जो कुछ सीता ने क(-) ० हा था सो सव राम को आ सुनाया ओ कहा(—)जि(-) ० स के लिये आपने वडी धूम

धाम कर रावण को ० मारा विस जानकी को वुलाकर देषिऐ वह शो(-) ० क से वहुत व्याकुल हो रही है(।) इस प्रकार जव ह(-) ० नूमान ने कहा राम ने शोचा कि माया कि सीता ० को अव त्याग करू और आग मे से जनक नदि(-) ० नी को निकाल लू(।) यिह् अपने मन मे ठहरा ० कर विभीषण से उन्होने कहा(—)तुम लका मे जा ० ओ अरु सीता को स्नान करा सव भूषण वस्त्र ० पहना शीघ्र मेरे पास लाओ(।) सो सुन हनूमान ० समेत विभीषण लका मे गया तो वृद्ध राक्षसीन ० से सीता को स्नान करा सव आभरण पहना सु(-) ० थरी सी पालकी पर चढा राम पास ले चला तव ० सुन्दर जामा पगडी पहने ओ रूपा के सोटे हा(-) ० थो मे लिये हूऐ अनेक लोग वुन्हो के सग हो ० लिये(।) जव पथ से सव आन पहुचे वुनको देष(-) ० ने के लिये वानर सभ आये तव हाथो मे वेत ले ० कर वहुतेरे लगे विन को वर्जने(।) जव महा रौर ० मचाते हूऐ निकट वे आन पहुचे तव पालकी ० पर सीता को देषकर रामचन्द्र ने विभीषण ० को कहा किसलिये वानरो को वरजते हौ वे स(-) ० व सीता को देषे ओ सीता पादचारे[1] मेरे पास ० आवे(।) यह सुन पालकी पर से तुरत जानकी ० उतरी ओ धीरे धीरे राम समीप आयी(।) तव का(-) ० म के लिये माया की वनी हूई विस सीता को देष ० कर श्रीरामचन्द्र ने वहुत सी वाते जो कहने यो(-) ० ग्य नही विसे सुनायी(।) सो वात वह सह न शकी तो ल(-) ० क्ष्मण से कहने लगी कि लोगो समेत राम को विश्वा(-) ० से होने के लिये मै अपना विचार दूगी(।) तुम शीघ्र अ(-) ० व आग लहराओ(।) यिह् सुन राम की भी सैन पा विसी ० घडी लक्ष्मण जी वहुत सा काठ इकठा कर आग वि(-) ० न मे लहरा आप राम पास आ चुपचाप खडे हो गये(।) ० तव देव राक्षसो की स्त्रियो सहित सकल लोगन के ० देषते हूए भक्ति से राम को प्रदक्षिण ओ दे(-) ० वता व्राह्मणो को प्रणाम कर सीता आग समीप ० आयी ओ हाथ जोड यह वचन विससे कहने लगी ० हे अग्नि देवता जो तो एक राम विना दूसरे किसी ० पुरुष पर मेरा मन न डगा होवे तव तो मुजे वचा(-) ० ना नही तो जलाकर भस्म कर दीजो(,) तुम धर्म के साक्षी हो(।) यो ० कह परिक्रमा कर जी मे अति निर्भय हो निदान वि(-) ० स प्रज्वलित पावक मे माया कि सीता कूद परी(।) वु(-) ० से आग मे जो कि तो देष जितने देवगण ० सिद्ध लोग थे सो सव वहुत दुखित हूऐ ओ आ(-) ० पसे परस्पर सीता को पतिव्रता कहने लगे ओ ० वैसी ही आकाशवाणी भी उपर से हूई ० इति श्रीरामचरित्रे युद्ध काण्डे द्वादशोध्याय (।) १२ (।) ० इस अनन्तर इन्द्र वरुण कुवेर महादेव व्रह्मा ० सिद्ध चारण साध्य किन्नर गधर्व अप्सरा पि(-) ० तर मुनि ये सव अपने अपने विमान पर च(-) ० ढे हूऐ सीता को देषने के लिये राम पास ० आये ओ वुन को प्रणाम कर हाथ जोड यह व(-) ० चन कहने लगे(—)महाराज तुम तीनो भवन ० के आदि कर्त्ता ओ ज्ञान सरूप हौ औ वसु(-) ० न मे आठवें ओ रुद्रो मे तुम शकर हौ ओ ० सव को सृजनेवाले चतुर्मुख व्रह्मा तुम ही ० हौ अश्विनी कुमार तुम्हारी नाक है ओ चा(-) ० द सूरज आष तुम सकल लोक के आदि अ(-) ० त हौ सदा शुद्ध चैतन्य सरूप निर्गुण व्रह्महौ(।)तु(-) ० म्हारी माया से अन्धे हूऐ लोगन को मनुष्य ० से लगते हौ(।)रावण ने तेज समेत हमारा स्था(-) ० न हर लिया था सो वुस महादुष्ट को आप ०

१. पैदल।

ने मारा तो हम सव फिर अपने पद को पहुचे (।) ० इस भाति जव देवता सव कह चुके तव ब्रह्मा ० लगा राम से कहने (—) तुम सव की स्थिति के का(-) ० रण विष्णु हो आत्मज्ञानी लोग हृदय मे नित्य तुम्हारा ही ध्यान करते हैं तुम सव घट ० वासी पूरण व्रह्म हो तुम्हारी महिमा को जा(-) ० न शके ओ आदि अन्त पावे (।) तुम अनाथो ० के नाथ करुणा अवतार हो मेरी सेवा के लि(-) ० ये मानुष सरूप हूए हो मैं तुम्हे प्रणाम कर ० ता हू यिह मेरा किया हूआ स्तोत्र जो नर म(-) ० न देकर पढेगा सव पाप से छूट व्रह्मपद को जा(-) ० वेगा (।) इस प्रकार राम की स्तुति सुन धर्म का ० साक्षी अग्नि देवता सीता को अक मे लिये ० जो दिव्य वस्त्र भूषण पहने सूरज सी प्रका(-) ० श हो रही थी रामचन्द्र से कहने लगा (—) हे महा(-) ० राज रावण के विनाश हेतु माया की सीता ० जो आपने वनायी थी विसके प्रताप से कु(-) ० ल परिवार समेत दशानन मारा गया ओ ० धरती का भार मिटा ओ वह माया की सी(-) ० ता कृतार्थ हो अन्तरध्यान हो गयी ओ जि(-) ० स को मुजेमे आपने आगे रष्षा था सो ० सीता यही है अव आप इसे लीजे यह सु(-) ० न अति हर्षित हो अग्नि देवता की पूजा क(-) ० र श्री रामचन्द्र ने सीता को(-) जो तीनो लोक ० की जननी ओ सदा निष्कलक है(,) आग ० मे से निकाल कर अक मे लिया (।) तव जान(-) ० की सहित राम को देष इन्द्र को वडा आन(-) ० द हूआ तो हाथ जोड कर वह भी वुनकी स्तु(-) ० ति करने लगा (—) इस प्रकार से कि जो रामचन्द्र इदी(-) ० वर समान श्याम सरूप है ओ दु ख रूप वन को ० जलाने मे दावानल है देवतान के कष्ट विनाश(-) ०न हारे है परमानन्द परम सुखदायक है नर सरू(-) ० प हो दुखी जन के सकल क्लेश निवारण है ओ ० निरकार व्रह्म है सुग्रीव आदि के परम मित्र है वि(-) ० न सीतापति को सदा प्रणाम करता हू ओ जो मा(-) ० या कर मानुष हुऐ है ओ जिनकी अमृत समा(-) ० न कथा सुन ससार मे लोग कृतार्थ होते हैं वे द(-) ० शरथ के लाल सदा मेरे मन मे वसे (।) हे जानकी ० पति मैं अपने राज्य के अभिमान से महामत्त ० हो रहा था अव तुम्हारे चरण कमल को प्रणाम ० किये से मेरा अभिमान नष्ट हूआ (।) इस भाति व(-) ० हुत कहके जव इन्द्र चुप भया तव महादेव ने राम ० से कहा जव तुम अयोध्या मे राज्य पर बैठोगे मैं ० तुम्हे देषने को आऊगा (।) ० अव राजा दशरथ को तु० म देषो विमान पर चढ स्वर्ग से आ आकाश मे ये ० खडे है (।) यह सुनते ही जव शिर उठा के देखा कि ० राजा दशरथ विमान पर चढ आगे आ खडे हूऐ ० है तव राम लक्ष्मण दोनो भाई विनके चरणो प(-) ० र जा गिर पडे वुन्होने इन दोनो को अक मे लगा क(-) ० र मुह चूम लिया ओ कहा हे वत्सो तुमने ससार ० के दु ख से मुजे वचा लिया यो कह राम लक्ष्मण ० से पूजित हो राजा दशरथ फिर सुरपुर को ग(-) ० ये (।) तव इन्द्र से जो कर जोरे खडा था रामचन्द्र ने क(-) ० हा ये वानर भाल सव मेरे लिये लडाई मे मारे ग(-) ० ये है तिससे तुम शीघ्र इन्हो पर मेरी आज्ञा से ० अमृत वरसाओ (।) यह सुनते ही सुरपति ने दो(-) ० नो दल पर अमृत वृष्टि की तो जो जो भाल वा(-) ० नर सग्राम मे मारे गये थे सो सव विस सुधा के ० पडते ही जैसे नीद से जागे होऐ वैसे ही उठ वैठे ० ओ आगे की भाति महापराक्रमी हो राम पास ०आ खडे हूए ओ रावण पर यद्यपि अमृत वरसा ० तो भी वह न उठा तिसका कारण यह है कि मृत(-) ०क को अमृत जिला शक्ता है ओ विष्णु के हाथ ० मृत्यु पाकर जो मुक्त हो गये हैं विनको अमृत ० नही जिला शक्ता (।)

इस अनन्तर प्रणाम कर ० विभीषण ने राम से कहा(—)महाराज जो मुजे जा(-) ० निऐ कि यह मेरा भक्त है तो मुझ पर अनुग्रह ० करके सीता समेत आप मगल स्नान कीजे(।) सव ० भ्षण वस्त्र पहना भाई सहित आपको क(-) ० ल्ह मैं अयोध्या ले चलूगा(।) वे वोले मेरा अति भ(-) ० क्त ओ सुकुमार भरत जटावल्कल धारण ० किये शत्रुघ्न समेत पुर मे हमारी वाट निहार(-) ० ता होगा विस विना मगल स्नान मैं क्यूकर करू ० ओ अलकार पहनू तिससे मेरी पती[1] सुग्रीव ० आदि सकल सेनापतिन को वस्त्र भूषण से ० तुम पूजो विनकी पूजा से निसदेह मेरी पूजा ० हो चुकी(।) इस प्रकार जव प्रभु ने आज्ञा की तव ० जो जिसकी रुचि थी विस सेनापतिन को वैसे ही ० रत्न भूषण भर इछा दे विभीषण ने पूजा ओ ० स्तुति विनती कर वहुत प्रसन्न किया तव अन(-) ० मोल रत्नो वस्त्रो से पूजित विन सेनापतिन को ० देष श्रीरामचन्द्र वडे हर्षित हूए ओ विभीषण ० से अति उत्तम पुष्पक विमान मगा सीता को ० अक मे लिये भाई लक्ष्मण समेत विस पर जा ० वैठे और सुग्रीव अगद विभीषण जाम्ववान ० आदि से कहने लगे कि वानरो सहित तुमने मि(-) ० त्र काज जैसा कुछ चाहिऐ वैसा किया तुम लोगो ० से हम वहुत प्रसन्न है अव हमारी आज्ञा से ज ० हा तुम्हारा जी चाहै वहा तुम सव जाओ(।) सुग्री ० व तुम तो अपने सेनापतिन समेत किष्किधा ० को सिधारो ओ हे विभीषण तुम लका मे जा राज्य ० पर वैठो किसी वात का सदेह न करना इन्द्रादिक भी ० अव तुमसे कुछ ढिठाई न करेगे अव हम अयो(-) ० ध्या को जाते है मेरे पिता की वह राजधानी है(।)इस ० प्रकार जव राम ने कहा कर जोर वानरो समेत वि(-) ० भीषण वोल उठे(—)महाराज आपके साथ हम भी ० अयोध्या जाया चाहते है वहा तुम्हारा अभिषे(-) ० क देष कौशल्या जी का दर्शन कर फिर यहा आ ० राज्य पर वैठेगे(,)आप आज्ञा कीजे(।) यह सुन ज(-) ० व राम ने कहा अछा तव सेना मत्रीन समेत सु(-) ० ग्रीव विभीषण हनूमान आदि सव पुष्पक प(-) ० र चढ गये(।) विन्हो के चढे पर राम की आज्ञा पा कु(-) ० वेर का वह वाहन जिसमे हस सव जोते हूए थे आ(-) ० काश पथ हो अतिशीघ्र अवधपुरी को चला(।) तव ० रामचन्द्र वहुत हर्षित भये ओ ऐसे शोभने लगे ० जैसे चतुर्मुख कोई दूसरा व्रह्मा होवे ० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे त्रयोदशोध्याय (।)१३(।) ० इस भाति जव लकासे श्री रामचन्द्र चले चहु दिश ० निहार के सीता से कहने लगे देषो त्रिकूट पहार ० पर यिह लका नगर वसता है ओ महा प्रकाश हो ० रहा है ओ यही रणभूमि है जहा असुरो वानरो का ० महा सग्राम हूआ है ओ जहा मास लोहू का चह(-) ० ला हो रहा है यहा ही कुम्भकर्ण इन्द्र जीत आदि स(-) ० कल वीरो समेत रावण मारा गया है ओ सागर मे ० यही पूल हमने वाधा है यिह सेतुवध नाम तीर्थ ० वडा विख्यात होगा ओ तीनो लोक से पूजित ओ ० परम पुनीत(।) इसके दर्शन से सकल महापाप ० नशता है यहा रामेश्वर महादेव की स्थापना ह(-) ०मने की है ओ यिह वह स्थान है जहा मत्री सहि(-) ० त विभीषण हमसे आ मिले थे ओ यही किष्कि(-) ० धा नाम नगरी है जहा आश्चर्य वन उप(-) ० वन सव दृष्ट आते हैं(।) यह कहते हूए विस पुरी के ० पास आ श्री रामचन्द्र ने सुग्रीव से कहा(—)तारा आ(-) ० दि स्त्रियो को तुम वुलाओ जो वुन के साथ

---

१. मेरे बदले।

हर्षित ० होकर सीता अयोध्या पहुचे (।) यिह् सुनते ही सुग्रीव ० की आज्ञा पाय तारा आदि वानरो की अनेक स्त्री ० सव आन पहुची औ जव पुष्पक पर चढ चुकी तव ० देष कर राम ने वुस वाहन को शीघ्र वहा से हाका तो ० ऋष्यमूक के साम्हने आ फिर वे सीता से कहने ल (-) ० गे देषो यहा ही वाली को हमने मारा ओ यही पचव (-) ० टी नाम स्थान है जहा अगस्त्य ओ सुतीक्ष्ण मुनि ० के सुन्दर आश्रम शोभ रहे है (।) यहा अनेक राक्षसो को ० हमने सहारा ओ ये तपस्वी जन जहा दृष्ट आते ० है सो यिह् चित्रकूट नाम गिरिवर प्रकाशित हो रहा ० है (।) यहा ही केकयी का पुत्र भरत मुजे मनाने को आ (-) ० या था और यमुनातीर भारद्वाज मुनि का यिह् आ (-) ० श्रम है यिह् भागीरथी गगा है जो सव को पवित्र क (-) ० रती है ओ यह सरजू नाम नदी है ओ वह देषो अ (-) ० योध्या है वुसे प्रणाम करो (।) इस क्रम से सीता को स (-) ० व स्थान देषाते हूए चौदहवा वर्ष पञ्चमी को श्री रामच (-) ० न्द्र भाई समेत भरद्वाज मुनि के आश्रम मे आ (-) ० न पहुचे (।) तव प्रणामकर नम्र हो विस ऋषि से अप (-) ० ने घर का समाचार दोनो भाई लगे पूछने (—) महारा (-) ० ज आपने सुना है शत्रुघ्न सहित भरत कुशल क्षेम ० से है ओ अयोध्या सुभिक्ष है ओ मेरी माता सव ० जीवती है (?) राम की बाते सुन भरद्वाज मुनि वहुत ० हर्षाने ओ वोले (—) हा सवको आनन्द है भरत जी ज (-) ० टा वल्कल धारण किये नित्य फलाहार ही करते ० है ओ सदा तुम्हारा पथ निहारते ओ जो कुछ राज्य ० काज करते है सो सव तुम्हारी खराऊन को जा सु (-) ० नाते है (।) महाराज (,) दण्डकारण्य मे राक्षसो का नाश ० आदि जो जो काज आपने किये ओ जिस प्रकार ० से सीता का हरण हूआ सो सव तुम्हारी कृपा से ओ ० अपनी तपस्या के वल से मैं जानता था तुम साक्षा ० त परमव्रह्म हौ ओ सवके अतरयामी नारायण ० हो तुम्हारे नाभिकमल से व्रह्मा जो लोक का पिता (-) ० मह है उत्पन्न हूआ इस कारण जगत के तुम ईश ० हौ ओ सभ लोक मे नमस्कृत तुम विष्णु हौ (,) जान (-) ० की जी लक्ष्मी है (,) ओ लक्ष्मण जी (,) आप शेष ना (-) ० ग है (।) आकाश तुम सवमे व्याप रहे हौ ओ चेतन ० रूप हो सभो के साक्षी हौ माया कर नाना सरूप हूऐ ० हौ प्राणिन के वाहर भीतर सव मे तुम्ही व्याप रहे हौ ० पर मूढो को कुछ लक्षित न होते हौ तुम जगत के ० आधार ओ पालक हौ जो कुछ देषा सुना ओ सुमि (-) ० रा जाता है सो सव तुम ही हौ तुम विना दूसरा कुछ ० दृष्ट नही आता तुम्हारे अवतारो की कथा जो नर ० सुचित होकर गाते है ससार से मुक्त हो परमपद ० को जाते है (।) पृथ्वी का भार दूर करने के लीये व्रह्मा ० की विनती से रघकुल मे मानुष अवतार ले देव ० तान का काज जो अति कठिन था सव आपने कि (-) ० या यिह् उत्तम आपका यश तीनो लोक मे फैले ० गा (।) अव मेरी प्रार्थना यह है कि सव समेत आज य (-) ० हा रहकर मेरा घर आप पवित्र कीजे कल्ह अयो (-) ० ध्या जाइएगा (।) सुनकर श्रीरामचन्द्र वहुत प्रसन्न हू (-) ० ऐ तो सकल सेना सहित विस दिवस वुस आश्रम मे ० रह गये तद ऋषि ने उनका वडा शिष्टाचार किया (।) ० जव खाने पीने से सव सुचित हूऐ क्षण एक शोचक (-) ० र रामचन्द्र ने हनूमान को कहा अव तुम शीघ्र अयो (-) ० ध्या जा राजमदिर की क्षेमकुशल लाओ पर शृ (-) ० गवेर पुर मे गुह नाम एक हमारा वडा मित्र रहता ० है विसे सीता लक्ष्मण समेत हमारा आगमन ० पहले सुना कर फिर नदिग्राम मे जा भाई भरत से ० हमारी कुशल जनाइओ ओ कहिओ कि सकल ० शत्रुन को जीत

कर सीता लक्ष्मण सहित ऋक्ष वा(-) ० नरो को साथ लिये भरद्वाज मुनि के आश्रम मे राम(-) ० चन्द्र आन पहुचे(।) यिह वृत्तान्त भरत को जना वि(-) ० न की चाल रहन सव देष तुम शीघ्र हमारे पास आ(-) ० ओ(।) यिह सुनते ही हनूमान तुरन्त वहा से विदा हूऐ ० ओ मानुष सरूप हो वायुवेग समान अति शीघ्र ० नदी ग्राम को चले तो जाते जाते शृगवेरपुर आ ० वहुत हर्षित हो गुह को बुलाकर कहने लगे(—)सीता ० लक्ष्मण समेत श्रीरामचन्द्र तुम्हारे सखा ने अप(-) ० ना षेम कुशल तुमको कहा है भरद्वाज से विदा ० हो आज वे यहा आवेगे तव तुम देषोगे(।) यो कह गु(-) ० ह को वहुत हुलसित कर फिर आगे को हनूमान व(-) ० ढे ओ कुछ घडी मे सरजू नदी पार हो अयोध्या से ० पछम कोश भर पर नदीग्राम मे आन पहुचे(।) त(-) ० हा देषे तो चीर वसन पहने शिर मे जटा वढाये म(-) ० लीन मुख किये मत्रीन समेत वीच सभा मे भरत ० वैठे है ओ कन्द मूल आहार करते करते अति दुव(-) ० ले से हो रहे है और राम की दोनो खराऊ आगे र(-) ० ष राजकाज सव करते है पर रह कर राम की०चिन्ता से निपट व्याकुल हो रहे है ओ नगर के मा(-) ० ननीय लोगो सग कैसे लगते है जैसे मूर्त्ति धा(-) ० रण किये साक्षात धर्मराज ही आ वैठे है(।) यह देष(-) ० ते ही हाथ जोर कर हनूमान लगे विनसे कहने ० कि दडकारण्य के रहनेवाले जिन रामचन्द्र महा(-) ० तपस्वी की तुम चिन्ता करते हो विन्होने अपना ० षेमकुशल तुम्हे कहा है अव तुम दारुण शोक ० तजो इसी मुहूर्त मे राम से तुम्हे भेट होगी वे वा(-) ० नरो सग हो युद्ध मे रावण को वध सीता को साथ ० लिये लक्ष्मण समेत अति निकट आ चुके(।) सु(-) ० न कर भरत चकित भये ओ महाहर्षित हो शीघ्र ० हनूमान को अक मे लगा मारे आनन्द के सजल ० नयन हो यह वचन कहने लगे(—)महाराज तुम देव(-) ० ता हो कै[1] मनुष्य आपने वडी कृपा की जो यहा आ(-) ० ये इस प्रिय सदेशे का नछावर सहस्र गौ शौ ग्रा(-) ० म मैं तुम्हे दूगा(।) वहुत वर्ष पर मेरे नाथ का समाचा(-) ० र तुमने आज सुनाया यह तुम्हारी वात सच सी ० मुजे लगती है क्यूकि कुशल क्षेम से जो मनुष्य र(-) ० हे तो किसी न किसी दिन विससे भेट अवश्य हो(-) ० ती है अव तुम यह मुझे सुनाओ कि रामचन्द्र को ० वानरो से किस प्रकार साथ हूआ(।) यह सच कर कहो ० जो तुम्हारे वचन का मुजको विश्वास होवे(।) इस भा(-) ० ति जव भरत ने पूछा एक ओर से राम का चरित्र ० हनूमान कहने लगा कि ऋष्यमूक पर्वत के निकट ० किष्किन्धा नाम एक नगर है तहा वालीको वध वा(-) ० नरो के साथ हो श्री रामचन्द्र लका मे गये वहा वि(-) ० भीषण को राज्य पर विठला पुष्पक विमान पर च(-) ० ढ भारद्वाजके आश्रम मे आये है(।) इस प्रकार हनू(-) ० मान की वाते सुन भरत ने शत्रुघ्न को कहा(—)नगर मे ० जितने देवता हैं विनकी पूजा नाना विधि से अब ० होवे ओ सूतो मागधो वदियो समेत शैकरो श्रे(-) ० ष्ठ वेश्या ओ घोडो हाथिओ लोगो सहित मत्रीन ० के साथ हो सव रानीवास नगर के लोग ब्राह्मण औ(-) ०र जो जो राजा यहा आये है सो सव रामचन्द्र को आ(-) ० गे से लाने को मेरे साथ अभी चले(।) यह सुनते ही श(-) ० त्रुघ्न ने लोगो को आज्ञा की कि मुक्ता आदि नाना ० रत्नो की लडीन से सगरे अयोध्या नगर

---

१. या।

अलकृत होवे ओ ० वर्णवर्ण की ध्वजा पताकान से भूषित ओ लाष ० घोडे दश सहस्र हाथी ओ सोने रूप से शोभित द(-) ० श सहस्र रथ ओ भेट की नाना सामग्री समेत व(-) ० डे वडे लोग सव अपना अपना वृन्द लिये रामच(-) ० द्र को देषने चलें(।) इतनी वात के सुनते ही लोगो ने ० सारी पुरी को महा अलकृत किया ओ घर घर आ(-) ० नन्द वधावा होने ओ जिसने जहा सुना वहा ही ० से वह रामपास दौडा औ पालकीन पर हो सव रा(-) ० निया घर से निकली(।) तव राम की खराऊ शिर पर ० लिये दोनो कर जोरे शत्रुघ्न को सग लगाये लोग(-) ० न के साथ हो पादचारे ही भरत राम जी से मीलने ० को चले(।) जव कुछ दूर जा पहुचे सुनकर भरद्वाज मु(-) ० नि से विदा हो श्रीरामचन्द्र भी उधर से निकले ० तव सूर्य समान पुष्पक विमान जिसे मन लगा ० कर व्रह्मा ने अपने हाथो से रचा था दूर ही से देष ० कर पवनकुमार कहने लगा(—) सीता समेत राम ल(-) ० क्ष्मण दोनो भाई ओ सुग्रीव मत्रीन सहित विभी(-) ० षण जी इसी वाहन पर है तुम लोग नीके देषो(।) त(-) ० व स्त्री वाल वृद्ध युवा जितने थे सो सभ हर्षित हो ० महाकोलाहल लगे करने कि ये ही रामचन्द्र आये(।) ० वह शब्द आकाश तक जा पहूचा ओ घोडो हाथि(-) ० ओ रथो पर से लोग सव तुरन्त धरती पर उतरे ० ओ अधर मे चन्द्रमा समान वुम विमान को लगे ० देषने और अति हर्षित हो हाथ जोरे राम की ओ(-) ० र मुख कर भरत जो खडे हो गये(।) इतने मे वुह विमा(-) ० न निकट आन पहुचा तो नभ मे सुरज समान ० विस वाहन पर रामचन्द्र को देष भरत ने शिर झु(-) ० का कर प्रणाम किया(।) तव राम की आज्ञा पा वि (-) ० मान धरती पर आ खडा हूआ विस पर शत्रुघ्न ० समेत भरत तुरन्त चढ गये ओ राम लक्ष्मण के च[1] ० चरणो पर जा गिर परे(।)वुन को उठा अक मे लगा ० कर पहले श्री रामचन्द्र मीले(,) तिस पीछे लक्ष्मण(,) ० इस अनन्तर सीता को प्रणामकर सुग्रीव जाम्व ० वान अगद मेंद द्विविद नील नल ऋषभ सुखे(-) ० ण गवाक्ष गध मादन शरभ पणस इन सव को ० भरत ने प्रणाम किया(।) इन्होने भी मनुष्य सरूप हो ० नमस्कार कर भरत का वडी आवभगति करी ० ओ कुशल मगल पूछा(।) तव सुग्रीव को गरे लगा ० कर भरत लगा कहने(—)तुम्हारी सहायता से राम ० का जय हूआ ओ रावण मारा गया हम चारो के ० तुम पचवे भाई हौ(।) इस भाति जव सव से कुशल ० प्रणाम हूआ ओ कौशल्या केकयी सुमित्रा आ(-) ० दि जननी को यथा उचित प्रणाम कर जव राम(-) ० चन्द्र सुचित भये तव विन की खराऊ वुन के पावो ० मे भरत ने पहना दी ओ नम्र हो कर कहा(—)महाराज ० आपका राज्य मैंने थाती कर रष्षा था सो आप ० लीजे अव मेरा जन्म ओ मनोरथ सुफल हूआ ० जो अयोध्या आप आये भडारो मे जितनी द्रव्य ० तुम छोड गये विन्हे दश गुणी मैने वढायी अव रा(-) ० ज्य पर वैठ कर प्रजापालन कीजे यही मेरी प्रार्थना ० है(।) यो कहते हूऐ भरत को देष कर सव वानर आषो मे ० आशू भर लाये ओ वार वार वुनको लगे वषानने ० तव अति हर्षित हो भरत को अक मे लिये पुष्पक ० पर चढे हूए श्रीरामचन्द्र भरत के आश्रम मे आये तहा विमान पर से उत्तर विस विमान से कहने लगे तुम कुवेर के वाहन हौ तिस्से अव तुम वुन्ही को जा(-) ० ओ(।) यह सुनते ही वह कुवेर पास गया तव

---

१. 'च' अनावश्यक।

वृहस्पति ० को इन्द्र की भाति रामचन्द्र ने चरण छूकर वशिष्ठ ० गुरु को प्रणाम किया ओ विनके पास जा वैठे ० इति श्रीरामचरित्रे युद्धकाण्डे चतुर्दशोध्याय (।) १४ (।) ० गुरु के निकट राम को देष हाथ जोर भरत लगा ० वुन से कहने (—) महाराज तुमने कैकेयी का मान र(-) ० ष्षा जो मुजे राज्य दिया अव अपना राज्य मुज(-) ० से लीजे अपनी इछा से मैं आपको देता हू (।) यो ० कह निदान राम के चरणो पर भरत गिर परा ओ ० केकयी सहित वशिष्ट मुनि से वुनकी वहुत प्रा(-) ० र्थना करवायी तव राम ने जो माया फैला सक(-) ० ल नर चरित्र करने को उत्पन्न हूऐ थे भरत से रा(-) ० ज्य लेने को अगीकार किया यद्यपि वे निपट सु(-) ० ख ज्ञान के स्वरूप परमात्मा थे कि जिसकी भौ(-) ० ह की सैन ही से तीनो लोक नष्ट होता ओ क्षण ० मे फिर वनता है ओ जिनके तनिक अनुग्रह से ० यहा तक कि इन्द्र पदवी को लोग पाते है(।) विनको ० मनुष्य के राज्य से कुछ हर्ष नही तथापि लीला ० सरूप मानुष की देह से भक्तो का सकल अभि(-) ० लाष पूरण करते है इसलीये भरत का वचन ० उन्होने माना तव शत्रुघ्न की आज्ञा सो नाई ० आदि निपुण लोग राम के अभिषेक के लिये ० सव सामग्री लाये तो भरत लक्ष्मण सुग्रीव वि(-) ० भीषण इन्होने पहले स्नान कर कपडे पहने ० तिस पीछे न्हा धो जटा मल श्री रामचन्द्र ने सु(-) ० दर वस्त्र धारण किया ओ नाना सुगध वस्तु ० देह मे लगायी तव अनमोल कपडे भूषण ० मगा भरत ने सीता को अति अलकृत करवा(-) ० या वुसी प्रकार महाहर्षित हो वानरो की सक(-) ० ल स्त्रियो को कौशल्या रानी ने भूषित करवा(-) ० या तव शत्रुघ्न की आज्ञा से विचित्र रथ जो सू(-) ० र्य सा प्रकाश था सुमत्र ने लाकर आगे खडा ० कर दिया वुस रथ पर चढ श्री रामचन्द्र अयो(-) ० ध्या को चले तो सुग्रीव अगद हनूमान आ(-) ० दि सव लोग स्नान कर दिव्य कपडे भूषण पह(-) ० न घोडो रथो हाथिओ पर चढ श्री राम के पीछे ० हो लिये (।) इसी भाति सुग्रीव की स्त्रियो समेत ० सीता भी चली तिस समय भरत जी तो राम ० का रथ लगे हाकने ओ सुवर्ण दण्ड का छत्र ० शत्रुघ्न ने हाथ मे उठा लिया ओ लक्ष्मण जी ० राम पर चौर डोलाते चले ओ देवता ऋषि स(-) ० व आ आकर लगे राम का यश वषानने ओ भेरी ० मृदग आदि नाना वाजे वजाने और जितने वान(-) ० र थे सो सव मनुष्य सरूप हो गजो पर चढ राम सा(-) ० थ चले(।) जव पुरी भीतर आन पहुचे श्याम सुन्दर श्री ० रामचन्द्र को जो अनमोल रत्नजडित भूषणो ० से अति अलकृत हो रहे थे ओ सुग्रीव आदि से ० सेवित ओ जो मोतीन की माला पहने कस्तूरी ० के तिलक किये सगरे गात चन्दन लगाये महा ० सुन्दर लगेते[1] थे आगत सुन पुर की स्त्री सव व(-) ० हुत मगन हो घर के सकल कामकाज ओही त(-) ० ज अति हुलसित हो सव शिगार पटार किये को(-) ० ठो पर चढ गयी(।) वहा से हरिमुख देख वहुत जुडा(-) ० नी ओ मुस्कुरा मुस्कुरा फूल लगी उपर से वर(-) ० साने ओ मगल गान करने ओ आपस मे कह(-) ० ने कि अव हमारा मनोरथ फला जो सीतारा(-) ० म को देष[2](।) इतने प्रजा लोगन को अति हर्षित ० देषते हूए धीरे धीरे अपने पिता के मदिर मे जो ० इन्द्र का घर सा सोहावन था श्री रामचन्द्र आ(-) ० न पहुचे तो पहले कौशल्या को फिर कर प्रणा(-) ० म निस

---

१. लगते। २. देखा।

पीछे पिता की जितनी स्त्रिया थी वु(-) ० न्ह को(।) इस प्रकार राज मदिर मे जव राम आये ० भरत से उन्होने यह वचन कहा(—)राजा सुग्रीव मे(-) ० रे वडे मित्र है तिस्से जिसमे खाने पीने की सव ० सामग्री भरी होवें विस घर मे सुग्रीव को डेरा क(-) ० राना ओ जो जैसा लोग है वुसे सुख से रहने के ० लिये वैसा ही घर दो(।) इस भाति राम की आज्ञा पा ० सभो को उत्तम घरो मे डेरा दे सुचित हो भरत ने ० सुग्रीव से जा कहा अव राम को राज्य का ति(-) ० लक दिया जायगा तुम अतिशीघ्र चलनहार दू(-) ० तो को कहो जो चारो समुद्र के जल तुरन्त यहा ला(-) ० वे(।)यह सुनते ही सुग्रीव की आज्ञा से जाम्ववान ह(-)० नूमान अगद सुखेन ये चारो वीर दिश के ० सागरो मे से काञ्चन कलशभर पानी तुरत भ(-) ० र लाये (।) तव राम के अभिषेक के लिये मत्रीन स(-) ० मेत शत्रुघ्न ने वशिष्ट से जा जनाया कि तीर्थ का ० जल तो आया सो सुन व्राह्मणो के साथ हो वशि(-) ० ष्ट मुनि ने रत्न जडित सुवर्ण के पीढा पर सीता ० राम को विठलाया तव राम का अभिषेक देषने ० के लिये लोकपालो समेत सकल देवता आका(-) ० श मे समीप आ आकर वहा खडे हूऐ ओ वारवा(-) ० र राम की स्तुति लगे करने तव कन्यान मत्रीन ० सहित ओ वामदेव जावालि गोतम वाल्मीकि ० आदि ऋषिन के साथ हो वशिष्ट मुनि ने कुश ओ ० सर्वोषधि के रस समेत तुलसी दल मिश्रित ती(-) ० र्थ के अति पवित्र जल से स्नान करा राम को राज्य ० का तिलक दिया(।) तिस समय शत्रुघ्न तो रामचद्र ० पर पाडुर छत्र लिये रहे ओ सुग्रीव विभीषण ये ० दोनो चौर लगे करने तव इन्द्र की सैन पा वायु दे(-) ० वता ने काचन की माला तुरन्त राम के गले मे डा(-) ० ल दी उसी प्रकार नाना रत्नमय सुवर्ण का हार ० आय इन्द्र ने भी राम को पहना दिया(।) तव देव गध (-) ० र्व सव आनन्द मे मगन हो हो कर लगे गाने ओ ० अप्सरागण नाचने ढोल दमामे वाजने ओ ० आकाश से पुष्प वृष्टि लगी होने (।) इस अनत(-) ० र सव आभरण पहने केशर के तिलक दिये पी(-) ० ताम्बर धारण किये तेज मे कोटीन सूर्य समान ० ओ रूप मे कोटीन कदर्प तुल्य श्याम सरूप कम(-) ० ल नयन श्री राम चन्द्र को ओ वैसे ही कपडे भू(-) ० षण पहने काचन वर्ण सीता को वुनके वाये भाग ० मे देष देवतान समेत महादेव लगे राम की स्तुति ० करने कि हे महाराज हम तुम्हे प्रणाम करते है स(-) ० सार की उत्पत्ति पालन प्रलय तुम ही करते हो ० ओ जव जव साधुन पर सकट परता है तव तव ० नाना अवतार हो वुन की आपदा हरते हो ओ ० अपने अश से सकल लोक रच रसातल मे जा ० शेषनाग रूप हो विन्ह लोको को निज पीठ पर ० लिये हो और उपर सूर्य चन्द्रमा पवन ओ मेघ ० रूप हो अनेक प्रकार से सृष्टी'* को पालते हो(।) प्रा ० णी सव जो खाते है विसे जठराग्नि रूप से पचाते ० रवि शशि पावक मे जो तेज है सो सव तुम्हारा ही ० विभव दृष्ट आता है व्रह्मा विष्णु महेश आदि ० सकल देवता तुम ही हूऐ हो वेद पुराणो मे मत्स्या(-) ० दि रूप से तुम प्रसिद्ध हो ओ सृष्टि मे स्थावर जग(-) ० म सरूप जो जो प्राणी उत्पन्न हूऐ होगे और है ० सो सव तुम ही हो तुम विना दूसरा कोई न दृष्ट आ(-) ० ता है तुम्हारी भक्ति से जिनका मन निर्मल हो र(-) ० हा है विन ही को तुम्हारा सव भेद प्रकाश है ओ ० तुम्हारी माया से जो अधे है वे तुम्हे

---

* यहाँ १ सम्भवतः ह्रस्व का द्योतक है।

नही पहचा(-) ० नते(।) तुम पूरण ब्रह्म हौ तुम्हारा सरूप ब्रह्मादि(-) ० क भी नही जानते(।) राम सरूप जो आपका यह ० रूप है विसे भक्ति से जो भजता है सो सव दु ख ० से छूट कर परम पद को जाता है(।) हम तुम्हारा नि(-) ० त्य नाम जपते जपते कृतार्थ हो भवानी सहि(-) ० त सदा काशी मे वसते है ओ जो प्राणी वहा म(-) ० रता है विसे मुक्त होने के लिये तुम्हारा राम ना(-) ० म उपदेश करते है(।) जो नर इस स्तोत्र को भक्ति ०,से सुनता ओ गाता है वह ससार मे सव सुख ० भोग कर अन्त समय परम पद को जाता है (।) इसी ०[१]प्रकार इन्द्र ने भी स्तुति की कि हे रामचन्द्र ब्रह्मा ० के वर से रावण ने मेरा सव सुख छीन लिया था ० अव आपके प्रताप से रावण महाशत्रु मारा गया ० तो फिर अपने पद को मै पहुचा (।) इस प्रकार जव इद्र ० कह चुका देवता सव भी राम से कहने लगे(—)हे महा(-)० राज यज्ञ मे जो भाग हम पाते थे सो सव वल से ० रावण ने हर लिया था अव वुस महादुष्ट दैत्य को ० जो आपने मारा तो तुम्हारे प्रताप से आगे की ० भाति यज्ञ मे पुन हम अपना भाग पावेगे(।) पितरो ० ने तो तुरत ही कहा(—)हे कृपानिधान गयादिक तीर्थों ० मे जो नर लोग पिण्डदान हमे करते है सो सव हमा(-) ० रा अश रावण ही चट करता था अव उसका क्ष(-) ० य तुमने किया तो निज भाग फिर हम लोग पावे(-) ० गे(।) यक्ष लोग भी वोले(—)महाराज,सदा हमसे राव(-) ० ण अपनी पालकी ढोलाता था पर एक कौडी भी ० न कभू देता था वुस दुष्ट को आपने वधा तो मा(-) ० ने[२] वुस दु ख से हम लोगन को वचा लिया(।) इसी भा ० ति गधर्वो ने भी कहा(—) हे दीन दयाल हम लोग सगी(-) ० त विद्या मे निपुन होकर पहले तो तुम्हारे ही यश ० गा गा अपने आनन्द मे मगन थे पीछे रावण ० ने हमे पकडवा मगाया तव से वुसी का गुण ल(-) ० गे नित्य गाने ओ विसी की सेवा मे तत्पर हम हू(-) ० ए थे अव जो उस अधम को तुमने मारा तो ह(-) ० मारा वडा त्राण किया(।) इस भाति उरग सिद्ध ० किन्नर मरुत आठो वसु मुनि गुह्यक यती ० अप्सरा प्रजा लोग ओ इन्द्र आदि देवता ० सव राम को देष अलग अलग विनकी स्तु(-) ० ति कर विदा हो अपने अपने स्थान को जा ० प्राप्त हूऐ(।) पर सगरी वाट राम ही के गुण गाते ० ओ हृदय मे सीता समेत विन्ही का ध्यान क(-) ० रते हूऐ सव गये ०इति श्री राम चरित्रे युद्ध का(-) ० डे पचदशोध्याय (।) १५ (।) सव लोगन को सुख ० देने के लिये जव राम चन्द्र राज्य पर वैठे अ(-) ० न्न धन से पृथिवी भर गयी वृक्ष सव अमृ(-) ० त फल लगे फलने गध हीन फूल भी अ[२](-) ० अति सुगध हो गये ओ जव राम को राज्य तिल(-) ० क हूआ लाष घोडे हाथी धेनु सैकरो वृषभ ती(-) ० श कोटि दीनार ओ भाति भाति के कपडे आ(-) ० भरण तुरन्त वुन्होने ब्राह्मणो को दान दिया ० ओ सव रत्नो की अनमोल माला जो जोति मे ० सूर्य समान थी सुग्रीव को दी ओ अति सुदर ० दो विजायठ अगद को दिये और जोति मे च(-) ० न्द्रमा तुल्य मणिन के हार प्रीतिकर सीता को ० पहना दिया जव विस हार को अपने कठ मे ० से निकाल कर वह लगी सकल वानरो के ओ(-) ० र देषने ओ रह रह राम दिश ताकने तव सव ० के मन की वात जाननहार रामचन्द्र ने उस ० से कहा हे सीता तुम जिससे सतुष्ट हौ वुसी को ०

---

१. मानो। २. अनावश्यक।

यह हार दो(।) यह सुनती ही हनूमान को वुस (-) ० ने वह माला पहना दी(।) वुस हार से ओ अति ० आदर मान से हनूमान वहुत लगा शोभ(-) ० ने तव वुसकी भक्ति से निपट प्रसन्न हो ओ हाथ ० जोड खडे हूए वुसे देष श्रीरामचन्द्र ने यह वचन ० कहा(—)पवन कुमार मै तुमसे वहुत सतुष्ट हू तु(-) ० म जो जी चाहे सो मुज से अव मागो देवताओ ० को भी जो दुर्लभ है सो वर मै तुमको दूगा(।) सुनक(-) ० र हनूमान वडा हर्षित हूआ ओ शिर झूका रा(-) ० म को प्रणाम कर कहने लगा(—)महाराज तुम्हारा ० नाम सुमरते सुमरते मेरा मन सन्तुष्ट नही होता ० है तिससे पृथ्वी मे सदा तुम्हारा नाम मै सुमरता ० रहू ओ लोक मे जव तक आपका नाम रहे मै जी(-) ० ता रहू यही वर तुमसे मागता हू(।) रामचन्द्र वोले(—) ० अछा तुम जीवन मुक्त हो सुख से रहो जव कल्पा(-) ० न्त होगा मेरे धाम को निसदेह प्राप्त होगे(।) तव सी(-) ० ता ने भी वुससे कहा(—)हनूमान तू जहा कही र(-) ० हेगा वहा मेरी आज्ञा से खाने पीने का सव प(-) ० दार्थ पहुचा करेगा(।) यह सुन हनूमान अति ह(-) ० षित हूआ तो वहुत प्रणामकर अति दुख से ० सीता समेत श्री रामचन्द्र से विदा हो तप करने ० के लिये हिमालय पर्वत को गया(।) तव गुह से जो ० हाथ जोरे खडा था राम ने कहा(—) सखा अव तु भी[1] ० शृगवेर पुर जाओ वहा मुजी को नित्य सुमर ० सव भोग विलाशकरो अत समय निसन्देह ० मेरे धाम को पहुचोगे(।) यो कह वहुत सा आभर(-) ० न पहना राज्य दे ज्ञान वता[2] राम ने वुसे विदा ० किया तव हर्षा कर वह अपने भवन को गया(।) ० वुसी प्रकार सुग्रीव आदि श्रेष्ठ वानर सव जो ० अयोध्या मे आये थे विन्हो समेत विभीषण ० को भी अनमोल अनेक कपडे भूषण दे प्रसन्नकर ० राम ने विदा किया(।) तव सुग्रीव आदि तो आ(-) ० नद मे मगन हो किष्किन्धा मे गये ओ विभी(-) ० षण निकटक राज्य पालका को गया(।) तव ल(-) ० क्ष्मण को हठ मे यौवराज्य का तिलक दे सुचि(-) ० त होकर श्री रामचन्द्र सव राजकाज करने लगे(।) ० यद्यपि ये पूरण व्रह्म है इनको राज्य पाट से कुछ०काम नही क्यूकि आनन्द मूरति है अपने आन(-) ० न्दे ही से ये सदा सन्तुष्ट रहते है तो भी लोगन को ० हित शिषलाने के लिये मनुष्य सरूप हूए ओ ० राज्य पर वैठे जव ये राज्य करने लगे न तो किसी ० को चोर का भय होवे न व्याधि का डर न साप का त्रा(-) ० स ओ न कोई कुछ उपद्रव कर शके न कोई ना(-) ० स्तिक होऐ ओ न वुढो के रहते हूए लडके की मृ(-) ० त्यु(।) सव लोग राम की पूजा पाठ मे मगन रहे ओ ० दिन रात विन्ही का ध्यान चर्चा किया करे ओ जि(-) ० स अवसर जितना पानी का काम होवे वुसी स(-) ० मय ओतना ही जल मेघ वरसावे प्रजा लोग स(-) ० व अपने अपने कर्म धर्म से रहें ओ सव लक्षण(-) ० वान वडे धर्मात्मा ही उत्पन्न होते ओ श्री रामच(-) ० न्द्र ऐसे प्रजान को लगे पालने जैसे वाप अपने ० वेटो की रक्षा करे(।) इस प्रकार से दश सहस्त्र वर्ष रा(-) ० ज्य उन्होने किया(।) शिव का कहा हूआ यह रामा(-) ० यण जो धनधान्य का घर है ओ आरोग्य दाय(-) ० क जो मनुष्य श्रद्धा से सुनते ओ पाठ करते हैं ० वे कोटीन पातक से तुरत छूटते हैं ओ मनोवा(-) ० छित फल पाते(।) धन के अभिलाष से राम का ० अभिषेक जो नर सुनता है

---

१. तुम भी। २. ज्ञान बताकर, उपदेश देकर।

वहुत धन होता ० है ओ स्त्री पुत्र राज्य शत्रुन से जय (।) इस आदि ० जिस जिस वस्तु की इछा होवे सो सो सव इसके ० पाठ से पाते हैं यहा तक कि वाझको भी सुन्दर ० पुत्र होता है ओ कैसा ही कोई आपदा होये सो ० सव दूर हो जाती है ओ नर इस पोथी को ० भक्ति से प्रणाम करता है सो सव पाप से छूट अ(-) ० त समय राम के प्रसाद से वैकुठ पद को सिधार०ता है० इति श्री रामचरित्रे युद्ध काण्डे षोडशो(-) ० ध्याय: (।) १६ (।) युद्ध काण्ड समाप्त (।) इतनी कथा सु(-) ० न फिर पार्वती ने महादेव से पूछा महाराज राव(-) ० णादिक को सग्राम मे मार अयोध्या मे आ राज्य ० पा कौशल्या के नन्दन श्री रामचन्द्र जो सनात(-) ० न पूरण व्रह्म थे सीता समेत मानुष देह से कितने वर्ष धरती मे रहे ० ओ अन्त समय किस लिये मर्त्य ० लोक को तजा यह समझाकर मुजसे कहिए ० जो मेरा मन प्रसन्न होऐ(।) राम की कथा सरूप ० अमृत जो जो मेरे कानो मे पडता है तो तो सुन(-) ० ने की अधिक तृष्णा मुजे वढती है तिस्से वि(-) ० स्तार कर वुनका गुणानुवाद आप कहिऐ(।) स(-) ० दा शिव वोले(—)राक्षसो का वधकर जव रामचन्द्र ०राज्य पर आ वैठे तव विश्वामित्र असित कन्व ० दुर्व्वासा भृगु अगिरा कश्यप अत्रि आदि अ(-) ० नेक मुनि ओ शिष्यो समेत अगस्त्य ऋषि ये ० सव राम को प्रणाम स्तुति करने के लिये अयोध्या ० मे आये (।) जव राजद्वार पर आन पहुचे अगस्त्य जी ने ० द्वार पाल से कहा तुम राजा से जा कहो कि अग(-) ० स्त्य आदि मुनि लोग डचोढी पर आ खडे है तुम्हा(-)० रे पास आ आशीर्वाद किया चाहते है(।) यह सुनते ० ही वह भीतर गया ओ हाथ जोर कर राम से कह(-) ० ने लगा(—)महाराज आपसे भेट करने के लिये ऋ(-) ० षिन समेत अगस्त्य मुनि वाहर आ खडे है आ(-) ० ज्ञा होए तो यहा वुला लाऊ(।) वे वोले(—)अछा अति ० आदर से शीघ्र वुन्हे लाओ(।) प्रभु की आज्ञा पा(-) ० कर फिर द्वारपाल वाहर आया ओ मुनि लोग ० को वोला(—)महाराजो आओ राजा तुम्हे वुलाते ० है(।) इस प्रकार जव विसने कहा ऋषि लोग मदि(-) ० र भीतर गये(।) उन्हे देष कर दशरथ के लाल तुर(-) ० त उठ खडे हूऐ ओ अर्घपादार्घ कर अति आद(-) ० र साथ विधि से पूज वुन सवो को आसन पर विठ(-) ० लाया ओ कुशल मगल पूछा तव इन्होने भी ० वुन से क्षेम कुशल पूछा ओ कहा(—)महाराज वडा ० भाग है जो तुम्हारा दर्शन पाया तुम रावण को ० जीत आये यिह सुन हमे महा आनन्द हूआ ० रावण को मारना तुम्हारे लेखे कुछ वडी वात ० न थी क्यूकि धनुष लेकर जो तुम खडे हो तो ० तीनो लोक को जीत शक्ते हो वह किस गिण(-) ० ती मे था विस आदि सकल राक्षसो को भाग ० से रण मे तुमने मारा यिह आश्चर्य नही(,) अचर(-) ० ज यह है कि मेघनाद को वधा(,) इसमे तुम्हारी व(-) ० डी वडाई है (।) यो कह फिर वोले(—)महाराज कुम्भ-क(-) ० र्ण आदि राक्षस सव साक्षात यम सरूप थे वु(-) ० न सभो को यम स्वरूप ही वाणो से आपने मा(-) ० रा तो हम लोगन को अभयदान दिया अव कृ(-) ० तार्थ होकर विराजिए सव दानव मारे गये(।)इ(-) ० स भाति ऋषिन की बाते सुन रामचन्द्र वहुत च(-) ० कित भये ओ हाथ जोड के कहने लगे महाराजो ० तुम लोग रावण कुम्भकर्ण आदि दैत्यो को जो ० तीनो भुवन को जीतने वाले थे छोडकर एक मेघ(-) ० नाद को किसलिये वहुत सराहते हो यिह सम(-) ० झा कर कहो जो मेरे मन का सदेह जाये(।) तव म(-) ० हा तेजस्वी अगस्त्य मुनि

वोले(—) जिस प्रकार से ० मेघनाद ओ रावण का जन्म ओ वुन्हे वरदा ० न हूआ सो सक्षेप कर मै कहता हू सावधान हो ० के सुनो(।) आगे सत्ययुग मे व्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य ० नाम महा-तेजस्वी एक मुनि थे सो मेरुके पास ० तृणविन्दु के आश्रम मे तप करने को जा वसे तो ० अपने कर्मधर्म मे मगन हो नित्य वह तपस्या ० किया करे(।) कुछ दिवस के वीते वुस सोहावन आ(-) ० श्रम मे देव गन्धर्व किन्नरो की कन्या नित्य जा जा ० कर लगी नाचने ओ गा गा वजा वजा पुलस्त्य ० के तप मे विघ्न करने तव अति क्रुद्ध होकर एक दि ० न यह वचन वे वोल उठे कि आज मे जो मेरे साम्हने ० आवेगी वुसे अनायास गर्भ रह जायेगा(।) यह श्रा(-) ० प सुन वे कन्या सव वहुत डर गयी तव से विस ० स्थान मे फिर न कभी आवे पर उस आश्रम मे ० तृणविन्दु नाम राजर्षि की एक कन्या थी वह मु(-) ० निका श्राप सुन कर नही डरी और भी निर्भय ० हो साम्हने जा पुलस्त्य मुनि को लगी देषने कि इत(-) ० ने मे वुस कन्या को गर्भ रह गया(।) कितने एक दि(-) ० नो के वीते अपनी देह की वुरी दशा देष डर कर ० निज पिता पास गयी(।)वुह राजर्षि ने पुत्री को दे(-) ० ष ध्यान कर दिव्य दृष्टि से मुनि की करतूति जा(-) ० न विस कन्या को पुलस्त्य मुनि ही को जा सक(-) ० ल्प कर दिया(।) वुन्होने वुसे अगीकार किया औ(-) ० र कहा अछा विराजो(।) जो कुछ दिन के वीते निज से(-) ० वा मे वुस कन्या को वहुत लवलीन देष ऋषि नि(-) ० पट प्रसन्न हूऐ ओ वुसे कहने लगे तुम्हारी टहल ० से हम सतुष्ट भये हमारी कृपा से तुम्हे एक ऐ(-) ० सा पुत्र होगा जिस्से माता पिता का वश वहुत ० वढेगा(।) इस अनन्तर पुलस्त्य मुनि से विस कन्या ० को एक पुत्र भया उसका नाम विश्रवा कर वि(-) ० ख्यात हूआ(।) वुसे अति सुशील देष भरद्वाज मु(-) ० नि ने अपनी वेटी व्याह दी(-) विस स्त्री से विश्र(-) ० वा को भी एक ही पुत्र हूआ वुसका नाम पिता ० ने कुवेर कर पुकारा वुसकी तपस्या से वहुत ० प्रसन्न हो व्रह्मा ने वुसे चढने को पुष्पक विमा(-) ० न दिया ओ वर दिया कि आज से धन के स्वा-० मी तुम ही को मैने किया (।) इस प्रकार जव व्रह्मा ० ने कहा तव कुवेर पुष्पक पर चढ अपने पि(-)० ता से भेट को आया वुन्हे प्रणाम कर निज त(-)० प का फल सुना कहने लगा(—) पिता विधाता ० ने वर तो मुजे वडा दिया पर रहने का स्थान न ० वताया तिस्से जहा किसी जीव का हिसा न ० होती हो वह जगह नित्य रहने को मुजे आप ० वताइऐ(।) विश्रवा वोल उठे(—)राक्षसो के रहने के ० लिये विश्वकर्मा की रची हूई लका नाम अति ० अपूर्व एक नगरी है विसे विष्णु के भय से त्या(-) ० गकर दानव सव पाताल लोक मे गये वह पु(-) ० री समुद्र वीच वसती है दुसरे किसी शत्रु का ० सामर्थ्य नही जो वुसे जा ले शके तिस्से वसने ० के लिये तुम वहा ही जाओ जव से दैत्य सव ० वुस पुरी से भाग गये है तव से अव तक उस ० नगर मे दूसरा कोई नही वसा है (।) इस भाति ० पिता की आज्ञा पाकर निदान कुवेर लका ० मे जा रहने लगा(।) इस अनन्तर कितने एक ० दिनो के वीते सुमाली नाम राक्षस फिरते फि(-) ० रते पाताल से मर्त्य लोक मे आ निकला ओ ० साक्षात लक्ष्मी देवी सी सुन्दरी कैकसी नाम ० अपनी पुत्री को साथ लिये आया(।) वह दैत्य कु(-) ० वेर को पुष्पक पर कही जाते हूए देष राक्षसो ० के हित निमित्त चिन्ताकर वेटी से कहने लगा(—) ० मैना तेरी यौवन अवस्था हो चुकी व्याह का ० समय वीता हूआ चला जाता है अस्वीकार ० करने के डर से वर लोग तुजसे व्याह की

प्रार्थ(-) ० ना नही कर शक्ते तिस्से विश्रवा मुनि वडे यो(-) ० ग्य है ओ व्रह्मा के कुल मे उत्पन्न जो वुनको ० तू अपना वर करे तो कुवेर ही समान अति ० सुदर ओ वडे वीर आपसे पुत्र तुजे होवे(।) यह ० सुन अछा कह कैकसी तुरन्त वहा से उठी ० ओ विस ऋषि के पास जा खडी हो लाज ० से नीचे शिर कर पाव की उगली से धरती प(-) ० र लगी लिखने तव मुनि ने विससे पूछा तू ० कौन है ओ किसकी स्त्री है ओ किसलिए ह्या ० आयी(।) वह हाथ जोड कर वोली आप ध्यान ० ही से समझ जाइऐ(।) सो सुन ध्यान से सव जा(-) ० न कर गोशाई कहने लगा(—) हमने तुम्हारा अ(-) ० भिलाष जाना अछा हमसे पुत्र तुझे होगे ० पर दारुण वेला मे तू आयी इस कारण दारु(-) ० ण राक्षस दो पुत्र तुजे होगे(।) वह गिडगिडा उ(-) ० ठी(—)महाराज तुमसे भी ऐंसे सुत होगे तो अति ० आश्चर्य है(।)फिर मुनि ने कहा(—)पीछे एक पुत्र ० और भी जनेगा सो परम साधु ओ राम की ० भक्ति मे तत्पर होगा(।) यो कह ऋषि ने विस क(-) ० न्या से व्याह किया(।)कितने एक दिनो के बीते स(-) ० मय पा कर वुस स्त्री को पहले रावण उत्पन्न ० भया जिसे दश तो माथ ओ वीश हाथ(।) वुस ० दारुण राक्षस के जनते ही धरती लगी काप ० ने ओ विनाश के कारण सव देषने आये(।) इस अ(-) ० नन्तर महापर्वत समान कुम्भ कर्ण उत्पन्न ० हुआ(।) जवकि कुछ वर्ष का वह हो चुका तव वु(-) ० से सुर्पनखा नाम एक वहन उत्पन्न हुई(।) इन तीनो ० के पीछे अति शान्त मूरति विभीषण का जन(-) ० म हुआ सो अपने नित्य कर्मधर्म मे वहुत सा(-) ० वधान भया विस का भाई दुष्ट कुम्भकर्ण स(-) ० दा व्राह्मण ऋषिन को पकड पकड खाए ओ ० विनके मास से निपट सतुष्ट रहे(।)इस प्रकार कै(-) ० कसी से विश्रवा मुनि को एक कन्या ओ तीन ० पुत्र उत्पन्न हुए इन सभो मे वडा पराक्रमी ० ओ लोगन को भयदायक रावण हुआ ओ ० प्राणीन को रोग की भाति जगत को दुखदेने ० के लिये दिन दिन वढने लगा(।) हे रामचन्द्र तुम ० अन्तर्यामी परमेश्वर हौ सव का हृदय जान ० ते हौ लीला के लिये मानुष रूप होकर निज ० महिमा से अति शोभायमान हो रहे हौ कौतु(-) ० क निमित्त तुम्हारे पूछने से राक्षसो की उत्प(-) ० त्ति मैने तुम्हे सुनायी ओ सुनाऊगा(।) मै तुम्हे ० जानता हू तुम चेतन रूप आदि नारायण हो मा(-) ० या कर अपना रूप छिपा मनुष्य हूऐ हौ मै यद्यपि ० मूढ हू पर तुम्हारी कृपा से तुम्हे पहचानता हू(।) ० इस भाति अगस्त्य मुनि की वाते सुन मुस्कुरा ० कर रामचन्द्र वोले(—)राक्षसो का जन्म जो तुम क(-) ० हते हो ओ सकल ससार जो दृष्ट आता है यि(-) ० ह सव माया का रचा हूआ भ्रम है एक मै सत्य हू ०मेरा कीर्त्तन इस भ्रम को दूर करता है यह तुम ० नीके जान लो०इति श्रीरामचरित्रे उत्तर(-)० काण्डे प्रथमोध्याय (।) १ (।) राम की वाते सुन फि(-) ० र अगस्त्य ऋषि वोले (—)एक समय पुष्पक पर ० हो पिता के दर्शन को कुवेर आया तहा अति ० शोभायमान ओ महाप्रतापी वुसे देष कैकसी ० तुरत रावण पास जा कहने लगी पुत्र देषो तो ० यिह कुवेर अपने तेज से कैसा प्रज्वलित हो रहा ० है तुम भी इसके तुल्य जिस प्रकार से हो शको ० सो यत्न करो(।) सुनकर दशानन वडा क्रुद्ध हूआ ० ओ झट प्रतिज्ञा कर वैठा कि थोडे ही दिनो मे कु(-) ० वेर समान कै इससे अधिक मै हूगा तुम अप(-) ० ने मन का सताप तजो यो कह भाइन समेत ० महा तप करने को तुरन्त वहा से उठा तो चला च(-) ० ला गोकर्ण नाम पर्वत पर आया तहा राजस ० तामस सात्विक अपना अपना

मनोरथ पूर(-) ० ण करने के लिये कठिन से भी कठिन तप कि ० जिससे सव लोग वडा दुख पावे करने को अ(-) ० लग अलग तीनो भाई वैठे गये ओ तीनो ने ० साथ ही दश सहस्र वर्ष तपस्या करी तिनमे ० महाधर्मात्मा ओ सत्यवादी विभीषण तो ० अन्त मे पास[1] सहस्र वर्ष एक ही पाव से खडे र(-) ० हे ओ रावण ने दश सहस्त्र वर्ष के वीच मे एक ० दीन भी कुछ अहार न किया ओ जव जव सह(-) ० स्त्र वर्ष पूर्ण होवे तव तव अपना एक माथ काट ० कर आगे मे होम कर डाले इस भाति नव सह ० स्र वत्सर वीत गये ओ नव माथ वह काट चूका ० जव कि दशवा महस्र का अन्त हूआ तव अप(-) ० ना दशवा शिर जो वह काटने को चाहा तो ही ० अति प्रसन्न हो व्रह्मा वुस के आगे आ प्रगट भ(-) ० ये ओ यह वचन कहने लगे पुत्र पुत्र मै तुज सें ० वहुत सतुष्ट हूआ जिसकी वाछा होए सो व(-) ० र तू मुजसे माग(।) सुन कर रावण वडा हर्षित भ(-) ० या ओ वोला जो मुजे वर दिया चाहते हो तो दे(-) ० वता असुर यक्ष किन्नर नाग सुपर्ण ये सव मे(-) ० रे वश मे रहे इनसे भी मेरा वध न कभी होवे य(-) ०ही मै तुमसे मागता हू ओ मनुष्य किस गिण(-) ० ती मे है ये तो मेरे लेखे तृण समान है(।) तव व्रह्मा ० ने कहा अछा यही होगा ओ जितने शिर तू ० ने आग मे होम किये सो फिर कर जो के तो तु(-) ० झे हो जावे[2] इस प्रकार रावण को वर दे प्रजाप(-) ० ति विभीषण से कहने लगे(—)वत्स तूने धर्म के ० लिये उत्तम तप किया अव वर माग क्या तेरे ० जी मे है(।) यिह सुन वुन को प्रणाम कर हाथ जोड ० विभीषण वोला महाराज मेरी मति सदा धर्म ० मे रहै ओ अधर्म मे कभू न मेरा जी लगे(।) विधाता ० ने प्रसन्न होकर कहा पुत्र तू वडा धर्मशील है ० जा यही होगा ओ यद्यपि तू नही मागता तो ० भी मैने तुजे वर दिया तू आज से चिरजीवी ० हूआ मेरे वर से कभी न तेरी मृत्यु होगी एैसे ० वुसे कह पुन कुभकर्ण के पास जा कहने लगे ० पुत्र तुम्भी वर मागो मै तुम्हारा अभिलाष ० पूरण करुगा (।) इस प्रकार तो विधि ने कहा प(-) ० र देवताओ की प्रार्थना से वुस दानव की जी(-) ० भ पर सरस्वती जो आकर वैठी थी सो वह अ(-) ० भागा वोल उठा कृपानिधान छ मास तो मै ० सोऊ ओ एक दिन उट कर भोजन करूँ(।) व्रह्मा ० ने कहा अछा एैसा ही होगा(।) इस भाति वुनती ० नो को वर दे विधाता अपने धाम को गया ० ओ कुम्भ कर्ण का वर सुन देवता लोग वहु(-) ० त हर्षाने(।) जव कि कुम्भकर्ण के मुह से निक ० ल कर सरस्वती देवलोक को गयी तव वह दु(-) ० ष्ट अपने मन मे वहुत लगा पछताने कि हा मे(-) ० रे मुख से क्या निकल गया जिसकी इछा ० न थी सोई वर मैने व्रह्मा से मागा(,)किसलि(-) ० ये दश सहस्र वर्ष तप किया (।) इस अनन्तर ० नातीओ को वर लाभ हूआ जान सुमाली ० निपट हर्षित हूआ तो अति निर्भय हो प्रह(-) ० स्त आदि निशाचरो को साथ लिये पाताल ० से तुरन्त रावण पास आया ओ वुसे गरे ल(-) ० गा माथ चूम यह वात कहने लगा पुत्र भाग्य ० से तुमने पर[3] पाया तो हमारा मनोरथ पूरण ० भया जिस विष्णु के डर से लका तज पाता(-) ० ल मे हम गये सो महाभय मिटा अव कहना ० हमे यिह है जिस लका मे हम लोग आगे र(-) ०

---

१ पाँच। २. उतने सिर पहले की तरह हो जायें, धड़ पर लग जायें। ३. वर।

हते थे विस पुरी को कि जहा तुम्हारे भाई कुवे (-) ० र अव आनन्द किया करते है मिलाप से[1] अ (-) ० थवा वल से अपने वश मे तुम्हे करना उचि (-) ० त है (—) राजान को भाई मित्र कौन (।) यिह सुन राव (-) ० ण वोला ऐसा वचन कभी मत कहो कुवेर तो ० हमारे पिता समान है (।) इस प्रकार जव दशमु (-) ० ख ने कहा तव प्रहस्त वुसे समझाने लगा ० शूरो को भाइन से प्रीति करनी क्या इसका ० वृत्तान्त सुनो मैं तुमसे कहता हू (—) देवता दान ० व ये दोनो कश्यप मुनि के सतान है पर आ (-) ० पस मे भैयारी की प्रीति तज अपने अपने ० हित के लिये परस्पर युद्ध किया करते हैं ति (-) ० स्मे लका को कुवेर से तुम छीन लो वह पुरी ० हम लोग की है हमसे देवताओ ने विसे हर ० लिया तो यह वैर आगे से चला आता है कुछ ० नया विरोध करने को हम नही कहते (।) इस प्र (-) ० कार जव वुसने कहा अतिक्रुद्ध हो तुरन्त त्रि (-) ० कूटाचल पर रावण गया तहा प्रहस्त दूत को भे (-) ० ज लका से कुवेर को निकलवा मत्रीन राक्ष (-) ० सन समेत आप सुख से रहने लगा (।) तव पिता ० की आज्ञा से लका नगर तज कुवेर कैलाश ० के शिखर पर गया तहा तपस्या से ऐसा शिव ० को सतुष्ट किया कि वुन से उसको परम मि (-) ० त्रता हो गयी तव अति प्रसन्न हो कैलाश प (-) ० र विश्वकर्मा से वनवा अलका नाम पुरी उन्हो (-) ० ने वुसे वसने को दी ओ दशो दिगपालो मे ए (-) ० क दिगपाल वुसे किया ओ वहा कुम्भकर्ण वि (-) ० भीषण समेत सव राक्षसो ने मिल कर ल (-) ० का का जाजा[2] रावण को किया तव वह दुष्ट रा (-) ० ज्य पर वैठ त्रिलोकी को लगा सतावने (।) कुछ ० दिन के वीते विद्युज्जिह्व नाम महा असुर से सू (-) ० र्पनखा नाम अपनी वहन का वुसने व्याह क (-) ० र दिया तिस अनन्तर दिति का पुत्र मय नाम ० दैत्य ने मन्दोदरी नाम निजपुत्री जो लोक मे ० एक सुन्दर थी रावण को व्याह दी और अमो (-) ० घ शक्ति भी वुसे दे डाली तव वैरोचन की वेटी ० को जिसका नाम ससार मे तृत्रज्वाला कर प्र (-) ० सिद्ध था आप रावण ने कुभकर्ण को व्याह दि (-) ० या ओ शैलूष नाम गधर्व राज की सरभा ना (-) ० म अति धर्मिष्ट एक लडकी थी वुसे विभीष-० ण को व्याह दिया (।) इस अनतर मदोदरी के ० मेघनाद एक पुत्र उत्पन्न हूआ वुस ने जन (-) ० ते ही मेघ सा महा चीत्कार शव्द किया इस का (-) ० रण सव लोगो नो[3] मेघनाद वुसका नाम र (-) ० ख्खा तव कुभकर्ण ने रावण से जा कहा भाई ० मुजे नीद वहुत सतावती है एक जगह वता दो ० तो चुपचाप जाकर मै वहा सो रहू सुनते ही ० रावण ने एक वडा सा घर वनवा दिया वुसमे ० वह मूढ जा सो रहा (।) वुस के सोऐ पर देव दान (-) ० व किन्नर मनुष्य ऋषि इन सभो को रावण ० महा दुख देने लगा ओ देव मनुष्यो की कन्या ० हरने वुस का महाउत्पात सुन दूतो से कुवेर ने ० रावण को वरज भेजा कि एत्ता अधर्म मत क (-) ० रो सो सुन वह अति क्रुद्ध हूआ तो ओही अ (-) ० लका मे जा कुवेर को जीत पुष्पक विमान वि (-) ० ससे छीन लिया फिर यम ओ वरुण से जा भि (-) ० डा उन्हो को भी वीच सग्राम मे जीत निदान इद्र ० को मारने के लिये तुरन्त स्वर्ग लोक मे जा रहा ० तहा देवतान समेत इन्द्र ओ रावण से वडी ० लडाई हूई तव इन्द्र ने इसे पकड कर वाध रख्खा (।) ० सो समाचार सुन महाप्रतापी मेघनाद चढ ० आया ओ महा

---

१. मेल से। २. राजा। ३. ने।

सग्राम कर सव देवतान को जी(-) ० त सुरपति को वाधे और पिता को वधन से ० छोडाये लिये फिर लका मे चला आया(।) तहाँ ० जा ब्रह्मा ने इन्द्र को छोडवा दिया ओ मेघना(-) ० द को वहुत वर दे पुन अपने पद को आये त(-) ० व क्रम क्रम सव लोक को रावण ने जीत लिया ० ओ कैलाश पर्वत को हाथो से उठा कर तौला ० तव कोप कर महादेव के गण नन्दीश्वर ने वु(-) ० से श्राप दिया अरे दुष्ट तूने वडा उत्पात मचा(-) ०या जा तेरा विनाश वानरो ओ मनुष्यो से हो(-) ० गा(।) इस प्रकार नन्दीश्वर ने कहा पर उनकी वा(-) त० से रावण तनिक भी डरा नही ओ अपने ० जी मे समझा कि इसके वकने से मेरा कुछ हो ० ने का नही(।) यो कह तुरत सहस्रार्जुन के नगर ० मे गया तव वुन्होने इसे पकडकर वाधा तहा ० पुलस्त्य मुनि ने आकर इसको छोडवा दिया ० वहा से छूटते ही वाली को मारने के लिये कि(-) ० ष्किधा मे रावण आया तव वाली ने इसे पकड ० अपने काष मे लटका लिया ओ सारी पृथ्वी प (-) ० र्य्यटन कर फिर छोड दिया(।) तव अति प्रसन्न ० हो वाली से मित्रता कर रावण ने सव लोक नि(-) ० ज वश मे किये इस प्रकार से मेघनाद समेद द(-) ० शग्रीव की प्रभुता वढी तिस दुप्ट को ओ महा(-) ० पर्वत समान कुभ कर्ण को रण मे तुमने मारा ० ओ मेघनाद को लक्ष्मण जी ने पछारा तुम ० जगत के आदि कर्त्ता साक्षात नारायण हो ० स्थावर जगम ये सव तुम्हारे सरूप है तुम्हारे ० नाभिकमल से ब्रह्मा उत्पन्न हूआ ओ मुख ० से अग्नि वाहो से सव लोकपाल आषो से चन्द्र(-) ० मा और सूरज कानो मे सव दिशा नाक से वा(-) ० यु ओ अश्विनीकुमार ये दोनो उत्पन्न हूए ओ ० जाघ, ० जानू ० ठेहुन० जघन इन्हो से भुवन् आदि ० लोक उपजे ओ तुम्हारे पेट से चारो समुद्र स्त(-) ० न से इन्द्र वरुण वीर्ज से सनकादिक चारो वा ० लखिल्या ओ लिंग से यम गुद से मृत्यु क्रोध ० से रुद्र हड्डियो से सर्व पर्वत केश से मेघ रोमो से ० सकल औषधी औ तुम्हारे नखो से देवता आ(-) ० दि उत्पन्न हूए(।) तुम विश्वरूप परमेश्वर हो व्र(-) ० ह्मा विष्णु महेश आदि नाना रूप होकर तुम ० ही भास रहे हौ(।) अग्नि जो तुम्हारा एक रूप है वु(-) ० सके आश्रय से देवता सव यज्ञ मे सदा हविष्य ० भोजन किया करते है चर अचर रूप सकल स(-) ० सार तुमही ने सृजा है ओ तुम्हारे ही अवल(-) ० म्ब से वे सव जीवते है ओ जैसे दूध मे घी व्याप र(-) ० हा है वैसे ही सव वस्तुन मे तुम छा रहे हौ तुम्हा(-) ० रे तेज से चद्रमा सूर्य प्रकाश होते हैं ऐसी कोई व(-) ० स्तु नही है जिसमे तुम नही हौ पर ज्ञान की दृष्टि ० से लक्षित होते हौ ओ विज्ञान की दृष्टि वाले तु(-) ० म्हे नही देषते जैसे अधा प्राणी सूर्य को नही ० निरष शकक्ते(।) तुम्हारी कृपा से योली[1] लोग अप(-) ० ने हृदये ही तुम्हे देषते हैं(।) यो कह फिर वोले महा(-) ० राज मैने तुम्हारे आगे ढिठाई की वातें वहुत ० की है तुम क्षमा करो ० इति श्री रामचरित्रे उ(-) ० त्तरकाण्डे द्वितीयो-ध्याय (।) २ (।) इस भाति जव ० अगस्त्य मुनि कह चूके तव राम ने वुन से पूछा ० महाराज मैने सुना है कि वाली सुग्रीव ये दोनो ० इन्द्र सूर्य के वीज से उत्पन्न हूऐ है तिससे वुन्हो ० का जन्म मै तुमसे सुना चाहता हू(।) मुनि कहने ० लगे कि मेरु नाम सुवर्ण का एक पर्वत है उसके ० वीच

---

१. योगी।

शृग पर जो मणि सा प्रकाश हो रहा है शो ० योजन की विरतार व्रह्मा की एक सभा है तहां ० चतुर्मुख व्रह्मा अपने ध्यान मे एकवेर मगन ० हो रहे थे सो वुन की आषो से आनन्दाश्रु वह ० चला तव उन्होने उसे हाथ मे ले कुछ जी मे शो (-) ० च कर धरती पर फेक दिया वह पृथ्वी पर गिर (-) ० ते ही वडा सा एक वानर हो गया तव व्रह्मा ने उ (-) ० से कहा पुत्र इस जगह से सब प्रकार का भोग है ० तिससे कुछ दिन तो मेरे समीप ह्या तुम वसो ० पीछे तुम्हारा वहुत भला होगा यिह सुन वहा ० वह रहने लगा फिर कितने दिनो के वीते ० फलमूल के लिये अपने घर से एक वेर वुस प (-) ० हार पर वह निकला सो कुछ दूर जाकर देषता ० क्या है कि अति सुन्दर एक वावली है ओ मणि (-) ० न की शिलो से विसके घाट वाधे हूऐ है यह देष ० कर वह वानर उसमे पानी पीने को गया तहा ० निज परछाही देष दूसरा वानर जान ओही ज (-) ० ल मे कूद पडा वहा कपि को न देष कर फिर शीघ्र ० जो वाहर निकला कि तो ही अति सुदरी नारी ० का सरूप वह हो गया तव अपने को स्त्री सरूप ० देष वहुत चकृत हूआ इस अनन्तर दोपहर के ० समय चतुर्मुख व्रह्मा की पूजा कर सुचित हो इ (-) ० न्द्र विस वावली पर आन पहुचे तो वहा उस नारी ० को देष कामदेव के वाणो से ऐसे पीडित हूए कि उ (-) ० न्हे वीर्ज पतन हूआ सो वीर्ज वुस अवला के वालो ० मे जा गिरा वुसी से वाली उत्पन्न भया तव वुस को ० सुवर्ण की माला दे इन्द्र अपने धाम को गये कि इत (-) ० नही मे फीरते फीरते सूर्य भी वहा आ निकला ० ओ वुस कामिनी को देष अति कामवश हो वुस ० ने भी उसके गले मे वीर्ज त्याग किया वुस से सुग्री ० व तुरन्त उत्पन्न हूआ विस के साथ सहायता के ० लिये हनूमान को रष सूर्य्य देवता स्वर्ग लोक ग (-) ० या तव दोनो पुत्रो को सग लिये वह स्त्री कहू जा ० कर सो रही (।) जद प्रभात भयी तद आगे की भाति ० फिर वह पुरुष हो गयी तव लडको समेत फल ० मूल लिये व्रह्मा के आगे जा खडा हूआ व्रह्मा ने ० वुसे वहुत आश्वासन किया ओ एक देवदूत को ० वुलाकर कहा कि विश्वकर्मा की वनायी हूई कि (-) ० ष्किन्धा नाम एक नगरी है वहा सव प्रकार के भो (-) ० ग विलास है ओ देवताओ का भी गम्य नही है त (-) ० हा इस वानर को मेरी आज्ञा से ले जाकर सिं (-) ० हासन पर विटला राज्य का तिलक तुम दो ओ सा (-) ० तो द्वीप के जितने वडे वडे वानर है सो सव इस ० की आज्ञा मे रहे जव धरती के भार हूए राक्षसो ० के वध निमित्त रामरूप हो साक्षात नारायण पृ (-) ० थ्वीतल मे अवतार लेगे तव सव वानर विन ई (-) ० श्वर की सहायता जा करेगे (।) यिह सुनते ही देव (-) ० ताओ का वुह दूत विस वानर को किष्किधा मे तु (-) ० रत ले आया ओ वहा का उसे राजा कर फिर आ (-) ० प व्रह्मा के पास चला गया (।) तव से वह किष्किधा (-) ० नगरी वानरो की राजधानी हूई (।) हे रामचन्द्र सव ० के ईश्वर तुम हौ जो लीला कर मनुष्य सरूप हो इ (-) ० स पृथ्वी का सकल भार तुमने दूर किया तुम सव ० घटवासी अखण्डानन्द पूरण व्रह्म हौ तुम्हा (-) ० रे इस पराक्रम मे क्या आश्चर्य्य क्यूकि जो प्रा (-) ० णी तुम्हारे इस रूप को जानता है वह सारी सृष्टि को ० सहार कर शक्ता है ओ जो साक्षात आप है वि (-) ० न की प्रभुता मे क्या अचरज पर लोगन के पाप दू (-) ० र करने के लिये ओ वुन को सुख देने के अर्थ स ० ज्जन लोग तुम्हारा यश वषानते है (।) तुम्हारे उप (-) ० कार निमित्त वाली सुग्रीव का जो जनम हूआ ० विसका कीर्त्तन जो नर करता है सो सव पातक ० से छूट मुक्ति धाम को जाता है (।)

इतनी कथा कह ० फिर अगस्त्य मुनि वोला(—)हे रामचन्द्र जिस का(-) ० रण दुष्ट रावण ने सीता का हरण किया सो कथा ० अव मै तुमसे कहता हू सावधान होकर सुनो(-) ० आगे सत्य युग मे ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार ऋषि ० कहू एकान्त स्थान मे वैठे थे तहा जा नम्र हो राव(-) ० ण ने विन से पूछा महाराज इस ससार माह देव(-) ० तान मे वडा वलसान औ श्रेष्ठ कौन है जिसके ० आश्रय से देवता सव रण के वीच मे शत्रुन को ० जीत लेते हैं ओ ब्राह्मण लोग किसका नित्य ज(-) ० प करते है ओ योगी सव किसका ध्यान यिह सम(-) ० झाकर आप मुजसे कहिऐ जो मेरे जी का सदेह ० जावे तव योग की दृष्टि से रावण की मनसा जान ० सनत्कुमार यह वचन वोले(—)सुनो पुत्र जो ईश्वर ० जगत के कर्त्ता है ओ जिनका जनन मरण नही ० होता ओ सुर असुर जिन्हे नित्य प्रणाम करते है ० ओ जिनके नाभिकमल से ब्रह्मा निकला ओ ० जिन्होने स्थावर जगम सरूप इस ससार को सृ(-) ० जी है विन्ही के आश्रय से सग्राम मे देवता लोग ० शत्रुन को जीतते है ओ योगी सव उन ही का ० ध्यान नित्य करते ओ विन्ही को ब्राह्मण लोग स ० दा जपते है(।) इस प्रकार महर्षि की वाते सुन फिर ० दशानन ने विनसे पूछा भला अव यिह मुजसे ० कहिऐ कि जो दैत्य दानव राक्षस विष्णु के हाथ ० मृत्यु पाते है वे मर कर किस गति को पहुचते है(।) ० मुनि ने उत्तर दिया कि जो तो देवतान के हाथो से ० मारे जाते है सो स्वर्ग मे जा उत्तम भोग करते है औ(-) ० र जव भोग हो चुकता है फिर मर्त्य लोक मे आ ० जनमते हैं ओ अपने आगे के कमाऐ हुऐ पुण्य ० पाप से जीते मरते ओ जो विष्णु के हाथ मृत्यु पा ० ते हैं वे वुन्ही मे मिल जाते हैं विनका जनन मरन ० फिर न कभ् होता है(।) मुनि के मुह से इतनी वात सु(-) ० न कर रावण वहुत हर्षित भया ओ जी मे ठहरा ० या कि विष्णु के साथ अवश्य मै लडूगा तव वुस का मनोरथ जानकर ऋषि ने वुससे कहा पुत्र ० तेरा अभिलाष पूरण होगा इसमे कुछ सदे(-) ० ह नही पर कुछ दिन धीरज करना होगा यो क(-) ० ह फिर सनत्कुमार वोले हे रावण यद्यपि वे भग(-) ० वान अलष निरजन है वुन का रूप कुछ नही तो ० भी माया का जो विनका सरूप है सो मै कहता हू कि ० पृथिवी ओ समस्त जगत के आधार शेषनाग० ओ सकल देवता सातो समुद्र चन्द्रमा सूर्य्य अग्नि ० वायु वरुण इन्द्र मेघ काल मृत्यु ब्रह्मादि रुद्र दिन ० रात घडी प्रहर क्षण पशु पक्षी मनुष्य असुर आ(-) ० दि जितने स्थावर जगम प्राणी हैं सो सव ईश्वर ही ० के सरूप है वे ही सनातन परमातमा नाना रूप हो ० क्रीडा कर रहे है ओ कुन्दन वर्ण लक्ष्मी को वाये ० अग मे लिये विजली सा पीताम्बर पहने नील ० कवल समान श्याम सुन्दर हो सव ठाव विराजते ० है पर वुनकी कृपा विन देव दानव आदि कोई वि(-) ० न्हे देष नही शक्ता(।) कितनी ही पूजा पाठ जज्ञ दा ० न तपस्या कोई करे पै विना अनुग्रह वुनका दर्श(-) ० न कभी होने का नही ओ जो वेदान्त शास्त्र पढ ० ज्ञान पा निष्पाप हो भगवान मे लीन हो रहे हैं ० वे भक्त जन वुन का दर्शन पाते है(।) हे रावण तू स(-) ० तोष कर त्रेता युग मे देव मनुष्यो के हित के लिये ० इक्ष्वाकु के कुल मे वे ही नारायण रामरूप हो अ(-) ० वतरेंगे ओ पिता की आज्ञा से स्त्री भाई समेत द ० डकारण्य मे जायेगे तव उनका दर्शन तू पावेगा(।) ० यह राम का समाचार विस्तार कर मैने तुजे कह सु(-) ० नाया सीता सहित विनको भक्ति से तू भज(।)इस ० प्रकार जव सनत्कुमार ने कहा तव ध्यान कर मूर(-) ० ख रावण ने अपने मन मे ठहराया कि मुक्ति के ० लिये राम से

अश्व' मैं विरोध करूगा इस कारण ० हे रामचन्द्र तुमसे अपने वध की आकाक्षा कर ० सीता को रावण हर ले गया था सो वुस का मनो(-) ० रथ आपने पूरण किया इस कथा को जो नर ० सुने सुनावे वुसका आयुर्वल वढता है ओ जिस ० की कभी हानि नही सो धन वुसको होता है ० इति श्री रामचरित्रे उत्तरकाण्डे तृतीयोध्याय (।) ० इतनी कथा कह फिर अगस्त्य मुनि वोले(—) हे रा(-) ० मचन्द्र एक समय व्रह्मलोक से नारद मुनि चले ० आते थे ओ लोको मे फीरते फीरते रावण भी आ(-) ० ता था सयोगन दोनो से भेट हो गयी तव देष क(-) ० र रावण ने नारद को प्रणाम किया ओ पूछा महारा(-) ० ज तुम तो तीनो लोक का समाचार जानते हौ ति(-) ० स्से यह वताओ कि मुजसे लडने जोग्य महावली ० सव कहा है विन वीरो से युद्ध किया चाहता हू त(-) ० व वडी देर तक शोच कर ऋषि वोल उठे स्वेत द्वी(-) ० प के रहने वाले लोग वडे शूर है ओ देषने मे भी ० वडे लम्बे चौडे हैं तिस्से तुम वहा ही जाओ जो नर ० विष्णु की पूजा मे लीन रहते हैं ओ वुन के हाथ ० जिनका वध होता वे ही लोग विस द्वीप मे जा ज(-) ० नम लेने हैं विनको सुर असुर कोई नही जीत ० शक्ता(।) यिह सुनते ही मोछो पर हाथ फेर मत्री(-) ० न समेत पुष्पक पर तुरन्त रावण चढा ओ विन ० वीरो से लडने के लिये स्वेत द्वीप को चला जव स(-) ० मीप जा पहुचा तो उस द्वीप के तेज से अति व्याकु(-) ० ल हो पुष्पक एक डेग भी चल नही शके तव मत्री(-) ० न सहित विमान को ओही तज पद चार ही एके(-) ० ला जो रावण विस द्वीप के भीतर को चला है तो ही ० एक किसी दासी ने जो अनेक उत्तम स्त्रीन के सा(-) ० थ थी रावण का हाथ पकड लिया ओ पूछा अरे ० भैया तू कौन है ओ किसने तुझे यहा भेजा है यिह ० हमे वता(।) यो कह कौतुक साथ आपसे ये वे सव वहु(-) ० न लगी हसने तव किसी किसी प्रकार से विन्हो के ० हाथो से छूटकर रावण फिर आया ओ वुन स्त्री(-) ० ओ का पराक्रम देष अति आश्चर्य मान जी मे ठ(-) ० हराया कि विष्णु के हाथ मृत्यु पाय वैकुण्ठ धाम को ० मैं जाऊगा अव जिसमे वे मुजसे क्रुद्ध होवे सो ० काज मैं करू (।) यिह मन मे ठान तुमको परमे-श्वर प(-) ० र जान कर सीता को रावण हर ले गया पर तुमसे ० अपने वध की आकाक्षा कर माता की भाति जा(-) ० नकी जी को पालता था(।) हे रामचन्द्र तुम भूत भवि(-) ० ष्य वर्तमान तीनो काल जानते हौ ओ सव के हृ(-) ० दय के साक्षी हौ मेरे भक्त जन मेरी कथा गाय कृ(-) ० तार्थ होवे इसलिए सकल क्रिया करते हो(।) इस ० भाति श्रीरामचन्द्र की स्तुति कर विन से पूजि(-) ० त हो मुनिन समेत अगस्त्य ऋषि अति हर्षित ० होकर अपने आश्रम को गये तव सीता सहित ० भाई मत्रीन के साथ श्री रघुनाथ जी घर मे वस ० कर आनन्द विहार करने लगे ओ यद्यपि वि(-) ० षय मे अशक्त थे तो भी स्त्री समेत वुसे लगे भो(-) ० गने ओ हनूमान आदि वानर सव विन दोनो ० भाईन की नित्य सेवा टहल करने(।) इसमे एक दि(-) ० न आगे की भाति पुष्पक विमान फिर राम पा(-) ० स आया ओ यह वचन लगा उनसे कहने महा(-) ० राज तुम्हारे ह्या कुवेर ने मुजे भेजा है यिह कह क(-) ० र के कि हे पुष्पक पहले रावण ने तुम्हे जीता ति(-) ० स पीछे रामचन्द्र ने तिस्से जव तक ससार मे वे वसें ० वैकुण्ठ को न जाये तव तक

---

१. अवश्य।

वुन्ही को तुम जा ढो(-) ०ओ इसलिये मै तुम्हारे पास आया हू(।) सुन क ० र रामचन्द्र वोले जव तुम्हारा स्मरण मै करू तव ० मेरे समीप तुम आइओ अव मेरी आज्ञा से ० अन्तर्धान होकर सव ठाव रहो यह सुनते ही ० विमान अन्तर्धा न हो गया(।) रामचन्द्र भी भाई ० न मत्रीन समेत नीते[1] से सव राज्य काज लगे ० करने (।) राम के राज्य करते हूए पृथ्वी मे सव प्रका(-) ० र के विरवान वहुत उपजने लगे ओ वृक्ष फ(-) ० लने लोग सव देवतान की भक्ति मे तत्पर हो ० ने स्त्री जन निज स्वामी को देवता समान मा(-) ० नने राम के धर्मराज्य से किसी ने पुत्र का मरण ० नही देषा जहा कहू कुछ काम काज आ लगे ० तहा वानरो मत्रीन समेत सीता को सग लिये० पुष्पक विमान पर चढ कर आप रामचन्द्र जा ० ये आवे ओ जो मनुष्य से साध्य नही सो सो काम ० किया करे(।) एक दिन की वात यो है कि किसी व्राह्म(-) ० ण का वालक मर गया वह वुस मृत को लिये व(-) ० हुत रो पीट रहा था उसे देष कर राम ने अपने मन ० मे विचारा कि मेरे राज्य मे वाप के आगे पुत्र नही म(-) ० रता यिह क्या कारण है कि इसका वालक मरा(।) यि(-) ० ह जी मे शोच ध्यान कर देषे तो एक वन के वीच शू(-) ० द्र तप (।) कर रहा है तव विचारा कि शूद्र को तपस्या क(-) ० रने की आज्ञा नही ओ यह मूरख हठ से करता ० है तो हो न हो इसीके पाप से विप्र का लडका मरा ० है(।) यो ठहरा विस वन मे जा शूद्र को मार स्वर्ग वा(-) ० स विसे दे द्विज के पुत्र को जिला दिया(।) फिर कुछ ० दिन के वीते सव लोगो के उपकार के लिये को(-) ० टिन शिवलिग की स्थापना करी ओ जो मनु(-) ० ष्यन को देषने मे भी न आये होगे विन भोगो से ० सीता को दिन दिन अति सन्तुष्ट करते हूए ध(-) ० रम से प्रजा को लगे पालने ओ सव का पाप दू(-) ० र करण हारी निज कथा सगरे लोक मे विस्तार क(-) ० रने(।) इस प्रकार माया कर मानुष सरूप हो श्री राम(-) ० चन्द्र ने दश सहस्र वर्ष विधि से राज्य किया ओ ० एक सीता विन दूसरी किसी स्त्री का मुख न देषा ० ओ गृहस्थाश्रम मे रह कर अछी रीति लोगन ० को शिषलायी(।) जव दश सहस्र वर्ष का अन्त हो ० चूका तव एक दिन पुष्पवाटिका वीच जहा सव ० प्रकार के भोग थे किसी एकान्त मन्दिर मे जा स'(-) ० कल भूषण पहने प्रसन्न वदन हो श्रीरामचन्द्र ० सुथरे से पलग पर शोये थे ओ नीलमणि स(-) ० मान शोभ रहे थे तहा सव आभरण से भूषित ० हो कमलनयनी सीता जा विन का पाव दवा रही ० थी सो आपस मे नाना प्रकार की वातचित कर ० निदान यह वचन वोल उठी हे त्रिलोकी नाथ देव(-) ० न हू के देव परमेश्वर वैकुण्ठ मे आने के लिये दे(-) ० वताओ ने ऐकान्त मे आकर मुजसे वहुत प्रा(-) ० र्थना करी है कि वैकुण्ठ तज हमे विसरा तुम्हे ० साथ लिये श्री रामचन्द्र पृथ्वीतल मे आ वस ० रहे है वुन विना सगरे सुर लोक शून्य हो रहे है ० तिससे जो तो वैकुण्ठ मे पहले तुम आओ तो ० रामचन्द्र भी वहा आवेगे ओ हम लोगन को ० सनाथ करेगे इस भाति देवताओ ने मुजसे व(-) ० डी विनती की है ओ मै भी तुमसे प्रार्थना करती ० हू कि शीघ्र वहा चलिए यिह सुन क्षण एक ० ध्यान कर रामचन्द्र वोले इसका उपाय यिही है ० कि झूठमुठ का अपवाद लगा मै तुमको वन ० मे छोडवा दूगा तहा वाल्मीकि मुनि के आश्रम ० मे इस गर्भ से जो अव मै तुम्हे देषता

---

१. नीति से।

हू दो कुमा(-)०र जन्मेगे वुन्हो को लिये फिर तुम मेरेपास आ(-) ० इओ तद लोगो के विश्वास के लिये मै तुमसे ० दिव्य कराऊगा तहा तुम्हारा दुख देष पृथ्वी फ(-)०ट जायेगी तव उसी पथ से हो कर वैकुण्ठ तु(-) ० म जाइओ विस पीछे मै भी वहा निश्चय आऊ(-)०गा ऐसे शिषा पढा कर रामचन्द्र ने जानकी जी ० को मदिर भितर भेज दिया(।) तव मत्रीन समेत ० वैठे हूऐ राम के पास इष्ट मित्र सव आन पहु(-) ० चे तो भाति भाति की कथा कह लगे सव हसने ० ओ राम को हसाने इसमे प्रसग पाकर राम ने ० विजय नाम एक सखा से कहा ऐ मित्र तुम ० से यिह पूछता हू कि इस नगर के ओ देश के ० लोग सव मेरा अथवा सीता कौशल्या का अ(-) ० थवा केकयी ओ मेरे भाईयो का क्या भला वु(-) ० रा कहते है तुम्हे मेरा शपथ है जो तुम इसमे ० कुछ छिपाओ(।) वह वोला महाराज सच पूछ(-)०ते हो तो लोग सव तुम्हे यिह कहते है कि राम ० ने वडा वडा कठिन कठिन काम किया पर रावण ० को मार निर्लज्ज हो सीता को घर मे लाये ० यिह वहुत अनुचित किया(।) वुसके साथ कि ० जिसे ऐकान्त वन मे से दुष्ट रावण हर ले गया ० भोग करने मे कैसा सुख राम के हृदय मे होता ० होगा(।) ऐसी स्त्री को जो विन्होने सग्रह किया तो ० वुन को देषकर हमलोगन की नारी सव भी कु(-) ० कर्म करावेगी सो हमे अवश्य सहना होगा क्यू ० कि जैसा राजा उसके प्रजा सव भी वैसे ही होते ० है(।)इस प्रकार सखा की वाते सुन अपने लोगन ० से भी राम ने पूछा वे सव भी वोले हा जो कहते ० है सो सच है इसमे कुछ सदेह नही(।) तव श्रीराम ० चन्द्र ने विजय आदि सव सुहृदो को वहा से वि(-) ० दाकिया ओ लक्ष्मण को वुलाकर कहा कि सी(-) ० ता के लाने से लोक मे वडा अपवाद मेरा हूआ ० तिससे वडे तडके रथ पर चढा वाल्मीकि के आ(-) ० श्रम मे उसे जा छोड आओ इसमे जो कुछ वो(-) ० लोगे तो मुजे मारने की हत्या तुम्हे होगी सुनकर ० मारे डर के प्रभात ही लक्ष्मण जी उठे ओ सुम(-)त्र० के साथ सीता को रथ पर लिये वीच वन मे वा ० ल्मीकि के आश्रम समीप ले आये तहा रथ से वु ० से उतार यह वचन कहने लगे कि लोकापवाद के ० भय से राम ने तुम्हे वनवास दिया है अव से इस ० ऋषि के स्थान मे तुम रहो हे माता इसमे हमारा ० कुछ दोस नही हम क्या करे(।) ऐसे कह जानकी को ० तज शीघ्र लक्ष्मण जी राम पास आये तव अ(-) ० नाथ की भाति सीता वहुत लगी रोने सो समाचा(-) ० र शिष्यो के मुह से सुनकर वाल्मीकि ऋषि दिव्य ० दृष्टि से सव जानकर सीता, को अति आदर सा(-) ० थ अपने स्थान मे ले आये ओ विधि से उन्हे ० पूजा वहुत वुझा समझा सुचित कर सकल हो(-) ० नी विचार ऋषिन की स्त्रीन को वुनका हाथ प(-) ० कडा यह वचन लगे कहने कि देषिओ ये राम ० की भार्या साक्षात लक्ष्मी है तुम सव मन लगा क[1] ० कर इनकी रक्षा कीजो(।)तव नारायण की स्त्री जा(-) ० न वाल्मीकि की आज्ञा से ऋषि पत्नी सव जान(-) ० की को आदर से लगी रषने ओ भक्ति भाव से ० दिन दिन पूजने ओ वहा सीता के विरह से श्री राम-) ० मचन्द्र ओ आदि देव परमात्मा थे निपट व्याकु(-) ० ल भये तो सव भोग विलास तज ससार से महा(-) ० उदास हो मुनि लोगन की भाति नेम आचार ० करने लगे ० इति श्री रामचरित्रे उत्तरकाडे ०

---

१ 'क' अनावश्यक।

चतुर्थोध्याय (।) ४ (।) इस अनन्तर यमुना तीर के ० वासी असख्य ऋषि लोग च्यवन मुनि को आ(-) ० गे कर लवण नाम राक्षस के भय से एक दिन रा(-) ० म पास आये इसलिये कि ये हमारा भय मिटावे(-) ० गे तव रामचन्द्र ने उन्हो को भली भाति से पू(-) ० जा ओ अति आदर साथ पूछा महाराजो अ(-) ० व अपने आगमन का कारण कहो मैं धन्य हू ० जो कृपाकर तुमलोग मुझे दर्शन देने को यहा ० आये तुम्हारा कैसा ही कठिन काज होवेगा तो ० भी मैं करूगा मुज भृत्य को आज्ञा करो व्राह्मण ० लोग मेरे देवता है ओ कुलपूज्य(।) यिह सुन अ ० ति हर्षित हो च्यवन मुनि वोले कि आगे सत्य ० युग मे देव व्राह्मणो के पूजक वडा धर्मात्मा म(-) ० धु नाम एक महा दैत्य था वुसे अति सतुष्ट हो ० कर महादेव ने एक अति उत्तम त्रिशूल दिया ० ओ कहा कि जिसको तू इससे मारेगा वह ओही भ ० स्म हो जायेगा इस प्रकार से तो वुसे वुह शस्त्र ० हाथ लगा ओ रावण की छोटी वहन कुभी न(-) ० सी उस की भार्या थी उसी स्त्री से महा पराक्रमी ० लवण नाम राक्षस उत्पन्न हूआ वह देवताओ ० व्राह्मणो को पकड पकड मारता है विस दुष्ट से ० अति पीडित होकर हम लोग तुम्हारी शरण मे ० आये है तुम वुस चडाल को जी से मारो(।) रामचद्र ० वोले महाराज आप लोग तनिक मत डरो लव(-) ० ण को जडमूल से हम उखडवा डालते है तुम लो(-) ० ग चिन्ता जिन करो(।) ऐसे ऋषिन को वहुत कह सुचित ० कर फिर कौशल्या नन्दन अपने भाईन से क(-) ० हने लगे कि लवण राक्षस को मार कर इन व्रा(-) ० ह्मणो को अभयदान अव को करेगा सो मुजे ० सुनाओ यिह सुन हाथ जोर भरत वोले महा(-) ० राज मैं ही जाऊगा आप आज्ञा कीजे(।) इतने मे ० शत्रुघ्न ने राम से प्रार्थना करी कि महाराज रा(-) ० क्षसो की लडाई मे लक्ष्मण जी ने वडा वडा का(-) ० म किया है ओ तुम्हारे पीछे नन्दी ग्राम मे जा भ(-) ० रत ने वहुत दुख भोगा है तिसमे लवण को मा(-) ० रने के लिये मैं ही जाऊगा ओ तुम्हारे प्रताप से ० विस दैत्य को वीच रण मे मारूगा आप किसी ० वात का सदेह न कीजे(।) सो सुन राम ने शत्रुघ्न ० को अक मे लगा लिया ओ कहा कि अछा तु(-) ० म जा वुसे मारो हम अभी तुम्हे मथुरा के राजा०करते है यो कह लक्ष्मण से तुरन्त सव सामग्री०मगवायी ओ यद्यपि शत्रुघ्न नही चाहता था तो ० भी प्रीति से वुसे राज्य का तिलक करा एक वहु(-) ० त अनूठा वाण दे यह वचन राम ने कहा भैया ० इसी शर से लवणासुर को जो लोक का महा ए(-) ० क कटक है जा मारो वह अपने वाप के त्रिशूल ० को पूज घर मे उसे रख प्राणीन को पकड पक ० ड खाने के लिये ओ वुन्हो के वध निमित्त सदा ० वन मे जाता है जव तक वुह वन मे रहे घर मे न ० आवे तव तलक धनुष वाण लिये विसकी न ० गरी के द्वार पर तुम खडे रहिओ जव उह वहा ० आवेगा ओ क्रुद्ध होकर विना शूल ही तुमसे ल ० डने लगेगा तव अवश्य मारा जायेगा(।) इस प्र(-) ० कार से महाक्रूर लवणासुर को मार विसकी ० पुरी को मधुवन मे फिर कर वसा मेरी आज्ञा से तुम वहा का राज्य कीजो पाच सहस्र घोडे अ(-) ० ढाई शौ रथ छ शौ हाथी तीश सहस्र तैलगे ० ये सव पीछे से तुम्हारे पास जायेगे अभी तुम ० एकेला ही जा उस राक्षस को मारो(।) ऐसे कह मा(-) ० थ चूम मुनिन समेत आशीस कर रामचन्द्र ने ० शत्रुघ्न को विदा किया तव वे वहा गये ओ जो डौ(-) ० ल राम ने वताया था विसी प्रकार से युद्ध मे मधु ० के पुत्र को मार मथुरा नगर मधुवन मे फिर क(-) ० र वसा दान मान से विसको वडा विस्तार कर

ल(-) ० गे वहा राज्य करने (।) यिह तो यहा का समाचार है ० ओ वहा वाल्मीकि जी के आश्रम मे सीता को ० दो पुत्र उत्पन्न हूऐ तव वाल्मीकि मुनि ने विन ० दोनो मे वडे का कुश ओ छोटे लड़के का लव ० नाम रष्षा जव कि वे दोनो सीता के पुत्र क्रम क्र(-) ० म सव विद्या पढ के पण्डित हूऐ ओ वेदाध्य(-) ० यन मे तत्पर तद वेद का अभिप्राय जानने के ० लिये सारा रामायण कि जिसे महादेव ने पार्व(-) ० ती को सुनाया था ऋषि ने विन्होको पढा दिया (।) ० तव वे दोनो वालक जो अश्विनीकुमार से सु(-) ० दर थे ओ गाने वजाने मे अति निपुन वीना लि(-) ० ये मधुर स्वर से गाते हूऐ वन वीच मुनिन के स(-) ० माजो मे जहा तहा फीरने लगे (।) विनको देष क(-) ० र मुनि लोग आपस मे यो वतराया करे कि दे(-) ० षो हम लोग चिरजीवी है ओ सकल देश फिर ० फिर कर देषे है पर देवता गधर्व किन्नर इन ० मे ओ स्वर्ग मर्त्य पाताल आदि लोको मे ऐसे ० गानेवाले कही देषे तो क्या हमने सुने भी नही (।) ० इस प्रकार नित्य सराहते हूऐ ऋषिन के सा(-) ० थ वाल्मीकि के आश्रम मे वे दोनो कुमार वहु(-) ० त दिनो तक सुख से रहे (।) इस अनन्तर अयो(-) ० ध्या मे श्रीरामचन्द्र ने सुवर्ण की सीता वनवा ० अश्वमेध आदि यज्ञ करने को आरम्भ कि(-) ० या तो विस यज्ञशाला मे ब्राह्मण क्षत्रिय वै(-) ० श्य ऋषि रार्जषि ये सव नेवते हूए यज्ञ देषने ० को आये तहा मुनिन के समीप लवकुश को ० लिये वाल्मीकि जी भी आन पहुचे (।) जव कि एका(-) ० त मे जा अपने पाठ पूजा से सुचित भये तव ज्ञा(-) ० न शास्त्र की चर्चा मे कुश ने विन से जा कहा म(-) ० हाराज मै तुमसे थोडे ही मे यह सुना चा ० हता हू कि इस ससार के दृढ वधन मे क्यू कर ० प्राणी आ फसता है ओ क्यू कर विससे छूट ० ता है यिह समझा कर आप मुजसे कहिऐ मै ० तुम्हारा शिष्य हू ओ तुम मेरे गुरु हौ (।) सुनकर ० वाल्मीकि मुनि वोले कि वध मोक्ष का स्वरूप ० ओ विनका साधन सक्षेप कर सव मै तुझसे क(-) हूगा मुजसे सुन कर जो विस पर ठहरोगे तो जी (-) वन मुक्त हो जाओगे सो यिह कि अदेही चेत ० न रूप जो परमात्मा है देह ही वुसका घर है ओ ० इस देह मे अभिमान विसका मत्री है इस म(-) ० त्री के वश हो अपने को देही जान स्त्री पुत्रादि ० क मे फस कर वह परमात्मा नाना भावना किया ० करता है ओ सात्विक राजस तामस ये उत्तम ० मध्यम अधम तीन प्रकार की विस परमात्मा ० की देह है (।) जवकि सात्विक चेष्टा वह करता है त(-) ० व धर्मात्मा हो सुख भोगता है ओ राजसी चेष्टा ० कर स्त्री पुत्रादि के नेहवश हो लोक मे भाति ० भाति के व्यवहार किया करता है ओ तामसी चे ० ष्टा से महाक्रोधी हो निदान कीट योनि मे जा ० जनमता है (।) इस प्रकार चेतनरूप परमात्मा अ(-) ० भिमान वश हो ससार के वधन मे फसता है जो ० अपने को चेते तो सहज मे मुक्त होवे (।) यिह स ० मझ जो तुम मुक्त हूआ चाहते हो तो सात्विक ० राजस तामस सकल वाछा तजो ओ मन को ० निज वश मे रष्षो (।) मुक्ति का यही उपाय है इ(-) ० स विन स्वर्ग मर्त्य पाताल मे जा सहस्रन वर्ष ० दारुण तप किया करो पर गति मुक्ति होने की ० नही ० इति श्रीरामचरित्रे उत्तरकाण्डे पच(-) ० मोध्याय (।) ५ (।) इस भाति जव वाल्मीकि मुनि ० ने समझाया तव कुश के मन का भ्रम तुरन्त ० मिट गया ओ अन्त-ष्करण से मुक्त हूआ इ(-) ० स अनन्तर लवकुश से वाल्मीकि ने कहा कि ० हे पुत्रो अव तुम इस नगर की सव गलीन ० मे मधुर स्वर से गाते हूए राम पास जाओ ० अरु जो वे सुना चाहे

तो अपना गीत विन्हे ० सुनाओ पर जो कुछ तुम्हे वे दें तो मत ली(-) ० जो(।) इतनी वात के सुनते ही वीना लेकर वे दो(-) ० नो कुमार वहा से उठे ओ जिस प्रकार से ऋ(-) ० षि ने कहा था विसी भाति से जहा तहा गाव (-) ० ते हूऐ निदान राम के आगे जा पहुचे(।) रामचन्द्र ० ने विन वालको का अपूर्व गीत सुन वहुत अ(-) ० चरज माना ओ जहा वैठके यज्ञ करते थे त(-) ० हा राजान समेत वडे वडे मुनिन को औ पौरा(-) ० णिक वैयाकरण आदि जितने व्राह्मण पडि(-) ० त थे तिन सहित नगर के सव महाजनो को वु(-) ० ला भेजा(।) तिन के साथ विन दोनो गाने वालो ० को विठलाया तव वे राजा लोग ओ व्राह्मणा(-) ० दिक सव अति हर्षित हूऐ ओ विन दोनो कु(-) ० मारो को श्रीरामचन्द्र को रूप मे समान दे(-) ० ष निपट विस्मित हो आपस मे परस्पर यह ० वचन कहने लगे कि देषो ये दोनो वालक ठा(-) ० क राम तुल्य हैं(।) जो जटा वल्कल धारण किये ० न रहते तो इनसे ओ रामचन्द्र से रूप मे कुछ ० भेद नही होता(।) इस भाति अति चकित हो हो ० कर आपस मे जव वे लगे वतराने कि इतने मे ० वे दोनो लडके मधुर स्वर से लगे भजन कर(-) ० ने सो सुन वहुत प्रसन्न हो श्रीरामचन्द्र ने ती(-) ० सरे पहर को भरत से कहा कि इन गायनो को ० दश सहस्र दीनार तुम दो(।) यह सुनते ही सुव(-) ० र्ण मगा वे लगे देने पर कुमारो ने न लिये ओ ० कहा कि हम लोग वन के कन्द मूल खाने वा(-) ० ले हैं हम इस द्रव्य को लेकर भला क्या करेगे(।) ० यो कह सुवर्ण को ओही तज लव कुश दोनो ० भाई वहा से विदा हो कर फिर वाल्मीकि पास ग(-) ० ये तव वालको का चरित्र सुन अति चकृत हो ० राम ने जाना कि हो न हो ये दोनो सीता के पु(-) ० त्र हैं यिह समझ शत्रुघ्न हनुमान अगद सु(-) षेण विभीषण इन सभो को वुलाकर राम ने ० कहा कि तुम लोग शीघ्र जा सीता समेत वा(-) ० ल्मीकि जी को यहा ले आओ इसलिये कि ० इस सभा मे आकर सीता शपथ करे जो स(-) ० व कोई विसे निष्कलक जाने(।) इतनी वात के ० सुनते ही अति विस्मय मान वे पार्श्ववर्त्ती ० सव तुरन्त वाल्मीकि पास गये ओ जितना कु(-) ० छ राम ने कहा था सो सव वुन से वोले तव रा(-) ० म का हृदय जान वाल्मीकि मुनि ने कहा अछा ० पर आज नही कल्ह वडे तडके सभा मे जा सी(-) ० ता शपथ करेगी(।) स्त्रीन को पति ही परम देव ० ता है(।)यिह सुन फिर विन लोगो ने राम से आ ० कहा(।) राम ने तुरत सकल राजान को ओ मु(-) ० निन को कह भेजा कि सीता अपना कलक ० मिटाने के लिये विचार देगी तुम लोग यहा ० आकर वुस का निर्णय करो(।) इस भाति प्रभु०की आज्ञा पाय व्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र०ऋषि वानर ये जितने थे सो सव कौतुक देष(-) ० ने को तुरत आन पहुचे सो समाचार सुन ही लवकुश को स ० ग लिये वाल्मीकि मुनि के साथ हो लाज से ० नीचे शिर किये दोनो कर जोरे कुछ एक वि(-) ० लकती हुई सीता भी सभा मे आन पहुची(।) ० विन को साक्षात लक्ष्मी समान देषते ही स(-) ० कल लोग जय जयकार शव्द कर उठे(।) तव ० वीच सभा मे वैठ कर वाल्मीकि जी रामचन्द्र से ० कहने लगे महाराज ये महा पतिव्रता सीता तुम्हा(-) ० री स्त्री हैं ओ सदा निष्पाप है लोक-पवा(-) ० द के डर से आपने इन्हे वन माह मेरे आश्रम मे ० भेज दिया था अव वीच सभा मे ये किरिया दे(-) ० गी तुम आज्ञा करो ओ ये दोनो कुमार सीता ० के पुत्र है(,) जाव[1] ही जने है(,)

---

१. युग्म, जुड़वाँ।

निदान परमगति को पहुची ओ राम ने ० जो आगे कहा था वुससे नित्य विन्हे सुमरती ० हूई केकयी ओ सुमित्रा जिसकी मति उत्त(-) ० म थी कुझ दिनो के वीते ये दोनो भी मर गयी ० ओ स्वर्ग जा दशरथ समेत आनद विहार क(-) ० रने लगी ० इति श्री रामचरित्रे उत्तर काण्डे ० षष्ठोघ्याय (।) ६ (।) इस अनन्तर कितने एक ० दिनो के वीते युवाजित नाम भरत के मामा ० ने लडाई मे गधर्वों को जीतने के लिये भरत ० को वुला भेजा तव राम की आज्ञा पाय सेना ० लिये वे वहा गये वो तीन कोटि गधर्वों को मा(-) ० र विध्वस कर पुष्करावती नाम उनके नगर का ० राज्य पुष्कर नाम अपने वडे वेटे को दे ओ त(-) ० क्षशिला नाम उनके पुर का राजा तक्षक० नाम निज छोटे पुत्र को कर वहुत अन्न धन ० समेत अनेक इष्ट मित्रन को विनके साथ र(-)० ष फिर अयोध्या मे आ राम की सेवा लगे क(-) ० रने(।) तव रामचन्द्र ने हर्षित होकर लक्ष्मण से ० कहा तुम अपने दोनो कुमारो को पछिम दे(-) ० श मे ले जाओ वहा मल्ल लोग रहते हैं सक(-) ० ल मनुष्य को सताते है विन को जीत निज ० पुत्रो को वहा का राज्य दे फिर शीघ्र मेरे पास ० आओ(।) इतनी वात के सुनते ही वहुत ० हाथी घोडे सैन्य लेकर तुरत वे वहा गये ओ ० सकल शत्रुन को मार सुचित हो वहा के राज्य पर ० अपने कुमारो को विठला पुन रामकी सेवा मे० आ प्रवृत्त हूए(।) इस अनन्तर कैक वर्ष के बीते पर ० राम को देषने के लिये मुनि का भेष धारण कर ० लक्ष्मण पास आप काल आन पहुचा ओ यह ० वात उनसे कहने लगा महाराज एक वडे ऋ(-) ० षीश्वर का मै दूत ह विन स्वामी का कुछ सदेशा ० राम से मुझे कहना है ओ वुनका दर्शन करना ० है तुम मेरा समाचार राम से जा कहो जो वुला ० वे तो विन के पास मै चल् (।) यिह सुन लक्ष्मण जी ० ने तुरन्त राम से जा कहा कि एक कोई तपस्वी ० द्वार पर आ खडा है आज्ञा होवे तो वुसे यहा ० लाऊ(।) वे वोले कि अति आदर साथ शीघ्र जा ० विन को वुला लाओ(।) इतने वचन के सुनते ही ० लक्ष्मण जी उस महामुनि को जो अपने तेज ० से आग सा प्रज्वलित हो रहा था तुरत राम पास ० वुला लाये (।) वुस ऋषि ने आकर राम को आशी(-)० ष दी तव प्रणाम कर क्षेम कुशल पूछ इन्होने ० विधि से वुसकी पूजा की ओ आसन पर विठ(-) ० ला यह वात विससे पूछी महाराज जिसलिये ० आप यहा आये सो अपना काज मुझे अव सु(-) ० नाइऐ(।) मुनि वोला कि तुमसे कुछ गुप्त वाते मु(-) ० जे करनी है वुह दूसरे किसी को सुनने योग्य न ० ही है तिससे जो कोई हठ से यहा आकर विसे ० सुने अथवा वातचित करने मे हम दोनो को ० देषे तो वह मारा जाये यिह प्रतिज्ञा करो तो वि ० स वात को मै प्रकाश करू(।) सो सुन अछा कह ० राम ने लक्ष्मण को आज्ञा करी कि तुम द्वार प(-) ० र जा खडे रहो किसी को यहा आने मत दो जो ० कोई यहा आवेगा वह जी से मारा जावेगा यो ० कह भाई को डेवढी पर भेज आप रामचन्द्र ने ० एकान्त मे ले जाकर फिर विस ऋषि से पूछा ० कहो महाराज जिसने तुम्हे भेजा है विसका ० अथवा तुम्हारा अपना कुछ काम है सो अव ० मुज को सुनाओ(।) वह वोला धर्मावतार मै सच ० कहता हू कुछ काज के लिये तुम्हारे पास व्रह्मा ० ने मुझको भेजा है मै सव का सहार करनेवाला ० काल हू विधाता तुमको यिह वात कहता है कि ० धरती का भार तो दूर हूआ अव तुम स्वर्ग लो(-) ० क मे आकर हमारी रक्षा करो यहा आने का स(-) ० मय वीता चला जाता है(।) महाप्रलय मे सकल ० लोक का क्षय कर जव तुम एकेले थे तव माया ० के साथ

होकर पहले तो एक मुजी को तुमने ० पुत्र उत्पन्न किया तिस पीछे शेषनाग को ० तिस अनन्तर वडे पराक्रमी मधुकैटभ दो ० दानव उत्पन्न हूए विनको मार कर विन के मा(-) ० स से यह धरती ओ हड्डियो से पर्वत तुमने ० रचे ओ सृष्टि रचने का भार मुज को दिया मैंने ० अगीकार किया ओ तुमसे कहा अछा महारा(-) ० ज मै सृष्टि रचूगा पर मेरी प्रजान को जो कोई सता(-) ० वे तो वुन की रक्षा आप किया कीजे तो तुम्हारी ० आज्ञा निवाहू(।) तव तुमने इस वात को माना फि(-) ० र कितने एक वर्षों के वीतें कश्यप के ह्या वामन ० अवतार ले वलि को छल इन्द्र को राज्य पर वि(-) ० ठलाया इस प्रकार जव कभी प्रजान को दुख ० हूआ तव विनकी सहायता की ओ राक्षसन ० को मार कर धरती का वोझ तुमने उतारा(।)पु(-) ० न रावण को मारने के लिये मर्त्य लोक मे गये ० तो वह काज कर एक शौ दश सहस्त्र वर्ष धर(-) ० ती मे तुम रहे तुम्हारा मनोरथ सव पूरण हू(-) ० आ अव उचित है कि वैकुण्ठ मे आईयें (।) मनु(-) ० ष्य लोक मे आपका आयुर्वल पूरण हो चुका ० इसके आगे राज्य करने की फिर जो आप ० की इछा है तो कीजे पर अव जो स्वर्ग मे आ ० इये तो देवता सव सनाथ होते है ओ दुख ० विन का मिटता है यिह तो व्रह्मा का सन्देश है ० ओ मै काल हू तपस्वी का भेष कर तुम्हारे ० पास आया हू(।) इस प्रकार से जव विधाता की ० वातें काल ने कह सुनायी तव हस कर श्री रा(-) ० मचन्द्र वोले तुम्हारा वचन मैंने सुना तुम स(-) ० तोष करो मुजे भी स्वर्ग चलने की इछा है ० मेरा जन्म तीनो लोक की रक्षा के लिये हू(-) ० आ है इस कारण जहा से मै आया हू वहा ० जाऊगा ही यही अभिलाष है ओ यहा अव ० कुछ मुजे काज नही है व्रह्मा जो कहते है सो ० मै करूगा देवता सव मेरे सेवक है विन की र(-) ० क्षा अवश्य मुझे करनी है(।) इस भाति काल ० से रामचन्द्र कहते ही है कि अति श्रद्धा से वि(-) ० न का दर्शन करने के लिये राजद्वार पर दु[१] ० दुर्वासा ऋषि आन पहुचे ओ लक्ष्मण जी ० से कहने लगे तुम शीघ्र मुजे राम पास ले ० चले उनसे मुजे वडा काम है(।) वे वोले राम ० से तुम्हे क्या काम है तुम कहो तुम्हारा अभि(-) ० लाष मै पूरण करूगा ओ नही राम ही से भेट ० किया चाहते हो तो वे अभी वडी भीर मे है कुछ ० घडी क्षमा करो सुन के कर[२] ऋषि वहुत क्रुद्ध हू(-) ० आ ओ वोल उठा इस समय राम को न मु(-) ० झे देषाओगे तो वुसका सारा वश निसदे(-) ० ह भस्म कर डालूगा(।) इस भाति मुनि की अ(-) ० ति डरावनी वातें सुन लक्ष्मण ने अपने म(-) ० न मे शोचा कि मेरे मरणे से मेरे कुल का सहा(-) ० र न होवे तो यिह अति उत्तम विचार है(।) यो शो(-) ० च कर निदान लक्ष्मण ने राम से जा कहा ० कि तुम्हारे दर्शन के लिये दुर्वासा ऋषि आ(-) ० या है(।) इतनी वात के सुनते ही दशरथ के ला(-) ० ल ने काल को तुरत विदा किया ओ शीघ्र वहा से ० उठ कर ऋषि पास आये विसे प्रणाम कर प्रस ० न्न हो यह वात पूछी महाराज कहिए क्या काज ० है सो मै करू(।)वह वोला सहस्त्र वर्ष मैंने उपवास ० व्रत किया है सो हो चुका अव भोजन किया चा(-) ० हता हू जो कुछ अन्न सिद्ध होयें तो मुझे खिला(-) ० ओ यिह सुन अति हर्षित हो अमृत समान ० नाना पदार्थ मगा कर राम ने दुर्वासा को भोज(-) ० न कराया तव खा पी वहुत सतुष्ट हो आशी ० र्वाद कर

---

१. 'दु' अनावश्यक। २. करके।

वह अपने आश्रम को गया(।) विस के ० वहा से गये पर रामचन्द्र को सुर्त्त हूई कि काल ० से मैने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई हमारी तु(-) ० म्हारी वात यहा आकर सुनेगा अथवा हमे तु(-) ० म्हे देषेगा वह मारा जायेगा सो लक्ष्मण ने दे(-) ० षा अव मै इसका क्या करू(।) इस चिन्ता से वे महा ० व्याकुल हूए यहा तक कि नीचे शिर किये एका(-) ० त मे चुपचाप जा वैठ रहै ओ ससार से निपट ० उदास हो नेह वधन की निन्दा वहुत लगे कर ० ने ओ मन से भी लक्ष्मण को कुछ कह शके ० नही(।) तव राम को अति आकुल देष लक्ष्मण ० जी विन से जा कहने लगे महाराज मेरे लिये ० आप चिन्ता न कीजे मुजे मार डालिये यिह ० अवश्य होनी थी इसमे आप क्या करेंगे अप(-)० ना प्रण मत तजिये तुम्हारी प्रतिज्ञा जो झूठ ० होवेगी तो निश्चय मुझे नरकवास होगा ति(-) ० ससे मुजमे जो तुम्हे प्रीति है तो नि शक मुज ० को मारिये अपनी प्रतिज्ञा मिथ्या जिन की(-) ० जे इसमे वडा अधर्म आपको होवेगा(।) जव कि ० विसने ऐसे कहा तव रामचन्द्र का मन डगा ० तो वशिष्ट समेत सकल मत्रीन को वुला भे(-) ० जा ओ जिस प्रकार से दुर्वासा ऋषि आया ० ओ काल से प्रतिज्ञा करी थी सो सव विन को ० कह सुनाया(।) वे लोग हाथ जोड कर वोले धर्माव(-) ० तार तुम धरती का भार दूर करने को आये हो ० लक्ष्मण जी का वियोग तुम्हे होना था यिह तो ० विज्ञान दृष्टि से आगे ही हम लोग जान चुके ० आप लक्ष्मण को शीघ्र त्याग कीजे प्रतिज्ञा मत ० तजिए प्रतिज्ञा झूठ होने से धर्म नष्ट होता है ० धर्मनष्ट होने से तीनो लोक का नाश होगा (।)है[1] ० ओ तुम सव लोक के पालक हो तिससे उचित ० है कि एक लक्ष्मण को त्याग कर त्रिलोक का ० त्राण कीजे इसीमे तुम्हारा नाम है(।) इस प्रकार ० मत्रीन की धर्मार्थ वाते सुन रामचन्द्र वीच सभा(-) ० मे जा वैठे ओ लक्ष्मण को वुलाकर कहने ल(-) ० गे भाई मै अधर्म न करू तुम शीघ्र यहा से नि(-) ० कलो सज्जनो का त्याग ओ वध दोनो समान ० है(।) यिह सुन वे वहुत व्याकुल हूए निदान राम को ० प्रणाम कर तुरन्त अपने घर मे आये वहा सव ० सें विदा हो फिर सरजू तीर गये वहा झट हाथ ० मे जल ले आचमन कर आसन मार नवो द्वार ० वद कर प्राण को व्रह्माण्ड मे ले गये ओ ध्यान से ० व्रह्म मे लीन हो योगी की भाति लगे प्राण तजने(।) ० सो समाचार सुन के सुर नर मुनि लोग सव व(-) ० हा आये ओ झोरियो फूल वरसा वरसा लगे ० विनकी स्तुति करने तव कितने एक देवतान ० से भी छिपा गुप्त हो शरीर समेत लक्ष्मण को ० इन्द्र स्वर्ग मे उठा ले गया(।) वे जाते ही आगे की भा(-) ० ति शेष सरूप हो गये तहा व्रह्मा सहित सिद्ध ० लोक के योगी सव विनके दर्शन को आये ० इति श्री रामचरित्रे उत्तर काण्डे सप्तमोध्याय (।) ० वहा लक्ष्मण को त्याग कर रामचन्द्र वहुत दु(-) ० खित हूए तो वसिष्ट समेत सकल मत्रीन को ० ओ नगर के सव महाजनो को वुला कर कह(-) ० ने लगे कि भरत को राज्य का तिलक देकर ह(-) ० म आज ही लक्ष्मण के पास जायेंगे इसलिये ० तुमको वुलाया है(।) इतनी वात के सुनते ही जित(-) ० ने वहा लोग थे सो मूर्छित हो धरती पर ऐसे गि(-)० र पडे जैसें जड मूल से उखड कर पेड षसे ओ ० राम की वात सुन भरत भी अचेत हूए निदान ० विन के निकट जा राज्य की निन्दा वहुत लगे क(-) ० रन[2] ओ कहने महाराज मै आपका

---

१ 'है' अनावश्यक। २ करने।

शपथ खा(-) ० ता हू कि तुम्हारे विना स्वर्ग का अथवा पृ(-) ० थ्वी का राज्य जो मै चाहता हू आप कोशल ० का राज्य कुश को ओ उत्तर देश का राज्य लव ० को दीजे दूत लोग शीघ्र जा शत्रुघ्न को यहा ० वुला ले आवें वह हमारा स्वर्ग जाने का समा(-) ० चार सुन तुरत चला आवेगा(।) इस प्रकार भर(-) ० त की वातें सुन प्रजा लोग भय से अकुला उ(-) ० ठे ओ राम के वियोग ये[1] वहुत व्याकुल हुऐ(।) वि(-) ० न को अति आतुर देष वसिष्ठ मुनि ने राम ० से कहा देषो ये लोग तुम्हारा जाना सुन अचेत ० हो धरती पर लोट रहें है तुम इन पर कृपा क ० रो(।) तव राम ने अति प्रीति कर सकल प्रजान को ० उठा विठलाया ओ कहा तुम लोग क्या चाहते ० हौ सो काज मै कर चलू(।) वे सव हाथ जोड कर वो(-) ० ल उठे कृपा निधान जहा तुम जाया चाहते हो ० तुम्हारे साथ हम भी वहा चलेंगे इसमे हमे अ(-) ० क्षय धर्म होता है आप हमारी प्रार्थना अगी ० कार कीजे हम वहुत हर्षित होते है लडके वा(-) ० लो समेत तुम्हारे साथ चलने की दृढ मति हमे ० हो चुकी है(।) आप तपोवन मे अथवा स्वर्गलोक ० मे अथवा किसी दूसरे नगर मे कहू जाईये प(-) ० र तुम्हारा सग हम न छोडेगे(।) तव विन के मन ० की दृढता देष श्री रामचन्द्र वोले अछा चलो ० तुम्हारी वात हमने मानी यो कह स्वर्ग जाने ० का निश्चय कर विसी दिन रघुनायक ने लव ० कुश को राज्य का तिलक देकर कोशल ओ उ ० त्तर देश को विदा किया ओ आठ आठ सह ० स्र रथ सहस्र सहस्र हाथी साठ साठ सहस्र ० घोडे विन के सग दिये तव वे दोनो भाई वहुत ध(-) ० न रत्न समेत हृष्ट पुष्ट अनेक लोग साथ ले ० राम को प्रणाम कर अति उदास हो वहा से नि(-) ० कले(।) तिस अनन्तर रामच द्र ने शत्रुघ्न को वु(-) ० ला लाने के लिये दूतो को भेजा (।) दूत सव शीघ्र० शत्रुघ्न पास गये ओ काल का आगमन दुर्वा(-) ० सा की करतूति लक्ष्मण का स्वर्गवास राम की ० प्रतिज्ञा लवकुश का अभिषेक यिह सव वि(-) ० न को कह सुनाया(।) वे अपने कुल का सहार सु(-) ० न निपट दुखित हूऐ निदान धीरज कर सुवा(-) ० हु नाम अपने जेठ पुत्र को मथुरा का ओ जू(-) ० प केतु नाम छोटे सुत को विदिश नगर का रा(-) ० जा कर आप रामचन्द्र को देषने के लिये तुरन्त अ(-) ० योध्या मे आन पहुचे तो आते ही जहा तेज मे ० अग्नि समान रामचन्द्र धोती पहने अगोछा ० ओढे ऋषिन के वीच मे वैठे थे तहा जा विन को ० देष प्रणाम कर हाथ जोड यह वचन कहने ल(-) ० गे महाराज मै अपने लडकन को राज्य पर वि(-) ०.ठला तुम्हारे साथ चलने का मन मे निश्चय क(-) ० रके यहाँ आया हू मै आपका सेवक हू मुजे त्या(-) ० ग जाना तुम्हे उचित नही है (।) तव शत्रुघ्न की म(-) ० ति दृढ जान कौशल्यानन्दन वोले अछा दो ० पहर को यहा से हम जायेगें तुम हमारे सग च(-) ० लो (।) इतने मे राम का जाना सुन सहस्रन ऋछ(-) ० वानर राक्षस ओ अनेक ऋषि लोग तुरत व(-) ० हा आन पहुचे ओ राम से कहने लगे कृपानि(-) ० धान हम भी आपके सग चलेंगे(।) इसी मे राजा ० सुग्रीव भी आये ओ भक्तवत्सल रामचन्द्र ० को प्रणाम कर कहने लगे दीन दयाल मै तु(-) ० म्हारा प्रयाण सुन अगद को निज राज्य का ति(-) ० लक दे आपके साथ चलने का जी मे निश्चय क(-) ० र के आया हू मुज को सग लिये चलिये(।) इस प्रका(-) ०

---

१. से।

र भाल वानर ओ राक्षसो का दृढ वचन सुन श्री ० रामचन्द्र विभीषण से कोमल वचन कहने लगे० कि जव तलक धरती रहेगी तलग[1] लका का रा(-) ० ज्य तुम करो तुम्हे मेरा शपथ है जो इसमे कुछ ० वोलो(।) यो वुसे कह फिर हनूमान को वोले पवन(-) ० कुमार तुम चिरजीवी होकर धरती मे विराजो ० मेरी इस आज्ञा को मिथ्या मत करो(।) इसी भाति ० जाम्ववान को भी कहा कि तुम भी यहा रहो कु(-) ० छ कारण पा द्वापर मे मुजसे तुम्हे युद्ध होगा त(-) ० व स्वर्ग मे आना(।) ऐसे इन तीनो को वुझा सम(-) ० झा सुचित कर पुन सकल भाल वानर राक्ष(-) ० सन को कहा तुम लोग मेरे साथ चलो(।) इसी ० वातचित मे रात वीत गयी तव वडे प्रभाते ही रा[2] ० रामचन्द्र ने वसिष्ठ पुरोहित को आज्ञा करी कि ० प्रयाण समय का जो कुछ विधि है सो कीजै(।) प्र(-) ० भु की आज्ञा पाते ही वडे विधान से वसिष्ठ मु(-) ० नि ने यात्रा का सव कर्म किया तव अति विचि(-) ० त्र उन वस्त्र पहने हाथ मे कुश का पवित्रक (-) ० लिये कमलनयन श्रीरामचन्द्र जो कोटिन ० चन्द्रमा से शोभायमान हो रहे थे सव समेत ० अयोध्या से निकले (।) विसी समय लक्ष्मी सरू (-) ० प होकर सीता स्वर्ग से आयी ओ हाथ मे ० लाल कमल लिये वायी दिश हो राम के सा(-) ० थ साथ चली ओ धनुष वाण आदि शस्त्र (,) ० वेद (,) वेद की माता(,) सकल शास्त्र ये सव देह धा(-) ० रण किये विन्हो के पीछे-पीछे हो लिये ओ अ(-) ० नुचरो मत्रियो सहित स्त्री वर्ग को आगे कर ० भरत शत्रुघ्न तो तुरत ही प्रस्थित हूए ओ मु(-) ० क्ति धाम की खुली हुई द्वार की भाति राम को ० लक्ष्मी सहित जाते हूएं देष क्या वाल क्या ० जुवा क्या वृद्ध स्त्री पुरुष व्राह्मण क्षत्रिय ० वैश्य शूद्र आदि छोटे वडे जितने पुर के ० लोग थे सो सव सकल वस्तु की माया मोह ० तज महा आनन्द मे मगन हो पशु पछी स(-) ० मेत अपना अपना परिवार लिये शीघ्र च(-) ० ल खडे हूए(।) विस समय न तो कोई डरा न ० किसी का तनिक भी मुह मलीन न हूआ ० एक महाउत्सव सा हो गया(।) एक ओर से मु(-) ० नियो का वृन्द अल[3] ही निकला दूसरी दि(-) ० श से सुग्रीव आदि जितने श्रेष्ठ वानर थे ० सो सव स्नान कर शुद्ध हो मगल ध्वनि कर(-) ० ते हूए तुरन्त नगर से निकले(।) इसी प्रकार से ० स्थावर जगम दृश्य अदृश्य और जो प्राणी ० थे सो भी ससार से विरक्त हो राम सग चले(।) ० कमलनयन राजा रामचन्द्र के निकलते ही ० सारा अयोध्या नगर शून्याकार हो गया ० यहा तक कि कोई कीट पतग भी न रहा(। ज(-) ० व कि सव को लिये नगर से कुछ दूर वाहर रा(-) ० मचन्द्र गये तव सरजू नदी को देष अति ० हर्षित हो ध्यान कर अपने को देषते क्या हैं ० मै विराट सरूप हू ओ ससार मेरे उदर मे है(।) ० इतने मे आगे से राम को लाने के लिये स्व(-) ० र्ग लोक से व्रह्मा वहा आन पहुचे विन के ० आते ही सकल देवता और ऋषि सिद्ध ० ये सव भी अपने अपने विमानो पर चढे ० हूएं ऐत्ते आये कि सगरे आकाश छा लि ० या(।) उन सवो की प्रभा से जो सूर्य के कीरण ० समान चमक रही थी विस दिन ऐंसा आ(-) ० काश सोहावन हूआ मानो तारा गण से रै(-) ० न शोभ रही होए(।) विस समय शीतल मद ० सुगध तीन प्रकार की पवन लगी वहने ओ ० फूलो की वृष्टि होने ओ देव गधर्व किन्नर ० विद्याधर यिह सव मृदग आदि अनेक

---

१. तबतक। २. 'रा' अनावश्यक। ३. अलग।

प्र (-) ० कार के वाजे वजा वजा मधुर स्वर से लगे गा (-) ० न करने तव रामचन्द्र ने सरजू का जल स्प (-) ० र्श किया ओ विसमे जा खडे हूऐ तहा जा हा (-) ० थ जोड व्रह्मा लगा कहने हे परमात्मा परमे (-) ० श्वर तुम ससार की उत्पत्ति प्रालन प्रलय ० करने वाले विष्णु हो अपना प्रभाव जान (-) ० ते हो आनन्द सरूप पूरण व्रह्म हो तो भी मे (-) ० री वात सव तुमने रष्षी मै तुम्हारा दास हू तु (-) ० म भक्तो पर सदा दया करते हो अव मेरी वि (-) ० नती यिह है कि आदि विष्णु सरूप हो के भा (-) ० ईन समेत वैकुण्ठ मे चल के देवतान को पा (-) ० लिये अथवा और किसी देह धारण की ० रुचि है तो वे ही सरूप होकर हम सव की रक्षा ० किजे (।) तुम सकल देवतान के पति विष्णु हो ० मुज विन तुम्हे कोई जान नही शक्ता (।) मैं[1] ० मै आपको सहस्रन प्रणाम करता हू मुज ० पर प्रसन्न हूजिऐ (।) इस भाति विधाता की ० वहुत प्रार्थना सुन सकल देवतान के देष (-) ० ते ही ओ अपने तेज से विनकी आषे मूदत (-) ० हूऐ श्री रामचन्द्र तुरत चतुर्भुज वन गये ० ओ भरत शत्रुघ्न ये दोनो विन के शख चक्र ० हूए तहा शस सरूप किये लक्ष्मण जी भी ० आये ओ सीता तो पहले से साक्षात ल (-) ० क्ष्मी होकर विन के साथ ही थी (।) इस प्रकार से ० पुरुष पुरातन श्रीरामचन्द्र जव कि भाईन ० समेत ज्योति सरूप हूऐ तव इन्द्र व्रह्मादिक ० देवता ओ सिद्ध मुनि यक्ष किन्नर गन्धर्व ० ओ पितर लोग ये सव पूरण मनोरथ हो मा (-) ० रे आनन्द के आषो मे आसू भर लगे वि (-) ० न को पूजने ओ हाथ जोड स्तुति करने ० तव व्रह्मा से विष्णु ने कहा सुनो प्रजापति ० ये लोग मेरे वडे भक्त है मेरे साथ स्वर्ग चल (-) ० ने को सव आये है इनमे कीट पतग है वे भी ० पुण्यात्मा हैं ओ मनुष्यो की तो क्या वात है ० तिससे वैकुण्ठ समान जो स्थान हैं वहा इ (-) ० न सभो को मेरी आज्ञा से ले जाकर स्था (-) ० पित करो (।) वह वोला महाराज अनेक अने ० क प्रकार के भोगो से भरा हूआ मेरे ऊपर सा (-) ० तनिक नाम अति उत्तम एक लोक है जो ० कोटिन सूर्य समान प्रकाश हो रहा है जो ० नर आपका भक्त हो वहुत पुण्य धर्म क (-) ० रते है ओ अनजान कर भी मरण समय ० तुम्हारा पवित्र नाम लेते है विन का ओ ० योगियो का वहा गम्य है ये लोग उसी स्था (-) ० न मे जा वसे वैकुण्ठ से भी अधिक सुख ० वहा है (।) इतनी वात के सुनते ही अति हर्षि (-) ० त हो आचमन कर सकल वानर राक्षस ० आदि ने तुरत शरीर त्याग किया ओ आ (-) ० गे की भाति देव सरूप हो वैकुण्ठ धाम को ० गये (।) तिनमे सुग्रीव की उत्पत्ति सूर्य से थी ० इस कारण वह विन्ही मे जा मिला (।) इस प्र (-) ० कार विन के वहा जाते ही पशु पक्षीन स (-) ० मेत जितने लोग राम सग गये थे सो सव ० सरजू मे जा हरि को सुमर मानुष की देह ० तज उत्तम शरीर धारण कर नाना आ (-) ० भरणन से भूषित हो विमानो पर चढ सा (-) ० तनिक लोक को गये (।) तिस पीछे सव देव (-) ० तान समेत हसते खेलते विष्णु जी वैकुण्ठ (-) ० मे जा प्राप्त हूऐ (।) सूत कहता है शौन (-) ० कादि ऋषियो से कि यही रामायण क (-) ० था महादेव ने पार्वती को कह सुनायी थी (।) ० जो नर भक्ति भाव से नित्य नित्य इसे सु (-) ० नता सुनाता है विसे सीता राम प्रसन्न हो ० वहुत लक्ष्मी देते है ओ जो इसको सदा ० पाठ करता है वह सहस्रन जन्म के पाप से ० छूट मुक्ति धाम को जाता है यहा तक कि ० राम सरूप हो जाता है० इति श्रीरामचरि ० त्रे उत्तरकाण्डे अष्टमोध्याय (।) ८ (।) उत्तर ० काण्ड समाप्त ॥

---

१. 'मैं' अनावश्यक

हिन्दी के गौरव ग्रन्थ

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१.	हिन्दी-साहित्य का आदिकाल	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३ २५
२.	यूरोपीय दर्शन	स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा	३ २५
३.	हर्षचरित : एक सास्कृतिक अध्ययन	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	९ ५०
४.	विश्वधर्म-दर्शन	श्रीसाँवलियाविहारीलाल वर्मा	१३ ५०
५.	सार्थवाह	डॉ० मोतीचन्द्र	११ ००
६.	वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा	डॉ० सत्यप्रकाश	८ ००
७.	सन्तकवि दरिया · एक अनुशीलन	डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री	१४ ००
८.	काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)	अनु० स्व० प० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	९ ५०
९.	श्रीरामावतार शर्मा-निबन्धावली	स्व० म० म० रामावतार शर्मा	८ ७५
१०.	प्राङ्मौर्य बिहार	डॉ० देवसहाय त्रिवेद	७ २५
११.	गुप्तकालीन मुद्राएँ	स्व० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर	९ ५०
१२.	भोजपुरी भाषा और साहित्य	डॉ० उदयनारायण तिवारी	१३ ५०
१३	राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त	श्रीगोरखनाथ सिंह	१ ५०
१४.	रबर	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा, एम्० एस्-सी०	७ ५०
१५.	ग्रह-नक्षत्र	श्रीत्रिवेणीप्रसाद आइ० सी० एस्०	४ २५
१६.	नीहारिकाएँ	डॉ० गोरखप्रसाद	४ २५
१७.	हिन्दू धार्मिक कथाओ के भौतिक अर्थ	श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिह	३ ००
१८	ईख और चीनी	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा	१३ ५०
१९.	शैवमत	मूललेखक और अनुवादक डॉ० यदुवशी	८ ००
२०.	मध्यदेश · ऐतिहासिक और सास्कृतिक सिंहावलोक	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	७ ००
२१-२२.	प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण (खंड १ और २)	स० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, प्रत्येक का मूल्य	२ ५०
२३-२६.	शिवपूजन-रचनावली (चार खडो मे)	आचार्य शिवपूजन सहाय मूल्य क्रमश	८ ७५, ९ ००, १० ००, ८ ५०
२७.	राजनीति और दर्शन	डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा	१४ ००

२८.	बौद्धधर्म-दर्शन	स्व० आचार्य नरेन्द्रदेव	१७ ००
२९-३०.	मध्य एसिया का इतिहास (दो खण्डो मे)	महापण्डित राहुल साकृत्यायन प्र० ख० १२ २५, द्वि० ख० ८ ५०	
३१.	सरहपाद का दोहाकोश	छायानुवादक महापण्डित राहुल साकृत्यायन	१३ २५
३२	हिन्दी को मराठी सतो की देन	आचार्य विनयमोहन शर्मा	११ २५
३३	रामभक्ति-साहित्य मे मधुर उपासना	डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'	१० २५
३४	अध्यात्मयोग और चित्तविकलन	स्व० वेकटेश्वर शर्मा	७ ५०
३५.	प्राचीन भारत की साग्रामिकता	प० रामदीन पाण्डेय	६ ५०
३६	बाँसरी बज रही	श्रीजगदीश त्रिगुणायत	८ ००
३७.	चतुर्दशभाषा-निबन्धावली	(सगृहीत)	४ २५
३८.	भारतीय कला को बिहार की देन	डॉ० विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिह	७ ५०
३९	भोजपुरी के कवि और काव्य	श्रीदुर्गाशकर प्रसाद सिह	५ ७५
४०	पेट्रोलियम	श्रीफूलदेवसहाय वर्मा	५ ५०
४१	नील-पछी (मूल लेखक मारिस मेटरलिक)	अनुवादक डॉ० कामिल बुल्के	२ ५०
४२.	लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ् मानभूम एण्ड सिहभूम		४ ५०
४३	षड्दर्शन-रहस्य	प० रगनाथ पाठक	५ ००
४४	जातक-कालीन भारतीय सस्कृति	श्रीमोहनलाल महतो 'वियोगी'	६ ५०
४५	प्राकृत भाषाओ का व्याकरण	मूल लेखक श्री रिचर्ड पिशल अनुवादक डॉ० हेमचन्द्र जोशी	२० ००
४६.	दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा	महापडित राहुल साकृत्यायन	६ ००
४७.	भारतीय प्रतीक-विद्या	डॉ० जनार्दन मिश्र	११ ००
४८	सतमत का सरभग-सम्प्रदाय	डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री	५ ५०
४९	कृषिकोश (प्रथम खण्ड)	स० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद	३ ००
५०.	कुँवरसिह-अमरसिह	अनु० प० छविनाथ पाण्डेय	५ ००
५१	मुद्रण-कला	प० छविनाथ पाण्डेय	७ २५
५२.	लोक-साहित्य : आकर-साहित्य-सूची	स० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	० ५०
५३.	लोकगाथा-परिचय	स० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	० २५
५४	लोककथा-कोश	स० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	० ३२
५५.	बौद्धधर्म और बिहार	प० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'	८ ००
५६	साहित्य का इतिहास-दर्शन	आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	५ ००
५७.	मुहावरा-मीमांसा	डॉ० ओम्प्रकाश गुप्त	६ ५०
५८.	वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति	म० म० प० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	५ ००

५९	**पचदश लोकभाषा-निबन्धावली**	(सगृहीत)	४ ५०
६०-६१	**प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण (खण्ड ३-४)**	स० आचार्य नलिनविलोचन शर्मा	१ २५ १ ००
६२	**हिन्दी-साहित्य और बिहार (सातवीं शती से अठारहवीं शती तक)**	स० आचार्य शिवपूजन सहाय	५ ५०
६३	**कथासरित्सागर (प्रथम खण्ड, षष्ठ लम्बक)**	मूल लेखक महाकवि सोमदेव भट्ट अनुवादक स्व० प० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	१० ००
६४	**भारतीय अब्दकोश**	स० गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ	६ ००

उपर्युक्त प्रत्येक सजिल्द पुस्तक पर तिरगा नयनाभिराम आवरण है।

●

हमारी शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

६५	**अयोध्याप्रसाद खत्री-स्मारक-ग्रथ**	स० आचार्य शिवपूजन सहाय तथा आचार्य नलिनविलोचन शर्मा
६६	**पुस्तकालय-विज्ञान-कोश**	श्रीप्रभुनारायण गौड
६७	**गोस्वामी तुलसीदास**	स्व० श्री शिवनन्दन सहाय
६८.	**रगनाथ रामायण (मूल तेलगु से अनूदित)**	अनु० श्री ए० कामाक्षी राव
६९	**वेणु-शिल्प**	श्रीउपेन्द्र महारथी
७०	**कथासरित्सागर (दूसरा खण्ड)**	मूल लेखक महाकवि सोमदेव भट्ट
७१	**विद्यापति-पदावली (प्रथम खण्ड)**	
७२.	**दरियादास-ग्रन्थावली (दूसरा खण्ड)**	स० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
७३	**मगही सस्कार-गीत**	स० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद